卐 ॐ अर्हम् 卐

। श्री अनंतनाथ स्वामिने नमः ।

परमोपास्य आ. श्री विजय नेमि - विज्ञान - कस्तूर सूरिभ्यो नमः ।

पूज्य पाद श्री मन्महोपाध्याय - श्री सकलचन्द्रजी गणिकृत

प्रतिष्ठाकल्प (अञ्जनशलाकाविधि)

संशोधित पाठ तेमज परिशिष्ट विधिओ सहित

शुभाशीर्दाता : प. पू. आ. श्री विजय चंद्रोदयसूरिजी महाराज.

प्रेरणादाता : प. पू. आ. श्री विजय अशोकचंद्रसूरिजी महाराज.

संपादक : मुनि श्री सोमचंद्र विजयगणि

प्रकाशक : शेठ नेमचंद मेलापचंद झवेरी जैन वाडी उपाश्रय ट्रस्ट-गोपीपुरा, सुरत.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्री अनंतनाथजी भगवाननुं देरासर

प्रतिष्ठा सं. १९४७–जेठ सुद ६

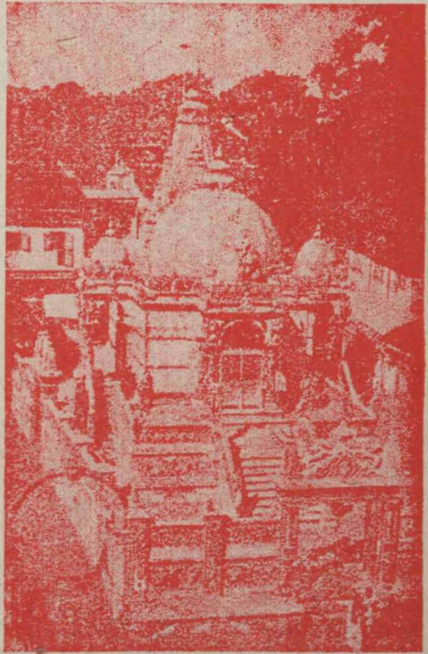

शेठ नेमचन्द मेलापचन्द झवेरी जैन वाडी उपाश्रय ट्रस्ट – गोपीपुरा – सुरत

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अञ्जन
प्र. कल्प

ॐ अर्हम्

श्री अनंतनाथ स्वामिने नमः

। परमोपास्य आ. श्री विजय नेमि-विज्ञान-कस्तूरसूरिभ्यो नमः ।

पूज्यपाद श्रीमन्महोपाध्याय श्री सकलचन्द्रजीगणी कृत

प्रतिष्ठाकल्प (अञ्जनशलाका विधि)

संशोधितपाठ तेमज परिशिष्ट विधि सहित

卐

...पुरा जैन उपाश्रय ज्ञान ... नं. 613 ... 2 ... सुरत.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शुभाशीर्दात :- प. पू. आ. श्री विजय चंद्रोदयसूरिजी महाराज

卐

प्रेरणादाता :- प. पू. आ. श्री विजय अशोकचंद्रसूरिजी महाराज

卐

संपादक :- मुनि श्री सोमचंद्र विजय गणि

卐

प्रकाशक :- श्री नेमचंद मेलापचंद झवेरी जैन वाडी
उपाश्रय ट्रस्ट - गोपीपुरा, सुरत

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्री नेमचंद मेलापचंद झवेरी
जैन वाडी उपाश्रय ट्रस्ट
गोपीपुरा, सुरत

श्री नेमि-विज्ञान-कस्तूरसूरि ज्ञानमंदिर
गोपीपुरा मेइन रोड,
सुरत

श्री वीर सं. २५१२ नेमि सं. ३७ विक्रम सं. २०४२

प्रत : १५००

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

卐

श्री नेमचंद मेलापचंद झवेरी जैन वाडी उपाश्रय ट्रस्ट

द्वारा प्रकाशित

प्रतिष्ठाकल्प (अञ्जनशलाका विधि)

संशोधितपाठ तेमज परिशिष्ट विधि सहित

卐

मुद्रक : जीतु बी. शाह * जीगी प्रिन्टर्स, ३०५, महावीर दर्शन, कस्तुरबा क्रोस रोड नं. ५,
बोरीवली (इस्ट), मुंबइ-४०० ०६६ फोन नं. C/o. ३१७८१०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रेष्ठी देवचन्द लालभाई जव्हेरी.

जन्म १९०९ वैक्रमाब्दे
कार्तिकशुक्लैकादश्याम्
(देवदीपावली—सोमवासरे)
सूर्यपूरे.

निर्याणम् १९६२ वैक्रमाब्दे
पौषकृष्णतृतीयायाम्
(मकरसङ्क्रान्तिमन्दवासरे)
मुम्बय्याम्.

The Late Sheth Devchand Lalbhai Javeri.

Born 22nd Nov. 1852 A. D. Surat, Died 13th January 1906 A. D. Bombay.

1-37 :–Copies 3000.

N. S. P.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

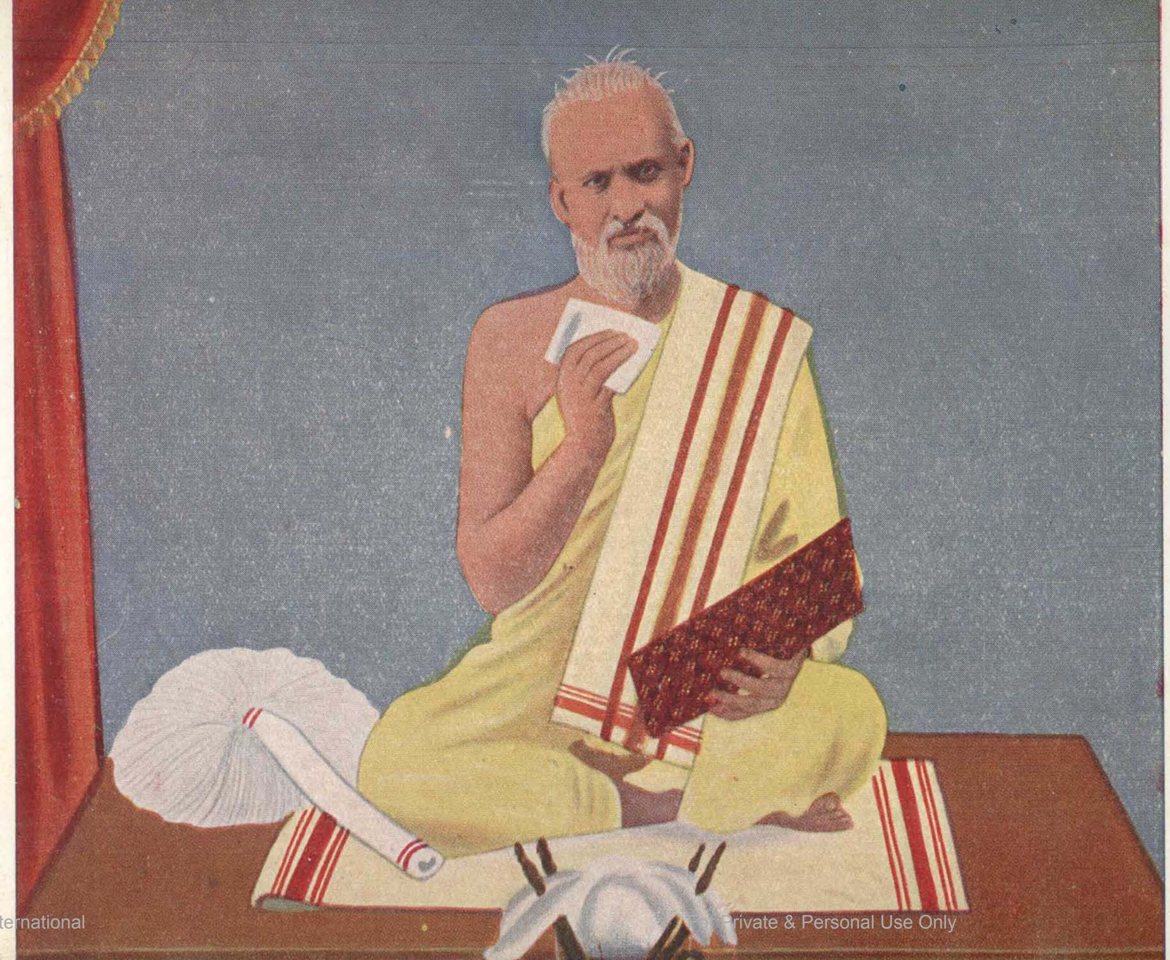

सैद्धान्तिकतार्किकवैयाकरणचक्रवर्तिनः

पुण्यस्मरणाः

समस्तमुनिमण्डलागमवाचनादातार

आगमोद्धारका

आचार्यवर्य्य १००८

श्रीमदानन्दसागरसूरीश्वरपादाः

N. S. P.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आशीर्वचन

'श्री प्रतिष्ठाकल्प' ग्रन्थना संपादन प्रसंगे शुं लखवुं? स्थापनानिक्षेपे, अरिहंत परमात्मानी त्रिकरण विशुद्धिथी करवामां आवतां विधि विधानो सर्वना श्रेय माटे बने छे.

तेवी श्रेयस्कर मार्गे गति करनारने मार्गदर्शकनी गरज सारनार आ ग्रन्थना संपादन निमित्ते गणि श्री सोमचंद्र विजयजीए जे प्रथम प्रयास कर्यो ते प्रशस्य तो छे, परंतु ग्रन्थ संपादन माटे ग्रन्थनी शुद्धि-अशुद्धि के पाठ-पाठांतर मेळववामां दत्तचित्त बनवुं पडे छे. अने ते परिश्रमसाध्य होय छे.

हुं तो एक इच्छुं छुं के गणिवरश्री पोताना जीवनमां विधि ग्रन्थोना जाण बनवा साथे परमात्म भावमां तद्रूप बनवा पुरुषार्थ करे अने ते अनुभूतिथी अन्यने जाण करी परमात्म स्वरूप पामवानो एक अनुभवसिद्ध मार्ग चींधे. एज.

वि. चंद्रोदयसूरि

ता. २१-३-८६ -पालीताणा.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अंतरोद्गार

मारो वर्षोथी भावना हती के नाना बाळकने दीक्षा आपवी अने तेमने बधी रीते तैयार करवा जेथी शासनना अनेक कार्य करी शके. पू. गुरुभगवंतनी पूर्ण कृपादृष्टि आज जोवा मळी. परंतु आ तो तमारा माटे पहेलुं पगथियुं छे. हजी तमारी उंमर नानी छे, ज्ञाननो खजानो अखूट छे तो तमो विनम्रतापूर्वक ज्ञानध्यानमां आगळ वधो अने जुना तात्त्विक ग्रंथोना पुनरुद्धार साथे नवीन ग्रंथनीरचना करी पू. शासनसम्राटश्रीना समुदायनुं गौरव वधारवा पूर्वक तमारा आत्मानुं श्रेय करो ते शुभ भावना.

अशोकवि.

ता. २२-३-८६ -कोसंबा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

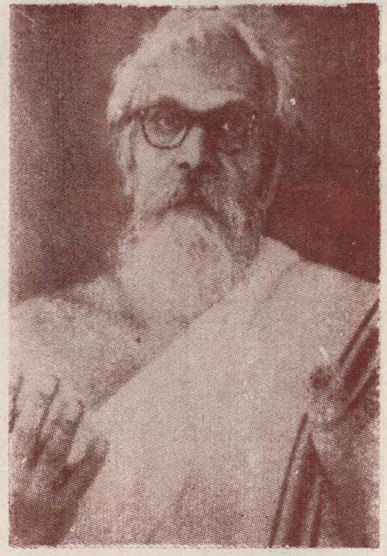

वात्सल्यवारिधि प. पू. आ. श्री विजय
विज्ञानसूरिश्वरजी महाराज

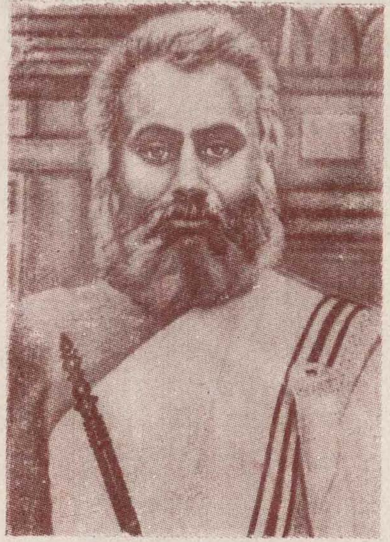

शासन सम्राट प. पू. आ. श्री विजय
नेमिसूरिश्वरजी महाराज

धर्मराजा प. पू. आ. श्री विजय
कस्तूरसूरिश्वरजी महाराज

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंचप्रस्थान समाराधक प. पू. आ. श्री विजय
अशोकचन्द्रसूरिश्वरजी महाराज

व्याख्यान वाचस्पति प. पू. आ. श्री विजय
चन्द्रोदयसूरिश्वरजी महाराज

भद्रपरिणामी प. पू. मुनि श्री
प्रसन्नचन्द्रविजयजी महाराज

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पूज्य गुरुदेवश्रीना करकमळमां विनीतभावे समर्पण

जेमनी मीठी मधुरी शीतल छाया–मारा संयमी जीवननी पायारूप बनी,
जेमनी आंतर प्रेरणा–मारी ज्ञानपिपासाने जीवंत बनावी रही छे,
जेमनी असीम कृपा – जीवनमंत्र बनी रहेल छे.
ते अजातशत्रु, प्राकृतविद्विशारद, धर्मराजा, दादागुरुदेव
परमपूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय कस्तूरसूरीश्वरजी
महाराजना पावन करकमळमां विनीत भावे

स म र्प ण

आ. श्री विजय अशोकचंद्रसूरि चरणरेणु
सोमचंद्र वि.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रकाशकीय

अमारुं परम सौभाग्य छे के जे विधि-विधान द्वारा जिनबिंबमां परमात्मभावनी स्थापना थाय छे ते विधिनुं निरूपण करतो **महोपाध्यायजी श्री सकलचंद्रजी गणिकृत प्रतिष्ठाकल्प (अंजनशलाका विधि)** ग्रंथ प्रकाशित करवानो लाभ अमोने प्राप्त थयो छे.

सुरत-शेठ श्री नेमचंद मेलापचंद झवेरी वाडी जैन उपाश्रये वि. सं. २०४१ नां चातुर्मास माटे अमोए शासनसम्राट्, तपागच्छाधिपति प. पू. आ. श्री **विजय नेमिसूरीश्वरजी** म. सा. ना पट्ट. वात्सल्यवारिधि प. पू. आ. श्री **विजय विज्ञानसूरीश्वरजी** म. सा. ना पट्ट. धर्मराजा प. पू. आ. श्री **विजयकस्तूरसूरीश्वरजी** म. सा. ना पट्टालंकार अने सुरतना पनोता पुत्ररत्न शासनप्रभावक प. पू. आ. श्री **विजय चंद्रोदयसूरीश्वरजी** महाराजने पालीताणा मुकामे श्री१०८**जैनतीर्थदर्शनभवन-समवसरणमहामंदिरनी** प्रतिष्ठा प्रसंगे विनंती करता तेओश्रीए पोताना गुरुबंधु शासनना अनेकविध मंगळप्रसंगोना मुहूर्तदाता, सरळ स्वभावी प. पू. आ. श्री **विजय अशोकचंद्रसूरीश्वरजी** महाराजने, गणि श्री **पुष्पचंद्र** विजयजी म.; गणि श्री **सोमचंद्र** विजयजी म.; मुनि श्री शांतिचंद्र वि. म.; मुनि श्री कैलासचंद्र वि. म.; मुनि श्री पुण्यचंद्र वि. म.; मुनि श्री श्रमणचंद्र वि. म.; मुनि श्री श्रीचंद्र वि. म.; मुनि श्री विश्वचंद्र वि. म.; मुनि श्री प्रशमचंद्र वि. म.; मुनि श्री शशीचंद्र वि. म. आदि परिवार सहित चातुर्मास मोकली अमोने उपकृत कर्या.

पू. शासनसम्राट् श्रीना तथा स्वयं आगमोद्धारक पू. आचार्यदेव **श्री आनंदसागरसूरीश्वरजी म. (पू. सागरजी म.)** सहित तेमना तेमज विविधसमुदायना पुण्यवंतमहापुरुषोना पावनपगलाथी उपकृत थयेल सूर्यपुरनी धरती पू. आचार्यश्रीना आगमनथी **तपोभूमि बनी गई. आबाळ-गोपाळ** सौना हैये कंइक विशिष्ट तप करी लेवाना कोड प्रकट थवा लाग्या. तेना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिणामे सुरतनी तपोधर्म–अनुमोदनानी गौरवप्रद प्रणालिकानुसार अषाढ वद ५ थी तपस्वीओना ज्ञानपूजनना वरघोडानी शरूआत थइ ते पर्युषणा बाद पण चालु रही. तेमां य नाना **बाळक–बालिकाओनी अट्ठाइ** आदि तपश्चर्या तो सौने अचरज पमाडे तेवी थइ. रविवारीय **सामुदायिक** आराधनाओथी पण वातावरण तपोमय बनी गयुं.

सोनामां सुगंधनी जेम सुरतना अने कदाच जिनशासनना इतिहासमां छेल्ला **केटलाय** वर्षोमां न बन्यो होय तेवो **सामुदायिक सिद्धितपनी आराधनानो** प्रसंग ऐतिहासिक बनी गयो. कोइक धन्यवडीए सिद्धितपनी जाहेरात थतां कोइनी कल्पनामां पण न होय तेम पू. आ. श्री विजय **अशोकचंद्रसूरि** म.; गणि श्री **सोमचंद्र** वि.; मुनि **श्री श्रमणचंद्र** वि.; मुनि **श्री विश्वचंद्र** वि.; साध्वी श्री **यशस्विनीश्रीजी;** साध्वी श्री **जयप्रज्ञाश्रीजी;** साध्वी श्री **कल्पविदाश्रीजी;** साध्वी श्री **प्रीतिवर्षाश्रीजी;** साध्वी श्री **दिव्यनंदिता-श्रीजी;** साध्वी श्री **अभिनंदिताश्रीजी;** साध्वी श्री **विश्वनंदिताश्रीजी;** साध्वी श्री **प्रशांतयशाश्रीजी,** साध्वी श्री **कल्पपूर्णाश्रीजी** आदि सहित **९ थी ८० वर्षना ४०० आराधको उल्लासभेर** सामुदायिक आराधनामां जोडाया अने पू. धर्मराजा गुरुदेवनी पूर्णकृपा तेमज शासनदेवनी अगम्य सहाये सर्वेनो आराधना निर्विघ्ने पूर्णताने पामी. साथो साथ सामुदायिक ४०० उपरांत अट्ठाईओ पण उत्साहवर्धक बनी.

सामुदायिक सिद्धितपना उद्यापन महोत्सवे तो रंग राख्यो. शुं जैन के शुं जैनेतर–जिनशासनना सारभूत तप–त्यागनी मुक्तकंठे अनुमोदना करवा लाग्या. श्री जिनेन्द्र भक्ति महोत्सव, '**श्री सूरिसम्राट् धर्मराजा नगर**' मां तमाम तपस्वीओनुं सामूहिक **ज्ञानपूजन;** सतत स्मृतिपथमां रहे तेवी तपस्वीओ सहितनी भव्यातिभव्य **रथयात्रा;** केटला वर्षो बाद थयेल सुरतमां वसता तमाम जैनोनी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नवकारशी (संघजमण); तपस्वीओनुं सामूहिक **बहुमानादिक** तपना उजमणानो प्रसंग यादगार बनी गयो.

विशेषमां सामूहिक ज्ञान पूजन प्रसंगे पूज्य आचार्य भगवंते सूचन कर्युं के आराधनानी कायमी स्मृति माटे परमात्मानी भक्ति साथे ज्ञानभक्ति थाय तेम विचारवुं जोइए. श्रीसंघनी अनुकूळता–भावना मुजब––

(१) अंजनशलाका संबंधी महोपाध्यायजी श्री सकलचंद्रजी गणिकृत 'प्रतिष्ठाकल्प'

(२) अभ्यासु जीवोने उपयोगी थाय तेवी 'श्री हैम नूतन लघु प्रक्रिया' अने

(३) पू. धर्मराजा गुरुदेवे संगृहीत करेल 'श्री प्राकृत सुभाषित संग्रह'

आ त्रण ग्रन्थो प्रकाशित करवानी प्रेरणा करता अमोए तेओश्रीनी वात वधावी लइ **आ त्रणे पुस्तको शेठश्री नेमचंद मेलापचंद झवेरी, जैन वाडी उपाश्रय ट्रस्टना ज्ञानखातामांथी प्रकाशित करवानुं नक्की कर्युं.**

तेना फळश्रुतिरूपे केटलाय वर्षोथी अप्राप्य बनेली आ ग्रन्थ प्राप्य बनी. ते माटेना मुद्रणनी तमाम व्यवस्था **जीगी प्रीन्टर्सवाळा श्री जीतुभाईए** करी आपी. तेमनो अमे हार्दिक आभार मानीए छीए.

प्रांते आशा राखीए के अंजनशलाका–विधिनो आ अनुपम ग्रन्थ पूज्य आचार्यभगवंतादि मुनि भगवंतोने तेमज सुज्ञ विधिकारकोने विधिमां सविशेष उपयोगमां आवे जेथी अमारो आ प्रयास सफळताने पामे.

ली.

शेठश्री नेमचंद मेलापचंद झवेरी जैन वाडी उपाश्रय ट्रस्टना ट्रस्टीओ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आवकार.

—विद्वद्वर्य पूज्य पंन्यासजी श्री शीलचंद्रविजयजीगणी महाराज

संविग्नशिरोमणि, वाचकपदप्रतिष्ठित, बहुश्रुत, महोपाध्याय श्री सकलचन्द्रजी गणीश्वरे पोताना पूर्वाचार्योए रचेला विधविध प्रतिष्ठाकल्प-ग्रंथोने नजर सामे राखीने, ते आचार्योनी तथा ग्रंथोनी आम्नाय-गुरुगम-मर्यादाने संपूर्णपणे वफादार रहीने, आशरे ४५० वर्षो अगाउ, तपागच्छाधिपति परम गुरुदेव श्रीमद् विजय दानसूरीश्वरजी महाराजना तत्त्वावधानमां, "श्री प्रतिष्ठाकल्प" नामे ग्रंथनुं संकलनरूप निर्माण कर्युं, ते पछी अद्यावधि श्री जिनेश्वर भगवंतोनां बिंबो तथा चैत्योनी प्राणप्रतिष्ठा-प्रतिष्ठाना लोकोत्तरविधानमां एक प्रकारनी व्यवस्था के एकवाक्यता सधाइ छे अने अखंडपणे चाली आवी छे. आ प्रतिष्ठाकल्पनी संकलना पछी, ज्यारे ज्यारे अंजनशलाका थइ त्यारे त्यारे, एक सरखां विधि-विधान ज थवा मांडयां. पहेलां एवुं हतुं के ज्यारे जेने जे आचार्यकृत "कल्प" प्रमाणे करशनुं मन थाय त्यारे ते तेना आधारे तेम करता हशे. परंतु श्रीसकलचन्द्रजी महाराजे आ "कल्प" रच्यो, त्यार पछी प्रायः, ज्यारे पण, ज्यां पण, जेणे पण, अंजनशलाकानुं विधान कर्युं-कराव्युं, तेणे आ "कल्प" नो ज आधार लीधो छे; अने एना सबळ पुरावा लेखे, आ प्रकाशनना पाछळना परिशिष्टमां मूकायेलुं, "प्रतिष्ठा कल्पस्तवन" लइ शकाय. आवी बीजी कृतिओ पण मळे छे, अने ते बधुं जोतां समजाय छे के छेल्लां सो-दोढसो वर्षोना गाळामां थयेली प्रतिष्ठाओमां, आधारग्रंथ तरीके प्रस्तुत "कल्प" नो ज उपयोग थतो रह्यो छे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रीमान् सकलचन्द्रजी महाराज माटे एम कहेवाय छे के तेओ कपडवणजमां बिराजता हता त्यारे, आजे होळीचकलाना 'पंचना उपाश्रय' वाळा विस्तार तरीके जाणीता भागमां तेओ एकवार काउसग्ग धरीने ऊभा रह्या. काउसग्ग अभिग्रहवाळो हतो, ने आजे शो अभिग्रह करवो ?—एवो विचार कर्यो त्यां ज, तेमनी नजरे, पाछळना महोल्लामां (कुंभारवास होवाथी) पसार थता गधेडाओ उपर पडी, तेमणे अभिग्रह कर्यो के गधेडो भूंकवानो अवाज न संभळाय त्यां सुधी मारो काउसग्ग. तेओ तो काउसग्गमां स्थिर थइ गया; पण योगानुयोग एवो बन्यो के पेला सैंकडो गधेडाओना टोळाने कुंभार लोको काम अंगे बहार लइ जइ रह्या हता, ने तेओ तो तरत ज चाल्या गया ! हवे त्यां एक पण गधेडो रह्यो नहि. अने महाराजनी कसोटी एवी तो आकरी थइ के बराबर त्रण दिवस पछी ए टोळुं पाछुं आव्युं ! पण प्रतिज्ञा एटले प्रतिज्ञा ! एमां कोइ संकल्प–विकल्प केवो ? उपाध्यायजी महाराजे पूरा त्रण रात दिवस काउसग्ग ध्याने ऊभा ऊभा पसार कर्या, अने ए समयगाळामां तेओए विशिष्ट शास्त्रीय राग–रागिणीमय "सत्तरभेदी पूजा" नी अलौकिक रचना करी. पोतानी ए रसमस्त अने भक्तिभरपूर रचनामां आ आखीये घटनानो निर्देश आपती एक पंक्ति तेओए गूंथी दीधी छे—

"सकल मुनीसर काउसग्ग ध्याने"

अने आवा प्रामाणिक, तपस्वी, भक्तिवंत, पवित्र पुरुषे संकलेलो अने निर्मेलो "**प्रतिष्ठाकल्प**" शासनमां, संघमां अने गच्छमां निर्विवाद स्थान पामे, तेमां शी नवाइ होय ?

आ "प्रतिष्ठाकल्प" हजी थोडां वर्षो पहेलां सुधी तो आपणने हस्तलिखित प्रतिओना स्वरूपमां ज उपलब्ध हतो. सामान्य रीते, प्राणप्रतिष्ठानुं विधान श्रीआचार्यमहाराजोना ज हाथे करवानुं होवाथी, एमना सिवाय आ "कल्प" नो उपयोग बीजाओने माटे

॥१०॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बहु आवश्यक नहोतो, वळी, अंजनशलाका पण जवल्ले ज थती, अने ते थाय त्यारे पण त्यां श्रीगच्छपति आचार्य के श्री पूज्यनी उपस्थिति रहेती, तेथी आ "कल्प" नी हस्तप्रतिओथी ज काम सरी जतुं, वळी, वचमां तो एवो पण गाळो आवी गयो के अंजनशलाका ज थती न हती. अंजनशलाका करवी–कराववी, ए लोढाना चणा चाववा समुं दुष्कर काम मनावा मांडेलुं, खास करीने पालीताणामां शेठ केशवजी नायकनी, शेठ नरशी केशवजीनी तथा बाबुना देरासरनी अंजनशलाकाओ वखते जे अनुभवो थया, त्यार पछी तो अंजनशलाकानी प्रवृत्ति लगभग बंध थइ गइ. आ संजोगोमां अंजन–प्रतिष्ठाकल्पनी प्रतनुं मुद्रण तो संभवे ज शेनुं ?

एक तो आ कारण. अने बीजुं कारण ए के "प्रतिष्ठाकल्प" नी रचना पछीना सो वर्ष पछी, धीमे धीमे संविग्नपक्ष घटतो गयो, शिथिलवृत्ति वधती गइ अने ते कारणे ज्ञानाभ्यासमां घणी मंदता आवी. आथी मूळे शुद्ध अने साफ एवा "कल्प" ना पाठमां पण क्यांक क्यांक कोइ नानी मोटी अशुद्धि आवी गइ होय एवी कल्पना थाय छे. एक तो तेनो उपयोग घट्यो, बीजुं उपयोग करनारना भणतरनी अल्पता आवी, आथी आवी कोइ अशुद्धि प्रवेशे तो ते अशक्य नथी.

दायकाओ सुधी आ स्थिति प्रवर्त्या करी. एमां **पूज्य गणिवर्य श्री मूलचंदजी महाराज वगेरे** संवेगीशिरताज महापुरुषोनो उदय थतां संवेगी शाखा अने तेमां ज्ञानाभ्यासनी प्रक्रियानो विकास खूब थयो, परंतु विधि–विधानना, खास करीने अंजनशलाकाना क्षेत्रमां कोइनुं लक्ष्य गयुं नहि, अने ओछामां ओछां ५० वर्ष तो अंजनशलाका विनानां प्रायः वीत्यां, एम कही शकाय.

आ बाबत परत्वे सौथी प्रथम लक्ष्य गयुं प. पू. शासन सम्राट्, तपागच्छाधिपति, बालब्रह्मचारी, आचार्य महाराज **श्रीविजयनेमिसूरीश्वरजी महाराजनुं** तथा तेओना पट्टशिष्यो–प्रशिष्यो **पूज्यपाद आ. श्रीविजयोदयसूरिजी म. तथा पूज्यपाद आ. श्रीविजयनन्दन-**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सूरिजी म. आदिनुं. ज्ञाननुं उत्कृष्ट बळ एमनी पासे हतुं. ब्रह्मचर्यनां अणीशुद्ध पालनथी प्राप्त करेली सात्त्विकतानी अनन्य ताकात हती. जिनशासननी निष्प्राणप्राय बनेली रीतिओने पुनर्जीवन बक्षवाना ध्येयने सर्वथा तेओ समर्पित हता. एमणे कंइक जीर्ण–नष्टप्राय बनेलां तीर्थोनो पुनरुध्धार कर्यो. सुविहित साधुओ माटेनी लगभग भूलाइ चूकेली के दुष्कर बनेली योगोद्वहननी प्रणालिकानुं पुनः स्थापन कर्युं. साधुओमां नहिवत् बनेली संस्कृत–प्राकृतना तेमज सैद्धांतिक अध्ययननी परिपाटीनुं पुनरुत्थान कर्युं. साधुनी धर्मदेशना (व्याख्यान) नी पद्धतिनुं आमूल नव संस्करण करीने आजनी देशनापद्धतिनुं बीजारोपण कर्युं. अने आवां अनेक यशस्वी कार्योनी माफक ज, आपणां देरासरोमां थतां के देरासरादिने लागतां धार्मिक विधि–विधानोनो पण पुनरुद्धार एमणे कर्यो. प्राचीन आचार्योना कल्पोनो अनेक हस्त-प्रतिओ मेळवीने, विधि–विधाननां अनुष्ठानोनी तरेहतरेहनी अधिकृत सामग्रीओ प्राप्त करीने, तेनुं ऊंडुं अवगाहन–मनन–परिशीलन करवा द्वारा एक बाजु ते महापुरुषोए श्री सिद्धचक्रमहापूजन, शांतिस्नात्रादि विधि, बिंबप्रवेश–प्रतिष्ठादि विधि, नंद्यावर्त्त महापूजन, अर्हन्महापूजन इत्यादि शास्त्रीय अने पूर्वाचार्यो द्वारा मान्यता प्राप्त अनुष्ठानोने सुसंकलित करीने प्रकाशमां मूक्यां, अने सैकाओथी वीसरायेलां ते परम पवित्र अनुष्ठानोनो पुनः प्रारंभ कराव्यो; तो बीजी बाजु, तद्दन वीसरायेली अंजनशलाका–प्राणप्रतिष्ठानी क्रियाने, तेना आधाररूप प्रस्तुत "प्रतिष्ठाकल्प" ने तेमज "अंजनशलाका ए परम दुष्कर वस्तु छे, तेने करवानी–कराववानी ताकात आ काळमां कोइनी नथी" ए प्रकारनी, दायकाओथी लोकमानसमां घर करी गयेली फडकने के मान्यताने दूर करीने अंजनशलाकाना अनुष्ठानने–पुनः सुग्रथित करी दीधां अने तेनो स्वयं स्वहस्ते अमल पण शरु करी दीधो.

सौ प्रथम वि. सं. १९८३ मां प. पू. शासनसम्राटे, चाणस्मा नगरमां नानकडा संक्षिप्त स्वरूपमां, एक अंजनशलाका करी. मारी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समज प्रमाणे आ एक प्रयोग–अखतरो हतो, जेनाथी "अंजनशलाका करवी एटले मोतने नोतरवुं" एवी बीकमां तथ्य केटलुं, तेनो क्यास मळी रहे. आ प्रयोग निर्विघ्न सफळ थतां, सं. १९८४ मां खंभातना श्री स्तंभन पार्श्वनाथनी प्रतिष्ठाना अवसरे तेओश्रीए विशेष जाहेर रूपमां अंजनशलाका करी.

स्वयं प्रबळ सत्त्वशाली अने नैष्ठिक ब्रह्मचारी महापुरुष हता, ने साथे पू. **उदयसूरीश्वरजी महाराज** जेवा समर्थ ज्ञाता अने योगी जेवा अनुभवसंपन्न शिष्य हता, ने विधिकारक श्रावको पण ते काळना भद्रिक, पवित्र अने सात्त्विक श्रावको हता, एटले शी खामी रहे ? ने आवी परिपूर्णता होय त्यां विधि पण केवो दिव्य, विशुद्ध अने मंगलकारी बनी रहे ? ने तो त्यां निष्फळता के विघ्नो संभवे पण केम ?

आ पछी सं. १९८९मां श्रीकदम्बगिरितीर्थमां तेओश्रीए, नीचेना श्रीमहावीर स्वामी जिनालयनी प्रतिष्ठा–तीर्थोद्धारना महान अवसरे, खूब विशाळ फलक पर अंजनशलाका करी–करावी. ए वखते पचीसेक हजारनी मेदनी त्यां एकत्र मळेली. वळी, लोकोमां फफडाट पण बहु हतो, अने विरोधीओ तरफथी फेलाववामां पण आवेलो के पालीताणानी अंजनशलाका वखते मरकी फाटी नीकळेली ने घणी जानहानि थइ हती, ते पछी कदी कोइए साहस कर्युं नथी; पण नेमिसूरिजी आ वखते करावे छे, ते मोटुं साहस छे, सावधान रहेजो; न करावबी जोइए–व. व. वातो घणी प्रचारवामां आवी हती. छतां शासन सम्राट्ना ब्रह्मतेज परना विश्वासे ते प्रसंगे पचीस हजार लोक भेगुं थयुं ज. **मोटा** महाराज अने तेमना समर्थ **शिष्य–प्रशिष्योए** तथा समर्थ क्रियाकारकोए निर्भय बनीने, संपूर्ण शुद्धि तथा विधि सावधानीने अलौकिक उल्लासथी अंजनशलाका करी–करावी अने छेल्ला दिवसे कहे छे के वावाझोडानो तथा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लोकोने झाडाऊलटीनो उपद्रव थयो पण खरो, परंतु, आवुं कांइ पण बनवानी शक्यताओ मनमां राखीने ज सावधान रहेला शासनसम्राट्श्री अने तेमना शिष्य-प्रशिष्य पूज्योनी बेलडीना न वर्णवी शकाय तेवा यौगिक सामर्थ्यथी अने मंत्रसाधनाथी ते विघ्नो लेश पण जफा पहोंचाडया विना समाप्त थइ गया; कोइ जानहानि तो शुं, पण सामान्य झाडा-ऊलटीथी आगळ कोइनी तबियत पण लथडी, के वावाझोडाने लीधे कांइ नुकसान पण न थयुं. आ संपूर्ण घटना शी रीते बनी ने एमांथी केम बची गया—ते नजरे जोनार—अनुभवनार व्यक्तिओ आजे य हयात छे.

कहेवानुं ए छे के आ रीते पूज्य शासनसम्राट् गुरुभगवंतनी अदम्य हिम्मतने परिणामे अंजनशलाकानां लोकोत्तर सत्त्वशाली विधानने पुनर्जीवन मळ्युं, अने दायकाओथी तेना विशे व्यापेली बीक एकझाटके टळी गइ. अने आ पछी तो मात्र शासनसम्राट् गुरुमहाराजे ज नहि परंतु अन्यान्य आचार्य महाराजोए पण अंजनशलाका कराववा मांडी, अने सौनां कार्यो विना विघ्ने पार पडवा लाग्यां.

आम छतां, ए अंजनशलाकाओनुं प्रमाण बहु मर्यादित हतुं, अने लोको पण समाजमां विशेष पूज्यभाव प्राप्त करनार पूज्यो पासे ज ते कराववानो आग्रह सेवता. परंतु समय वीततो गयो, तेम आ विधाननुं प्रमाण पण वधतुं गयुं ने देरासरो तथा जिनबिंबोनी आवश्यकता पण वधती ज गइ. आ परिस्थितिमां प्रतिष्ठाकल्पनी हस्तप्रतिओनो टांच वर्तावा लागी, अने वळी सर्वत्र विधानमां एकवाक्यता जाळववानुं पण मुश्केल बने तेवुं थयुं. आथी, केटलांक वर्षो अगाउ, बे क्रियाकारक श्रावक गृहस्थो--**पं. श्री छबीलदास के. संघवी तथा श्री सोमचंद ह. शाह छाणीवाळाए मळीने, पूज्यपाद आ. श्री विजयोदयसूरिजी म.** आदि विशिष्ट

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पूज्योनी अनुमति तथा मार्गदर्शन मेळववापूर्वक अने समाजना धुरीण क्रियाकारक श्रावकोनी साथे विचार विनिमय करवापूर्वक प्रस्तुत "प्रतिष्ठाकल्प"नी एक अधिकृत वाचना तैयार करी, तेनो दिवसवार क्रम गोठवीने मुद्रित करी. ए प्रकाशन पछी तो अंजनशलाकानुं प्रमाण खूब वध्युं. छेल्लां थोडांक वर्षोना गाळामां, एक वर्षमां एक आचार्यदेवना हाथे, सरेराश एक अंजनशलाकाथी लइने पाछळनां पांच-सात के दश वर्षथी तो लगभग एकेकना हस्ते त्रण-चार अंजनविधानो थतां संभळाय छे. आ संयोगोमां क्रियाकारोनी खेंच पडी, तो ते पण हवे मोटा प्रमाणमां उपलब्ध छे; अने प्रतनी खेंच पडतां उपर्युक्त प्रकाशननुं यथावत् पुनर्मुद्रण पण ताजेतरमां थयुं छे, जे पण आजे तो अलभ्यप्राय छे.

जिज्ञासु अने अभ्यासीओना मनमां केटलाक वखतथी एक विचार प्रवर्ततो रह्यो छे के प्रगट थयेली प्रतमां हजी पण केटलीक क्षतिओ निवारीने वधु सुग्रथित संकलन, प्रतना मुद्रण पछी थयेला व्यवहारु अनुभवोना आधारे, थवुं जरूरी गणाय. अलबत्त, **मूळभूत रीते कोइ ज फेरफार के सुधारा-उमेरा न कराय, ने नथी ज थया;** छतां, केटलीक व्याकरणनी अने छंदशास्त्रनी अशुद्धिओ सरळताथी निवारी शकाय तेवी हती; उपरांत, प्रतिष्ठाकल्पनी, महान आचार्य देवोनी नजरतळे पसार थयेली ने तेमना हाथे शोधायेली हस्तलिखित प्रतिओमां केटलुंक वधु शुद्ध अने समुचित हतुं;–**आ बधांनो उपयोग करीने नवेसरथी आ प्रत तैयार करवामां आवे, अने तेमां मूळमां नहि, किंतु टिप्पणीमां के परिशिष्टोमां अंजनविधानमां प्रयोजाती केटलीक बाबतोनो समावेश, सूचनो साथे करवामां आवे तो एक सुसंकलित अने अधिकृत प्रकाशन थाय.**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मारा जेवा केटलाको पैकी एक मुनिराज श्री सोमचन्द्रविजयजी पण खरा. तेमना पूज्य बे गुरुदेवोना सीधा मार्गदर्शन हेठळ तेमणे वारंवार अंजनविधानोमां सक्रिय भाग तथा रस लीधो, अने ते वखते पूज्यो साथे तथा कुशळ विधिकारक गृहस्थो साथेना परामर्शने परिणामे, तेमणे वडीलोना आदेश अने मार्गदर्शन अनुसार, उपरना विचारने अमलमां मूकवानो निर्णय करी, ते माटे पुरुषार्थ आदर्यो. तेमना बे-अढी वर्षना अविरत-सतत पुरुषार्थनुं परिणाम प्रस्तुत प्रकाशन छे, एम कहेवुं जोइए. आ काम माटे तेमणे संस्कृत पंडितो, कुशळ विधिकारक सद्गृहस्थो, विधिविधान विशेषज्ञ पूज्य आचार्यादि मुनिराजो वगेरे सौनो पत्र द्वारा तथा प्रत्यक्ष संपर्क कर्यो छे, सौना अभिप्रायो अने मार्गदर्शन मेळव्यां छे, अनेक प्राचीन-नवीन प्रतोनुं सूक्ष्म अवगाहन कर्युं छे अने ते बधाथी वधीने पोताना पूज्य गुरुवर्योना शुभाशीर्वादनुं बळ मेळव्युं छे. अने आथी ज तेओ आ प्रकाशनने-संपादनने खूब सारुं कही शकाय तेवुं बनावी शक्या छे.

आ प्रकाशनथी अंजनशलाकाना विधानमां खूब ज सरळता अने विशेष शुद्धि आवशे, अशुद्धि अने अविधिथी बचवुं ए ज आ प्रकाशननुं लक्ष्य होवाथी, आना आधारे विधान करवा द्वारा विधि अने शुद्धि सचवावाथी आराधक आत्माओ माटे विशेष लाभनुं कारण बनशे.

मुनिश्री सोमचन्द्रविजयजी विशे कहेवुं जोइए के तेमणे नानी उंमरे दीक्षा लइने, गुरुजनोनी कृपानी छायामां ज्ञानाध्ययन करीने तेने पचाव्युं छे, अने तेना परिपाकरूप विनय, सौम्यता अने सरळता-आ गुणो सारा प्रमाणमां विकसाव्या छे, मने तेमना आ गुणो प्रत्ये विशेष लगाव छे अने आ गुणो हजीय विकसे तेम मारी अपेक्षा छे. तेमने

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

माटे विधि–विधानना आ शिरमोर समान ग्रंथनुं संपादन ए जीवननुं प्रथम छतां उत्तम साहस छे, अने तेमां तेओ सारा सफळ बन्या छे, एम मने जणायुं छे, तेमणे आ विषयमां ऊंडुं खेडाण कर्युं–आदर्युं छे, तो आ तके हुं इच्छुं के अर्हन्महापूजन अने नंद्यावर्तमहापूजन जेवां मंगलमय विधानोनुं पण, आजनी परिस्थितिने अनुकूळ पडे तेवुं अने सुचारु संस्करण तेओ तैयार करे.

आवा साधु अमारा समुदायनी शोभा छे, आवा साधुओ द्वारा समुदाय, शासननी–संघनी सेवा करवानी सरस तक साधी ले छे, ए पण मारा-अमारा सौ माटे गौरवनी वात छे. शासनदेव तेमनामां संघनी अने समुदायनी आवी सेवा करवानुं सामर्थ्य पूरो–प्रेरो तेवी प्रार्थना साथे.

शीलचन्द्रविजय
ता. २५–२–८६

卐

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अंतरनी वात

संविग्न शिरोमणि **महोपाध्याय श्रीमत्सकलचंद्रजी गणिकृत 'प्रतिष्ठाकल्प'** सौ प्रथम आठ दायका पूर्वे श्री भीमसी माणेकजीए छपाव्यो. पछी वि. सं. २०१२मां क्रियाविधिज्ञ **श्रीयुत सोमचंदभाई हरगोविंददास छाणीवाळा तथा पंडितवर्य श्रीयुत छबीलदास केसरीचंद संघवीए पूर्वना** महापुरुषोनी निश्रामां थयेल अंजनशलाका विधिना बहोळा अनुभव ज्ञानना आधारे संयुक्त प्रयासथी व्यवस्थित गोठवी प्रताकारे प्रकाशित करी. त्यारबाद पंदर वर्ष पछी वि. सं. २०२७मां **श्रीयुत सोमचंदभाईए** केटलाक सुधारा साथे फरीथी द्वितीयावृत्ति प्रकाशित करी. जोगानुजोग बराबर बीजा पंदर वर्ष बाद एज प्रतिष्ठाकल्पनी प्रत संशोधित पाठ सहित फरी प्रकाशित थइ रही छे.

अंजनशलाकानुं विधान छेल्लां केटलांय वर्षोथी सविशेष थवा लाग्युं छे छतांय विधि विधान संबंधी रसना अभावे के ऊंडाणपूर्वकना ज्ञानना अभावे विधि-विधान वखते जुदी जुदी प्रतो साथे राखी ते ते विधि योग्य जरूरी पाना शोधवा पडे छे. विविध विधिकारोना विभिन्न अभिप्रायोने कारणे क्यारेक मुंझवणभरी स्थिति ऊभी थाय छे.

तेथी शत्रुंजय डेम, केशरियाजी नगर-पालीताणा, भावनगर, साबरमती वगेरे अंजनशलाका-प्रतिष्ठा प्रसंगे संघकौशल्याधार परम पूज्यपाद **आचार्यदेव श्रीमद् विजयनंदनसूरीश्वरजी** महाराज साहेब, धर्मराजा दादा गुरुदेव **परमपूज्यपाद आचार्यदेव श्रीमद्** ॥१८॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विजय कस्तूरसूरीश्वरजी महाराज साहेब; विद्वद्वल्लभ परमपूज्य **आचार्यदेव श्रीमद् विजय धर्मधुरंधरसूरीश्वरजी** महाराज साहेब आदिना सान्निध्यमां अंजनशलाका संबंधी तेओश्रीना बहोळा अनुभव–ज्ञानखजानामांथी तेमज तेओश्रीनी प्रतोमांनी टिप्पण के नोंधपोथीमांनी विशिष्ट नोंधोनां आधारे ज, विविध प्रतोनो आश्रय न लेता प्रतिक्रमण विधिनी जेम सरळताथी एक पछी एक विधान थया ज करे तेवी एकाद प्रत तैयार करवा जिनशासनशणगार परमपूज्यपाद् आचार्यदेव श्रीमद् **विजय चंद्रोदयसूरीश्वरजी** महाराज साहेब तथा सरलस्वभावी परमपूज्यपाद् गुरुदेवश्री **आचार्यदेव श्रीमद् विजय अशोकचंद्र-सूरीश्वरजी** महाराज साहेब मुलुंड, चोपाटी, जोगेश्वरी, वालकेश्वर, नागेश्वर, बारामती, बाबुलनाथ–मुंबई, सुरत–रांदेर रोड, पालीताणा–सांडेराव, आरीसा भवन, समवसरण के पीपरलानी अंजनशलाका प्रसंगे वारंवार प्रेरणा करता रह्या.

तेओश्रीनी शुभाशीर्वाद समन्वित आज्ञानुसार पालीताणा वि. सं. २०४०ना चातुर्मासमां पूज्य गुरुदेवश्रीनी साथो साथ अमोए तेमज **मुनि श्री कैलासचंद्र वि; मुनि श्री निर्मलचंद्र वि; मुनि श्री प्रशमचंद्र वि. तथा मुनि श्री विबुधचंद्र वि. आदिए** मासक्षमणनी तपश्चर्या करी. ते समयनी शांतिनो सदुपयोग करी अंजनशलाका विधि संबंधी संपूर्ण सामग्री संगृहीत करी अने वि. सं. २०४१मां सुरतमां पूज्य गुरुदेवश्री साथे **सामुदायिक सिद्धितपना** समये संगृहीत सामग्रीनुं संशोधन–संकलन पूज्य वडीलोनी सूचना–सलाहना आधारे करवामां आव्युं.

विधि–विधानना महत्त्वपूर्ण आ ग्रंथनुं संशोधन–संकलन अनुभवीना अनुभव–मार्गदर्शन वगर अशक्य ज गणाय. तेथी जेमनी पावननिश्रामां अनेक अंजनशलाकामहोत्सव थया छे तेवा **प. पू. आ. श्री विजय चंद्रोदय सूरीश्वरजी महाराज** तथा विद्वद्वर्य

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प. पू. आ. श्री **विजय हेमचंद्रसूरीश्वरजी** महाराजनुं जरूरी मार्गदर्शन, पू. गुरुदेव आ. श्री **विजय अशोकचंद्रसूरीश्वरजी महाराजनी** अंतरनी मनोकामना, विविध विषयक तलस्पर्शी ज्ञान–अनुभव संप्राप्त करेल छतां विनयादिगुणगणालंकृत, सौजन्यशील विद्वद्वर्य **पू. पंन्यासजी श्री शीलचंद्रविजयजी गणी महाराजे** आ प्रत संबंधी संपूर्णमेटरनुं सूक्ष्मावलोकन करी नानी–मोटी दरेक बाबतोमां सौहार्दभावे लागणीपूर्वक यथार्थ रीते आपेल सलाह–सूचन; विद्वन्मतल्लिका माननीय पंडितवर्य श्री **चंद्रशेखरजी झानुं** पाठांतरोमां स्पष्ट अर्थघटन थइ शके तेवुं निरीक्षण; विधि संबंधी नानामां नानी हकीकत पण कदी न वीसरी जता पू. शासनसम्राट्श्री आदि ज्ञानी गुरुभगवंतोनी निश्रामां तैयार थयेल श्री **केशुभाई भोजकनुं** अनुभव वैशिष्ट्य आ सर्व सहायक बळना आधारे ज प्रतनुं संपादन शक्य बन्युं छे.

पाठान्तरोना निरीक्षण माटे **श्री जैनानंद पुस्तकालय, श्री मोहनलालजी ज्ञानभंडार, श्री नेमि–विज्ञान–कस्तूरसूरि ज्ञान मंदिर, श्री देवसूर–आणसुर गच्छ तथा श्री हुकममुनिजी ज्ञानभंडार आदि सुरतना ग्रंथागारोना** व्यवस्थापकोए **हस्तलिखित प्रतो आपवानी** सहृदयता बतावी तेओने पण धन्यवाद घटे छे.

प. पू. आचार्यदेव श्री **विजय चंद्रोदयसूरीश्वरजी** महाराजे **'आशीर्वचन'** मोकली तेमज पू. पंन्यासजी श्री **शीलचंद्रविजयजी** गणी महाराजे पंडित श्रीरंगविजयजी विरचित श्रीपार्श्वनाथपंचकल्याणकगर्भित–अंजनशलाकाना दशे दिवसना विधानने वर्णवतुं— **'श्री प्रतिष्ठाकल्पस्तवन'** तथा **'आवकार'** नुं लखाण मोकली उत्साह द्विगुणित करी उपकृत करेल छे.

अमारा पूज्य गुरुदेव आचार्यदेव श्री **विजय अशोकचंद्रसूरीश्वरजी** महाराजनी एवी प्रबळ भावना खरी के मारा हस्तक ||२०||

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रीजिनेश्वर भगवंत संबंधी ज कोइक ग्रंथ प्रथम तैयार थाय अने ते ग्रंथ पण कोइ एक संघ के ट्रस्ट द्वारा ज संपूर्ण प्रकाशित थाय. तदनुसार आ प्रत तैयार थता तेना प्रकाशन संबंधी सघळी आर्थिक जवाबदारी **शेठश्री नेमचंद मेलापचंद झवेरी जैन वाडी उपाश्रय ट्रस्ट–सुरतना ट्रस्टीओए सुरतमां थयेल सामुदायिक ४०० सिद्धितपनी स्मृतिमां स्वीकारी** लेता ते ट्रस्टना ज्ञान द्रव्यमांथी आ प्रत प्रकाशित थइ छे.

मुद्रण संबंधी संपूर्ण व्यवस्था **जीगी प्रीन्टर्सवाला श्री जीतुभाई बी. शाहे** खूब ज काळजीपूर्वक करी छे. प्रुफ संशोधन–परिशिष्ट तेमज शुद्धिपत्रक तैयार करवामां **सहवर्ती मुनिभगवंतनो** सहयोग मददरूप बन्यो छे.

प्रांते प्रतिष्ठाकल्पनी प्रतना प्रकाशन द्वारा कंइक श्रुतभक्ति करवानो जीवननो आ प्रथम ज प्रसंग छे. तेथी छद्मस्थसुलभ प्रमाद के अल्पानुभवने कारणे भूल तो रहेवानी ज, छतां य सुज्ञ पुरुषो ते क्षम्य गणी अंजनशलाकाना विधि–विधान प्रसंगे आ प्रत सविशेष उपयोगमां लइ अमारा आ प्रयासने सार्थक करशो तेवी मनोकामना.

प्रत संबंधी लखाणमां जिनाज्ञाविरुद्ध कंइ पण लखायुं होय तो 'मिच्छामि दुक्कडम्.'

आ. श्री विजय अशोकचंद्रसूरि पादरेणु
सोमचंद्र वि.

卐

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रस्तुत प्रत अंगे कंइक

श्री जिनबिंबमां स्थापना निक्षेपे अर्हद्भाव–आर्हन्त्यनी स्थापना करवानुं परमोच्चकोटिनुं विधान छे–" अंजनशलाका–प्राणप्रतिष्ठा. " ए विधान अंतरंगभावविशुद्धिथी वासित हृदय न बने त्यां सुधी शक्य नथी. भावविशुद्धि उत्पादक बळ छे परमात्मा प्रत्येनो संपूर्ण समर्पणभाव. ए कंइक अंशे प्रकटे छे ' विशुद्ध विधि–विधान ' द्वारा. काळने अनुसार अंजनशलाकाना विधानमां संक्षेप के विस्तार थतो रह्यो छे. छतां य सूक्ष्मदृष्टिथी अवगाहन करता जणाय छे के तेना प्राणभूत हार्दमां क्यारे पण फरक पड्यो नथी.

पूर्वना काळमां ज्यारे आवा विधान थता त्यारे ते समये विद्यमान, व्यक्ति–विशेषतया विशिष्ट एवा पू. श्री हरिभद्रसूरिकृत, श्री हेमचंद्रसूरिकृत, वादिवेताल श्री शांतिचंद्रसूरिकृत, श्री तिलकाचार्यकृत, श्री मानतुंगसूरिकृत आदि विविध प्रतिष्ठाकल्पमांथी यथारुचि एकाद स्वीकारी ते रीते विधान करावता. पाछळथी सुबोधा (चान्द्रीय) समाचारो प्रमाणे संक्षिप्त अंजनशलाका विधिनो पण उपयोग थतो. तेथी ते सर्वेनो समन्वय जरूरी हतो. ते भगीरथ कार्य सच्चारित्रचूडामणि, गीतार्थशिरोमणि महोपाध्यायजी **श्रीमत्सकलचंद्रजी** गणिवरे करी पूर्वाचार्योनी कृतिना आधारे एक सळंग '**प्रतिष्ठाकल्प**'नी भेट धरी. आज त्रण त्रण सैका पसार थवा छतां य ए ज ग्रंथ सर्वमान्य रहेता सर्वत्र विधानैक्य जळवाइ रह्युं छे.

ते पूज्य महोपाध्यायश्रीनी उपस्थितिनो समय के सालनो चोक्कस उल्लेख मळतो नथी. प्रस्तुत ग्रंथ कया समयमां अने स्थळमां बन्यो तेनी पण चोक्कस हकीकत मळी आवती नथी. परंतु तेओश्रीनी केटलीक कृतिओ हस्तलिखित प्रतोमांथी मळे छे. तेना आधारे ॥२२॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सत्तरमां सैकाना मध्यमां थया होय तेम संभव छे. अकबर पादशाह प्रतिबोधक जगद्गुरु पू. आ. श्री हीरसूरिजी महाराजना शिष्य हता. तेओश्रीनी (१) मृगावती आख्यान, (२) वासुपूज्य जिन–पुण्यप्रकाश रास; (३) सत्तरभेदी पूजा, सत्तरभेद जिनपूजा प्रबंध (४) बारभावना; (५) साधुकल्पलता–साधुवंदना (६) हीरविजयसूरिदेशना–सूरवेली; (७) मुनिशिक्षा स्वाध्याय; (८) सकलचंद्रकृत स्तवनो; (९) वीरजिन हमचडी–वर्धमान जिनवेली, (१०) वीर हुंडी स्तवन (११) गणधर स्तवन आदि कृतिओ मळे छे.

प्रस्तुत ग्रंथ पण अनुपम भावथी ग्रथित छे तेथी अनेक विधिज्ञ अनुभवी साथे विचार–विनिमय करी ग्रंथकारना विशुद्ध आशयने नजरमां लइ **मूळग्रंथ यथावत्** राखी ज्यां ज्यां जे कंइ पण लेवा जेवुं लाग्युं ते सर्व एकत्रित करी ते ते स्थाने टिप्पण के परिशिष्टमां ते वातनी नोंध लीधी छे.

उर्मिप्रधान आ ग्रंथ होवाने कारणे संस्कृत भाषानो नियम क्वचित् चूकातो हशे छतां य भाषानी दृष्टिए फेरफार के शुद्धि करवा जता ग्रंथकारनी मूळभावना ज विकृत बनी जवा संभव जणाता अर्थसंगत पाठान्तरना आश्रय सिवाय **श्लोको पण यथावत्** राखेल छे. जेम पाना नं. ३० मां क्षेत्रपालपूजनना श्लोकमां–त्रीजुं चरण–**तैलाहिजन्मगुडचन्दनपुष्पधूपैः** तेमज ०गुरुचन्दन० बन्ने पाठ मळे छे. परंतु 'गुरुचन्दन' पाठ योग्य लागता तेज राखेल छे.

विधि समये द्विधा–मूंझवण ऊभी न थाय ते दृष्टिए शिष्टविधिज्ञोनी सलाह अनुसार अनेक पाठ–पाठान्तर जोया बाद जे पाठ समुचित जणायो ते ज राखेल छे. पाठान्तर मूकवामां आव्यो नथी. जेम पाना नं. १०मां 'करोति शान्ति जलदेवताऽसौ' अने 'करोतु' एम बन्ने पाठ मळे छे परंतु अर्थसंगत 'करोतु' पाठ राखेल छे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मंत्रोमां पण शुद्धपाठनी साथोसाथ आगळ–पाछळनो संबंध, विभक्ति, लिंग, वचन, क्रियापद के काळनी दृष्टिए समुचित पाठ राखेल छे. जेम–पाना नं. ६ मां वस्त्रमंत्र ' ॐ ह्रीँ आं क्रौँ नमः ' पाठ मुद्रितमां छे पण हस्तलिखितमां ' ॐ आँ ह्रीँ क्रौँ नमः ' मळे छे तेथी ते राखेल छे.

(२) आगळ-पाछळ संबंधः–पाना नं. २०मां–नंद्यावर्तपूजनना त्रीजा वलयमां सोळ विद्यादेवीना स्थापनमंत्रो मुद्रितमां ' ॐ नमो रोहिण्यै सं त्मां स्वाहा ' एम संस्कृतमां छे परंतु पूजनमंत्रो प्राकृतमां छे तेमज हस्तलिखितमां ते प्राकृतमां ज छे तेथी 'ॐ नमो रोहिणीए सं त्मां स्वाहा' ए रीते प्राकृतमां राखेल छे.

(३) विभक्ति–पाना नं. ११मां ' ॐ ह्रीँ नमो ज्ञान-दर्शन-चारित्रान् ह्रूः सर्वाङ्गं रक्ष रक्ष स्वाहा ' पाठ आवे छे परंतु नमः–ना योगमां चतुर्थी आवे ते दृष्टिए ' ० चारित्रेभ्यः ' पाठ राखेल छे.

(४) लिंगः–पाना नं. १२मां ' ॐ ह्रां ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौं ह्रः अ-सि-आ-उ सा-सम्यग्ज्ञानदर्शनचारित्रान् धर्मं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ' पाठ आवे छे परंतु लिंगनी दृष्टिए ' ०चारित्राणि धर्मः ' आ पाठ राखेल छे.

(५) वचन–पाना नं. १४मां ' ॐ ह्रीँ दिक्पालाय नमः ' पाठ आवे छे परंतु वचननी दृष्टिए ' दिक्पालेभ्यः ' पाठ राखेल छे.

(६) काळः–पाना नं. ८२ छप्पनदिक्कुमारिका महोत्सवमां–' ॐ ह्रीँ अष्टावधोलोकवासिन्यो देव्यो योजनमण्डलं सूतिकागृहं शोधयन्ति–अशोधयन् स्वाहा ' पाठ मळे छे परंतु ' शोधयन्तु ' बराबर लागे छे तेथी ते ज राखेल छे.

आ रीते विशिष्ट स्थानोमां सूचवेल सामान्य फेरफार के पाठान्तर स्वीकार, मात्र अर्थसंगतिनी दृष्टिए ज करेल छे. ते माटे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्री मोहनलालजीनो ज्ञानभंडार, श्री जैनानंद पुस्तकालय, श्री ने. वि. क. सूरि ज्ञानमंदिर तथा तेना हस्तक रहेल श्री देवसूर–आणसूर अने हुकममुनिजी ज्ञानभंडारनी आ ज प्रतिष्ठाकल्पनी विविध प्रतोनो आश्रय लेवा साथे प. पू. आ. **श्री विजयउदयसूरीश्वरजी** महाराज तथा प. पू. आ. **श्री विजयनंदनसूरीश्वरजी** महाराजनी नजर हेठळ नवो लखायेल तथा धर्मराजा प. पू. आ. **श्री कस्तूरसूरीश्वरजी** महाराजे टिप्पणी आदिथी विशेषित करेल प्रतने मुख्य आधारभूत बनावी छे. ते सिवाय मुद्रितमां श्री छबीलदासभाइ संघवी तथा श्री सोमचंदभाइ छाणीवाळा द्वारा प्रकाशित प्रतिष्ठाकल्पनो बन्ने आवृत्ति; आचारदिनकर; निर्वाणकलिका; कल्याणकलिका; शान्तिस्नात्रादि विधि समुच्चय भा. १–२ (आ. श्री विजयअमृतसूरि म. वाळी), अर्हत्पूजन, वीशस्थानकपूजन, कल्पसूत्र सुबोधिका वगेरे प्रतोनो आधार परिशिष्टादिकमां लेवामां आव्यो छे.

वर्तमानमां थता विधानानुसार जे कंइ नोंध, टिप्पण के परिशिष्टमां लीधुं छे. तेनी विगत कंइक आवी छे.

पहेला दिवसनी विधिमां–जळयात्रानुं विधान संक्षेपथी बताव्युं छे. परंतु शांतिस्नात्रादिविधि समुच्चय भा–१ मांथी विस्तारथी कराय ते अपेक्षित छे. तेमज हाल आ विधान कुंभस्थापनाना आगळा दिवसे कराय छे.

'मंगलोच्चारं पठित्वा मङ्गलकलशं मूलमंत्रेण स्थापनम् । ततो व्रीहिर्वाप्यते मंडपवंशेषु सरावेषु च, अष्टप्रमाणं कार्यम्' मंगलोच्चार पूर्वक मूलमंत्रथी कळश स्थापवो अने जवारा ८ वाववा–आटलुं ज लखाण मूळप्रतमां आवे छे परंतु हाल कुंभस्थापना–दीपकस्थापनाने जवारारोपण करावाय छे अने पूर्वमुद्रित प्रतमां पण ते लीधेल छे तेथी शां. वि. स. भा–१ मांथी लइ ते विधि चालु क्रममां राखी,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुंभ–दीपने वधाववानो श्लोक तथा दीपक उपर वासक्षेप करता बोलवानो मंत्र टिप्पणमां लीधा छे. (जुओ पाना नं. १६–१७)

मांगलिक दृष्टिए केटलीक जग्याए लोकाचारथी मंडपमुहूर्त–मांडवामुहूर्त निमित्ते माणेकस्थंभारोपणनी तेमज जिनालयना मुख्य बारणे तोरण बांधवानी विधि थाय छे. तेनी विधि परिकरपूजनमांथी लइ 'परि. १–अ–आ–' (पाना नं. १७१–१७२)मां आपी छे.

बीजा दिवसनी विधिमां–श्री लघुनन्द्यावर्तपूजनविधि मूळप्रतमां आठ वलयानुसारी बतावी छे. पण जो दस वलयवाळो ६४ ईन्द्र–ईन्द्राणीना नामोवाळो पट्ट होय तो ते रीतना पूजननी विधि–शां. वि. स. भा–२ मांथी लइ परि. १–इ–(पाना नं. १७२) मां आपी छे.छेल्ले देववंदन चार थोयने स्थाने आठ थोयनुं राख्युं छे. नूतनजिनालयमां विधान होय तो आचारदिनकरानुसार श्री बृहन्नद्यावर्तपूजन कराववुं उचित छे.

त्रीजा दिवसनी विधिमां:—दशदिक्पाल पूजनमां ईन्द्रादि दिक्पालोनां मंत्रो दरेक हस्तलिखित–मुद्रित कल्पमां जुदा जुदा आवे छे तेथी प्रचलित शां. वि. स. भा–१ प्रमाणे लीधा छे. (पाना नं. ३१) आ विधानमां ग्रह तथा दिक्पालनी माळा गणाय तो सारुं तेथी शां. वि. स. भा–१ मांथी ग्रह–दिक्पालना मंत्रो वर्ण सहित कौंसमां जणाव्या छे. अने ग्रह–दिक्पालनुं पूजन 'चन्दनं समर्पयामि' आदि मंत्रथी करावाय छे ते (पाना नं. ४१ नी) टिप्पणमां आपेल छे. ग्रह–दिक्पालनुं आह्वान तथा बलिप्रदान शां. वि. स. भा–१ प्रमाणे करावाय छे. क्यारेक संपूर्ण विधान ज ते प्रत प्रमाणे विस्तारथी करावाय छे.

सोळ विद्यादेवी पूजन मूळमां संक्षेपथी बताव्युं छे. आचारदिनकर–अर्हत्पूजनादिकमां आवता सोळे विद्यादेवीना श्लोका बोली विस्तारथी पूजन करवुं होय तो ते परि. १–ई (पाना नं. १८१) मां आपेल छे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अष्टमंगलपूजन मूळमां बताव्युं नथी परंतु ग्रह-दिक्पाल पूजन साथे ते करावाय छे तेथी शां. वि. स. भा-१ प्रमाणे (पाना नं. ५० मां) चालु क्रममां ज लीधेल छे.

चोथा दिवसनी विधिमां—श्रीसिद्धचक्रपूजन समये नवे पदोनो जाप थाय ते इष्ट छे तेथी कौंसमां ते सूचवेल छे. अने दर्शनादि चारे पदोना स्थापना श्लोक मूळमां नथी. पण अ चारदिनकरमां आवता ते श्लोको बोली शकाय तेथी ते परि. १-उ- (पाना नं. १८६) मां आपेल छे.

पांचमा दिवसनी विधिमां—श्रीवीशस्थानकपूजन समये-मूळमां बतावेल मंत्रोनी साथे वीशस्थानकपूजनादिमां बतावेल वीशे पदोने लगता श्लोको बोलवा होय अने ते ते पदोनो जाप कराववो होय तो ते परि. १-ऊ (पाना नं. १८७) मां आपेल छे.

छट्ठा दिवसनी विधिमां:—च्यवनकल्याणकप्रसंगे-ईन्द्रना आभूषणो ते ते श्लोक कथनपूर्वक मंत्री धारण करावता तेमज ईन्द्राणीने आभूषणो पहेरावता शिष्टपुरुषो पासेथी प्राप्त थयेल मंत्रो बोलवा होय तो परि. १-ऋ (पाना नं. १९३) मां आपेल छे. अने भगवंतना मात-पितानी विधि लोकव्यवहारथी करावाय छे ते परि. १-ॠ (पाना नं. १९४) मां आपो छे. देववंदन विधिमां च्यवनकल्याणकनुं चैत्यवंदन तथा स्तवन केटलीक हस्तलिखित प्रतमां मळे छे. ते परि. १-ऌ (पाना नं. १९५) मां आपेल छे.

सातमां दिवसनी विधिमां:—जन्मकल्याणक प्रसंगे मेरु पर्वत उपर २५० अभिषेक-श्रीजिनजन्माभिषेकमहोत्सव विस्तारथी कराववो होय तो परि. १-ॡ (पाना नं. १९६) मां आपेल छे. देववंदन विधिमां श्री जिनजन्माभिषेकस्तवन केटलीक प्रतोमां मळे छे ते परि. १-ए (पाना नं. २०५) मां आपेल छे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आठमा दिवसनी विधिमां:—अढार अभिषेक समये ८ अभिषेक बाद मुद्रात्रय द्वारा जिनाह्वान मूळमां संक्षेपथी बताव्युं छे—अढार अभिषेक बृहद्विधि प्रमाणे करवुं होय तो परि. १—ऐ (पाना नं. २०६) मां; १५ अभिषेक बाद चंद्र—सूर्यदर्शन करावाय छे. तेना मंत्रो परि. १—ओ (पाना नं. २०७) मां अने १८ अभिषेक बाद पंचामृत तथा शुद्धजलनो अभिषेक कराववो होय तो परि. १—औ (पाना नं. २०८) मां आपेल छे.

नाम स्थापन समये करवानी विशिष्ट विधि केटलीक प्रतिष्ठाकल्पनी प्रतमां मळे छे. ते परि. १—अं. (पाना नं. २१०) मां आपेल छे.

नवमा दिवसनी विधिमां:—राज्याभिषेक समये राज्यतिलकनो विधि क्यारेक करावाय छे ते मंत्र (पाना नं. १९८ नी) टिप्पणमां, अने नवलोकांतिक देवोना नाम तथा विनंती परि. १—अः (पाना नं. २११) मां आपेल छे.

दीक्षाकल्याणक प्रसंगे—भाववृद्धिमां कारणभूत—कुलमहत्तराना हितोपदेशगर्भित—आशीर्वचन; अलंकार उतारता बोलवानो श्लोक, सर्वविरति सूत्र अने देववंदन करता बोली शकाय ते दीक्षाकल्याणकनुं चैत्यवंदन क्रमसर परि. १—क. ख ग. घ (पाना नं. २१२ २१३।२१४) मां आपेल छे.

दशमा दिवसनी विधिमां:—अधिवासना—अंजननुं सर्वोच्च विधान छे. ते रात्रिए करवानुं होय छे. तेथी कंइपण शरतचूक थाय नहि अने एकदम सरळताथी विधि क्रमसर व्यवस्थित थइ शके ते प्रमाणे अनुभवी शिष्टपुरुषोना अनुभवानुसार गोठववा प्रयत्न कर्यो छे. मूळविधिमां जे कंइपण संक्षेपथी सूचन हतुं ते सर्व विस्तारथी क्रम नंबर आपवा पूर्वक स्पष्ट करेल छे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

त्यार बाद समवसरण स्थापन, निर्वाण कल्याणक, विसर्जनादि विधि यथावत् राखेल छे. तेमज प्राचीन प्रतिष्ठाविधि; जिनबिंबपरिकर-प्रतिष्ठा विधि; कळशारोपण तथा ध्वजारोपण विधि मुद्रित प्रत प्रमाणे आपेल छे.

परिशिष्ट--१मां मूळविधिमां पूरक बनतो विधिओ आपी छे. परिशिष्ट—२मां—ग्रह—दिक्पाल—अष्टमंगल स्थापना—रचनादि; परि—३मां मंडप--वेदिकानुं प्राचीन स्वरूप; परि—४ मां विविध मुद्राओनुं स्वरूप; परि—५ मां जळयात्राना उपकरण परि—६ मां अंजनशलाका विधिमां उपयोगी उपकरण; परि—७ मां अढार अभिषेकमां खास उपयोगी औषधिओ अने परि—८ मां ३६० करियाणानी यादी बतावी छे.

परिशिष्ट—९ मां पू. पं. श्री शीलचंद्रविजयजी गणि महाराजे हस्तप्रति उपरथी उतारो करी मोकली आपेल पं. श्रीरंगविजयजी महाराजे—वि—सं. १८७९ नो सालमां भरुच मुकामे सवाइचंद खुशालचंदे श्रीशंखेश्वर पार्श्वनाथ भगवंतना प्रतिमाजी भरावी तेनो अंजनशलाका करावी ते प्रसंगे दसे दिवसनी विधि प्रतिदिन जे रीते थइ तेनुं स्पष्ट विवरण करतुं—१९ ढालनुं श्रीशंखेश्वर पार्श्वनाथ पंचकल्याणक गर्भित प्रतिष्ठाकल्पनुं स्तवन आपेल छे.

प्रमाद के मुद्रण दोषने कारणे जे कंइ अशुद्धि रही जवा पामी छे **ते शुद्धिपत्रकमां आपेल छे. तो अवश्य शुद्धिपत्रक वांचीने ज प्रतनो उपयोग करवो.**

आ प्रमाणे विधिज्ञ—अनुभववंतना सलाह—सूचनानुसार नव परिशिष्ट सहित प्रतिष्ठाकल्पनी आ प्रत तैयार थइ छे. छतांय कंइक क्षति रही गइ होय तो ते अमारा प्रमादने लीधे हशे. कंइ पण सलाह—सूचन जरूरी लागे तो सुज्ञपुरुषोने करवा विनंती छे.

आ प्रत तैयार करवामां सहायक पूज्य वडील गुरुभगवंतो—मुनिभगवंतोने पुनः स्मरण करवा पूर्वक आ प्रत अंजनविधानमां सविशेष उपयोगमां आवे तेवी अभ्यर्थना । **—आ. श्री विजय अशोकचंद्रसूरि पादरेणु— सोमचंद्र.** ॥२९॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रतिष्ठाकल्प तथा ९ परिशिष्ट सहित अंजनशलाकाना दशे दिवसनी विधिनी

अनुक्रमणिका

	पाना नं.		पाना नं.		पाना नं.
प्रकाशकीय		जवारारोपणविधि	१७	प्रत्येकनो माळा	३१-३८
आवकार		**द्वितीयदिनविधि–**		नैवेद्य	३८
अंतरनी वात		नंद्यावर्तनुं आलेखन	१९	सफेद धजा चढाववी.	३९
प्रस्तुत प्रत अंगे कंइक		नंद्यावर्तपूजनविधि	२४	भैरव पूजन	३९
		अष्टस्तुति देववंदन	२८	सोळविद्यादेवी आह्वान	३९
प्रतिष्ठाविधिपद्यानुवाद	१	**तृतीयदिनविधि–**		,, ,, पूजन	४०
प्रथमदिनविधि–		क्षेत्रपालपूजन	३०	ग्रह आह्वान–बलिबाकुळा	४०
जळयात्रा विधि	६	दिक्पाल आह्वान, बलिबाकुळा	३१	प्रत्येकग्रहनुं आह्वान	४१-४७
कुंभस्थापनविधि	१५	प्रत्येकनुं आह्वान	३१-३८	प्रत्येकग्रहनुं पूजन	४१-४७
दीपकस्थापनविधि	१६	प्रत्येकनुं पूजन	३१-३८	प्रत्येकनी माळा	४१-४७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ग्रहशांतिस्तोत्र ४७
नैवेद्य ४९
अष्टमंगलकुसुमांजलि ५०
प्रत्येकनुं पूजन ५०-५२
नैवेद्य ५२
अष्टमंगल स्थापनमंत्र ५२
शांतिजिनकलश ५२
चतुर्थदिनविधि-
सिद्धचक्रपूजनविधि ५३
क्षेत्रपालादिकपूजन ५३
शासनदेवीपूजन ५३
इन्द्रपूजा ५३
भूतबलिमंत्र ५४
बलि—बाकुळाप्रदान ५४
अंगन्यास ५४
करन्यास ५५
नवपदोने कुसुमांजलि ५६-६२
नवपदोनुं पूजन ५६-६२
नवपदोनी माळा ५६-६२
नवपदनी स्तुति तथा पूजन ६२
देववंदन ६३
शांतिजिनकलश ६३
पंचमदिनविधि—
वीशस्थानकपूजनविधि ६४
क्षेत्रपालादिक पूजन ६४
शांतिघोषणा ६४
मंगलपाठ ६५
वीशेपदोना पूजन ६६
देववंदन ६६
आदिजिनकलश ६६
षष्ठदिनविधि—
च्यवनकल्याणकविधि ६८
क्षेत्रपालादिकपूजन ६८
इन्द्राभूषणमंत्रण ६८
इन्द्रस्थापना ७०
इन्द्राणीस्थापना ७०
माता-पितानी स्थापना ७०
वेदिका उपर स्वस्तिक ७१
अंगन्यास ७१
करन्यास ७१
गुरुपूजन ७२
धर्माचार्यपूजन ७२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिंहासनादिकपूजन	७३
बिंबोपरि वासक्षेप	७३
वासक्षेपयुतदूधथी सर्वांगविलेपन	७३
सदुग्ध कलशस्थापन	७३
कलशमां बिंबस्थापन	७३
बिंब उपर वासक्षेप	७४
मातृकान्यास	७४
बिंब उपर वासक्षेप	७६
कर्णोपदेश मंत्र	७७
वासक्षेप	७८
आशीर्वचन	७७
चौद स्वप्नदर्शन	७८
देववंदन	७८
पार्श्वजिनकलश	७८
सप्तमदिनविधि—	
जन्मकल्याणकविधि	७९
आत्मरक्षा	७९
शुचिकरण	७९
सकलीकरण	७९
बलिबाकुळा	८०
बिंबोपरि कुसुमांजलि	८०
विघ्नोत्त्रासन	८०
जलाच्छोटन	८०
कवचकरण	८०
दिग्बंधन	८०
सप्तधान्यवृष्टि	८१
अंबिकानी पूजा	८१
जिनजन्मविधान	८१
दिक्कुमारिकामहोत्सव	८२
केलीघररचना	८५
रक्षापोटलीबंधन	८५
अरीठानीमालास्थापन	८६
जवनीमाला ,,	८६
जलदर्शन	८६
ईन्द्राणी महोत्सव	८६
प्रभुजीने तिलक	८६
शक्र सिंहासन कंपन	८७
सुघोषा घंटा वादन	८७
मेरु पर्वत उपर गमन	८७
मेरु पर्वत उपर २५० अभिषेक	९०
सौधर्मेन्द्रनो अभिषेक	९१
अष्ट प्रकारी पूजा	९१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अष्ट मंगल आलेखन	९१
अष्ट स्तुति देववंदन	९२
माता पासे जिनबिंबस्थापन तथा ३२ क्रोड सुवर्ण वृष्टि	९२
अष्टमदिनविधि—	
प्रियंवदा–पुत्रजन्मवधामणा	९३
अढार अभिषेक	९४
हिरण्योदकस्नात्र	९४
पंचरत्नचूर्णस्नात्र	९४
कषायचूर्णस्नात्र	९५
मंगलमृत्तिकास्नात्र	९६
सदौषधिस्नात्र	९७
प्रथमाष्टकवर्गस्नात्र	९७
द्वितीयाष्टकवर्गस्नात्र	९८
सर्वौषधिस्नात्र	९९
जिनाह्वानविधि	१००
पंचामृतस्नात्र	१००
सुगंधौषधिस्नात्र	१०१
पुष्पस्नात्र	१०१
गंधस्नात्र	१०२
वासस्नात्र	१०३
चंदनदुग्धस्नात्र	१०४
केशर–साकरस्नात्र	१०५
चंद्र–सूर्यदर्शन	१०५
तीर्थोदकस्नात्र	१०६
कपूरस्नात्र	१०७
केशर–चंदन–पुष्पस्नात्र	१०७
कुसुमांजलि	१०८
अष्टस्तुतिदेववंदन	१०८
नामस्थापनविधि	११२
पत्रदान,केशननाछांटणा	११२
वस्त्राभरणपहेरावबा	११२
नैवेद्यपूजन	११३
बलिबाकुळा	११३
नवमदिनविधि—	
लेखशालाकरणविधि	११४
गोळ–धाणा लेखिनी–मषीभाजन प्रदान	११४
विवाहमहोत्सवविधि	११४
साडीप्रदान	११४
फूल–धूप–वास मूकवा	११४
मुद्रात्रयदर्शन	११४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अधिवासनामंत्र ११४
मींढळ बांधवा ११५
पंचांगस्पर्शविधि ११५
जिनाह्वानविधि ११५
आसनमुद्रा ११६
वास–कपूरादिथी पूजन (वासक्षेप) ,,
चंदनादिथी पूजन ,,
दशीवाळा वस्त्र ढांकवा ,,
नव श्रीफळ मूकवा ,,
विविध फळादि मूकवा ,,
फूलेकुं चढाववुं ,,
पोंखणा करवा ,,
आरती– मंगलदीवो ,,
प्रियंगु–कपूर–बरास अने गोरोचनथी
बिंबोना हाथ उपर विलेपन ,,
नवग्रहोने बलि–बाट ,,
खीरादिनो थाळ मूकवो चोरी बांधवी ,,
चोरी बांधवी
मंडपमां प्रभुजीने स्थापवा ,,
सुवर्णकळश मूकवो ,,
घी–गोळ सहित चार मंगळ–
दीवा स्थापवा ,,
बाट आदिनो थाळ मूकवो ११६
धान्य–जल मूकवा ११६
चार नाना घडा मूकवा ११६
सुंवाळीनां कांकणा करवा ११६
घडा उपर जवाराना शरावला मूकवा ११६
घडाने ग्रीवासूत्र बांधवुं ११६
चैत्यवंदन–शक्रस्तव ११७
चंदन–वासादिसहित–
कसुंबीवस्त्र मुख उपर ढांकवुं
सूरिमंत्रसहितवासक्षेप ११७
वस्त्र दूर करवुं. ११७
सोपारी आदि हाथमां मूकवा. ११७
वाजित्र–धवलमंगल ,,
षोडशांश होम करवो ,,
टीको कराववो. ,,
वस्त्राभूषण पहेराववा. ,,
पांच जातना २५ लाडवा मूकवा ,,
मेवो मूकवो. ,,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

राज्याभिषेकविधि ११८
राज्यतिलकविधि ११८
नवलोकांतिकदेवोनी विनंती ,,
दीक्षाकल्याणकविधि ,,
कुलमहत्तराहितोपदेश ११९
दीक्षास्नान ,,
सर्वालंकारमोचन ,,
पंचमुष्टिलोच. ,,
सर्वविरतिस्वीकार ,,
देवदूष्यवस्त्रनुं स्थापन ,,
अष्टस्तुति–देववंदन १२०
जिनस्वागत–धारणा १२२
दशमदिनविधि—
अधिवासनाविधि १२३
दिक्पालपूजन १२३
ग्रहपूजन १२४
शांतिबलिमन्त्र ,,
बलि-बाकुळाप्रक्षेप १२५
देववंदन १२६
कसुंबी वस्त्र ढांकवुं. १३०
वज्रपंजर ,,
आत्मरक्षा ,,
शुचिकरण ,,
सकलीकरण ,,
मुद्रासहित अधिवासना १३१
मंत्रोच्चार.
सूरिमंत्रसहितवासक्षेप १३१
धूप ,,
कसुंबीवस्त्रापनयन ,,
अक्षरन्यास १३२
घीनुं पात्र मूकवुं. ,,
परमेष्ठिमुद्राथी जिनाह्वान ,,
अधिष्ठायकदेव-देवी आह्वान ,,
अधिष्ठायकदेव-देवी स्थापन ,,
,, ,, ,, सन्निहितकरण १३३
देववंदन ,,
क्षमापना ,,
अंजनविधि १३४
सुखडादि मूकवा ,,
बिंबनुं स्थिरीकरण ,,
अंजननी शलाका मन्त्रवानो मन्त्र ,,
अंजन मन्त्रवानो मन्त्र ,,
अंजनकरण ,,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आरीसो बतावयो	१३५
सूरिमंत्रसहित वासक्षेप	,,
जमणा काने मंत्र न्यास	१३६
,, ,, सुखडादि लगाडवुं.	,,
चक्रमुद्राथी सर्वांगस्पर्श	,,
दहींनु पात्र बताववुं.	,,
धूप करवो.	,,
पांच मुद्रा बताववी.	,,
मंत्रन्यास	,,
वासधूप	,,
केवलज्ञानकल्याणकमहोत्सवविधि	
पद्ममुद्राथी समवसरणमां स्थापन	१३७
वासक्षेप	,,
३६० करियाणानो पडो मूकवो.	,,
पोंखणा करवा	१३७
फुलवासनी वृष्टि	,,
धूपोत्क्षेप	,,
देववंदन	,,
निर्वाणकल्याणकविधि—	१३८
स्नपन	१३९
नव अंगे पूजन	,,
१०८ अभिषेक	,,
भूतबलिमंत्र	,,
बलिप्रक्षेप	१४१
फूलसहितबलिप्रक्षेप	,,
बिंबोपरि कुसुमांजलि	,,
जूनी पूजा दूर करवी.	,,
नवी पूजा करवी	,,
नैवेद्य मूकवा	१४१
उतारण पूर्वक कपूर-घी	,,
देववंदन.	,,
अखंड चोखा मंगलपाठ साथे उछाळवा	१४३
धर्मदेशना	१४४
तंबोलदान	१४५
फलढौकन	,,
चैत्यवंदन	,,
मीठो लाडवो मूकवो.	१४६
१० प्रकारना नैवेद्य मूकवा.	१४६
नंद्यावर्त्तविसर्जन	,,
प्रतिष्ठादेवनुं विसर्जन	,,
सर्वदेवताओनुं विसर्जन	,,
शांतिधारा	,,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कंकणमोचन	१४६
बिंबप्रतिष्ठाविधि	१४७
सकलीकरणादिविधि	१४९
संक्षिप्तप्रतिष्ठाविधि	१५०
जिनबिंबपरिकरप्रतिष्ठा	१६१
कलशारोपणविधि	१६३
ध्वजारोपणविधि	१६५
ध्वजादंड–शिखर–ध्वजामंत्र	१६६
ध्वजा तथा दंडनुं माप	१६७
चोत्रीसो यंत्र	१६८
अष्टमंगलना श्लोको	१६९
परिशिष्ट–१	
परि १–अ	
माणेकस्थंभारोपणविधि	१७१
परि १–आ	
तोरण बांधता बोलवानो मंत्र	१७२
परि १–इ	
लघुनन्द्यावर्तपूजनविधि (दस वलयोवाळी)	१७२
नन्द्यावर्त–वलयोनी स्थापना	१७३
,, पूजन विधि	१८१
परि १–ई	
सोळविद्यादेवीपूजनश्लोक	१८१
परि १–उ	
ज्ञान-दर्शन-चारित्र-तप पदपूजन श्लोक	१८६
परि १–ऊ	
वीशस्थानकपदपूजन श्लोक	१८७
परि १–ऋ	
यज्ञोपवीतादि धारण करवाना मंत्रो	१९३
परि १–ॠ	
मात–पितानी स्थापनानी विशिष्ट विधि	१९४
परि १–ऌ	
च्यवनकल्याणकचैत्यवंदन तथा स्तवन	१९५
परि १–ॡ	
बृहत्स्नात्रविधि	१९६
परि १–ए	
जिनजन्माभिषेकस्तवन	२०५
परि १–ऐ	
जिनाह्वानबृहद्विधि	२०६
परि १–ओ	
चंद्र–सूर्यदर्शनमंत्र	२०७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परि १–औ
पंचामृत अभिषेक २०८
परि १–अं.
नामस्थापनविधि २१०
परि १–अः
लोकांतिकदेवोनी विनंती २११
परि १–क
कुलमहत्तराहितोपदेश २१२
परि १–ख
अलंकारावतारणश्लोक २१२
परि १–ग
सर्वविरतिसूत्र २१३
परि १–घ
दीक्षाकल्याणकचैत्यवंदन २१४

परिशिष्ट–२
परि २–अ
दिक्पालरचना २१५
परि २–ब
ग्रहरचना २१५
परि २–क
अष्टमंगलरचना २१५
परि २–ड
दिक्पाल उपकरणादि २१६
परि २–इ
ग्रहोना आकार–उपकरण २१७

परिशिष्ट–३
मंडप–वेदिकानुं माप २१८

परिशिष्ट–४
मुद्रा २२०

परिशिष्ट–५
जलयात्रा उपकरण २२८

परिशिष्ट–६
अंजनशलाका–प्रतिष्ठा उपकरण २२९

परिशिष्ट–७
अढार अभिषेकविशेषऔषधि २३७

परिशिष्ट–८
३६० करियाणानी यादी २३८

परिशिष्ट–९
प्रतिष्ठाकल्पस्तवन २४५
जिन माता–पिता नामादि कोष्टक २८३
शुद्धिपत्रक २८७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ચ્યવનકલ્યાણક

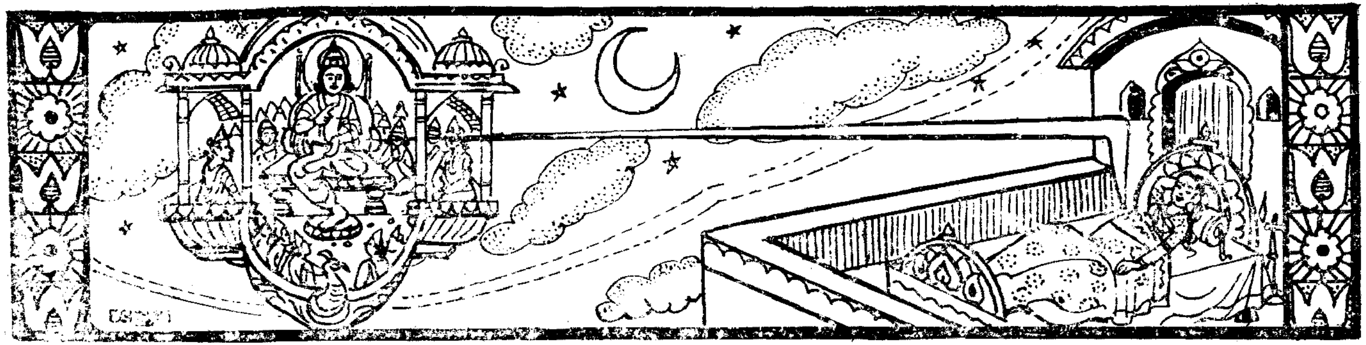

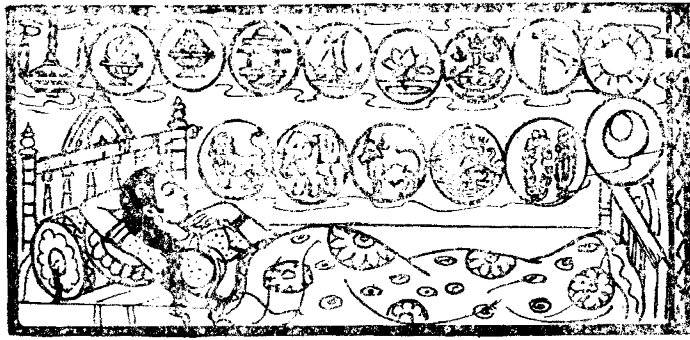

ચૌદ સ્વપ્નદર્શન

જન્મ કલ્યાણક

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

દીક્ષાકલ્યાણક

કેવળજ્ઞાન પ્રાપ્તિ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ॐ

॥ नमो जिणाणं ॥

श्रीशङ्खेश्वरपार्श्वनाथाय नमोनमः

श्री अनंतनाथ स्वामिने नमोनमः ॥

अनन्तलब्धिनिधानश्रीगौतमगणधरेभ्यो नमोनमः ॥

परमोपास्य श्रीविजयनेमि-विज्ञान-कस्तूर-चंद्रोदयसूरिभ्यो नमः ॥

पूज्यपादश्रीमन्महोपाध्याय-श्रीसकलचन्द्रजीगणिकृत-

प्रतिष्ठाकल्प-(अञ्जनशलाकाविधि)

संशोधितपाठ तेमज परिशिष्ट विधिओ सहित

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मांगलिक :-

प्रणम्य श्रीमहावीरं, लब्धसामग्रीसंयुताम् ।
जिनबिम्बस्य प्रतिष्ठापूजां वक्ष्ये विधानतः ॥ १ ॥

श्री महावीरस्वामी परमात्माने नमस्कार करीने प्राप्त थयेली सामग्री सहित श्री जिनबिंबनी प्रतिष्ठा-पूजाने विधिपूर्वक कहीश.

प्रतिष्ठा करनार श्रावकनुं लक्षण :-

विनीत, बुद्धिमान्, प्रीतिवाळो, न्यायोपार्जित धनवाळो, चारित्रशील, द्रव्य-क्षेत्र-काळ-भावनो ख्याल राखनारो, माया-ममता रहित, शुद्ध मनवाळो, श्रद्धाळु श्रावक त्रैलोक्यपूज्य जिनबिंबनी प्रतिष्ठा करवानी योग्यतावाळो छे. ॥ २ ॥ ३ ॥

प्रतिष्ठा करावनार आचार्यनुं लक्षण :-

दर्शन-ज्ञान-चारित्र संपन्न, निष्परिग्रही, प्राज्ञ, प्रश्न-उत्तर-जाणनार, उपशमयुक्त, महा प्रभावक आचार्य प्रतिष्ठा करावावानी योग्यता धरावे छे. ॥ ४ ॥

जे चारित्रशील माणसे न्यायोपार्जित स्वद्रव्यथी मोक्षना ध्येयथी जिनप्रतिमा करावेल छे ते महानुभाव देव-देवेन्द्रो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अने नरेन्द्रोथी पूजित तीर्थंकरपदने भोगवे छे; तेमज तेणे जिनेश्वरनी आज्ञा मानवापूर्वक पोतानो जन्म सार्थक करी पोताना कुळने उज्ज्वल कर्युं छे. ॥ ५ ॥

जे माणस वीतराग परमात्मानी प्रतिमा करावे छे ते परलोकमां सुखकारक धर्मरत्न प्राप्त करे छे. ॥ ६ ॥ ७ ॥

जे माणस ऋषभदेवादि वर्तमान चोवीशीना कोई पण तीर्थंकर परमात्मानी अंगुठा मात्र प्रमाणनी पण प्रतिमा भरावे छे, ते लाँबाकाळ सुधी ऊंचा प्रकारनां स्वर्गसुख भोगवी मोक्ष सुख मेळवे छे. ॥ ८ ॥

मल्लिनाथ, नेमिनाथ अने महावीर स्वामी केवळ वैराग्य प्रेरक होवाथी चैत्यमां स्थापवा पण घरमां स्थापन करेला शुभोत्पादक नथी. ॥ ९ ॥

साक्षी पाठः—मल्लि–नेमि–वीरा, जिणभवणे सावएण पुज्जाइं ।
इगवीसं तित्थयरा, संतिगरा पूइया वंदे (गेहे) ॥१०॥

धर्म–कर्मना मर्मना जाणनाराओए मोक्षसुखमां कारण भूत, दर्शन–ज्ञान–चारित्रना निश्चय रूप अने शुक्लध्यान रूप अग्निथी कर्मकाष्ठने बाळी नांखनार सर्व जिनेन्द्रोनां प्रतिष्ठा पूर्वक अभिषेक वगेरे तमाम कार्यों महोत्सव सहित करवां; ते अभिषेकादि कार्यो बे प्रकारे छे––१–नित्य अने २–नैमित्तिक ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥

जिनेश्वरोनुं नित्यस्नात्र लोकोने परलोकमां हितकर छे अने नैमित्तिकस्नात्र आ लोक अने परलोकमां सुख

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आपनार छे. ॥ १४ ॥

मंडपनुं स्वरुप :-

निर्मळ, विस्तीर्ण अने श्रेष्ठ वेदिकायुक्त तोरणवाळो, लटकती फूलनी माळाओवाळो, चार द्वारवाळो, विविध वाजिंत्रोना शब्दोथी भरपूर अने मंगळगीतोथी युक्त मंडप कराववो. ॥ १५ ॥ १६ ॥

मंडपनुं माप निर्वाण कलिकामांथी जोई लेवुं. (परिशिष्ट नं. ३ मां आपेल छे.)

चार खूणावाळा त्रण हाथना मंडपमां वेदिका करी स्नात्र माटे श्रीजिनेश्वरनी प्रतिमानी स्थापना करवी. ॥ १७ ॥

दशे दिशाओमां दिक्पालो तथा आदित्यादि नव ग्रहो कल्पवा. ॥ १८ ॥

खूणाओमां चार वेदिका छत्र सिंहासन युक्त (कल्पी) करावी इन्द्र संबंधी सर्व कार्य करवुं. ॥ १९ ॥

निर्मळ अने शुद्ध प्रतिमा विधिपूर्वक लावीने महोत्सवपूर्वक इन्द्रपणुं कल्पवुं. ॥ २० ॥

पछी प्रतिमानी उत्तम जातिनां सुगंधी पत्र-पुष्प-जळथी पूजा करवी; ते प्रतिमा सन्मुख विशुद्धिने माटे मूळमंत्रनो उच्चारण पूर्वक १०८ वार जाप करवो. ॥ २१ ॥ २२ ॥

मंत्र :-"ॐ अर्हं नमो अरिहंताणं; ॐ अर्हं नमो सयंसंबुद्धाणं, ॐ अर्हं नमो पारगयाणं ॥"

पछी तेनी बहार पूर्वादि दिशाओमां अनुक्रमे प्रसिद्ध-१ जया, २ अजिता, ३ विजया अने ४ अपराजिता नामनी विद्याओ तेमज शासनदेवी, यक्ष, शक्र अने मंगळनी स्थापना करवी. ॥ २३ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

त्यार बाद कळश स्थापीने " शांति घोषणा " करतां स्वस्तिक आलेखवो. पछी साक्षात् मंत्रोच्चार पूर्वक पुष्पांजलि करवी. तथा जिनेश्वर प्रभु तेमज सर्वदेवोने तैयार करवा, पछी १०८ मुद्रानी किंमतना कंकोल, पुष्प; कपूर, अगर अने चंदनथी श्रीजिनेश्वर प्रभुना बिंबने स्नान कराववुं. पछी गीत वाजित्र करवा. पछी जिनेश्वर परमात्माना अतिशयो याद करवा पूर्वक तीर्थजळथी स्नान करवुं. पछी प्रदक्षिणा–पूजा अने देववंदन करी बिंबने वासक्षेप करवो अने *शलाका (सळी) थी अंजन करवुं. पछी भक्तिपूर्वक ध्वज, चामर, छत्र वगेरे धरवां. पछी सर्व अंगे स्पर्श करी उत्तम नैवेद्य धरवां. आ रीते श्री अरिहंत भगवंतनी पूजा करी सिद्ध महर्षिओ अने श्रावकोने शांति–तुष्टि–पुष्टि आशिष आपवी. ॥२४ थी ३० ॥

पछी आमंत्रेला सर्वने विसर्जन करी *बिंब प्रतिष्ठा करी गुरु शांतिपाठ बोले. ॥३१॥ इति प्रतिष्ठाविधिपद्यभाषानुवाद ॥

तेमां पहेलां वैधृत, व्यतिपात वि. छोडी देवा पूर्वक उत्तममुहूर्त जोवुं.

त्यार बाद भूमि शोधन नीचे प्रमाणे करवुं :—

१०८ हाथ प्रमाणनुं " मंगळघर " करवुं. पछी घरमां तेमज जिनालयमां सुवर्ण जळ लावी नवकार गणी श्रीशांतिनाथ अने पार्श्वनाथ भगवाननुं नाम लेवा पूर्वक "ॐ ह्रीँ अर्हं भूर्भुवः स्वधायै (स्वधा,) स्वाहा " ए मंत्राक्षरे सात वार मंत्री छांटवुं. घरमां तो ते पुष्प–अक्षत अने चंदन सहित पण छंटाय छे. पछी त्यां स्वस्तिक करीने दीपक तथा धूप करवो.

त्यार बाद नीचे प्रमाणेना मापनी वेदिका करवी :-(विशेष माप निर्वाण कलिकामांथी जोई लेवुं.)

---

* आ अञ्जनादि सर्व विधान प्रतिष्ठा कल्पमां आवतां ३१ श्लोकानुसार अञ्जनशलाकाप्रतिष्ठाविधिनुं संक्षिप्तविवरण ज छे. विधिनो प्रारंभ तो पहेला दिवसना जलयात्राना विधानथी ज थाय छे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चार खूणावाळी, त्रण हाथ लांबी पहोळी अने दोढ हाथ ऊंची काष्ठथी जडेली वेदिकाने वांसना मंडप तथा तोरणोथी सुशोभित करवी तथा तेमां पंचरत्न (सोनुं; रुपुं, मोती, परवाळा अने तांबुं.)नी पोटली मूकवी.

प्रतिष्ठाना मुहूर्त पहेला दश दिवस सुधी प्रतिष्ठा करनारे एकासणुं आदि तप करवो तथा ब्रह्मचर्य पाळवुं.

दातण करता बोलातो मंत्र :-ॐ ह्रीँ यक्षाधिपतये नमः ॥

मुख साफ करता बोलातो मंत्र :-ॐ ह्रीँ श्रीँ क्लीँ कामदेवाधिपतये ममाभीप्सितं पूरय स्वाहा ॥

अग्नि मंत्रः-ॐ ह्रीँ र रा रि री रु रू रे रै रो रौ रं रः ज्वालामालिनि अग्निदग्धं अग्निसंस्थं कुरु कुरु स्वाहा ॥

जल मंत्र :-ॐ ह्रीँ अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय स्वाहा ॥

स्नान मंत्र :ॐ ह्रीँ अमले विमले विमलोद्भवे सर्वतीर्थजलोपमे पां पां वां वां अशुचिः शुचिर्भवामि स्वाहा ॥

वस्त्र मंत्र :-ॐ आँ ह्रीँ क्रौँ नमः ॥ तिलक मंत्र :-ॐ आं ह्रीँ क्रौँ अर्हते नमः ॥

पहेला दिवसनो पूजा विधि :-

*जळयात्रानुं विधान करवुं. (जळयात्राना उपकरणो माटे परिशिष्ट नं. ५ जोवुं.) प्रथम महोत्सव पूर्वक चतुर्विध संघ सहित पवित्र जळाशये जवुं. त्यां विधिपूर्वक स्नात्र भणाववुं "शांतिकळश" भणवो. पछी मालोद्घाटन करवुं.

पछी गंध, पुष्प, धूप तथा नैवेद्य, [1]बलिदान वगेरेथी प्रतिमा, दिक्पाल तथा नव ग्रहोनुं पूजन करवुं. अने दर्शन,

१. बलिमंत्रः-"ॐ भवणवइवाण०" * आ विधान शान्तिस्नात्रादि विधि समुच्चय भा. १ प्रमाणे थाय छे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ज्ञान-चारित्रनुं पूजन करी आरति-मंगळ दीवो करवो.

त्यार बाद देववंदन करवुं. ते आ प्रमाणे :-

'ॐ नमः पार्श्वनाथाय' के प्रस्तुत जिन चैत्यवंदन, नमुत्थुणं०; अरि०, एक नव० नो काउ. पारी नमोऽर्हत्—

अर्हंस्तनोतु स श्रेयः-श्रियं यद् ध्यानतो नरैः ।
अप्यैन्द्री सकलाऽत्रैहि, रंहसा सह सौच्यत ॥ १ ॥ (अनुष्टभ्)

लोगस्स० सव्व० अन्नत्थ० १ नव० काउ. पारी

ॐमिति मन्ता यच्छा-सनस्य नन्ता सदा यदंह्रीँश्च ।
आश्रीयते श्रिया ते, भवतो भवतो जिनाः पान्तु ॥ २ ॥ (आर्या)

पुक्खर० सुअस्स० अन्नत्थ० १ नव० काउ. पारी

नवतत्त्वयुता त्रिपदी, श्रिता रुचि-ज्ञान-पुण्य-शक्तिमता ।
वरधर्मकीर्तिविद्या-ऽऽनन्दाऽऽस्या जैनगीर्जीयात् ॥ ३ ॥ (आर्या)

सिद्धाणं० श्रीशांतिनाथ आराधनार्थं करेमि काउस्सग्गं वंदण० अन्नत्थ० १ लोगस्स० सागर० सुधी पारी नमो०- ॥ ७ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रीशान्तिः श्रुतशान्तिः, प्रशान्तिकोऽसावशान्तिमुपशान्तिम् ।
नयतु सदा यस्य पदाः, सुशान्तिदाः सन्तुसन्ति जने ॥ ४ ॥ (आर्या)

श्रीद्वादशांगी आराधनार्थं करेमि काउ० वंदण० अन्नत्थ० १ नव० काउ. पारी नमो०-

सकलार्थसिद्धिसाधन-बीजोपाङ्गा सदा स्फुरदुपाङ्गा ।
भवतादनुपहतमहा-तमोऽपहा द्वादशाङ्गी वः ॥ ५ ॥ (आर्या)

श्री शान्तिदेवयाए करेमि० काउ० अन्नत्थ० १ नव० पारी नमो० :-

श्री चतुर्विधसङ्घस्य, शासनोन्नतिकारिणी ।
शिवशान्तिकरी भूयात्, श्रीमती शान्तिदेवता ॥ ६ ॥ (अनुष्टुभ्)

श्री शासनदेवयाए करेमि काउ० अन्नत्थ० १ नव० पारी नमो० :-

या पाति शासनं जैनं, सद्यः प्रत्यूहनाशिनी ।
साऽभिप्रेतसमृद्धयर्थं, भूयाच्छासनदेवता ॥ ७ ॥ (अनुष्टुभ्)

खित्तदेवयाए करेमि काउ० अन्नत्थ० १ नव० पारी० नमो० :-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया ।
सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान्नः सुखदायिनी ॥ ८ ॥ (अनुष्टुभ्)

अच्छुत्ता देवीए करेमि० काउ० अन्नत्थ० १ नव० काउ० पारी नमो० :—

चतुर्भुजा तडिद्वर्णा, कमलाक्षी वरानना ।
भद्रं करोतु सङ्घस्याऽ—च्छुप्ता तुरगवाहना ॥ ९ ॥ (अनुष्टुभ्)

समस्तवेयावच्चगराणं संति० सम्म० करेमि काउ० अन्नत्थ० १ नव० काउ० पारी नमो० :—

सङ्घेऽत्र ये गुरुगुणौघनिधे सुवैया—वृत्यादि कृत्यकरणैकनिबद्धकक्षाः ।
ते शान्तये सह भवन्तु सुराः सुरीभिः, सद्दृष्टयो निखिलविघ्नविघातदक्षाः ॥१०॥ (वसंततिलका)

जलदेवयाए करेमि काउ० अन्नत्थ० १ नव० काउ० पारी नमो०—

मकरासनमासीनः, कुलिशाङ्कुशचक्रपाशपाणिशयः ।
आशामाशापालो, विकिरतु दुरितानि वरुणो वः ॥ ११ ॥ (आर्या)

पछी हाथ जोडी नीचे प्रमाणे जळदेवतानी प्रार्थनानो श्लोक बोलवो :—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

करोतु शान्तिं जलदेवताऽसौ, मम प्रतिष्ठाविधिमाचरिष्यतः ।
आदास्यतो वा मम वारि तत्कृते, प्रसन्नचित्ता प्रदिशत्वनुज्ञाम् ॥ १ ॥ (उपजाति)

पछी नवकार गणी नमुत्थुणं० जावंति० जावंत० नमो० कही नीचे प्रमाणे स्तवन कहेवुं :—

ओमिति नमो भगवओ, अरिहंत–सिद्धाऽऽयरिय–उवज्झाय ।
वर–सव्व–साहु–मुणि–संघ धम्म–तित्थ–पवयणस्स ॥ १ ॥ (आर्या)
सप्पणव नमो तह भगवई, सुयदेवयाइ सुहयाए ।
सिवसंतिदेवयाणं, सिवपवयणदेवयाणं च ॥ २ ॥ (आर्या)
इन्दा[१]ऽगणि[२]–जम[३]–नेरईय[४]–वरुण[५]--वाऊ[६]–कुबेर[७]–ईसाणा[८] ।
बम्भो[९]--नागुत्ति[१०] दसण्ह–मवि य सुदिसाण पालाणं ॥ ३ ॥ (आर्या)
सोम[१] यम[२]–वरुण[३]–वेसमण[४]–वासवाणं[५] तहेव पंचण्हं ।
तह लोगपालयाणं, सूराइगहाण य नवण्हं ॥ ४ ॥ (आर्या)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

साहंतस्स समक्खं, मज्झमिणं चेव धम्मणुट्ठाणं।
सिद्धिमविग्घं गच्छउ, जिणाइ नवकारओ धणियं ॥ ५ ॥ (आर्या)

जय वीयराय कहेवा०

पछी कुंवा कांठे जई करवानो विधि :—

मंत्र युक्त वास कुंकुम अने चंदनना छांटा नांखवा त्यार बाद नीचेना मंत्रथी त्रणवार आचमन करवुं. :—ॐ गुरु तत्त्वाय नमः; अर्हं आत्मतत्त्वाय स्वाहा; ह्रीँ विद्यातत्त्वाय स्वाहा; ह्रीँ पार्श्वतत्त्वाय स्वाहा, ॐ मुक्तितत्त्वाय स्वाहा।

पछी अंगन्यास करवो. मंत्र :—

ॐ ह्रीँ नमो अरिहंताणं ह्राँ शीर्षं रक्ष रक्ष स्वाहा। ॐ ह्रीँ नमो सिद्धाणं ह्रीँ वदनं रक्ष रक्ष स्वाहा॥ ॐ ह्रीँ नमो आयरियाणं ह्रूँ हृदयं रक्ष रक्ष स्वाहा। ॐ ह्रीँ नमो उवज्झायाणं ह्रैँ नाभिं रक्ष रक्ष स्वाहा। ॐ ह्रीँ नमो लोए सव्वसाहूणं ह्रौँ पादौ रक्ष रक्ष स्वाहा। ॐ ह्रीँ नमो ज्ञानदर्शनचारित्रेभ्यः ह्रः सर्वाङ्गं रक्ष रक्ष स्वाहा॥

पछी करन्यास करवो. मंत्र : —

ॐ ह्रीँ अर्हं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीँ सिद्धाः तर्जनीभ्यां नमः। ॐ ह्रीँ आचार्या मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ह्रीँ ॥११॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उपाध्याया अनमिकाभ्यां नमः । ॐ ह्रीँ सर्वसाधवः कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः अ-सि-आ-उ-सा सम्यग्ज्ञानदर्शनचारित्राणि धर्मः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥

पछी नीचेना बे श्लोको बोली अंकुशमुद्राथी जळ खेंचवुं :—

क्षीरोदधे! स्वयम्भूश्च, सरः पद्ममहाद्रह!। शीते! शीतोदके! कुण्ड—
जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥ १ ॥ (अनुष्टुभ्)

गङ्गे! च यमुने! चैव, गोदावरि! सरस्वति!। कावेरि! नर्मदे! सिन्धो!;
जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥ २ ॥ (अनुष्टुभ्)

त्यार बाद नीचेनो मन्त्र त्रणवार बोली कूर्ममुद्राए अथवा मत्स्यमुद्राए जळ स्थापवुं :—

ॐ ह्रीँ अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय सेँ सेँ क्लीँ क्लीँ ब्लूँ ब्लूँ द्रां द्रां द्रीँ द्रीँ द्रावय द्रावय ह्रीँ जलदेवीदेवा अत्र आगच्छत आगच्छत स्वाहा ॥

पछी "ॐ ह्रीँ क्लीँ ब्लूँ जलचन्दनपुष्पाक्षतफलनैवेद्यदीपधूपं समर्पयामि" एम बोली बलिदानरुपे पुष्प नाळियेर अथवा बीजा फळो वि. पाणीमां पधराववा. ते वखते "ॐ आँ ह्रीँ क्रौँ जलदेवि! पूजाबलिं गृहाण गृहाण स्वाहा" ए पाठ बोलवो. पछी ४ के ८ कळशो भरवा तथा त्यां लाडु वि. नैवेद्य मूकवा. पछी नीचेनो पाठ बोलवो :—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ॐ ह्रीँ ऋषभाऽजित–संभवाऽभिनंदन–सुमति–पद्मप्रभ–सुपार्श्व–चन्द्रप्रभ–सुविधि–शीतल–श्रेयांस–वासुपूज्य–विमलाऽनन्त–धर्म–शान्ति–कुंथ्वर–मल्लि–मुनिसुव्रत–नमि–नेमि–पार्श्व–वर्द्धमानादि तीर्थकराः परमदेवाः तदधिष्ठायकाः देवाः शांतिं पुष्टिं ऋद्धिं वृद्धिं जयं मङ्गलं कुरुत कुरुत पां पां वां वां नमः स्वाहा ॥

ए रीते कळशो भरी चंदन–पुष्पथी सुशोभित करी धवल–मंगळ अने वार्जित्रना नादपूर्वक कुमारिका के सौभाग्यवती स्त्रीओ पासे लेवडावी चैत्य के घरमां प्रदक्षिणा दईने पवित्र स्थाने पधरावी मंगळगीत तथा वार्जित्रनो घोष करवो.

॥ इति जलयात्राविधिः ॥

त्यार बाद १०८ तीर्थजळथी कळश भरी नीचेना पृथ्वीमंत्रथी स्थापना करवो :—

ॐ ह्राँ भूः स्वाहा; ॐ ह्रीँ भूमिःस्वाहा; ॐ ह्रूँ भुवः स्वाहा; ॐ ह्रैँ मेदिनी स्वाहा; ॐ ह्रौँ पृथिवी स्वाहा; ॐ ह्रः वसुमती स्वाहा ॥

पछी क्षेत्रपाल स्थापना मंत्र बोलवो:—

ॐ क्षाँ क्षीँ क्षूँ क्षैँ क्षौँ क्षः क्षेत्रपालाय नमः स्वाहा ॥

पछी क्षेत्रपाल पूजननो मंत्र बोलवो :—

ॐ ह्रीँ क्षां क्षेत्रपालं गन्धाक्षतजलपुष्पतैलसिन्दुरैः दीपधूपौघैः पूजयामि ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पछी "ॐ ह्रीँ दिक्पालेभ्यो नमः", "ॐ ह्रीँ नवग्रहेभ्यो नमः" ए मंत्र बोली नीचेना श्लोकथी भूतोने दशे दिशाओमां बलिदान आपवुं.

उपसर्पन्ति ये भूता, भूता ये भूमिसंस्थिताः । ये भूता विघ्नकर्तार–स्ते नश्यन्तु जिनाज्ञया ॥

(अनुष्टुभ्)

पछी 'ॐ ह्रीँ अवतर अवतर सोमे सोमे वग्गु वग्गु निवग्गु निवग्गु सुमणे सोमणसे महु महुरे ॐ कवलि कः क्षः स्वाहा' ए मंत्रथी मींढळ, नाडाछडी आदि मंत्रीने जमणे हाथे, कळशे, बिंबे, देवालये अने घेर मंगळ माटे बांधवा.

पछी "ॐ ह्रीँ अर्हद्भयो नमः, ॐ ह्रीँ सिद्धेभ्यो नमः, ॐ ह्रीँ आचार्येभ्यो नमः, ॐ ह्रीँ उपाध्यायेभ्यो नमः, ॐ ह्रीँ सर्वसाधुभ्यो नमः, ॐ ह्रीँ सम्यग्दर्शनेभ्यो नमः, ॐ ह्रीँ सम्यग्ज्ञानेभ्यो नमः, ॐ ह्रीँ सम्यक्चारित्रेभ्यो नमः, ॐ ह्रीँ सम्यक्तपोभ्यो नमः" आ मंगळ पाठ बोली "ॐ अर्हं नमो अरिहंताणं, ॐ अर्हं नमो सयंसंबुद्धाणं, ॐ अर्हं नमो पारगयाणं" आ मूळ मंत्र गणवा पूर्वक मंगळ कळश स्थापवो.

पछी वांस ८ अने शरावळा ८ मां जवारा वाववा.

॥ इति प्रथम दिन विधिः ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुंभस्थापनना दिवसनो विधिः--

कुंभ स्थापन विधि :—

¹प्रथम न्हावाना पाणीनो मंत्र कही पाणी मंत्रवुं. पछी शरीरे आमळा, पीठी, कंकोडी चोळी न्हावुं. वस्त्र पहेरवा. केसर मंत्री तिलक करवुं. नाडुं अने मींढळ बांधवा.

पछी भूमि शुद्ध करी वासचोखा-फूल मंत्रित करवा अने कुंभने ग्रेवासूत्र बांधवुं.

कुंभ उपर-“ॐ ह्रीँ **सर्वोपद्रवं नाशय नाशय स्वाहा**” ए मंत्र लखवो. कुंभमां चंदननो साथियो कराववो. रु. १) तथा पंचरत्ननी पोटली नं. १, सोपारी नं. ५ ब्रह्मचर्यवाळा पुरुष पासे मूकाववा. जो ब्रह्मचर्यवाळो पुरुष न मळे तो तेने ब्रह्मचर्यनी बाधा करावबी.

पछी कुवानुं थोडुं पाणी लइ तथा बीजुं शुद्ध पाणी लइ अबोट जळे **अखंडधाराथी शुभमुहूर्ते नवकार अथवा मोटी शांति** भणी थाळी वेळण साथे घडो भराववो. पछी घडा उपर पान, श्रीफळ, वस्त्र, मींढळ, मरडासींग बांधी फूलनो हार पहेराववो. ज्यां स्थापवो होय त्यां चंदरवो प्रथम बंधाववो. पछी घडो भरनार बहेन पासे कंकुनो साथियो कराववो. तेना उपर डांगरनो साथियो करावी सोपारी मूकाववी. पछी त्रण प्रदक्षिणा देवरावी ते घडो “ॐ ह्रीँ ठः ठः ठः

१. माणेकस्थंभारोपण तथा तोरण बांधवानी विधि-परिशिष्ट नं. १ अ तथा आ —मां जोवी.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्वाहा" ए मंत्र ७ वार कही स्थापवो. गुरू पासे मंत्र कही वासक्षेप कराववो. प्रभुनी जमणी बाजु कुंभ स्थापवो.

दीपक स्थापन विधि :—

तांबाना कोडियामां साथियो करावी रु. १) तथा पंचरत्ननी पोटली नं. १ अने सोपारी मूकाववी. तेमज १०८ तारनी दीवेट पण मूकाववी.

पछी नीचेनो श्लोक (त्रण वार) कही घीनी वाढीथी अखंडधाराथी घी पूराववुं.

ॐ घृतमायुर्वृद्धिकरं, भवति परं जैनदृष्टिसंपर्कात् ।
तत्संयुतः प्रदीपः, पातु सदा भावदुःखेभ्यः ॥ स्वाहा ॥ (आर्या)

पछी नीचेनो श्लोक बोली दीप प्रगटाववो.

ॐ अर्हं–पञ्चज्ञानमहाज्योति–र्मयोऽयं ध्वान्तघातने ।
द्योतनाय प्रतिमाया, दीपो भूयात् सदाऽर्हतः ॥ (अनुष्टुभ्)

पछीथी अंदर माटीनुं खामणुं करावी तेना उपर दीपने स्थापन करवो. फाणस ढांकवुं अने गुरु पासे *वासक्षेप

---

* दीप उपर वासक्षेप करता नीचेनो मंत्र पण बोलवो :—
"ॐ अग्नयोऽग्निकाया एकेन्द्रिया जीवा निरवद्यार्हत्पूजायां निर्व्यथाः सन्तु, निष्पापाः सन्तु, सद्गतयः सन्तु, न मे सङ्घट्टनहिंसा मर्हदर्चने स्युः" ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

करावचो. अने कुंभ-दीपने +वधाववा.

जवारारोपण विधि :—

सरावळां नं. ४ जवाराना भराववा. दरेक सरावळां उपर कंकु, सोपारी तथा पैसो चढाववो; कंकुना छांटा नंखाववा. अडायानो भूको, माटी, जार, जव, घउं, सरसव अने डांगर मेळवी जवारा वववाववा. ते घडानी चारे खूणे मूकाववा. बेन पासे गहुंली कराववी. (कुंभ पासे पाटलो मूकी कंकुनो साथियो, चोखा, श्रीफळ तथा सोपारी मूकाववी.)

पछी स्नात्र भणावी अष्ट प्रकारी पूजा करी आरती-मंगळदीवो उतारवो. कुंभस्थापनाना मुहूर्तनी जो वार होय तो स्नात्र पहेलुं भणावी शकाय.

त्रण टंक सात स्मरण हंमेश गणवा. सवारे तथा बपोरे नवकार०; उवसग्ग०; संतिकरं; तिजयपहुत्त०; अजितशांति; भक्तामर. अने मोटी शांति. सांजे पण ते ज प्रमाणे परंतु तिजयपहुत्तने बदले नमिऊण.

पंचरत्ननी पोटली मूकवानो मंत्र :—

*ॐ ह्रीँ श्रीँ—नानारत्नौघयुतं, सुगन्धपुष्पाभिवासितं नीरम् ।
पतताद् विचित्रवर्ण, मन्त्राढयं स्थापना बिम्बे ॥ स्वाहा ॥ (आर्या)

\+ -वधावती वखते बोलवानो श्लोक :-पूर्णं येन सुमेरुशृङ्गसदृशं; चैत्यं सुदेदीप्यते; यः कीर्तिं यजमानधर्मकथन-प्रस्फूर्जितां भाषते । यः स्पर्धां कुरुते जगत्त्रयमहा-दीपेन दोषारिणा; सोऽयं मङ्गलरूपमुख्यगणनः कुम्भश्चिरं नन्दतात् ॥ १ ॥ (शार्दूल०)

* हाल आ बे मंत्रनो उपयोग कुंभस्थापना विधिमां थतो नथी.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोना वाणीनो मंत्र–वार–७–नवकार साथे :—

"ॐ ह्रीँ श्रीँ जीरावलीपार्श्वनाथ ! रक्षां कुरु कुरु स्वाहा" ।

॥ इति कुंभस्थापनादि विधिः ॥

[1]प्रतिष्ठाने लगतो कार्यक्रम :—

सुगंधि जळथी प्रतिष्ठानी भूमिनुं सिंचन करवुं; पुष्पनी वृष्टि करवी; धूप करवो; प्रतिष्ठा मंडपने यक्षकर्दमथी लींपवो; वेदिकामां स्वस्तिकादिक करवां. चित्र–विचित्र वस्त्रोनां चंद्रवा बांधवा. शुभमुहूर्ते प्रतिष्ठाना स्थाने नवीन बिंबोने लावी सिंहासन उपर पूर्व के उत्तर सन्मुख स्थापवा. तथा चारे दिशाओमां श्वेत १२ वरघडां मूकवां; चार जवारियां अने आठ शरावळां भरवां. बिंबनी हथेळीमां प्रियंगुकपूर अने गोरोचंदन मूकवुं. पंचरत्ननी पोटली बिंबनी आंगळीये बांधवी.

---

१ प्रतिष्ठा-अंजनशलाकामां जरुरी उपकरणोनी यादी परिशिष्ट–नं. ६ मांथी जोई लेवी.

卐

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

—: अथ द्वितीयदिनविधि :—

—: श्री लघु नन्द्यावर्तपूजनविधि :—

प्रथम नंद्यावर्तनुं आलेखनः—

नंद्यावर्तनो पट्ट तैयार मळे तो ठीक नहीं तो नीचे प्रमाणे आलेखन करवुं. कपूर, केसर, अने सुखड वगेरे सात लेपनथी लिप्त करेला श्रीपर्ण (सेवन) ना पाटला उपर के सुशोभितवस्त्रना पट्ट उपर मध्य भागथी सूत्रभ्रमण करवा पूर्वक आठ वलय करवा.

पहेला वलयमांः—

अष्टगंधथी नवखूणी प्रदक्षिणाए "नंद्यावर्त" आलेखवो, तेना मध्य भागमां जिनप्रतिमाने स्थापवी के चितववी अने तेनी जमणी बाजुए 'शक्रेन्द्र' अने 'श्रुतदेवता' तेमज डाबी बाजुए 'ईशानेन्द्र' अने 'शांतिदेवता' नुं आलेखन करवुं.

बीजा वलयमांः—आठे दिशाओमां अनुक्रमे नीचे प्रमाणे लखवुंः—

१ ॐ नमोऽर्हद्भ्यः; २ ॐ नमः सिद्धेभ्यः; ३ ॐ नम आचार्येभ्यः; ४ ॐ नम उपाध्यायेभ्यः; ॐ नमः सर्व-साधुभ्यः; ६ ॐ नमो ज्ञानेभ्यः; ७ ॐ नमो दर्शनेभ्यः; ८ ॐ नमश्चारित्रेभ्यः ॥

---

१ ६४ इन्द्र-इन्द्राणीना नामो सहित दस वलयवाळो पट्ट होई तो ते रीतनी -'बिंब प्रवेश विधि' आदिमां आवती नंद्यावर्त पूजननी विधि परिशिष्ट नंः १ इ मां आपेली छे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

त्रीजा वलयमां:—

चोवीशपत्रो आलेखी तेमां चोवीश तीर्थंकरोनी माताओना मंत्राक्षरो साथे नामो लखवा:—

१ ॐ मरुदेवीए स्वाहा; २ ॐ विजयाए स्वाहा; ३ ॐ सेणाए स्वाहा; ४ ॐ सिद्धत्थाए स्वाहा; ५ ॐ मंगलाए स्वाहा; ६ ॐ सुसीमाए स्वाहा; ७ ॐ पुहवीए स्वाहा; ८ ॐ लक्खणाए स्वाहा; ९ ॐ रामाए स्वाहा; १० ॐ नंदाए स्वाहा; ११ ॐ विण्हूए स्वाहा; १२ ॐ जयाए स्वाहा; १३ ॐ सामाए स्वाहा; १४ ॐ सुजसाए स्वाहा; १५ ॐ सुव्वयाए स्वाहा; १६ ॐ अचिराए स्वाहा; १७ ॐ सिरीए स्वाहा; १८ ॐ देवीए स्वाहा; १९ ॐ पभावईए स्वाहा; २० ॐ पउमावईए स्वाहा; २१ ॐ वप्पाए स्वाहा; २२ ॐ सिवाए स्वाहा; २३ ॐ वामाए स्वाहा; २४ ॐ तिसलाए स्वाहा ॥

चोथा वलयमां:—

आठे दिशाओमां बे–बे गृह करवा अने तेमां १६ विद्यादेवीओनां मंत्र लखवा:—

१ ॐ नमो [2]रोहिणीए सौं त्मां स्वाहा; २ ॐ नमो पन्नत्तीए रां क्ष्रां स्वाहा; ३ नमो वज्जसिंखलाए लीं स्वाहा;

---

१ मुद्रित प्र. क. मां पूजार्थक 'नमः' पदनो प्रयोग कर्यो छे, परंतु हस्तलिखितमां 'स्वाहा' पद मले छे तेथी अहीं 'स्वाहा' पद राखेल छे.

२ मुद्रित प्र. क. मां विद्यादेवीनां नाम संस्कृतमां छे, परंतु हस्तलिखितमां ते नाम प्राकृतमां छे, तेमज आगल पूजनमां पण प्राकृतमां ज छे तेथी अहीं विद्यादेवीना नाम प्राकृतमां लीधा छे.

३ आ मंत्राक्षरो मुद्रित तेमज हस्तलिखित प्रतोमां भिन्न भिन्न छे, तेथी जेना विशेष पाठ मल्या छे ते अहीं लीधा छे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४ ॐ नमो वज्जंकुसीए ल्मां वां स्वाहा; ५ ॐ नमो अपडिचकाए झौँ स्वाहा; ६ ॐ नमो पुरिसदत्ताए ल्मां वां स्वाहा; ७ ॐ नमो कालीए सौं हैं स्वाहा; ८ ॐ नमो महाकालीए ॐ क्ष्मीँ स्वाहा; ९ ॐ नमो गोरीए ह्युँ ज्यूँ स्वाहा; १० ॐ नमो गंधारीए रें क्ष्मीं स्वाहा; ११ ॐ नमो सव्वत्थमहाजालाए लूं हां स्वाहा; १२ ॐ नमो माणवीए युं क्ष्मां स्वाहा; १३ ॐ नमो वेरुट्टाए सूं मां स्वाहा; १४ ॐ नमो अच्छुत्ताए यूं मां स्वाहा; १५ ॐ नमो माणसीए ग्लुं मां स्वाहा; १६ ॐ नमो महामाणसीए ह्यं सूँ स्वाहा ॥

पांचमा वलयमांः—२४ भवन बनावी लोकांतिकदेवोना मंत्रो लखवाः—

१ ॐ सारस्वतेभ्यः स्वाहा। २ ॐ आदित्येभ्यः स्वाहा। ३ ॐ वह्निभ्यः स्वाहा। ४ ॐ वरुणेभ्यः स्वाहा। ५ ॐ गर्दतोयेभ्यः स्वाहा। ६ ॐ तुषितेभ्यः स्वाहा। ७ ॐ अव्याबाधेभ्यः स्वाहा। ८ ॐ रिष्टेभ्यः स्वाहा। ९ ॐ अग्न्याभेभ्यः स्वाहा। १० ॐ सूर्याभेभ्यः स्वाहा। ११ ॐ चन्द्राभेभ्यः स्वाहा। १२ ॐ सत्याभेभ्यः स्वाहा। १३ ॐ श्रेयस्करेभ्यः स्वाहा। १४ ॐ क्षेमंकरेभ्यः स्वाहा। १५ ॐ वृषभेभ्यः स्वाहा। १६ ॐ कामचारेभ्यः स्वाहा। १७ ॐ निर्वाणेभ्यः स्वाहा। १८ ॐ दिशान्तरक्षितेभ्यः स्वाहा। १९ ॐ आत्मरक्षितेभ्यः स्वाहा। २० ॐ सर्वरक्षितेभ्यः स्वाहा। २१ ॐ मारुतेभ्यः स्वाहा। २२ ॐ वसुभ्यः स्वाहा। २३ ॐ अश्वेभ्यः स्वाहा। २४ ॐ विश्वेभ्यः स्वाहा।

छठ्ठा वलयमांः—आठे य दिशाओमां नीचेना मंत्रो आलेखवाः—

१ ॐ सौधर्मादीन्द्रादिभ्यः स्वाहा; २ ॐ तद्देवीभ्यः स्वाहा; ३ ॐ चन्द्रादीन्द्रादिभ्यः स्वाहा; ४ ॐ तद्देवीभ्यः स्वाहा;

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५ ॐ चमरादीन्द्रादिभ्यः स्वाहा; ६ ॐ तद्देवीभ्यः स्वाहा; ७ ॐ किन्नरादीन्द्रादिभ्यः स्वाहा; ८ ॐ तद्देवीभ्यः स्वाहा ॥

सातमा वलयमांः—आठे दिशाओमां आठ दिक्पालोना नीचेना मंत्राक्षरो आलेखवाः—

१ ॐ इन्द्राय स्वाहा; २ ॐ अग्नये स्वाहा; ३ ॐ यमाय स्वाहा; ४ ॐ नैर्ऋतये स्वाहा; ५ ॐ वरुणाय स्वाहा; ६ ॐ वायवे स्वाहा; ७ ॐ कुबेराय स्वाहा; ८ ॐ ईशानाय स्वाहा ॥

आठमा वलयमांः—नव ग्रहोना नीचेना आठ मंत्रो आलेखवाः—

१ ॐ आदित्येभ्यः स्वाहा; २ ॐ सोमेभ्यः स्वाहा; ३ ॐ मङ्गलेभ्यः स्वाहा; ४ ॐ बुधेभ्यः स्वाहा; ५ ॐ बृहस्पतिभ्यः स्वाहा; ६ ॐ शुक्रेभ्यः स्वाहा; ७ ॐ शनैश्चरेभ्यः स्वाहा; ८ ॐ राहुकेतुभ्यः स्वाहा ॥

उपर प्रमाणेना आठे वलयोनी बहार चार द्वारवाळा तथा श्री शांति, भूति, बल अने आरोग्य नामना चार तोरणो सहित तेमज वर्धमान, गज, सिंह अने ध्वजो सहित त्रण प्राकार (किल्लाओ) आलेखवां. तेमानां--

पहेला प्राकारनां पूर्वादिक द्वारोमांः-अनुक्रमे १ चर्म; २ दंड; ३ पाश अने ४ गदायुक्त हाथवाळा अनुक्रमे १ सोम; २ यम; ३ वरुण अने ४ कुबेर नामना द्वारपालोने आलेखवा.

बीजा प्राकारना पूर्वादिक द्वारोमांः-१ जया; २ विजया; ३ अजिता अने ४ अपराजिता नामनी द्वारपालिकाओने आलेखवी.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

त्रीजा प्राकारना पूर्वादिक द्वारोमां:-हाथमां लाकडी वाळा चार तुंबरुने आलेखवा.

पछी **पहेला गोळ प्राकारमां:**-आग्नेयादि विदिशाओमां त्रण त्रण एम बार सभाओमां अनुक्रमे १ साधु; २ साध्वी; ३ वैमानिक देवी ॥ ४ भवनपति देवी; ५ व्यंतर देवी, ६ ज्योतिष्क देवी ॥ ७ भवनपति देव; ८ व्यंतर देव; ९ ज्योतिष्क देव. । १० वैमानिक देव; ११ मनुष्य अने १२ मनुष्य स्त्री-आम बार पर्षदा आलेखवी.

बीजा प्राकारमां तिर्यंचो आलेखवा. त्रीजा **प्राकारमां**-देव अने मनुष्योनां वाहन विगेरे आलेखवा. प्राकारोना चारे दरवाजे बंने बाजु पर कमळवनोथी शोभित वावो आलेखवी. पछी वज्रना चिह्नवाळुं इन्द्र पुर आलेखीने दिशाओमां-"परविद्याः क्षः फुट्" अने विदिशाओमां "परमन्त्राः क्षः फुट्" एम आलेखवुं.

चारे खूणामां चार पूर्ण कळशो आलेखी तेनी बहार वायुभवन आलेखवुं.

॥ इति नन्द्यावर्तनी आलेखन विधि ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

—: अथ नन्द्यावर्त पूजन विधिः—

सौ प्रथम नन्द्यावर्तना पट्ट उपर नीचेनो श्लोक बोली कुसुमांजलि करवीः—

कल्याणवल्लीकन्दाय, कृतानन्दाय साधुषु। सदा शुभविवर्ताय, नन्द्यावर्ताय ते नमः ॥१॥

(अनुष्टुभ्)

पहेला वलयमांः—

"[1]ॐ नमोऽर्हत्परमेश्वराय, चतुर्मुखाय, परमेष्ठिने, त्रैलोक्यगताय, अष्टदिक्कुमारीपरिपूजिताय, देवाधिदेवाय दिव्यशरीराय, त्रैलोक्यमहिताय आगच्छ आगच्छ स्वाहा" आ मंत्रथी परमेष्ठिमुद्राए जिननुं आह्वान करवुं. अने पछी "ॐ जिनाय [2]नमः" कही वास अने कपूर वगेरेथी जिननी पूजा करवी.

[3]त्यार बाद शक्रेन्द्र अने श्रुतदेवता तेमज ईशानेन्द्र अने शांतिदेवतानी पूजा 'ॐ शक्रेन्द्राय नमः'; 'ॐ श्रुतदेवतायै नमः'; 'ॐ ईशानेन्द्राय नमः; 'ॐ शान्तिदेवतायै नमः' ए मंत्रो बोली करवी.

१ मुद्रित प्र. क. मां जिनाह्वान करी कुसुमांजलि करवा जणावेल छे, परंतु हस्तलिखितमां प्रथम कुसुमांजलि पछी जिनाह्वान विधि छे उचित पण छे तेथी ते प्रमाणे अहीं लखेल छे. तेमज जिनाह्वान मंत्र प्रतिष्ठाकल्पमां नथी छतां य योग्य होवाथी जणावेल छे।

२ 'नमः' पद अहीं सर्वे जग्याए पूजाना अर्थमां छे, मात्र प्रणामना अर्थमां नथी।

३ शक्रादि चारनां पूजनमंत्र प्रतिष्ठाकल्पमां नथी पण पूजननुं सूचन छे तेथी लीधेल छे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बीजा वलयमां:—अर्हदादि आठनुं पूजन नीचेना मंत्रोथी करवुं:—

१ ॐ नमोऽर्हद्भ्यः; २ ॐ नमः सिद्धेभ्यः; ३ ॐ नम आचार्येभ्यः; ४ ॐ नम उपाध्यायेभ्यः; ५ ॐ नमः सर्वसाधुभ्यः; ६ ॐ नमो दर्शनेभ्यः; ७ ॐ नमो ज्ञानेभ्यः; ८ ॐ नमश्चारित्रेभ्यः ॥

त्रीजा वलयमां:—२४ तीर्थंकरोनी माताओनुं पूजन नीचेना मंत्राक्षरोथी करवुं:—

१ ॐ मरुदेवाए नमः; २ ॐ विजयाए नमः; ३ ॐ सेणाए नमः; ४ ॐ सिद्धत्थाए नमः; ५ ॐ मंगलाए नमः; ६ ॐ सुसीमाए नमः; ७ ॐ पुहवीए नमः; ८ ॐ लक्खणाए नमः; ९ ॐ रामाए नमः १० ॐ नंदाए नमः; ११ ॐ विण्हूए नमः; १२ ॐ जयाए नमः, १३ ॐ सामाए नमः, १४ ॐ सुजसाए नमः, १५ ॐ सुव्वयाए नमः, १६ ॐ अचिराए नमः; १७ ॐ सिरीए नमः, १८ ॐ देवीए नमः; १९ ॐ पभावईए नमः; २० ॐ पउमावईए नमः; २१ ॐ वप्पाए नमः, २२ ॐ सिवाए नमः, २३ ॐ वामाए नमः, २४ ॐ तिसलाए नमः ॥

चोथा वलयमां:—सोळ विद्यादेवीओनुं पूजन नीचेना मंत्राक्षरोथी करवुं.—

१ ॐ रोहिणीए नमः; २ ॐ पन्नत्तीए नमः; ३ ॐ वज्जसिंखलाए नमः; ४ ॐ वज्जंकुसीए नमः; ५ ॐ अपडिचक्काए नमः; ६ ॐ पुरिसदत्ताए नमः; ७ ॐ कालीए नमः; ८ ॐ महाकालीए नमः; ९ ॐ गोरीए नमः; १० ॐ गंधारीए नमः; ११ ॐ सव्वत्थमहाजालाए नमः; १२ ॐ माणवीए नमः; १३ ॐ वेरूट्टाए नमः; १४ ॐ अच्छुत्ताए

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नमः; १५ ॐ माणसीए नमः; १६ ॐ महामाणसीए नमः ॥

पांचमा वलयमांः—लोकांतिकदेवोनुं पूजन नीचेना मंत्राक्षरोथी करवुंः—

१ ॐ सारस्वतेभ्यो नमः; २ ॐ आदित्येभ्यो नमः; ३ ॐ वह्निभ्यो नमः; ४ ॐ वरुणेभ्यो नमः; ५ ॐ गर्दतोयेभ्यो नमः; ६ ॐ तुषितेभ्यो नमः; ७ ॐ अव्याबाधेभ्यो नमः ८ ॐ अरिष्टेभ्यो नमः; ९ ॐ अग्न्याभेभ्यो नमः; १० ॐ सूर्याभेभ्यो नमः ११ ॐ चन्द्राभेभ्यो नमः; १२ ॐ सत्याभेभ्यो नमः; १३ ॐ श्रेयस्करेभ्यो नमः; १४ ॐ क्षेमङ्करेभ्यो नमः; १५ ॐ वृषभेभ्यो नमः; १६ ॐ कामचारेभ्यो नमः; १७ ॐ निर्वाणेभ्यो नमः; १८ ॐ दिशान्तरक्षितेभ्यो नमः, १९ ॐ आत्मरक्षितेभ्यो नमः; २० ॐ सर्वरक्षितेभ्यो नमः; २१ ॐ मारुतेभ्यो नमः; २२ ॐ वसुभ्यो नमः; २३ ॐ अश्वेभ्यो नमः; २४ ॐ विश्वेभ्यो नमः ॥

छट्ठा वलयमांः—सौधर्मेन्द्रादि देव-देवीओनुं पूजन नीचेना मंत्राक्षरोथी करवुंः—

१ ॐ सौधर्मादीन्द्रादिभ्यो नमः; २ ॐ तद्देवीभ्यो नमः;. ३ ॐ चन्द्रादीन्द्रादिभ्यो नमः, ४ ॐ तद्देवीभ्यो नमः, ५ ॐ चमरादीन्द्रादिभ्यो नमः; ६ ॐ तद्देवीभ्यो नमः; ७ ॐ किन्नरादीन्द्रादिभ्यो नमः; ८ ॐ तद्देवीभ्यो नमः ॥

सातमा वलयमांः—आठ दिक्पालोनुं पूजन नीचेना मंत्राक्षरोथी करवुंः—

१ ॐ इन्द्राय नमः, २ ॐ अग्नये नमः; ३ ॐ यमाय नमः, ४ ॐ नैर्ऋतये नमः; ५ ॐ वरुणाय नमः; ६ ॐ वायवे नमः, ७ ॐ कुबेराय नमः, ८ ॐ ईशानाय नमः ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आठमां वलयमां:—नव ग्रहोनुं पूजन नीचेना मंत्राक्षरोथी करवुं:—

१ ॐ आदित्येभ्यो नमः; २ ॐ सोमेभ्यो नमः; ३ ॐ मङ्गलेभ्यो नमः; ४ ॐ बुधेभ्यो नमः, ५ ॐ बृहस्पतिभ्यो नमः; ६ ॐ शुक्रेभ्यो नमः, ७ शनैश्चरेभ्यो नमः; ८ ॐ राहुकेतुभ्यो नमः ।

पछी बहार रहेला त्रण प्राकारोमांना **पहेला प्राकारमां**:—

अग्निखूणामां १ साधु, २ साध्वी, ३ वैमानिकदेवीनुं "ॐ **गणधरपरिषत्त्रिकाय नमः**" आ मंत्रथी, नैऋत्य खूणामां ४ भवनपतिदेवी, ५ व्यंतरदेवी, ६ ज्योतिष्कदेवीनुं "ॐ **भवनपत्यादिदेवीत्रिकाय नमः**" वायव्य खूणामां ७ भवनपति; ८ व्यंतर अने ९ ज्योतिष्कदेवनुं 'ॐ **भवनपत्यादिदेवपरिषत्त्रिकाय नमः**' मंत्रथी पूजन करवुं.

ईशान खूणामां १० वैमानिकदेव; ११ मनुष्य, १२ मनुष्यनी स्त्रीनुं–'ॐ **वैमानिकदेवादिपरिषत्त्रिकाय नमः**' मंत्रथी पूजन करवुं.

बीजा प्राकारमां तिर्यंचोनुं अने **त्रीजा प्राकारमां** वाहनोनुं वासक्षेपथी पूजन करवुं.

पहेला वप्रमां:–१ सोम, २ यम, ३ वरुण अने ४ कुबेर नामना द्वारपालोनुं पूजन–'१ ॐ **सोमाय नमः**; २ ॐ **यमाय नमः**; ३ ॐ **वरुणाय नमः**, ४ ॐ **कुबेराय नमः**' आ मंत्रोथी करवुं.

बीजा वप्रमां:–१ जया, २ विजया, ३ अजिता अने ४ अपराजिता नामनी द्वारपालिकाओनुं पूजन १ 'ॐ **जयायै नमः**, २ ॐ **विजयायै नमः**; ३ ॐ **अजितायै नमः**; ४ ॐ **अपराजितायै नमः**' आ मंत्रोथी करवुं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

त्रीजा वप्रमां:-चारे तुंबरुनी 'ॐ तुम्बरवे नमः' मंत्रथी अने चार तोरणोनी 'ॐ शान्तितोरणेभ्यो नमः, ॐ भूतितोरणेभ्यो नमः; ॐ बलतोरणेभ्यो नमः, ॐ आरोग्यतोरणेभ्य नमः' मंत्रथी पूजा करवी.

पछी १ धर्म, २ मान, ३ गज अने ४ सिंह आ चार ध्वजोनी 'ॐ धर्मध्वजाय नमः; ॐ मानध्वजाय नमः; 'ॐ गजध्वजायनमः, ॐ सिंहध्वजाय नमः' आ मंत्रोथी, तेमज दिशाओमां 'परविद्याः क्षः फुट्' अने विदिशाओमां 'परमन्त्राः क्षः फुट्' नी तेज मंत्रथी अने इन्द्रादि सर्वनी पूजा करवी.

इन्द्रपुरनी 'ॐ पृथ्वीमण्डलाय नमः' मंत्रथी; चार पूर्णकळशोनी 'ॐ पूर्णकलशाय नमः' मंत्रथी अने वायुभवननी 'ॐ वायुमण्डलाय नमः' मंत्रथी पूजा करवी.

पछी त्यां पांच प्रकारना पक्वान्न मूकवा. दिशाओ अने विदिशाओमां बलिबाकुळा उछाळवा.

पछी देववंदन करवुं:-प्रथम प्रस्तुतजिन के 'ॐ नमः पार्श्वनाथय'नुं चैत्यवंदन कही 'अर्हस्तनोतु.'; 'ॐ मिति मन्ता.' 'नवतत्त्वयुता.' अने 'श्री शान्तिः श्रुतशान्तिः' आ चार स्तुति कही "श्री श्रुतदेवता आराधनार्थं" करेमि काउ० वंदण० अन्नत्थ० १ नव० नो काउ० पारी नमो०—

वद वदति न वाग्वादिनि !, भगवति कः ? श्रुतसरस्वति ! गमेच्छुः ।
रङ्गत्तरङ्गमतिवर–तरणिस्तुभ्यं नम इतीह ॥ ५ ॥ (आर्या)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पछी "श्री शांतिनाथ आराधनार्थं" करेमि काउ० वंदण०, अन्नत्थ० १ नव० नो काउ० पारी नमो०—

शान्तिः शान्तिकरः श्रीमान्; शान्ति दिशतु मे गुरुः।
शान्तिरेव सदा तेषां, येषां शान्तिर्गृहे गृहे ॥ ६ ॥ (अनु.)

पछी "श्री क्षेत्रदेवता आराधनार्थं" करेमि काउ० अन्नत्थ० १ नव० नो काउ० पारी नमो० :—

यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया।
सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान्नः सुखदायिनी ॥ ७ ॥ (अनु.)

"श्री शासनदेवता आराधनार्थं" करे० काउ० अन्नत्थ० १ नव० नो काउ० पारी नमो०—

उपसर्गवलयविलयन-निरता जिनशासनावनैकरताः।
द्रुतमिह समीहितकृते स्युः, शासनदेवता भवताम् ॥ ८ ॥ (आर्या)

प्रगट नवकार बोली नमु०, जावंति०; जावंत०; नमो०, स्तवन अने जय वीयराय कहेवा.

॥ इति नन्द्यावर्तपूजनविधिः ॥ ॥ इति द्वितीयदिनविधिः ॥

卐

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

—: अथ तृतीयदिन विधि :—

क्षेत्रपालपूजनविधिः—

सौ प्रथम क्षेत्रपालनुं आह्वान नीचेना मंत्रथी करवुं:—

ॐ क्लौँ क्लौँ ब्लौँ स्वाँ लाँ ह्रीँ भुवनपालाय, माणिभद्राय, क्षेत्रदेवाय, यक्षाधिपतये, गजवाहनाय, खड्गहस्ताय, पाशाद्यायुधाय, सपरिच्छदाय अत्र श्री जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे अमुकनगरे अमुकगृहे जिनबिम्बाञ्जनशलाका-प्रतिष्ठामहोत्सवे आगच्छ आगच्छ, पूजां गृहाण गृहाण, पूजायामवतिष्ठ अवतिष्ठ स्वाहा ॥

पछी क्षेत्रपालनुं पूजन नीचेनुं काव्य तथा मंत्र बोली करवुं:—

भो क्षेत्रपाल ! जिनपप्रतिमाङ्कभाल !; दुष्टान्तकाल ! जिनशासनरक्षपाल ! ।
तैलाहिजन्मगुरुचन्दनपुष्पधूपै-र्भोगं प्रतीच्छ जगदीश्वरस्नात्रकाले ॥१॥ (वसंततिलका)

ॐ क्षाँ क्षीँ क्षूँ क्षैँ क्षौँ क्षः क्षेत्रपालं पूजयामि ॥

त्यार बाद नीचे प्रमाणे आसननुं काव्य तथा मंत्र बोलवो:—

तीक्ष्णदंष्ट्र ! महाकाय !; कल्पान्तदहनोपम ! ।
भैरवाय नमस्तुभ्य-मनुज्ञां दातुमर्हसि ॥ २ ॥ (अनुष्टभ्)

ॐ ह्रीँ आधारशक्तये कमलासनाय नमः ॥ ॥ इति क्षेत्रपालपूजनविधिः ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

-: दशदिक्पालपूजनविधि :-

पछी श्रावकोए सेवनना पाटला उपर दश दिक्पालोने स्थापवा अने तेमना नामोच्चारणपूर्वक ते ते दिशामां चंदन तिलक आदि करी तेमने *बोलावी मंत्रपूर्वक नवग्रह दशदिक्पालने बलिबाकुळा आपवा अने पत्र, पुष्प, फळ, अक्षत वगेरेथी पूजन करवुं.

१-इन्द्र दिक्पालपूजनविधिः-

प्रथम इन्द्रनुं आह्वान नीचेनो श्लोक तथा मंत्र बोली करवुं :--

ऐरावतसमारूढः, शक्रः पूर्वदिशि स्थितः।
सङ्घस्य शान्तये सोऽस्तु, बलिपूजां प्रतीच्छतु ॥१॥ (अनु.)

ॐ ह्रीँ आँ हाँ ह्रूँ ह्राँ श्रूँ ह्रूँ क्षः वज्राधिपतये इन्द्र संवौषट् ॥

---

१. दिक्पालनी रचना तथा उपकरण माटे परिशिष्ट नं. २-अ तेम २-ड मां जुओ.

२. हस्तलिखित प्र.क., मुद्रित प्र.क. तथा शान्तिस्नात्र विधि समुच्चयमां दिक्पाल आह्वानना मंत्राक्षरोमां फेरफार आवे छे तेथी अही प्रचलित शान्तिस्नात्र० प्रतः प्रमाणे मंत्रो लीधा छे.

* दिक्पाल ग्रहनुं आह्वान शांतिस्नात्र. प्रतानुसार करवुं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ॐ नमो भगवते इन्द्राय पूर्वदिग्दलासिने, ऐरावणवाहनाय, सहस्रनेत्राय, वज्रायुधाय, सपरिच्छदाय इह अमुकनगरे अमुकगृहे जिनबिम्बाञ्जनशलाका-प्रतिष्ठामहोत्सवे आगच्छ २; पूजां गृहाण २, पूजायामवतिष्ठ २ स्वाहा ॥

पूजानो मंत्र :--ॐ सोमाय नमः ।

([1]केरबानी नवकारवाळीथी 'ॐ ह्रीँ आँ-ए मंत्र १०८ वार गणवो.) ॥ १ ॥

२-अग्नि दिक्पालपूजनविधि :-

अग्निनुं आह्वान नीचेनो श्लोक तथा मंत्र बोली करवुं :--

सदा वह्निदिशो नेता, पावको मेषवाहनः ।
सङ्घस्य शान्तये सोऽस्तु, बलिपूजां प्रतीच्छतु ॥ २ ॥ (अनु.)

ॐ ह्रीँ रेँ रोँ रुँ रैँ रौँ रः अग्नि संवौषट् ।

ॐ नमो भगवते आग्नेयदिक्पालाधीशाय, महाज्वालाकराधीशाय, ॐ अग्निमूर्तये, शक्तिहस्ताय, मेषवाहनाय, सायुधाय, सपरिच्छदाय इह अमुक० अमुक० जिनबिम्बाञ्जन० आगच्छ २; पूजां गृहाण २; पूजायामवतिष्ठ २ स्वाहा ॥

पूजानो मंत्र :--ॐ ह्रीँ अग्नये नमः ।

---

१. नवकारवालीनुं विधान मूलमां नथी परंतु हाल अंजनशलाका महोत्सवमां दिक्पालनी माला गणाय छे तेथी अहीं जणावेल छे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(परवाळानी नवकारवाळीथी–' ॐ ह्रीँ रेँ–' मंत्र १०८ वार गणवो.) ॥ २ ॥

३–यम दिक्पालपूजनविधि :–

यमनुं आह्वान नीचेनो श्लोक तथा मंत्र बोली करवुं :–

दक्षिणस्यां दिशि स्वामी, यमो महिषवाहनः ।
सङ्घस्य शान्तये सोऽस्तु, बलिपूजां प्रतीच्छतु ॥ ३ ॥ (अनु.)

ॐ क्षूँ हूँ ह्राँ क्षः यम संवौषट् ॥

ॐ नमो भगवते यमाय महिषवाहनाय, दक्षिणदिग्दलासनाय, महाकालदण्डरूपधारिणे, कृष्णमूर्तये, सायुधाय, सपरिच्छदाय, इह अमुक० अमुक० जिनबिम्बाञ्जन० आगच्छ २; पूजां गृहाण २, पूजायामवतिष्ठ २ स्वाहा ॥

पूजन मंत्र :–ॐ ह्रीँ यमाय नमः ।

(अकलबेरनी माळाथी 'ॐ क्षूँ हूँ–' मंत्र १०८ वार गणवो.) ॥ ३ ॥

४ नैर्ऋत दिक्पालपूजनविधि :–

नैर्ऋतनुं आह्वान नीचेनो श्लोक तथा मंत्र बोली करवुं :–

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

यमापरान्तरालोऽसौ, नैर्ऋतः शववाहनः।

सङ्घस्य शान्तये सोऽस्तु, बलिपूजां प्रतीच्छतु ॥ ४ ॥ (अनु.)

ॐ ग्लौँ ह्रैँ नैर्ऋत संवौषट्।

ॐ नमो भगवते नैर्ऋताय शववाहनाय, तिशितिनिस्तृतिकराय, महाराक्षसमूर्तये, खड्गहस्ताय, सायुधाय सपरिच्छदाय इह अमुक० अमुक० जिनबिम्बाञ्जन० आगच्छ २, पूजां गृहाण २, पूजायामवतिष्ठ २ स्वाहा।

पूजन मंत्रः—ॐ ह्रीँ नैर्ऋतये नमः।

(अकलबेरनी माळाथी—'ॐ ग्लौँ—मंत्र १०८ वार गणवो.) ॥ ४ ॥

५—वरुण दिक्पालपूजनविधिः—

वरुणनुं आह्वान नीचेनो श्लोक तथा मंत्र बोली करवुं:—

यः प्रतीचिदिशो नाथो, वरुणो मकरस्थितः।

सङ्घस्य शान्तये सोऽस्तु, बलिपूजां प्रतीच्छतु ॥ ५ ॥ (अनु.)

ॐ श्रीँ ह्रौँ वरुण संवौषट्।

ॐ नमो भगवते वरुणाय पश्चिमदिग्दलाधीश्वराय, पात्रहस्ताय, मकरवाहनाय, परशुहस्ताय सायुधाय सपरिच्छदाय

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इह अमुक० अमुक० जिनबिम्बाञ्जन० आगच्छ २; पूजां गृहाण २, पूजायामवतिष्ठ २ स्वाहा ।

पूजन मंत्र :—ॐ ह्रीँ वरुणाय नमः ।

(केरबानी माळाथी 'ॐ श्रीँ होँ–मंत्र १०८ वार गणवो.) ॥ ५ ।

६–वायु दिक्पालपूजनविधि :—

वायुनुं आह्वान नीचेनो श्लोक तथा मंत्र बोली करवुं :—

हरिणो वाहनं यस्य, वायव्याधिपतिर्मरुत् ।
सङ्घस्य शान्तये सोऽस्तु, बलिपूजां प्रतीच्छतु ॥ ६ ॥ (अनु.)

ॐ क्लीँ होँ वायु संवौषट् ।

ॐ नमो भगवते वायव्याधिपतये, त्रिभुवनव्यापकमूर्तये, जगज्जीवनाय, ध्वजहस्ताय, मृगवाहनाय, सायुधाय, सपरिच्छदाय इह अमुक० अमुक० जिनबिम्बाञ्जन० आगच्छ २; पूजां गृहाण २; पूजायामवतिष्ठ २ स्वाहा ।

पूजन मंत्र :—ॐ ह्रीँ वायवे नमः ।

(केरबानी माळाथी 'ॐ क्लीँ होँ—' मंत्र १०८ वार गणवो.) ॥ ६ ॥

७–कुबेर दिक्पालपूजनविधि :—

कुबेरनुं आह्वान नीचेनो श्लोक तथा मंत्र बोली करवुं :—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निधाननवकारूढ, उत्तरस्यां दिशि प्रभुः।

सङ्घस्य शान्तये सोऽस्तु, बलिपूजां प्रतीच्छतु ॥ ७ ॥ (अनु.)

ॐ ब्लौँ हौँ कुबेर संवौषट्।

ॐ नमो भगवते धनदाय, नरवाहनाय, नवनिधिकराय, उत्तरदिग्दलासनाय, गदायुधाय, निधानमूर्तये, सायुधाय सपरिच्छदाय इह अमुक० अमुक० जिनबिम्बाञ्जन० आगच्छ २; पूजां गृहाण २; पूजायामवतिष्ठ २ स्वाहा।

पूजन मंत्र :—ॐ ह्रीँ कुबेराय नमः।

(स्फटिकनी माळाथी 'ॐ ब्लौँ हौँ—' मंत्र १०८ वार गणवो.) ॥ ७ ॥

८ ईशान दिक्पालपूजनविधि :—

ईशाननुं आह्वान नीचेनो श्लोक तथा मंत्र बोली करवुं :—

सिते वृषेऽधिरूढश्च, ऐशान्याश्च दिशो विभुः।

सङ्घस्य शान्तये सोऽस्तु, बलिपूजां प्रतीच्छतु ॥ ८ ॥ (अनु.)

ॐ हाँ हूँ हैँ हः ईशान संवौषट्।

ॐ नमो भगवते ईशानाधिपतये, वृषाधिरूढाय, त्रिशूलहस्ताय, सवाहनाय, सपरिच्छदाय इह अमुक० अमुक०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जिनबिम्बाञ्जन० आगच्छ २, पूजां गृहाण २, पूजायामवतिष्ठ २ स्वाहा ॥

पूजन मंत्र :--'ॐ ह्रीँ ईशानाय नमः ।

(स्फटिकनी माळाथी-'ॐ हाँ हूँ--'मंत्र १०८ वार गणवो.)

९-नागलोक दिक्पालपूजनविधि :--

नागलोकनुं आह्वान नीचेनो श्लोक तथा मंत्र बोली करवुं :--

पातालाधिपतिर्योऽस्ति, सर्वदा पद्मवाहनः ।
सङ्घस्य शान्तये सोऽस्तु, बलिपूजां प्रतीच्छतु ॥ ९ ॥ (अनु.)

ॐ आँ ह्रीँ क्रौँ ऐँ क्ष्मौँ पद्मावतीसहिताय धरणेन्द्र संवौषट् ।

ॐ नमो भगवते पद्मावतीसहितधरणेन्द्राय, पातालाधिपतये, समस्तफणावलिभास्कर-रत्नावलिभूषिताय, नवकुल-नागलोकवृन्दपरिवृताय, सायुधाय, सपरिच्छदाय इह अमुक० अमुक० जिनबिम्बाञ्जन० आगच्छ २; पूजां गृहाण २, पूजायामवतिष्ठ २ स्वाहा ॥

पूजन मंत्र :—ॐ ह्रीँ नागकुमाराय नमः ।

(स्फटिकनी माळाथी-'ॐ आँ ह्रीँ--मंत्र १०८ वार गणवो.) ॥ ९ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०–ब्रह्मलोक दिक्पालपूजनविधि :–

ब्रह्मलोकविभुर्यस्तु, राजहंससमाश्रितः।
सङ्घस्य शान्तये सोऽस्तु, बलिपूजां प्रतीच्छतु ॥ १० ॥ (अनु.)

ॐ ह्रीँ क्ष्रूँ व्लूँ चँ द्र ब्रह्मन् संवौषट्।

ॐ नमो भगवते ब्रह्मदेवलोके अप्रतिहतगतये, कृतस्थितये, परमानन्दिने, देवमूर्तये, ऊर्ध्वलोकाधिष्ठायकाय, राजहंसवाहनाय, सायुधाय, सपरिच्छदाय, इह अमुक० अमुक० जिनविम्बाञ्जन० आगच्छ २; पूजां गृहाण २, पूजायामवतिष्ठ २ स्वाहा।

पूजन मंत्र :––ॐ ह्रीँ ब्रह्मणे नमः।

(स्फटिकनी माळाथी––'ॐ ह्रीँ क्ष्रूँ–मंत्र १०८ वार गणवो.) ॥ १० ॥

पछी दशे दिक्पालोने नैवेद्यादि चढाववा.

तेनो मंत्र :–'ॐ इन्द्राऽग्नि–यम–नैर्ऋत–वरुण–वायु–कुबेरेशान–ब्रह्म–नागेति दशदिक्पाला जिनपतिपुरतोऽवतिष्ठन्तु स्वाहा ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सफेद धजा चढाववो.

तेनो मंत्रः–'ॐ ह्रीँ इन्द्रादयो दिक्पालाः स्वस्वदिशि स्थिता विघ्नशान्तिकरा भगवदाज्ञायां सावधाना भवन्तु स्वाहा ॥

॥ इति दशदिक्पालपूजनविधिः ॥

अथ भैरवपूजनम्––

नीचेनो मंत्र (त्रण वार) बोली भैरवनुं पूजन करवुं :––

'ॐ ह्रीँ क्षां क्षः भैरवाय नमः ॥

॥ इति भैरवपूजन विधिः ॥

अथ षोडशविद्यादेवीपूजनविधि :––

सौ प्रथम नीचेना त्रण श्लोको तेमज मंत्र बोली १६ विद्यादेवीओनुं आह्वान करवुं :––

रोहिणी प्रथमा तासु, प्रज्ञप्तिर्वज्रशृङ्खला ।
वज्राङ्कुशाऽप्रतिचक्रा, समं पुरुषदत्तया ॥ १ ॥ (अनु.)

काली तथा महाकाली, गौरी गान्धार्यथाऽपरा ।
ज्वालामालिनी मानवी, वैरोट्या चाच्युता मता ॥ २ ॥ (अनु.)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मानसी च महामान–स्येतास्ता देवता मताः ।
अभिषेकोत्सवे जैने, यथास्थानमनिन्दिताः ॥ ३ ॥ (अनु.)

ॐ ऐँ क्लीँ ह्रौँ आँ ह्रीँ क्रौँ षोडशमहादेव्यो, हंस–गज–कमल–नरसिंह–वाहना, छत्रचामरधराः, सायुधाः, सवाहनाः, सपरिच्छदा इह अमुक० अमुक० जिनबिम्बाञ्जनशलाका–प्रतिष्ठामहोत्सवे आगच्छत आगच्छत; पूजां गृह्णीत गृह्णीत; पूजायामवतिष्ठत अवतिष्ठत स्वाहा ॥

पछी सोळे विद्यादेवीनुं पूजन करवुं.

तेनो मंत्र :–" ॐ ह्रीँ षोडशमहादेवीभ्यो नमः" ॥

॥ इति षोडशविद्यादेवीपूजनविधिः ॥

अथ नवग्रहपूजनविधि :––

सौ प्रथम श्रावके बीजा सेवनना पाटला उपर ग्रहमंडळ करवुं. अने तेमां ग्रहोनी स्थापना करवी.

---

१. अहीं सोळे विद्यादेवीओनां नाम बोलीने अथवा आचारदिनकरादिकमां आवता सोळविद्यादेवीओना श्लोको बोलीने पण पूजन थइ शके छे. ते श्लोको परिशिष्ट नं. १ ई मां आपेल छे.

२. ग्रहोनी रचना, आकार तथा ग्रहपूजनना उपकरण माटे परिशिष्ट नं. २ ब तथा २ इ मां जुओ.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१–सूर्य पूजन :––

सूर्यनुं आह्वान नीचेनो श्लोक तथा मंत्र बोली करवुं :––

सूर्यो द्वादशरूपेण, माठरादिभिरावृतः ।
अशुभोऽपि शुभस्तेषां, सर्वदा भास्करो ग्रहः ॥ १ ॥ (अनु.)

ॐ ह्रीँ आदित्य! श्री पद्मप्रभजिनशासनवासिन्! श्री सूर्याय, सहस्रकिरणाय, गज–वृषभ–सिंह–तुरगवाहनाय, रक्तवर्णाय, दिव्यरूपाय, द्युतिरूपाय, सायुधाय, सवाहनाय, सपरिच्छदाय, इह अमुक॰ अमुक॰ जिनबिम्बाञ्जनशलाका-प्रतिष्ठामहोत्सवे आगच्छ आगच्छ; पूजां गृहाण गृहाण; पूजायामवतिष्ठ अवतिष्ठ स्वाहा ।

पूजन मंत्र :–ॐ सूर्याय नमः ॥

(पैरवाळानी माळाथी "ॐ ह्रीँ रत्नाङ्कसूर्याय सहस्रकिरणाय नमः स्वाहा" मंत्र १०८ वार गणवो.)

---

१. अहीं नवग्रहपूजन तथा दिक्पालपूजनमां–"ॐ नम आदित्याय सवाहनाय सपरिकराय सायुधाय चन्दनं समर्पयामि स्वाहा; पुष्पं समर्पयामि स्वाहा; वस्त्रं समर्पयामि स्वाहा, फलं समर्पयामि स्वाहा, धूपमाघ्रापयामि स्वाहा, दीपं दर्शयामि स्वाहा, नैवेद्यं समर्पयामि स्वाहा; अक्षतं तांबूलं द्रव्यं सर्वोपचारान् समर्पयामि स्वाहा" आ मंत्रो कही ते ते द्रव्यनुं समर्पण करवामां आवे छे.

२. ग्रहनी माला गणवानुं सूचन प्रतिष्ठाकल्पमां छे. परंतु मंत्र जणावेल नथी तेथी अहीं शान्तिस्नात्रनी प्रतानुसार ग्रहनां मंत्रो लीधा छे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२ चंद्र पूजनः—

चंद्रनुं आह्वान नीचेना श्लोक तथा मंत्र बोली करवुंः—

अत्रिनेत्रसमुद्भूत–क्षीरसागरसम्भवः । जातो यवनदेशे तु, चित्रायां समदृष्टिकः ॥२॥ (अनु.)

ॐ ह्रीँ चन्द्र ! श्री चन्द्रप्रभजिनशासनवासिन्, प्रतीचीदिग्दलोद्भूत ! अक्षमालाकमलाम्बुपाणये, अमृतात्मने, श्री सोमाय, धवलद्युतिकराय, मृगवाहनाय, सायु०, सवाह०, सपरि० इह अमुक० अमुक० जिनबिम्बाञ्जन० आगच्छ २; पूजां गृहाण २; पूजायामवतिष्ठ २; स्वाहा ॥

पूजनमंत्रः–ॐ सोमाय नमः ।

(स्फटिकनी माळाथी 'ॐ रोहिणीपतये चन्द्राय ॐ ह्रीँ द्राँ द्रीँ चन्द्राय नमः स्वाहा' मंत्र १०८ वार गणवो.) ॥२॥

३ मंगळ पूजनः—

मंगळनुं आह्वान नीचेनो श्लोक तथा मंत्र बोली करवुंः—

सर्वदा वासुपूज्यस्य, नाम्ना शान्तिकरो भवेत् ।
रक्षां कुरु धरापुत्र !, अशुभोऽपि शुभोऽपि वा ॥ ३ ॥ (अनु.)

ॐ ह्रीँ भौम ! श्री वासुपूज्यजिनशासनवासिन् ! वारुणदिग्दलासिने, रक्तप्रभाक्षसूत्रवलयकुण्डिकालङ्कृते,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रीभौमाय गजवाहनाय सायु०, सवाह०, सपरि० इह अमुक० अमुक० जिनबिम्बाञ्जन० आगच्छ २; पूजां गृहाण २, पूजायामवतिष्ठ २ स्वाहा ॥

पूजनमंत्रः–ॐ भौमाय नमः ।

(परवाळानी माळाथी–'ॐ नमो भूमिपुत्राय भूभृकुटिलनेत्राय वक्रवदनाय द्रः सः मङ्गलाय स्वाहा' मंत्र १०८ वार गणवो.) ॥३॥

४ बुध पूजनः—

बुधनुं आह्वान नीचेनो श्लोक तथा मंत्र बोली करवुंः—

कर्कोटिरूपरूपाद्यैः, धूपपुष्पानुलेपनैः ।
दुग्धान्नैर्वरनारिङ्गै–स्तर्पितः सोमनन्दनः ॥ ४ ॥ (अनु.)

ॐ ह्रीँ बुध ! श्री शान्तिजिनशासनवासिन् ! ह्रीँ पूर्वोत्तरदिग्दलासिने, हेमप्रभाक्षकमण्डलुव्यग्रपाणये, ॐ बुधाय, केसरिवाहनाय, गदाधराय सायु०, स्वाह०, सपरि० इह अमुक० अमुक० जिनबिम्बाञ्जन० आगच्छ२, पूजां गृहाण२, पूजायामवतिष्ठ २ स्वाहा ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पूजन मंत्रः–ॐ बुधाय नमः ।

(केरबा (नीलमणि)नी माळाथी–'ॐ नमो बुधाय ग्राँ ग्रीँ ग्रः द्रः स्वाहा' मंत्र १०८ वार गणवो.) ॥४॥

५ गुरु पूजनः—

गुरुनुं आह्वान नीचेनो श्लोक तथा मंत्र बोली करवुंः—

उत्तराफल्गुनीजातः, सिन्धुदेशसमुद्भवः ।
दध्यन्नमातुलिङ्गैश्च, तुष्टः पुष्पैर्विलेपनैः ॥ ५ ॥ (अनु.)

ॐ ह्रीँ बृहस्पते ! श्री आदिनाथजिनशासनवासिन् ! उत्तरदिग्दलासिने, पीतद्युत्यक्षसूत्रकुण्डिकायुतपाणये, ॐ त्रिदशाचार्यबृहस्पतये, पुस्तकहस्ताय, हंसगरुडवाहनाय, सायु०, सवाह०, सपरि०, इह अमुक० अमु० जिनबिम्बाञ्जन० आगच्छ२; पूजां गृहाण२; पूजायामवतिष्ठ२ स्वाहा ॥

पूजन मंत्रः–ॐ बृहस्पतये नमः ।

(केरबानी नवकारवाळीथी–'ॐ ग्राँ ग्रीँ ग्रूँ बृहस्पतये सुरपूज्याय नमः स्वाहा' मंत्र १०८ वार गणवो.) ॥५॥

६ शुक्र पूजनः—

शुक्रनुं आह्वान नीचेनो श्लोक तथा मंत्र बोली करवुंः—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शुक्रश्वेतमहापद्म-षोडशार्चिः कटाक्षदृक् ।
सुगन्धचन्दनालेपैः, श्वेतपुष्पैश्च धूपनैः ॥ ६ ॥ (अनु.)

ॐ ह्रीँ शुक्र ! श्रीसुविधिजिनशासनवासिन् ! पूर्वदिग्दलासिने, धवलवर्णाक्षसूत्रकमण्डलुपाणये, असुरमन्त्रिणे ॐ शुक्राय, शूकरवाहनाय, सायु०, सवाह०, सपरि०, इह अमुक० अमुक० जिनबिम्बाञ्जन० आगच्छ२; पूजां गृहाण२; पूजायामवतिष्ठ२ स्वाहा ॥

पूजन मंत्रः-ॐ शुक्राय नमः ।

(स्फटिक के रुपानी माळाथी-'ॐ यः अमृताय अमृतवर्षणाय दैत्यगुरवे नमः स्वाहा' मंत्र १०८ वार गणवो.) ॥६॥

७ शनि पूजनः--

शनिनुं आह्वान नीचेनो श्लोक तथा मंत्र बोली करवुंः--

नीलपत्रिकया प्रीत-स्तैलेन कृतलेपनः ।
उत्पत्तिः काचकासारे, पङ्गुलो मेषवाहनः ॥ ७ ॥ (अनु.)

ॐ ह्रीँ क्रौँ शने ! श्री मुनिसुव्रतजिनशासनवासिन् ! अपरदिग्दलासिने, श्याममूर्तये, श्रीशनैश्चराय, मेषवाहनाय, सायु०, सवाह०, सपरि० इह अमुक० अमुक० जिनबिम्बाञ्जन० आगच्छ२, पूजां गृहाण२; पूजायामवतिष्ठ २ स्वाहा ॥ ॥४५॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पूजन मंत्रः-- ॐ शनैश्चराय नमः

(अकलबेरनी माळाथी-'ॐ शनैश्चराय ॐ क्रौं ह्रीँ क्रौंडाय नमः स्वाहा' मंत्र १०८ वार गणवो.) ॥७॥

८ राहु पूजनः--

राहुनुं आह्वान नीचेनो श्लोक तथा मंत्र बोली करवुं :--

सञ्जातो बब्बरे कूले, सुधूपैः कृष्णलेपनैः ।
तिलपुष्पैर्नालिकेरै-स्तिलमाषैस्तु तर्पितः ॥ ८ ॥ (अनु.)

ॐ ह्रीँ राहो! श्रीनेमिजिनशासनवासिन् ! दक्षिणापरदिग्दलासिने, अतिकृष्णवर्ण-पाण्यग्रहित्थमुद्र-महातम-स्वभावात्मने, श्री राहवे सायु०, सवाह०, सपरि०, इह अमुक० अमुक० जिनबिम्बाञ्जन० आगच्छ२; पूजां गृहाण२; पूजायामवतिष्ठ २ स्वाहा ॥

पूजन मंत्रः-'ॐ राहवे नमः ।

(अकलबेरनी माळाथी-'ॐ ह्रीँ ठाँ श्रीँ व्रः व्रः व्रः पिङ्गलनेत्राय कृष्णरूपाय राहवे नमः स्वाहा' मंत्र १०८ वार गणवो.) ॥८॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९ केतु पूजनः--

केतुनुं आह्वान नीचेनो श्लोक तथा मंत्र बोली करवुंः--

राहोः सप्तमराशिस्थः, कारणे दृश्यतेऽम्बरे ।
दाडिमस्य विचित्रान्नै-स्तृप्यते चित्रपूजया ॥ ९ ॥ (अनु.)

ॐ ह्रीँ केतो ! श्री पार्श्वजिनशासनवासिन् ! अपरोत्तरदिग्दलासिने, धूमवर्णाक्षसूत्रकुण्डिकालङ्कृतपाणिद्वयानेक-स्वभावात्मने, श्री केतवे सायु०, सवाह०, सपरि० इह अमुक० अमुक० जिनबिम्बाञ्जन० आगच्छ;२ पूजां गृहाण,२ पूजायामवतिष्ठ,२ स्वाहा ॥

पूजन मंत्रः-'ॐ केतवे नमः ।

(अकलबेरनी के गोमेदरूनी माळाथी-'ॐ कां कीं कैँ टः टः टः छत्ररूपाय राहुतनवे केतवे नमः स्वाहा' मंत्र १०८ वार गणवो.) ॥९॥

त्यार बाद नीचे प्रमाणे 'ग्रहशान्तिस्तोत्र' बोलवुंः--

जगद्गुरुं नमस्कृत्य, श्रुत्वा सद्गुरुभाषितम् ।
ग्रहशान्तिं प्रवक्ष्यामि, भव्यानां सुखहेतवे ॥ १ ॥ (अनु.)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जिनेन्द्रैः खेचरा ज्ञेयाः, पूजनीया विधिक्रमात् ।
पुष्पैर्विलेपनैर्धूपै-र्नैवेद्यैस्तुष्टिहेतवे ॥ २ ॥ (अनु.)

पद्मप्रभस्य मार्तण्ड-श्चन्द्रश्चन्द्रप्रभस्य च ।
वासुपूज्यस्य भूपुत्रो, बुधस्याष्टौ जिनेश्वराः ॥ ३ ॥ (अनु.)

विमलाऽनन्तधर्माराः, शान्तिः कुन्थुर्नमिस्तथा ।
वर्धमानस्तथैतेषां, पादपद्मे बुधं न्यसेत् ॥ ४ ॥ (अनु.)

ऋषभाऽजितसुपार्श्वा-श्चाभिनन्दनशीतलौ ।
सुमतिः सम्भवस्वामी, श्रेयांसश्चेषु गीष्पतिः ॥ ५ ॥ (अनु.)

सुविधेः कथितः शुक्रः, सुव्रतस्य शनैश्चरः ।
नेमिनाथे भवेद्राहुः, केतुः श्रीमल्लिपार्श्वयोः ॥ ६ ॥ (अनु.)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जनॉल्लग्ने च राशौ च, पीडयन्ति यदाः ग्रहाः ।
तदा संपूजयेद् धीमान्, खेचरैः सहितान् जिनान् ॥ ७ ॥ (अनु.)

ॐ आदित्य-सोम-मङ्गल-बुधगुरुशुक्राः शनैश्चरो राहुः ।
केतुप्रमुखाः खेटाः, जिनपतिपुरतोऽवतिष्ठन्तु ॥ ८ ॥ (आर्या)

पुष्पगन्धादिभिर्धूपैर्नैवेद्यैः फलसंयुतैः । वर्णसदृशदानैश्च, वस्त्रैश्च दक्षिणान्वितैः ॥ ९ ॥ (अनु.)

जिनानामग्रतः स्थित्वा, ग्रहाणां शान्तिहेतवे । नमस्कारस्तवं भक्त्या, जपेदष्टोत्तरं शतम् ।१०। (अनु.)

भद्रबाहुरुवाचैवं, पञ्चमः श्रुतकेवली । विद्याप्रवादतः पूर्वाद्, ग्रहशान्तिरुदीरिता ॥ ११ ॥ (अनु.)

पछी नैवेद्यादिनो थाळ हाथमां लई नीचेनुं काव्य तथा मंत्र बोली नवग्रहना पाटला उपर चढाववुंः--

जिनेन्द्रभक्त्या जिनभक्तिभाजां, जुषन्तु पूजाबलिपुष्पधूपान् ।
ग्रहा गता ये प्रतिकूलभावं, ते सानुकूला वरदा भवन्तु ॥ १ ॥ (उपजाति)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"ॐ नमो ह्रीँ भो भो सूर्यादयो नवग्रहा विघ्नप्रशान्तिकरा भगवदाज्ञया सावधाना भवन्तु स्वाहा ॥

॥ इति नवग्रहपूजनविधिः ॥

अथ अष्टमङ्गलपूजन विधि :

सौ प्रथम नीचेनो श्लोक बोली अष्टमंगलना पाटला उपर कुसुमांजलि करवी :

मङ्गलं श्रीमदर्हन्तो, मङ्गलं जिनशासनम् ।
मङ्गलं सकलसङ्घो, मङ्गलं पूजका अमी ॥१॥ (अनुष्टुभ्)

त्यारबाद नीचेना श्लोक बोलतां क्रमसर स्वस्तिकादिक आठे मंगलोने वधावी पान-चोखा-सोपारी आदि मूकवा :—

१ स्वस्तिक :—स्वस्ति भूगगननागविष्टपे-ष्वूदितं जिनवरोदयेक्षणात् ।
स्वस्तिकं तदनुमानतो जिन-स्याग्रतो बुधजनैर्विलिख्यते ॥ १ ॥ (स्वागता)

२. श्रीवत्स :—अन्तःपरमज्ञानं, यद् भाति जिनाधिनाथहृदयस्य ।
तच्छ्रीवत्सव्याजात्, प्रकटीभूतं बहिर्वन्दे ॥ २ ॥ (आर्या)

१. अष्टमंगलपूजनविधि प्रतिष्ठाकल्पमां आवती नथी परंतु हाल दिक्पाल-ग्रहपूजन साथे करावाय छे तेथी अहीं आपेल छे।
२. अष्टमंगलनी रचना माटे परिशिष्ट नं. २ क जुओ.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३. पूर्ण कळश :—विश्वत्रये च स्वकुले जिनेशो, व्याख्यायते श्रीकलशायमानः ।
अतोऽत्र पूर्णं कलशं लिखित्वा, जिनार्चनाकर्म कृतार्थयामः ॥३॥ (उपजातिः)

४. भद्रासन :—जिनेन्द्रपादैः परिपूज्यपृष्ठै—रतिप्रभावैरतिसन्निकृष्टम् ।
भद्रासनं भद्रकरं जिनेन्द्र—पुरो लिखेन्मङ्गलसत्प्रयोगम् । ॥४॥ (उपजातिः)

५. नन्द्यावर्त :—त्वत्सेवकानां जिननाथ ! दिक्षु, सर्वासु सर्वे निधयः स्फुरन्ति ।
अतश्चतुर्धा नवकोणनन्द्या—वर्तः सतां वर्तयतां सुखानि ॥ ५ ॥ (उपजातिः)

६. वर्धमान संपुटः-पुण्यं यशःसमुदयः प्रभुता महत्वं, सौभाग्य--धी—विनय—शर्म—मनोरथाश्च ।
वर्धन्त एव जिननायक ! ते प्रसादा—त्तद्वर्धमानयुगसंपुटमादधामः ॥६॥ (वसन्ततिलका)

७. मत्स्ययुग्म :—त्वद्वध्यपञ्चशरकेतनभावक्लृप्तं, कर्तुं मुधा भुवननाथ ! निजापराधम् ।
सेवां तनोति पुरतस्तव मीनयुग्मं, श्राद्धैः पुरो विलिखितं निरुजाऽऽङ्गयुक्त्या ॥७॥ (वसन्त.) ॥५१॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८. दर्पण :—आत्माऽऽलोकविधौ जिनोऽपि सकल–स्तीव्रं तपो दुश्चरं;
दानं ब्रह्म परोपकारकरणं, कुर्वन् परिस्फूर्जति ।
सोऽयं यत्र सुखेन राजति स वै, तीर्थाधिपस्याग्रतो,
निर्मेयः परमार्थवृत्तिविदुरैः, सञ्ज्ञानिभिर्दर्पणः ॥ ८ ॥ (शार्दूलविक्रीडित)

त्यार बाद उभा थई हाथमां श्रीफळादिनो थाळ लई अष्टमंगळना पाटला उपर नीचेनो श्लोक बोली पधरावबुं :-

नामजिणा जिणनामा, ठवणजिणा पुण जिणिंदपडिमाओ ।
दव्वजिणा जिणजीवा, भावजिणा समवसरणत्था ॥ १ ॥ (आर्या)

पछी ते अष्टमंगळनो पाटलो स्थान उपर मूकता नीचेनो मंत्र बोलवो:-

ॐ अर्हं स्वस्तिक–श्रीवत्स–कुम्भ–भद्रासन–नन्द्यावर्त–वर्द्धमान–मत्स्ययुग्म–दर्पणान्यत्र–जिनबिम्बाञ्जन० सुस्थापितानि, सुप्रतिष्ठानि, अधिवासितानि लं लं लं ह्रीँ नमः स्वाहा ॥

॥ इति अष्टमङ्गल पूजनविधिः ॥

त्यार बाद श्रीशान्तिजिनकलश कहेवो.

॥ इति तृतीयदिनविधिः ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अथ चतुर्थदिन विधिः

श्री सिद्धचक्रपूजनविधि :-

सौ प्रथम नीचेना मंत्रोथी अनुक्रमे क्षेत्रपाल, दिक्पाल, ग्रह तेमज शासनदेवीनुं पूजन करवुं.

क्षेत्रपाल पूजन :— ॐ क्षाँ क्षीँ क्षूँ क्षैँ क्षौँ क्षः अर्हं जिनशासनवासिन् ? क्षेत्रपालाय नमः ।

दिक्पाल पूजन :— ॐ ह्रीँ दिक्पालेभ्यो नमः ॥ **ग्रहपूजन मंत्र** :— ॐ ह्रीँ ग्रहेभ्यो नमः ॥

जिनशासनदेवी पूजन मंत्र :— ॐ ऐँ क्लीँ ह्सौँ भगवत्यः श्रीजिनशासनेश्वरी–चतुर्विंशतिशासनदेव्यः चक्रेश्वरी-अम्बिका–पद्मावती–सिद्धायिकाद्या देव्यः सिंहपद्मवाहनाः खड्गहस्ताः, सायुधाः; सवाहनाः; सपरिच्छदाः । इह अमुक० अमुक० जिनबिम्बाञ्जन० आगच्छत २, पूजां गृह्णीत २, पूजायामवतिष्ठत २ स्वाहा ॥

पछी इन्द्रपूजा करवी. तेनो मंत्र :— ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः अर्हं क्षुं हूँ इन्द्राः श्रीसौधर्मादिचतुःषष्टिः सायुधाः सवाहनाः; सपरिच्छदाः; इह अमुक० अमुक० जिनबिम्बाञ्जन० आगच्छत २, पूजां गृह्णीत २, पूजायामवतिष्ठत २ स्वाहा ॥ जळ, चंदन, पुष्प, धूपादिथी इन्द्रपूजन करवुं.

पछी आ मंत्र कहेवो :— "भो भो इन्द्रा ! विघ्नप्रशान्तिकरा भगवदाज्ञया सावधाना भवन्तु स्वाहा" ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

त्यार बाद भूतोने आपवानो बलि नीचेना भूतबलिमंत्रथी त्रणवार मंत्री दशे दिशाओमां धूप–दीप–चंदन–पुष्प–जळ–वास–लापसी बाकुळा–पुडला–वडां वगेरे सहित बलिबाकुळा जिनगृहनी बहार उडाववा :—

मंत्र :— ॐ नमो अरिहंताणं, ॐ नमो सिद्धाणं, ॐ नमो आयरियाणं, ॐ नमो उवज्झायाणं, ॐ नमो लोए सव्वसाहूणं, ॐ नमो आगासगामीणं, ॐ नमो चारणाइलद्धीणं। जे इमे किन्नर–किंपुरिस–महोरग–गरुल–सिद्ध–गंधव्व जक्ख–रक्खस–पिसाय–भूय–साइणि–डाइणिपभिइओ जिणघरनिवासिणो नियनियनिलयठिया पवियारिणो सन्निहिया असन्निहिया य ते सव्वे इमं विलेवण–धूव–पुप्फ–फल–पईव–सणाहं बलिं पडिच्छंता संतिकरा भवन्तु, तुट्ठिकरा भवन्तु, पुट्ठिकरा भवन्तु, सव्वत्थ रक्खं कुणंतु, सव्वत्थ दुरियाणि नासंतु, सव्वासिवमुवसमंतु, संति–तुट्ठि–पुट्ठि–सुत्थयणकारिणो भवन्तु स्वाहा ॥

अंगन्यास :—पछी नीचेना मंत्रो बोलतां (त्रणवार) अंगन्यास करवो :—

बोलवानो मंत्र	न्यास करवानुं अंग
१–ॐ नमः सिद्धम्।	मस्तक उपर
२–ॐ आँ ह्रीँ क्रौँ वद वद वाग्वादिनि अर्हन्मुखकमलनिवासिनि नमः ॥	मुख उपर
३–ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रः अर्हं नमः।	हृदय उपर
४–ॐ ह्रीँ सर्वसाधुभ्यो नमः।	नाभि उपर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५–ॐ ह्राँ अ–सि–आ–उ–साय नमः ।	पग उपर
६–ॐ ह्रीँ धर्माय नमः ।	शरीर उपर
७–ॐ नमो अरिहंताणं ।	हृदय उपर
८–ॐ नमो सिद्धाणं ।	मस्तक उपर
९–ॐ नमो आयरियाणं ।	शिखा उपर
१०–ॐ नमो उवज्झायाणं ।	नाभि उपर
११–ॐ नमो लोए सव्वसाहूणं ।	पग उपर
१२–ॐ नमो धम्माणं ।	शरीर उपर

करन्यास :—पछी नीचेना मंत्रो बोलतां (त्रणवार) करन्यास करवो :—

बोलवाना मंत्रो	न्यास स्थान
१–ॐ नमो अरिहंताणं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ।	बन्ने अंगुठा उपर
२–ॐ नमो सिद्धाणं तर्जनीभ्यां नमः ।	,, तर्जनी आंगळी उपर
३–ॐ नमो आयरियाणं मध्यमाभ्यां नमः ।	,, मध्यमा ,, ,,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४–ॐ नमो उवज्झायाणं अनामिकाभ्यां नमः । ,, अनामिका ,, ,,

५–ॐ नमो लोए सव्वसाहूणं कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ,, कनिष्ठिका ,, ,,

६–ॐ नमो आगासगामीणं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः । ,, हथेळी अने हाथना पाछळा भाग उपर

त्यार बाद आठ पांखडी वाळा कमळनो आकार (सिद्धचक्रमंडप) करवो. तेमां नीचे आपेल अनुक्रमे अरिहंतादिनी स्थापना अने कुसुमांजलि पहेलो श्लोक बोली करवी तेमज बीजो श्लोक अने मंत्र बोली पुष्प-अक्षत-फळ-दीप अने धूपथी पूजन करवुं. ते श्लोको अने मंत्र आ प्रमाणे छे.

१–अरिहंत पद :—(कमळना मध्यभागमां स्थापना करवी.) स्थापना श्लोक :—

अथाऽष्टदलमध्याब्ज–कर्णिकायां जिनेश्वरान् ।
आविर्भूतोल्लसद्बोधानावृतः स्थापयाम्यहम् ॥ १ ॥ (अनुष्टभ्)

पूजन श्लोक तथा मंत्र :—

निःशेषदोषेन्धन धूमकेतू–नपारसंसारसमुद्रसेतून् ।
यजे समस्तातिशयैकहेतून्, श्रीमज्जिनानम्बुजकर्णिकायाम् ॥ २ ॥

"ॐ ह्रीँ अर्हद्भ्यो नमः स्वाहा" मंत्रथी अरिहंत पदनुं पूजनादि करवुं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(स्फटिकनी माळाथी "नमो अरिहंताणं" पदनो यथाशक्य जाप करवो.) ॥१॥

२–सिद्धपद :—(पूर्व पत्रमां स्थापना करवी.) स्थापनाश्लोक :—

तस्य पूर्वदले सिद्धान्, सम्यक्त्वादिगुणात्मकान् ।
निश्रेयसं पदं प्राप्तान्, निदधे भक्तिनिर्भरः ॥ १ ॥

पूजनश्लोक तथा मंत्र :—

तत्पूर्वपत्रे परितः प्रणष्ट–दुष्टाष्टकर्मामधिगम्यशुद्धिम् ।
प्राप्तान् नरान् सिद्धिमनन्तबोधान्, सिद्धान् यजे शान्तिकरान्नराणाम् ॥२॥ (इन्द्रवज्रा)

"ॐ ह्रीँ सिद्धेभ्यो नमः स्वाहा" मंत्रथी सिद्ध पदनुं पूजन करवुं.

(लाल परवाळानी माळाथी "नमो सिद्धाणं" पदनो यथाशक्य जाप करवो.) ॥२॥

३–आचार्यपद :—(दक्षिण तरफना पत्रमां स्थापना करवी.) स्थापनाश्लोक :—

---

१ प्रतिष्ठा कल्पमां सिद्धचक्रना नव पदोनी नवकारवाली गणवानो उल्लेख नथी पण गणी शकाय तो उत्तम तेथी अहीं आपेल छे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्थापयामि ततः सूरीन्, दक्षिणेऽस्मिन् दलेऽमले ।
चरतः पञ्चधाऽऽचारं, षट्त्रिंशत्सद्गुणैर्युतान् ॥ १ ॥ (अनुष्टुभ्)

पूजनश्लोक तथा मंत्र :—

सूरीन् सदाचारविचारसारा–नाचारयन्तः स्वपरान् यथेष्टम् ।
उग्रोपसर्गैकनिवारणार्थ–मभ्यर्चयाम्यक्षतगन्धधूपैः ॥ २ ॥ (इन्द्रवज्रा)

"ॐ ह्रीँ सूरिभ्यो नमः स्वाहा" मंत्रथी आचार्यपदनुं पूजन करवुं.
(केरबानी माळाथी 'नमो आयरियाणं' पदनो यथाशक्य जाप करवो.) ॥३॥

४–उपाध्यायपद :—(पश्चिम पत्रमां स्थापना करवी.) स्थापनाश्लोक :—

द्वादशाङ्गश्रुताधारान्, शास्त्राध्ययनतत्परान् ।
निवेशयाम्युपाध्यायान्, पवित्रे पश्चिमे दले ॥ १ ॥ अनुष्टुभ्)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पूजनश्लोक तथा मंत्र :--

श्रीधर्मशास्त्राण्यनिशं प्रशान्त्यै, पठन्ति येऽन्यानपि पाठयन्ति ।
अध्यापकांस्तानपराब्जपत्रे, स्थितान् पवित्रान् परिपूजयामि ॥ २ ॥ (वसन्ततिलका)

"ॐ ह्रीँ उपाध्यायेभ्यो नमः स्वाहा" मंत्रथी उपाध्यायपदनुं पूजन करवुं.
(लीला रंगनी माळाथी 'नमो उवज्झायाणं' पदनो यथाशक्य जाप करवो.) ॥४॥

५-साधुपद :--(उत्तरपत्रमां स्थापना करवी.) स्थापनाश्लोक :--

व्याख्यादिकर्म कुर्वाणान्, शुभध्यानैकमानसान् ।
उदकपत्रगतान् नित्यं, साधूनर्चामि सुव्रतान् ॥ १ ॥ (अनुष्टुभ्)

पूजनश्लोक तथा मंत्र :--

वैराग्यमन्तर्वचसि प्रसिद्धं; सत्यं तपो द्वादशधा शरीरे ।
येषामुदकपत्रगतान् पवित्रान्, साधून् सदा तान् परिपूजयामि ॥ २ ॥ (इन्द्रवज्रा)

"ॐ ह्रीँ सर्वसाधुभ्यो नमः स्वाहा" मंत्रथी साधुपदनुं पूजन करवुं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(अकलबेरनी माळाथी 'नमो लोए सव्वसाहूणं' पदनो यथाशक्य जाप करवो.) ॥५॥

६-दर्शनपद :--(ईशानखूणामां स्थापना करवी.) स्थापनाश्लोक :--

जिनेन्द्रोक्तमतश्रद्धा-लक्षणं दर्शनं यजे ।
मिथ्यात्वमथनं शुद्धं, न्यस्तमीशानसद्दले ॥ १ ॥ (अनुष्टुभ्)

पूजनमंत्र[1] :—

'ॐ ह्रीँ सम्यग्दर्शनाय नमः स्वाहा' मंत्रथी दर्शनपदनुं पूजन करवुं.

(स्फटिकनी माळाथी 'नमो दंसणस्स' पदनो यथाशक्य जाप करवो.)

७-ज्ञानपद :—(अग्निखूणामां स्थापना करवी) स्थापनाश्लोक :—

अशेषद्रव्यपर्याय-रूपमेवावभासकम् ।
ज्ञानमाग्नेयपत्रस्थं, पूजयामि हितावहम् ॥ १ ॥ (अनु.)

१ दर्शनादि चारे पदोमां पूजननो श्लोक मूळ प्रतमां आवतो नथी केवल मंत्र ज आवे छे आचारदिनकरादिमां ते चारे पदोने लगतां श्लोको आवे छे ते बोलवा होई तो परिशिष्ट नं. १-उ मां आपेल छे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पूजनमंत्र :—

"[1]"ॐ ह्रीँ सम्यगज्ञानाय नमः स्वाहा" मंत्रथी ज्ञानपदनुं पूजन करवुं.

(स्फटिकनी माळाथी "नमो नाणस्स" पदनो यथाशक्य जाप करवो.)

८–चारित्रपद :–(नैर्ऋत्य खूणामां स्थापना करवी.) स्थापनाश्लोक :—

सामायिकादिभिर्भेदै–श्चारित्रं चारु पञ्चधा ।
संस्थापयामि पूजार्थं, पत्रे हि नैर्ऋते क्रमात् ॥ १ ॥ (अनु.)

पूजनमंत्र :—

"ॐ ह्रीँ सम्यक् चारित्राय नमः" मंत्रथी चारित्रपदनुं पूजन करवुं.

(स्फटिकनी माळाथी 'नमो चरित्तस्स' पदनो यथाशक्य जाप करवो.) ॥८॥

९–तपपद :–(वायव्य खूणामां स्थापना करवी.) स्थापनाश्लोक :—

---

१. दर्शनादि चारे पदोमां पूजननो श्लोक मूळ प्रतमां आवतो नथी. केवल मंत्र ज आवे छे. आचारदिनकरादिमां ते चारे पदोने लगतां श्लोको आवे छे. ते बोलवा होई तो परिशिष्ट नं. १–उ मां आपेल छे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

द्विधा द्वादशधा भिन्नं; पूते पत्रे तपः स्वयम् ।
निधापयापि भक्त्याऽत्र, वायव्यां दिशि शर्मदम् ॥ १ ॥ (अनु.)

पूजनमंत्र :—

"ॐ ह्रीँ सम्यक्तपसे नमः स्वाहा" मंत्रथी तपपदनुं पूजन करवुं.

(स्फटिकनी माळाथी 'नमो तवस्स' पदनो यथाशक्य जाप करवो. ॥९॥

पछी बे हाथ जोडी नवे पदनी स्तुतिरूप नीचेनुं काव्य बोलवुं :—

निःस्वेदत्वादिदिव्या-ऽतिशयमयतनून् श्रीजिनेन्द्रान् सुसिद्धान्;
सम्यक्त्वादिप्रकृष्टा-ष्टगुणभृत इहा-चारसारांश्च सूरीन् ।
शास्त्राणि प्राणिरक्षा-प्रवचनरचना-सुन्दराण्यादिशन्त-,
स्तत्सिद्ध्यै पाठकान् श्री-यतिपतिसहिता-नर्चयाम्यर्घ्यदानैः ॥ १ ॥ (स्रग्धरा)

पछी सिद्धचक्रनुं चंदन, पुष्प, फूल, धूप, दीप, नैवेद्य आदिथी पूजन नीचेनो श्लोक तथा मंत्र बोली करवुं :—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इत्थमष्टदलं पद्मं, पूरयेदर्हदादिभिः ।
स्वाहान्तैः प्रणवाद्यैश्च, पदैर्विघ्ननिवृत्तये ॥ १ ॥ (अनु.)

"ॐ ह्रीँ पञ्चपरमेष्ठिभ्यः सम्यग्दर्शनादिचतुरन्वितेभ्यो नमः स्वाहा" ॥ रत्नो मूकवा.

त्यार बाद पहेलां प्रतिष्ठित करेल प्रतिमाजीनी आगळ स्नात्रकारक श्रावकोए कुसुमांजलि, जन्माभिषेक तथा **श्रीशांतिजिनकलश** कहेवा पूर्वक स्नात्र करवुं. पछी नमस्कार अने चैत्यवंदनसहित आठ थोयनुं देववंदन करवुं. (हालमां स्नात्र पहेला कराय छे माटे आरती उतारी देववंदन करवुं.)

॥ इति श्री सिद्धचक्रपूजनविधिः ॥ ॥ इति चतुर्थदिनविधिः ॥

卐

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अथ पञ्चमदिन विधिः

श्री वीशस्थानकपूजनविधिः—

पूजननी शरुआत करता पहेला क्षेत्रपालादिकनुं पूजन नीचेना मंत्रोथी करवुं.—

ॐ क्षाँ क्षेत्रपालाय नमः । ॐ ह्रीँ दिक्पालेभ्यो नमः । ॐ ह्रीँ ग्रहेभ्यो नमः ।
ॐ ह्रीँ षोडशमहादेवीभ्यो नमः । ॐ ह्रीँ जिनशासनदेवीदेवेभ्यो नमः ॥

त्यार बाद "शांतिघोषणा" ना नीचेना दस श्लोक बोलवा :—

रोगशोकादिभिर्दोषै–रजिताय जितारये ।
नमः श्रीशान्तये तस्मै, विहिताऽनन्तशान्तये ॥ १ ॥ (अनु.)

श्रीशान्तिजिनभक्ताय, भव्याय सुखसम्पदम् ।
श्रीशान्तिदेवता देया–दशान्तिमपनीय ते ॥ २ ॥ (अनु.)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अम्बा निहितडिम्भा मे, सिद्धबुद्धसमन्विता ।
सिते सिंहे स्थिता गौरी, वितनोतु समीहितम् ॥ ३ ॥ (अनु.)
धराधिपतिपत्नी या, देवी पद्मावती सदा ।
क्षुद्रोपद्रवतः सा मां, पातु फुल्लत्फणावली ॥ ४ ॥ (अनु.)
चञ्चच्चक्रधरा चारु–प्रवालदलदीधितिः ।
चिरं चक्रेश्वरी देवी, नन्दतादवताच्च माम् ॥ ५ ॥ (अनु.)
खड्गखेटककोदण्ड–बाणपाणिस्तडिद्द्युतिः ।
तुरङ्गगमनाऽच्छुप्ता, कल्याणानि करोतु मे ॥ ६ ॥ (अनु.)
मथुरायां सुपार्श्वश्रीः, सुपार्श्वस्तूपरक्षिका ।
श्रीकुबेरा नरारूढा, सुताङ्काऽवतु वो भयात् ॥ ७ ॥ (अनु)
ब्रह्मशान्तिः स मां पाया–दपायाद् वीरसेवकः ।
श्रीमत्सत्यपुरे सत्या, येन कीर्तिः कृता निजा ॥ ८ ॥ (अनु.)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रीशक्रप्रमुखा यक्षा, जिनशासनसंस्थिताः ।
देवा देव्यस्तदन्येऽपि, सङ्घं रक्षन्त्वपायतः ॥ ९ ॥ (अनु.)
श्रीमद्विमानमारूढा, मातङ्गयक्षसङ्गता ।
सा मां सिद्धायिका पातु, चक्रचापेषु धारिणी ॥ १० ॥ (अनु.)

पछी नवकार बोलवा पूर्वक "चत्तारि मंगलं"; "चत्तारि लोगुत्तमा"; "चत्तारि सरणं पवज्जामि" आदि कही "वज्रपञ्जर" स्तोत्रथी आत्मरक्षा करवी.

पछी श्रावके बीजा पट्ट उपर कुंकुम अने चंदनथी वीशस्थानक (खानां) करवा अने अनुक्रमे नीचे आपेला २० मंत्रोथी वीशे स्थानकोनुं चंदन-पत्र-पुष्प-फळ-सोपारीना टुकडा तथा अक्षतथी पूजन करवुं.

वीशस्थानकपूजनना मंत्रो :—

[१] १ ॐ ह्रीँ नमो अरिहंताणं। २ ॐ ह्रीँ नमो सिद्धाणं। ३ ॐ ह्रीँ नमो पवयणस्स ४ ॐ ह्रीँ नमो आयरियाणं। ५ ॐ ह्रीँ नमो थेराणं। ६ ॐ ह्रीँ नमो उवज्झायाणं। ७ ॐ ह्रीँ नमो लोए सव्वसाहूणं।

१. अहीं मंत्रोनी साथे वीशस्थानकने लगतां श्लोको बोलीने पण पूजन थई शके छे. तेमज ते ते मंत्रनो यथाशक्य जाप पण करावी शकाय छे. ते श्लोको परिशिष्ट नं. १-ऊ मां आपेल छे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८ ॐ ह्रीँ नमो नाणस्स । ९ ॐ ह्रीँ नमो दंसणस्स । १० ॐ ह्रीँ नमो विणयस्स । ११ ॐ ह्रीँ नमो चरित्तस्स । १२ ॐ ह्रीँ नमो बंभवयधारीणं । १३ ॐ ह्रीँ नमो किरियाणं । १४ ॐ ह्रीँ नमो तवस्स । १५ ॐ ह्रीँ नमो गोयमस्स । १६ ॐ ह्रीँ नमो जिणाणं । १७ ॐ ह्रीँ नमो चरित्तधरस्स । १८ ॐ ह्रीँ नमो नाणधरस्स । १९ ॐ ह्रीँ नमो सुयधरस्स । २० ॐ ह्रीँ नमो तित्थस्स ॥

पछी उत्तम पुष्प; गंध; अक्षत; प्रदीप; फळ; धूप; जल अने पत्रथी श्रीजिनेश्वर प्रभुनी अष्टप्रकारी पूजा करवी.

श्री आदिजिनकळश बोलवा पूर्वक स्नात्र करवुं. पण हाल स्नात्र पहेला कराय छे एटले आरती करी चैत्यवंदन करी आठ थोयनुं देववंदन करवुं.

[1]वीशे स्थानकोना नामोच्चारणपूर्वक वीश नवकार गणवा अने नैवेद्य मूकवुं.

॥ इति श्री वीशस्थानकपूजनविधिः ॥

॥ इति पञ्चमदिनविधिः ॥

卐

---

१ दरेक प्रतमां देववंदन बाद नैवेद्य मूकवानुं विधान छे. परंतु ते करता पहेला नवकारपूर्वक नैवेद्य मूकी पछी देववन्दनरूप भावपूजा करवामां विशेष संगति लागे छे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अथ षष्ठदिन विधिः

— श्री च्यवनकल्याणकविधिः —

सौ प्रथम नीचेना मंत्रोथी क्षेत्रपालादिकनुं पूजन करवुं :—

ॐ क्लौँ ब्लौँ स्वां लां क्षां क्षेत्रपालाय नमः । ॐ दिक्पालेभ्यो नमः । ॐ ग्रहेभ्यो नमः ।

ॐ ह्रीँ षोडशमहादेवीभ्यो नमः । ॐ ह्रीँ जिनशासनदेवीदेवेभ्यो नमः ।

त्यार बाद नीचेना श्लोकोथी इन्द्रना आभूषणो मंत्री धारण करवा.

प्रथम 'सोनानी सांकळी' (यज्ञोपवीत) नीचेना श्लोकथी मंत्रित करी [1]पहेरवी:—

सद्दृष्टेः प्रविकल्पिताऽतिविशद–प्राग्भारभाभासुर-
ज्ञानस्यापि विकल्पजालजयिन–श्चारित्रतत्त्वस्य च ।

१. अहीं यज्ञोपवीतादिक धारण करता विशिष्ट मंत्रो बोली शकाय छे. ते मंत्रो परिशिष्ट नं. १-क मां आपेल छे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

यत्पूर्वैः परिकल्पितं जिनमहे, रत्नत्रयाराधकं
चिह्नं तन्निदधे महेशकलितं, यज्ञोपवीतं परम् ॥ १ ॥ (शार्दूल०)

पछी 'मुकुट' अने 'तिलक' नीचेना श्लोकथी मंत्रित करी धारण करवाः—

रत्नप्ररोहै-रुचिरैर्यदुत्थै-राकाशमङ्गीकृतमाविभाति ।
तच्छेखरं शेषविधेयविज्ञो, मौलौ मयूखाढ्यमहं दधामि ॥ २ ॥ (इन्द्रवज्रा)

पछी 'कंकण' नीचेना श्लोकथी मंत्रित करी पहेरवुंः—

दिव्यं दिव्यै रत्नजालैरनेकै-र्नद्धं धुन्वद्-ध्वान्तमन्तःस्फुरद्भिः ।
हैमं हेम्ना निर्मितं विश्वपाणौ, पुण्यं पुण्यैः कङ्कणं स्वीकरोमि ॥ ३ ॥ (शालिना)

पछी 'मुद्रिका' (वींटी) नीचेना श्लोकथी मंत्रित करी हेरवीः—

प्रद्योतयन्ती निखिलं स्वकान्त्या, प्रकोष्ठमङ्गद्युतिराजिरम्या ।
मुद्रेव जैनी वरमुद्रिकेय-मलङ्करोत्वङ्गुलीपर्वमूलम् ॥ ४ ॥ (उपजाति)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पछी केयूर, हार, कडां, कुंडळादि सोळ प्रकारना आभूषणो नीचेना काव्यथी मंत्रित करी पहेरवा:—

केयूर-हाराऽङ्गद-कुण्डलानि, प्रालम्ब-सूत्रं कटिकम्बि-मुद्रिके ।
शस्त्री च पट्टं मुकुटं च मेखला,ग्रैवेयकं नूपुरकर्णपूरे ॥ ५ ॥ (इन्द्रवज्रा)

इन्द्रस्थापना :—

त्यार बाद "ॐ ह्रीँ अर्हं क्ष्रूँ हुँ इन्द्रं परिकल्पयामीति स्वाहा" ए मंत्रथी त्रण वार मस्तके वासक्षेप करी इन्द्रनी स्थापना करवी.

[1]इन्द्राणीस्थापना :—

पछी "ॐ आँ ह्रीँ क्रौँ ऐँ क्लीँ सौँ इन्द्राणीं परिकल्पयामीति स्वाहा" ए मंत्रथी त्रण वार मस्तके वासक्षेप करी इन्द्राणीनी स्थापना करवी.

[2](भगवंतना मातपितानी स्थापना :—

सौ प्रथम मींढळादि मंत्रित करी पहेरावया त्यार बाद आचार्यभगवंत सूरिमंत्रथी वासक्षेप करवापूर्वक भगवंतना

---

१ इन्द्राणीने आभूषण पहेरावता विशिष्टमंत्र बोली शकाय छे ते-परिशिष्ट १-ऋ मां आपेल छे.

२. आ विधान मूळ विधिमां आवतुं नथी. परंतु प्रचलितव्यवहारथी जणावेल छे. ते संबंधी मंत्र पण बोली शकाय-ते मंत्र परिशिष्ट नं. १- ऋमां आपेल छे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मात-पितानी कल्पना करे.)

वेदिका उपर स्वस्तिकः--

ॐ ह्रीँ नमो भगवती विश्वव्यापिनो ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः सिंहासने स्वस्तिकं पूरयामीति स्वाहा" ए मंत्र त्रण वार कही इन्द्राणीना हाथे धवलगीतसहित वेदिका उपर पांच स्वस्तिक करावबा.

अंगन्यासः--पछी नीचे आपेला मंत्रोथी ते ते अंगो पर न्यास करवोः--(त्रण वार)

मंत्रो	न्यास करवाना अंगो
ॐ ह्रीँ नमो अरिहंताणं ह्राँ शीर्षं रक्ष रक्ष स्वाहा।	मस्तक पर
ॐ ह्रीँ नमो सिद्धाणं ह्रीँ वदनं रक्ष रक्ष स्वाहा।	मुख पर
ॐ ह्रीँ नमो आयरियाणं ह्रूँ हृदयं रक्ष रक्ष स्वाहा।	हृदय पर
ॐ ह्रीँ नमो उवज्झायाणं ह्रैँ नाभिं रक्ष रक्ष स्वाहा।	नाभि पर
ॐ ह्रीँ नमो लोए सव्वसाहूणं ह्रौँ पादौ रक्ष रक्ष स्वाहा।	बंने पग पर
ॐ ह्रीँ नमो ज्ञान-दर्शन-चारित्र-तपांसि ह्रः सर्वाङ्गं रक्ष रक्ष स्वाहा।	सर्व अंग पर

करन्यासः--पछी नीचेना मंत्रोथी हाथना ते ते अवयवो द्वारा करन्यास करवोः--(त्रण वार)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मंत्रो	न्यास योग्य हाथना विभागो
ॐ ह्राँ अर्हन्तो अंगुष्ठाभ्यां नमः ।	बंने अंगुठाओ पर
ॐ ह्रीँ सिद्धाः तर्जनीभ्यां नमः ।	बंने तर्जनी आंगलीओ पर
ॐ हूँ आचार्या मध्यमाभ्यां नमः ।	बंने वचली „ „
ॐ ह्रैँ ह्रौँ उपाध्याया अनामिकाभ्यां नमः ।	बंने अनामिका „ „
ॐ ह्रः सर्वसाधवः कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।	बंने टचली „ „
ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः दर्शनज्ञानचारित्रतपांसि धर्माः करतल–करपृष्ठाभ्यां नमः ।	बंने हाथना उपर तथा नीचेना भाग उपर

गुरुपूजन :—

"ॐ ह्रीँ नमो अरिहंताणं, ॐ ह्रीँ नमो अर्हं नमो हंसः नमो हंसः नमो हंस; गुरुपादुकाभ्यां नमः" ए मंत्र बोली गुरुपूजन करवुं.

धर्माचार्यपूजन :—

"ॐ ह्राँ ह्रीँ नमो अर्हं हंसः धर्माचार्याय नमः" ए मंत्र द्वारा धर्माचार्यनुं पूजन करवुं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिंहासनपूजन :—

"ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः अर्हं परमब्रह्मणे अ-सि-आ-उ-साय नमो हंसः स्वाहा" ए मंत्र बोली अरिहंत प्रभुना सिंहासनादिक पर वासक्षेप करवो.

नूतनबिंबो उपर वासक्षेप :—

"ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः अर्हद्भ्यो नमः ॐ ह्रीँ नमो अरिहंताणं ॐ ह्रीँ अर्हते नमः" ए मंत्रथी वासक्षेप मंत्रीने नवा बिंबो पर करवो.

वासक्षेपयुत दूधथी सर्वांगविलेपन:—

त्यार बाद "ॐ परमहंसाय परमेष्ठिने हंसः हंसः हंसः हँ हँ हाँ हीँ हूँ हैँ होँ हौँ हः अर्हते नमः" श्रीजिनबिम्बं संस्थापयामि संवौषट्' ए मंत्रथी पाणी साथे वासक्षेप मंत्रीने नवीन जिनबिंब पर नांखवो तथा तेनुं सर्व अंगे विलेपन करवुं. पछी तेनी आगळ दूधथी भरेलो सुवर्णकळश स्थापवो.

सुवर्णकळशमां बिंबस्थापन :—नीचेना बे श्लोक तथा मंत्र बोलवा पूर्वक पूर्वे अप्रतिष्ठित नूतन जिनबिंबने दूधथी भरेला सुवर्णकळशमां स्थापवा:— ॥७३॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुकृतकरणदक्षः, पञ्चमुख्यः समस्तः, सकलदुरितनाशः, छिन्नदुष्कर्मपाशः।
विमलकुलप्रवृद्ध्यै, देवलोकाच्च्युतः श्री–नियतपदसमृद्ध्यै मानुषेऽर्हन् सदा त्वम् ॥१॥ (मालिनी)
रत्नत्रयालंकरणाय नित्य–मच्छायकायाय निरामयाय।
निःस्वेदतानिर्मलतायुताय, नमो नमः श्रीपरमेश्वराय ॥ २ ॥ (उपजाति)

आ बे श्लोको बोली "ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः अर्हं नमो हंसः श्रीमदर्हं देवलोकाच्च्युत्वा मानुषत्वेऽवातरत् हंसः हंसः हंसः श्रीपरमेश्वराय नमः स्वाहा"

॥ इति च्यवन मंत्रः ॥

बिंब उपर वासक्षेप :—

"ॐ ह्राँ ह्रीँ क्रौँ य र ल व श ष स ह क्षौँ सं हंसः अमुष्य प्राणान् इह प्राणे, अमुष्य जीव इह स्थितः सर्वेन्द्रियाणां वाङ्मनश्चक्षुःश्रोत्रमुखजिह्वाः स्थापय संवौषट् वषट् स्वाहा स्वधा" ए मंत्र बोलीने वासक्षेप प्रभुजी उपर करवो.

॥ इति प्राण प्रतिष्ठा ॥

मातृकान्यासः—

पछी नीचेना मंत्रोथी जिनबिंबना ते ते अंगो पर मातृन्यास करवो.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मंत्रो	अंगन्यास
" ॐ ह्रीँ अर्हं ॐ ह्रीँ " मोक्षद्वारे	मस्तक पर
" ॐ ह्रीँ अर्हं श्रीँ अ आ " ललाटे दक्षिणतः	ललाट पर जमणी बाजुए
" ,, ,, ,, ,, इ ई " दक्षिणेतरनेत्रयोः	बंने आंखो पर
" ,, ,, ,, ,, उ ऊ " कर्णयोः	कानो पर
" ,, ,, ,, ,, ऋ ॠ " नासापुटयोः	नासिका पर
" ,, ,, ,, ,, ऌ ॡ " गल्लयोः	गालो पर
" ,, ,, ,, ,, ए ऐ " ऊर्ध्वाधोदंतपङ्क्त्योष्ठयोः	उपर नीचे दांत तथा होठो पर.
" ,, ,, ,, ,, ओ औ " स्कन्धयोः	खभा पर
" ,, ,, ,, ,, अं " मस्तके	माथा पर
" ,, ,, ,, ,, अः " जिह्वाग्रे	जीभना अग्र भाग पर
" ,, ,, ,, ,, क ख " मुखमण्डले	मुख पर
" ,, ,, ,, ,, ग घ " कण्ठे	कंठ पर
" ,, ,, ,, ,, ङ " हनुस्थाने	दाढी पर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

“ ,, ,, ,, ,, च छ ज झ ” दक्षिणभुजे	जमणा हाथ पर
“ ,, ,, ,, ,, ञ ” वामभुजे	डाबा हाथ पर
“ ,, ,, ,, ,, ट ठ ड ढ ण ” दक्षिणकुक्षौ	जमणी कुख पर
“ ,, ,, ,, ,, त थ द ध न ” वामकुक्षौ	डाबी कुख पर
“ ,, ,, ,, ,, प ” दक्षिणोरौ	जमणा साथळमां
“ ,, ,, ,, ,, फ ” वामोरौ	डाबा साथळमां
“ ,, ,, ,, ,, ब ” गुह्ये	गुह्य स्थानमां
“ ,, ,, ,, ,, भ ” नाभिमंडले	नाभि पर
“ ,, ,, ,, ,, म ” स्फिजोः इन्द्रियोभयपार्श्वयोः ।	बे कुला उपर तथा इन्द्रियना बंने पडखे.
“ ,, ,, ,, ,, य ” शरीरस्थाने उदरे	शरीर स्थान ने उदर पर
“ ,, ,, ,, ,, र ” ऊर्ध्वरोमाञ्चे	ऊर्ध्वस्थानना रोमांच एटले मस्तकादिना वालो पर
“ ,, ,, ,, ,, ल ” पृष्ठे	पीठ पर
“ ,, ,, ,, ,, व ” ग्रीवाकक्षादिसन्धिषु	कंठ तथा कक्षा (काख) वगेरे सांधाओमां
“ ,, ,, ,, ,, श ” जानुयुग्मयोः	बंने जानु (घुंटण) उपर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अञ्जन
प्र. कल्प

“ ,, ,, ,, ,, प ” गुल्फमूलयोः	घुंटणना मूळ (ढांकणी) पर
“ ,, ,, ,, ,, स ” पादयोः	बंने पग उपर
“ ,, ,, ,, ,, ह ” हृदये सर्वप्राणस्थाने	हृदय पर

बिंब उपर वासक्षेपः—

पछी “ ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रौँ शान्ति कुरु कुरु स्वाहा; ॐ ह्रीँ नमो अरिहंताणं, ॐ ह्रीँ नमो अरहंताणं, ॐ ह्रीँ नमो अरुहंताणं वा, अर्हं नमः स्वाहा, ॐ ह्रीँ नमो अरहंताणं, ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः अर्हं नमः स्वाहा ” ए मंत्रथी मंत्रीने प्रभुना मस्तक उपर वासक्षेप नांखवो.

कर्णोपदेशमंत्रः—

“ ॐ हाँ हीँ हूँ हैँ हौँ हः असिआउसा ह्रीँ नम स्वाहा ” आ मंत्रथी कानमां उपदेश करवो अने त्यार बाद नीचेना मंत्रथी प्रभुजीना मस्तक उपर वासक्षेप करवो. वासक्षेपमंत्रः—“ ॐ ह्रीँ परमहंसाय परमेष्ठिने परमहंसः हँ हाँ हूँ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः परमेश्वराय परमेष्ठिने नमः स्वाहा ”।

आशीर्वचन :—

पछी नीचेनो आशिष मंत्र बोलवो—“ ॐ ऐँ क्लीँ ह्मौँ वद वद वाग्वादिनी भगवती ह्रीँ नमः, ॐ नमो अरुहंताणं धातृभ्योऽभीप्सितफलदेभ्यः स्वाहा ”।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चौदस्वप्नदर्शन :—

पछी स्वप्नदर्शनने लगता नीचेना बे श्लोको तथा मंत्र बोलवो:—

गजो वृषो हरिः साभि-षेकश्रीः स्रक् शशी रविः।
महाध्वजः पूर्णकुम्भः, पद्मसरः सरित्पतिः ॥१॥ (अनु०)
विमानं रत्नपुञ्जश्च, निर्धूमाग्निरिति क्रमात्।
ददर्श स्वामिनी स्वप्नान्, मुखे प्रविशतस्तदा ॥२॥ (अनु०)

"ॐ ह्रीँ स्वामिनीस्वप्नदर्शनमिति स्वाहा"।

पछी स्नात्रकारके चैत्यवंदन करवुं. श्रावकोए कुसुमांजलिपूर्वक **श्री पार्श्वजिननो कळश** कहेवो, अष्टप्रकारी पूजा करी आरती करी आठ थोयनुं देववंदन करवुं.

॥ इति च्यवनकल्याणकविधिः ॥

॥ इति षष्ठदिनविधिः ॥

---

१ च्यवनकल्याणकनुं चैत्यवंदन तथा स्तवन हस्तलिखित प्र. क. मां मळे छे. ते देववंदन करता बोली शकाय ते बन्ने परिशिष्ट-नं. १ ल मां आपेल छे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अथ सप्तमदिन विधिः

—: जन्मकल्याणकविधि :—

(सौ प्रथम कुंभ-दीपक उपर वासक्षेप करी क्षेत्रपाल, भैरव, दिक्पाल, ग्रह अने सोळविद्यादेवी आदिनुं पूजन करवुं.)

आत्मरक्षा:––ॐ नमो अरिहंताणं हृदये; ॐ नमो सिद्धाणं मस्तके; ॐ नमो आयरियाणं शिखायां; ॐ नमो उवज्झायाणं सन्नाहः, ॐ नमो लोए सव्वसाहूणं दिव्यास्त्रम्' आत्मरक्षाने लगता आ पदो बोलवापूर्वक ते ते प्रमाणे (त्रण वार) हस्तन्यास करवो.

शुचिकरण:––पछी नीचेना मंत्रथी शुचिकरण करवुं. (सर्व अंगे स्पर्श करी त्रण वार पवित्र करवां.)

" ॐ नमो अरिहंताणं, ॐ नमो सिद्धाणं, ॐ नमो आयरियाणं, ॐ नमो उवज्झायाणं, ॐ नमो लोए सव्वसाहूणं, ॐ नमो आगासगामीणं, ॐ नमो हः क्षः अशुचिः शुचिर्भवामि स्वाहा " ॥

सकलीकरण:––" क्षि प ॐ स्वा हा, हा स्वा ॐ प क्षि " ए रीते आरोह (चढवुं) अवरोह (उतरवुं)ना क्रमे पग, नाभि, हृदय, मुख अने भाल पर पोतानुं त्रण वार सकलीकरण करवुं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बलिबाकुलाः--'ॐ ह्रीँ क्ष्वीँ सर्वोपद्रवं बिम्बस्य रक्ष रक्ष स्वाहा' ए मंत्रथी त्रण वार बलिबाकुळा मंत्री प्रतिष्ठा स्थानेथी पाणी सहित उडाडवा तेमज धूप, चंदन, पुष्प, अक्षत वि. उछाळवा.

कुसुमांजलिः--श्रावकोए दरेक नवीन बिंबो उपर नीचेनो श्लोक बोली कुसुमांजलि प्रक्षेप करवोः--

अभिनवसुगन्धिविकसित-पुष्पौघभृता सुगन्धधूपाढ्या ।
बिम्बोपरि निपतन्ती, सुखानि पुष्पाञ्जलिः कुरुताम् ॥ (आर्या)

विघ्नोत्त्रासन तथा जलाच्छोटनः--त्यार बाद गुरुए बंने वचली आंगळीओ ऊंची करीने नवीन बिंबोने रौद्र दृष्टिथी तर्जनी मुद्रा देखाडवी.

पछी श्रावकोए डाबा हाथमां जळ लईने "ज्म्हाँ म्लौँ" ए मंत्र बोली सर्व नूतन जिनबिंबोने आच्छाटन करवुं.

कवचकरण तेमज दिग्बंधनः--

गुरु भगवंते 'ॐ ह्रीँ क्ष्वीँ सर्वोपद्रवं बिम्बस्य रक्ष रक्ष स्वाहा' ए मंत्र भणी बिंबोना दृष्टिदोष निवारवा वज्रमुद्रा; गरुडमुद्रा तथा मुद्गरमुद्राथी त्रण वार कवच करवुं.

तेमज तेज मंत्रथी दिग्बंधन करवुं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सप्तधान्यनी वृष्टि :—

पछी श्रावकोए शण, कळथी, राई, जव, सरसव, कांग तथा अडदनी त्रण मुठीओ बिंब उपर नांखवी. तेमज कुळदेवी अंबिकानी पूजा करवी.

जिनजन्मविधान :—

नीचेना बे श्लोको तथा मंत्र बोली सुवर्णकळशमांथी प्रभुजीने बहार काढवारूप जन्मविधान करवुं:—

संसारद्रुमदावपावकमहा–ज्वालाकलापोपमं;
ध्यानं श्रीमदनन्तबोधकलितं त्रैलोक्यतत्त्वोपमम् ।
श्रीमच्छ्रीजिनराजजन्मसमय–स्नानं मनः पावनं;
कुम्भैर्नः शुभसंभवाय सुरभि–द्रव्याढ्यवाःपूरितैः ॥ १ ॥ (शार्दूल०)
नमस्त्रिलोकीतिलकायलोका–लोकावलोकैकविलोकनाय ।
सर्वेन्द्रवन्द्याय जितेन्द्रियाय, प्रसूतभद्राय जिनेश्वराय ॥ २ ॥ (उपजाति)

ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः अर्हत्तीर्थंकरपरमदेवाय, ह्रीँ मातृकुक्षिप्रसवजन्मने जगज्ज्योतिःकराय अर्हते नमः स्वाहा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छप्पनदिक्कुमारिकामहोत्सवः--

पछी छप्पनदिक्कुमारिकाने लगता नीचेना श्लोको तथा मंत्रो बोलवाः--

उद्योतस्त्रिजगत्यासीद्, दध्वान दिवि दुन्दुभिः ।
षट्पञ्चाशद्दिक्कुमार्य, आगत्याऽकृषत क्रियाम् ॥ १ ॥ (अनु.)

कुमार्योऽष्टावधोलोक-वासिन्यः कम्पितासनाः ।
अर्हज्जन्मावधेर्ज्ञात्वा-ऽभ्येयुस्तत्सूतिवेश्मनि ॥ २ ॥ (अनु.)

१-अधोलोकवासिनी आठ दिक्कुमारिकाः--

(तेओए आवी प्रभुने तथा माताने नमन करी भूमि तेमज सूतिकागृह शुद्ध करवुं.)

भोगंकरा[1] भोगवती[2],सुभोगा[3] भोगमालिनी[4] ।
सुवत्सा[5] वत्समित्रा[6], च, पुष्पमाला[7] त्वनिन्दिता[8] ॥ १ ॥ (अनु.)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नत्वा प्रभुं तदम्बां चे–शाने सूतिगृहं व्यधुः ।
संवर्तेनाशोधयन् क्ष्मा–मायोजनमितो गृहात् ॥२॥ (अनु.)

'ॐ ह्रीँ अष्टावधोलोकवासिन्यो देव्यो योजनमण्डलं सूतिकागृहं शोधयन्तु स्वाहा'।

२–ऊर्ध्वलोकवासिनी आठ दिक्कुमारिकाः–(तेओए सुगंधि जळ तथा पुष्प वरसाववां.)

मेघंकरा[1] मेघवती[2], सुमेघा[3] मेघमालिनी[4] । तोयधरा[5] विचित्रा[6] च, वारिषेणा[7] बलाहका[8] ॥१॥ (अनु.)
अष्टोर्ध्वलोकादेत्यैता, नत्वाऽर्हन्तं समातृकम् । तत्र गन्धाम्बुपुष्पौघ–वर्षां हर्षाद्वितेनिरे ॥२॥ (अनु.)

'ॐ ह्रीँ अष्टावूर्ध्वलोकवासिन्यो देव्यो योजनमण्डलं गन्धाम्बुपुष्पौघं वर्षयन्तु स्वाहा'॥

३–पूर्वदिशावासिनी आठ दिक्कुमारिका :–(तेओए दर्पण करवा.)

अथ नन्दोत्तरा[1] नन्दा[2], आनन्दा[3]नन्दिवर्धने[4] । विजया[5] वैजयन्ती[6] च जयन्ती[7] चापराजिता[8] ॥ (अनु.)

'ॐ ह्रीँ अष्टौ पूर्वरुचकवासिन्यो देव्यो विलोकनार्थं दर्पणानि अग्रे धरन्तु स्वाहा'॥

४–दक्षिणदिशावासिनी आठ दिक्कुमारिकाः–(तेओए पूर्ण कळश लई अभिषेक करवा अने गीत गान करवा.) ॥८३॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१]समाहरा [२]सुप्रदत्ता, [३]सुप्रबुद्धा [४]यशोधरा । [५]लक्ष्मीवती [६]शेषवती, [७]चित्रगुप्ता [८]वसुन्धरा ॥ (अनु.)

‘ ॐ ह्रीँ अष्टौ दक्षिणरुचकवासिन्यो देव्यः स्नानार्थं करे पूर्णकलशान् धृत्वाऽभिषेकं कुर्वन्तु, गीतगाने विदधतु स्वाहा ’॥

५–पश्चिमदिशावासिनी आठ दिक्कुमारिकाः–(तेओए पंखा वींझवा.)

[१]इलादेवी [२]सुरादेवी, [३]पृथिवी [४]पद्मवत्यपि । [५]एकनासा [६]नवमिका, [७]भद्रा [८]शीतेति नामतः ॥ (अनु.)

‘ ॐ ह्रीँ अष्टौ पश्चिमरुचकवासिन्यो देव्यो वीजनार्थं व्यजनानि वीजयन्ति स्वाहा ’ ।

६–उत्तरदिशावासिनी आठ दिक्कुमारिकाः–(तेओए चामर वींझवा.)

[१]अलम्बुषा [२]मितकेशी, [३]पुण्डरीका च [४]वारुणी । [५]हासा [६]सर्वप्रभा [७]श्री [८]ह्रीं–रुष्टोदग्रुचकाद्रितः ॥ (अनु.)

“ ॐ ह्रीँ अष्टौ उत्तररुचकवासिन्यो देव्यो वालव्यजनानि चामराणि वीजयन्तु स्वाहा ”।

७. विदिशाओमां रहेली रुचकवासिनी चार दिक्कुमारिकाः–(दीपकनो प्रकाश आपे.)

[१]चित्रा च [२]चित्रकनका, [३]सुतारा [४]वसुदामिनी । दीपहस्ता विदिक्ष्वेत्या–ऽस्थुर्विदिग्रुचकाद्रितः ॥ (अनु.) ॥८४॥

“ ॐ ह्रीँ चतस्रो विदिग्रुचकवासिन्यो देव्यः प्रदीपहस्ता उद्योतं कुर्वन्तु स्वाहा ”।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८. चार रुचक द्वीपवासिनी दिक्कुमारिकाः–(चार आंगळनी नाळ छेदी भूमि खोदीने नांखे.)

रूपा[1] रूपासिका[2] चापि, सुरूपा[3] रूपकावती[4]। चतुरङ्गुलतो नालं, छित्त्वा खातोदरेऽक्षिपन् ॥ (अनु.)

"ॐ ह्रीँ चतस्रो रुचकद्वीपवासिन्यो देव्यः चतुरङ्गुलतो नालं छित्वा भूखानोदरे क्षिपन्तु स्वाहा"।

केलीघररचनाः--

"ॐ ह्रीँ पूर्वोत्तरदक्षिणेषु रम्भागृहत्रयं व्यधुः स्वाहा" केलीधरनी रचना करवी.

"ॐ राँ रीँ रूँ रैँ रौँ रः उत्तरे अरणिकाष्ठाभ्यां अग्निमुत्पाद्य चन्दनाद्यैर्जुहुयात् वषट्" ए मंत्र बोली अरणिना लाकडांथी अग्नि उत्पन्न करीने तेमां चंदन वगेरेनो होम करी रक्षापोटली बांधवी.

पछी अनुक्रमे नीचे प्रमाणेना मंत्रोथी पवित्र १ जळकळश, २ चंदन, ३ पुष्प अने ४ स्नात्रपुटिका (धूप)नुं अभिमंत्रण करवुं:--

१. जलमंत्रः--'ॐ नमो यः सर्वशरीरावस्थिते महाभूते अपो जलं गृहाण गृहाण स्वाहा"।

२. चंदनमंत्रः--'ॐ नमो यः सर्वशरीरावस्थिते पृथु पृथु गन्धान् गृहाण गृहाण स्वाहा'।

३. पुष्पमंत्रः--'ॐ नमो यः सर्वतो मेदिनी पुष्पवती पुष्पं गृहाण गृहाण स्वाहा'।

४. धूपमंत्रः--'ॐ नमो यः सर्वतो बलिं दह दह महाभूते तेजोधिपते धूपं गृहाण गृहाण स्वाहा'।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रक्षापोटली; अरीठानी माळा तथा जवनी माळा पहेरावबानी विधिः–

पछी दृष्टिदोष निवारण माटे नीचेना मंत्रथी मत्रित पंचरत्ननी रक्षापोटली नवीनबिंबना जमणा हाथनी आंगलीओमां बांधवी. तेमज कंठमां अरीठानी माळा तथा जवनी माळा पहेराववी. मंत्रः—" ॐ क्षाँ क्षीँ क्षूँ स्वाहा "

पछी जळयात्राथी लावेला जळने पवित्र जळकुंडीमां भरी तेमां वास, चंदन, पुष्प आदि नांखी " ॐ ह्रीँ नमः " ए मंत्रथी जलदर्शन करवुं तथा धूप, दीप, गीत, गान, नाटक विगेरे करवुं.

॥ इति दिक्कुमारी महोत्सवः ॥

—: अथ इन्द्राणी महोत्सव :—

प्रभुजीने तिलकः––

नीचेना बे श्लोको तथा मंत्र बोल्या बाद इन्द्राणीए कुंकुमथी नवीन बिंबना भाल उपर तिलक करवुंः––

श्रीन्द्राण्याद्यग्रमहिष्यः, सामानिकैश्च संयुताः । अंगरक्षकदेवीभिः, समागता जिनगृहे ॥१॥ (अनु.)

तारा[१] तिलोत्तमा[२], तारु[३]–मनोवेगा[४] च मोहिनी[५]। सुन्दरी[६] त्रिपुरा[७] चैव, माना[८] मानवती[९] मुदा ॥२॥ (अनु.)

" ॐ नमो जिणाणं, सरणाणं, मंगलाणं, लोगुत्तमाणं, ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः असिआउसा त्रैलोक्यललामभूताय अर्हते नमः स्वाहा " ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

त्यार बाद इन्द्राणीए गीत, गायन, नाटक आदि करवुं.

॥ इति इन्द्राणी महोत्सव ॥

--: अथ इन्द्रमहोत्सव :--

सौ प्रथम तेने लगता नीचेना श्लोको बोलवा:--

शक्रसिंहासनकम्पन :—

ततः सिंहासनं शाक्रं, चचालाऽचलनिश्चलम् । प्रयुज्याथावधिं ज्ञात्वा, अर्हज्जन्माभिषेचनम् ॥१॥ (अनु.)

सुघोषाघंटावादन :—

वज्र्येकयोजनां घण्टां, सुघोषां नैगमेषिणा । अवादयत्ततो घण्टा, रेणुः सर्वविमानगाः ॥ २ ॥ (अनु.)

मेरु पर्वत उपर गमन :—

प्रचेलुः सुरासुरेन्द्रा, विविधैर्वाहनैर्घनैः । समागत्य जिनाम्बां च, कृत्वा रूपं च पञ्चधा ॥ ३ ॥ (अनु.)

एको गृहीततीर्थेशः, पार्श्वौ द्वावात्तचामरौ । एको गृहीतातपत्र, एको वज्रधरः पुर ॥ ४ ॥ (अनु.)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शक्रः सुमेरुशृङ्गस्थं, गत्वाऽथो पाण्डुकं वनम्। मेरुचूलादक्षिणेना-तिपाण्डुकम्बलासने ॥५॥ (अनु.)

अभिषेकोत्सवे जैने, चतुःषष्टिः पुरन्दराः। सुमेर्वधिष्ठिते स्थाने, समेयुस्ते यथाक्रमम् ॥६॥ (अनु.)

[१]चमरेन्द्रो [२]बलीन्द्रश्च, [३]धरणेन्द्रस्तृतीयकः। [४]भूतानेन्द्रश्च [५]वेण्विन्द्रो, [६]वेणुदालिस्तथैव च ॥ ७॥ (अनु.)

[७]हरिकान्तो [८]हरिसखो-[९]ऽग्निसिंहोऽथा[१०]ग्निमानवः। [११]पूर्णेन्द्रोऽथ [१२]विशिष्टश्च, [१३]जलकान्तो [१४]जलप्रभः।८।(आनु.)

[१५]अमृतगतिर्भवनेन्द्रो-[१६]ऽमृतवाहननामतः। [७]वेलम्बकः [१८]प्रभञ्जनः, [१९]घोषश्च [१०]महाघोषकः ॥ ९ ॥ (अनु.)

[२१]कालेन्द्रोऽथ [२२]महाकालः, [२३]सुरूपः [२४]प्रतिरूपकः।

[२५]पूर्णभद्रो [२६]मणिभद्रो, [२७]भीमो [२८]महाभीमनामकः ॥१०॥ (अनु.)

[२९]किन्नरः [३०]किंपुरुषेन्द्रः, [३१]सत्पुरुषस्तथैव हि।

[३२]महापुरुषव्यन्तरेन्द्रो-[३३]ऽतिकायश्च तथा परः ॥ ११ ॥ (अनु.)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[३४] महाकायो [३५] गीतरति-[३६] र्गीतयशाश्च षोडश ।

[३७] सन्निहितः [३८] समानीतो, [३९] धाता [४०] विधाताथाऽपरः ॥ १२ ॥ (अनु.)

[४१] ऋषीन्द्रश्च [४२] ऋषिपालः, [४३] तथेश्वर[४४] महेश्वरौ ।

[४५] सुवत्सो [४६] विशालेन्द्रश्च, [४७] हासो [४८] हासरतिः पुनः ॥ १३ ॥ (अनु.)

[४९] श्वेतेन्द्रोऽथ [५०] महाश्वेतः, [५१] पतङ्गः, [५२] पतङ्गरतिः, ।

[५३] चन्द्रा[५४]दित्यौ ज्योतिषेन्द्रौ, कल्पेन्द्रा दशधा पुनः ॥ १४ ॥ (अनु.)

[५५] सौधर्मेन्द्रः [५६] ईशानेन्द्रः, [५७] सनत्कुमारपुरन्दरः ।

[५८] माहेन्द्रो [५९] ब्रह्मेन्द्रश्च, [६०] लान्तकेन्द्रस्तु वज्रिणः ॥ १५ ॥ (अनु.)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[61] शुक्रेन्द्रश्च [62] सहस्रारः, [63] आनतप्राणताभिधः ।

[64] आरणाच्युतशक्रश्च, इतीन्द्राश्चतुःषष्टिकाः ॥ १६ ॥ (अनु.)

आ श्लोको बोलीने "ॐ ह्रीँ क्ष्रूँ हूँ सौधर्मेन्द्रादिचतुःषष्टिरिन्द्रा अस्मिन् प्रतिष्ठामहोत्सवे सर्वविघ्नप्रशान्तिकरा भगवदाज्ञया सावधाना भवन्तु स्वाहा" आ मंत्र भणवो.

[1] मेरु पर्वत उपर २५० अभिषेकनी विधिः--

सौ प्रथम नीचेना बे श्लोक तेमज मंत्र बोल्या बाद अच्युतेन्द्र अभिषेक करेः--

श्रीमन्मन्दरमस्तके शुचिजलै-र्धौते सदर्भाक्षते;
पीठे मुक्तिवरं निधाय रुचिरे, तत्पादपुष्पस्रजा ।
इन्द्रोऽहं निजभूषणार्थममलं, यज्ञोपवीतं दधे;
मुद्राकङ्कणशेखराण्यपि तथा, जैनाभिषेकोत्सवे ॥ १ ॥ (शार्दूल०)

१. अहीं आचारदिनकरादिमां आवती "बृहत्स्नात्रविधि" प्रमाणे पण २५० अभिषेक थई शके छे. ते विधि परिशिष्ट नं. १--ल मां आपेल छे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विश्वैश्वर्यैकवर्या-स्त्रिदशपतिशिरः-शेखरस्पृष्टपादाः;
प्रक्षीणाशेषदोषाः, सकलगुणगण-ग्रामधामान एव ।
जायन्ते जन्तवो य-च्चरणसरसिज-द्वन्द्वपूजान्विताः श्री-
-रर्हन्तं स्नात्रकाले, कलशजलभृतै-रेभिराप्लावयेत्तम् ॥ २ ॥ (स्रग्धरा)

'ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः अर्हते तीर्थोदकेन अष्टोत्तरशतौषधिसहितेन षष्टिलक्षैककोटिप्रमाण-कलशैः स्नापयामीति स्वाहा' ॥

पछी—मेरुशृङ्गे च यत्स्नात्रं जगद्भर्तुः सुरैः कृतम् । बभूव तदिहास्त्वेत-दस्मत्करनिषेकतः ॥ (अनु.)

आ श्लोक बोलता ए रीते बीजा २४८ अभिषेक करवा, छेल्ले ईशानेन्द्र प्रभुजीने खोळामां ले अने सौधर्मेन्द्र वृषभनुं रूप करी नीचेनो श्लोक तथा मंत्र बोल्या बाद अभिषेक करेः—

चतुर्वृषभरूपाणि, शक्रः कृत्वा ततः स्वयम् । शृङ्गाष्टकक्षरत्क्षीरै-रकरोदभिषेचनम् ॥ १ ॥ (अनु.)

ॐ ह्राँ ह्रीँ अर्हते क्षीरेण स्नापयामीति स्वाहा ॥

पछी अष्टप्रकारी पूजादिक करी रूपाना चोखाथी प्रभु पासे अष्टमंगळ पूरी नीचे प्रमाणे स्तुति करवीः—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सन्मङ्गलप्रदीपं ते, विधायारात्रिकं पुनः । सङ्गीतनृत्यवाद्यादिं, व्यधुर्विविधमुत्सवम् ॥ १ ॥ (अनु.)

तत्र पूर्वमच्युतेन्द्रो, विदधात्यभिषेचनम् । ततोऽनुपरिपाटीतो, यावच्चन्द्रार्यमादयः ॥२॥ (अनु.)

पछी आठ थोयनुं [1]देववंदन करवुं.

पछी इन्द्र जिनेश्वरने लावी माता पासे मूकी नीचेनो श्लोक बोल्या बाद ३२ क्रोड सुवर्ण अने रूपानी वृष्टि करेः--

शक्रस्तु जिनमानीय, विमुच्याम्बान्तिके ततः । द्वात्रिंशद्रत्नरैरूप्य–कोटिवृष्टिं विरच्य सः ॥ (अनु.)

॥ इति इन्द्र महोत्सवः ॥ ॥ इति जन्मकल्याणकविधिः ॥ ॥ इति सप्तमदिनपूजाविधिः ॥

१. देववंदन करतां हस्तलिखित प्र. क. मां आवतुं 'श्री जिनजन्माभिषेकस्तवन' कही शकाय छे. ते स्तवन परिशिष्ट नं. १–ए मां आपेल छे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अथ अष्टमदिन विधिः

पुत्रजन्मवधामणाः—

जन्मकल्याणकना विधान बाद प्रियंवदादासी राजा पासे जाय. अने

अस्मिन्नवसरे राज्ञे, दासी नाम्ना प्रियंवदा । तं पुत्रजननोदन्तं, गत्वा शीघ्रं न्यवेदयत् ॥ (अनु.)

आ श्लोकद्वारा त्यां पुत्रजन्मनो वृत्तांत जणावे.

—ःअढारअभिषेकविधिः—

राजा (अहीं श्रावको) पण महोत्सवपूर्वक बार दिवस सुधी पुत्र जन्म संबंधी क्रिया करे, तेमां पहेला अढार प्रकारनां स्नात्रथी शुद्धि करे एटले के एक नवी कुंडीमां पवित्र जल लेवुं. तेमां वास, चंदन, पुष्प वगेरे थोडां नांखी जे जे प्रकारनुं स्नात्र करवानुं होय ते ते स्नात्रचूर्ण उमेरी तेना चार कळशो भरवा. पछी जिनमुद्राथी देवसन्मुख उभा रहीने दरेक स्नात्र माटे नीचे आपेलां काव्यो तेमज गीत, गान, पंचशब्द वाजित्रो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

साथे मंत्रथी अभिमंत्रित करायेला स्नात्रजळथी अढार स्नात्रो करवा. ते आ प्रमाणे :-

-: पहेलुं (हिरण्योदक) स्नात्र :-

सुवर्णना चूर्णथी (सोनाना वरख मिश्रित न्हवणथी) चार कळशो भरी 'नमोऽर्हत्' कही नीचेना श्लोक बोलवा :-

सुपवित्रतीर्थनीरेण, संयुतं गन्धपुष्पसंमिश्रम् ।
पततु जलं बिम्बोपरि, सहिरण्यं मन्त्रपरिपूतम् ॥ १ ॥ (आर्या)

सुवर्णद्रव्यसम्पूर्णं, चूर्णं कुर्यात्सुनिर्मलम् । ततः प्रक्षालनं वार्भिः, पुष्पचन्दनसंयुतैः ॥२॥ (अनु.)

'ॐ ह्राँ ह्रीँ परमार्हते परमेश्वराय गन्धपुष्पाक्षतधूपसंमिश्रस्वर्णचूर्णसंयुतजलेन स्नापयामीति स्वाहा' ॥

ए मंत्रोच्चार पूर्वक स्नात्र करी बिंबने तिलक, पुष्प, वास, धूप वगेरेथी पूजन करवुं.
आ रीते दरेक स्नात्र वखते करवुं. ॥ इति प्रथमस्नात्रम् ॥१॥

-: बीजुं (पंचरत्नचूर्ण) स्नात्र :-

मोती, सोनुं, रुपुं, प्रवाल अने तांबु ए पंचरत्ननुं चूर्ण करी उपरनी जेमज कुंडीमां वासचंदनपुष्पवाळा

---

१ अढार अभिषेकमां उपयोगी खास औषधीओनी यादी माटे परिशिष्ट नं. ७ जुओ. ।
आ अढार अभिषेकमां बिंबप्रवेशादि विधिमां आवती बृहद्विधि प्रमाणे पण करावी शकाय छे. ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाणीमां नाखी चार कळशो भरी 'नमोऽर्हत्' कही नीचेना श्लोक अने मंत्र बोली अभिषेक करवो :-

यन्नामस्मरणादपि श्रुतिवशा दप्यक्षरोच्चारतो;
यत्पूर्णप्रतिमाप्रणामकरणात्, संदर्शनात्स्पर्शनात् ।
भव्यानां भवपङ्कहानिरसकृत्, स्यात्तस्य किं सत्पयः-
-स्नात्रेणापि तथा स्वभक्तिवशतो, रत्नोत्सवे तत्पुनः ॥ १ ॥ (शार्दूल०)

नानारत्नौघयुतं, सुगन्धपुष्पाभिवासितं नीरम् ।
पततात् विचित्रचूर्णं, मन्त्राढ्यं स्थापनाबिम्बे ॥ २ ॥ (आर्या)

ॐ ह्राँ ह्रीँ परमार्हते परमेश्वराय गन्धपुष्पादिसंमिश्रमुक्ता-स्वर्ण-रौप्य-प्रवाल-ताम्ररूपपञ्चरत्नचूर्ण-संयुतजलेन स्नापयामीति स्वाहा ॥

॥ इति द्वितीय स्नात्रम् ॥२॥

-: त्रीजुं (कषाय) स्नात्रः-

कषायचूर्णयुक्तपाणीना कळशो भरी नीचेना श्लोक अने मंत्र बोली अभिषेक करवो :-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्लक्षाश्वत्थोदुम्बर-शिरीषवल्कादिकल्कसंमिश्रम् ।
बिम्बे कषायनीरं, पतनादधिवासितं जैने ॥ १ ॥ (आर्या)
पिप्पली पिप्पलश्चैव, शिरीषोदुम्बरस्तथा ।
वटादिछल्लियुग्वाभिः, स्नपयामि जिनेश्वरम् ॥ २ ॥ (अनु.)

ॐ ह्राँ ह्रीँ परमार्हते परमेश्वराय गन्धपुष्पादिसंमिश्रपिपल्यादिमहाछल्लीकषायचूर्णसंयुतजलेन स्नापयामीति स्वाहा ॥ ॥ इति तृतीयस्नात्रम् ॥३॥

-: चोथुं (मंगलमृत्तिका) स्नात्रः-

आठ जातिनी माटीनुं चूर्ण करी पाणीमां नांखी कळशो भरी नीचेना श्लोक अने मंत्र बोली अभिषेक करवो :-

परोपकारकारी च, प्रवरः परमोज्ज्वलः ।
भावनाभव्यसंयुक्तो, मृच्चूर्णेन च स्नापयेत् ॥ १ ॥ (अनु.)
पर्वतसरोनदीसंगमादि-मृद्भिश्च मन्त्रपूताभिः ।
उद्वर्त्य जैनबिम्बं, स्नाप्याम्यधिवासनासमये ॥ २ ॥ (आर्या)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"ॐ ह्राँ ह्रीँ परमार्हते परमेश्वराय गन्धपुष्पादिसंमिश्रनदी–नग–तीर्थादिमृच्चूर्णसंयुतजलेन स्नापयामीति स्वाहा"

॥ इति चतुर्थस्नात्रम् ॥४॥

–ः पांचमुं (सदौषधि) स्नात्रः–

सहदेवी वगेरे ओषधिओनुंचूर्ण करी पाणीमां नांखी कळशो भरी नीचेना श्लोक अने मंत्र बोली अभिषेक करवो :–

सहदेवी शतमूली, शङ्खपुष्पी शतावरी ।
कुमारी लक्ष्मणाऽद्भिश्च, स्नापयामि जिनेश्वरम् ॥ १ ॥ (अनु.)
सहदेव्यादिसदौषधि–वर्गेणोद्वर्तितस्य बिम्बस्य ।
संमिश्रं बिम्बोपरि, पतज्जलं हरतु दुरितानि ॥ २ ॥ (अनु०)

ॐ ह्राँ ह्रीँ परमार्हते परमेश्वराय गन्धपुष्पादिसंमिश्रसहदेव्यादिसदौषधिचूर्णसंयुतजलेन स्नापयामीति स्वाहा ॥

इति पंचमस्नात्रम् ॥५॥

–ः छट्ठुं (प्रथमाष्टकवर्ग) स्नात्रः–

उपलोट वि. आठ वस्तुओनुं चूर्ण करी पाणीमां नांखी कळशो भरी नीचेना श्लोक अने मंत्र बोली अभिषेक करवो :–

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नानाकुष्ठाद्यौषधि–सम्मृष्टे तद्युतं पतन्नीरम् ।
बिम्बे कृतसन्मन्त्रं, कर्मौघं हन्तु भव्यानाम् ॥ १ ॥ (आर्या)
उपलोट–वचालोद्र–हीरवणीदेवदारवः ।
यष्टि–मध्वृद्धि–दुर्वाऽद्भिः, स्नापयामि जिनेश्वरम् ॥ २ ॥ (आर्या)
ॐ ह्राँ ह्रीँ परमार्हते परमेश्वराय गन्धपुष्पादिसंमिश्रकुष्ठाद्यष्टकवर्गचूर्णसंयुतजलेन स्नापयामीति स्वाहा ॥

॥ इति षष्ठस्नात्रम् ॥६॥

–: सातमुं (द्वितीयाष्टकवर्ग) स्नात्रः–

पतंजरीआदि द्वितीयअष्टवर्गचूर्णमिश्रित पाणना कळशो भरी नीचेना श्लोक अने मंत्र बोली अभिषेक करवो :–
मेदाद्यौषधिभेदो–ऽपरोऽष्टवर्गः सुमन्त्रपरिपूतः ।
जिनबिम्बोपरि निपतन्, सिद्धिं विदधातु भव्यजने ॥ १ ॥ (आर्या)
पतञ्जरी विदारी च, कच्चूरः कच्चुरी नखः ।
कङ्कोडी क्षीरकन्दश्च, मुसल्या स्नापयाम्यहम् ॥ २ ॥ (अनु.)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ॐ ह्रॉं ह्रीँ परमार्हते परमेश्वराय गन्धपुष्पादिसंमिश्रपतञ्जर्यादिद्वितीयाष्टकवर्गचूर्णसंयुतजलेन स्नापयामीति स्वाहा ॥

॥ इति सप्तमस्नात्रम् ॥७॥

–: आठमुं (सर्वौषधि) स्नात्रः–

प्रियंगु वगेरे ३३ औषधिओनुं चूर्ण करी पाणीमां नांखी कळशो भरी नीचेना श्लोक ने मंत्र बोली अभिषेक करवो :–

सुपवित्रमूलिकावर्ग–मर्दिते तदुदकस्य शुभधारा ।
बिम्बेऽधिवाससमये, यच्छतु सौख्यानि निपतन्ती ॥ १ ॥ (आर्या)

प्रियङ्गु–वत्स–कङ्केली–रसालादितरूद्भवैः ।
पल्लवैः पत्रभल्लातै–रेलचीतजसत्फलैः ॥ २ ॥ (अनु.)

विष्णुक्रान्ताहिप्रवाल–लवङ्गादिभिरष्टभिः ।
मूलाष्टकैस्तथा द्रव्यैः, सदौषधिविमिश्रितैः ॥ ३ ॥ (अनु.)

सुगन्धद्रव्यसन्दोह–मोदमत्तालिसंकुलैः ।
विदधेऽर्हन्महास्नात्रं, शुभसन्ततिसूचकम् ॥ ४ ॥ (अनु.)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"ॐ ह्राँ ह्रीँ परमार्हते परमेश्वराय गन्धपुष्पादिसंमिश्रप्रियंग्वादिसर्वौषधिचूर्णसंयुतजलेन स्नापयामीति स्वाहा ॥

॥ इति अष्टमस्नात्रम् ॥८॥

त्यार पछी गुरु उभा थई-परमेष्ठिमुद्रा, गुरुडमुद्रा अने मुक्ताशुक्तिमुद्रा ए त्रण मुद्राथी नीचेना मंत्रद्वारा जिनेश्वरनुं आह्वान करे.

आह्वानमंत्रः-"ॐ नमोऽर्हत्परमेश्वराय, त्रैलोक्यगताय, अष्टदिक्कुमारीपरिपूजिताय, देवेन्द्रमहिताय, देवाधिदेवाय, दिव्यशरीराय, त्रैलोक्यपरिपूजिताय आगच्छ आगच्छ स्वाहा" ॥

-: नवमुं (पंचगव्य अथवा पंचामृत) स्नात्रः-

पंचामृतना कळश भरी नीचेना श्लोक तथा मंत्र बोली अभिषेक करवो :-

जिनबिम्बोपरि निपतद्, घृत-दधि-दुग्धादिद्रव्यपरिपूतम् ।
दर्भोदकसंमिश्रं, पञ्चगवं हरतु दुरितानि ॥ १ ॥ (आर्या)

वरपुष्पचन्दनैश्च, मधुरैः कृतनिःस्वनैः । दधि-दुग्ध-घृतमिश्रैः, स्नपयामि जिनेश्वरम् ॥२॥ (अनु.)

१ अहीं जिनाह्वान अढार अभिषेक बृहद्विधिमां आवती विधि द्वारा पण थई शके छे. ते परिशिष्ट नं. १-ऐ मां आपेल छे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"ॐ ह्राँ ह्रीँ परमार्हते परमेश्वराय गन्धपुष्पादिसंमिश्रपञ्चामृतेन स्नापयामीति स्वाहा"

॥ इति नवमं स्नात्रम् ॥९॥

-: दशमुं (सुगंधौषधि) स्नात्रः-

अंबर वि. सुगंधी वस्तुओनुं चूर्ण करी पाणीमां नांखी कळश भरी नीचेना श्लोक ने मंत्र बोली अभिषेक करवो :-

सर्वविघ्नप्रशमनं, जिनस्नात्रसमुद्भवे। वन्द्यं सम्पूर्णपुण्यानां, सुगन्धैः स्नापयेज्जिनम् ॥१॥ (अनु.)

सकलौषधिसंयुक्त्या, सुगन्धया घर्षितं सुगतिहेतोः।
स्नपयामि जैनबिम्बं, मन्त्रिततन्नीरनिवहेन ॥ २ ॥ (आर्या)

"ॐ ह्राँ ह्रीँ परमार्हते परमेश्वराय गन्धपुष्पादिसंमिश्राऽम्बरोसीरादिसुगन्धद्रव्यसंयुतजलेन स्नापयामीति स्वाहा" ॥

॥ इति दशमं स्नात्रम् ॥१०॥

:- अगीयारमुं (पुष्प) स्नात्रः-

१ सेवंत्रा, २ चमेली, ३ मोगर, ४ गुलाब, ५ जूई ए पांच जातनां फूलो पाणीमां नांखी कळशो भरी नीचेना श्लोक तथा मंत्र बोली अभिषेक करवो :-

॥१०१॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अधिवासितं सुमन्त्रैः, सुमनःकिञ्जल्कवासितं तोयम् ।
तीर्थजलादिसुपृक्तं, कलशोन्मुक्तं पततु बिम्बे ॥ १ ॥ (आर्या)
सुगन्धिपरिपुष्पौघै-स्तीर्थोदकेन संयुतैः । भावनाभव्यसन्दोहैः, स्नापयामि जिनेश्वरम् ॥ २ ॥ (अनु.)
"ॐ ह्राँ ह्रीँ परमार्हते परमेश्वराय गन्धपुष्पादिसंमिश्रपुष्पौघसंयुतजलेन स्नापयामीति स्वाहा" ॥

॥ इति एकादशं स्नात्रम् ॥

–: बारमुं (गन्ध) स्नात्रः–

१ केसर, २ कपूर, ३ कस्तूरी, ४ अगर, ५ चंदन ए घसी पाणीमां नांखी कळशो भरी नीचेना श्लोक अने मंत्र बोली अभिषेक करवो.

गन्धाङ्गस्नानिकया, सम्मृष्टं तदुदकस्य धाराभिः ।
स्नपयामि जैनबिम्बं, कर्मौघोच्छित्तये शिवदम् ॥ १ ॥ (आर्या)
कुङ्कुमाद्यैश्च कर्पूरै–र्मृगमदेन संयुतैः ।
अगरुचन्दनमिश्रैः, स्नपयामि जिनेश्वरम् ॥ २ ॥ (अनु.)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ॐ ह्राँ ह्रीँ परमार्हते परमेश्वराय गन्धपुष्पादिसंमिश्रयक्षकर्दमादिगन्धचूर्णसंयुतजलेन स्नापयामीति स्वाहा ॥

॥ इति द्वादशं स्नात्रम् ॥

-: तेरमुं (वास) स्नात्र :-

१ चंदन, २ केशर, अने ३ कपूरनुं चूर्ण करी पाणीमां नांखी कळशो भरी नीचेना श्लोक ने मंत्र बोली अभिषेक करवो :-

हृद्यैराह्लादकरैः, स्पृहणीयैर्मन्त्रसंस्कृतैर्जैनम् ।
स्नपयामि सुगतिहेतो-र्वासैरधिवासितं बिम्बम् ॥ १ ॥ (आर्या)

शिशिरकरकराभैश्चन्दनैश्चन्द्रमिश्रै-र्बहुलपरिमलौघैः प्रीणितं प्राणगन्धैः ।
विनमदमरमौलि-प्रोत्थरत्नांशुजालै-र्जिनपतिवरशृङ्गे, स्नापयेद् भावभक्त्या ॥२॥ (मालिनी)

"ॐ ह्राँ ह्रीँ परमार्हते परमेश्वराय गन्धपुष्पादिसंमिश्रसुगन्धवासचूर्णसंयुतजलेन स्नापयामीति स्वाहा" ॥

॥ इति त्रयोदशस्नात्रम् ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

-: चौदमुं (चंदनदुग्ध) स्नात्र :-

दूध अने चंदनमिश्रित जळना कळशो भरी नीचेना श्लोक ने मंत्र बोली अभिषेक करवो :-

शीतलसरससुगन्धि–र्मनोमतश्चन्दनद्रुमसमुत्थः ।
चन्दनकल्कः सजलो, मन्त्रयुतः पततु जिनबिम्बे ॥ १ ॥ (आर्या)

क्षैरेणाऽऽक्षतमन्मथस्य च महत्–श्रीसिद्धिकान्तापतेः,
सर्वं तस्य शरच्छशाङ्कविशद–ज्योत्स्नारसस्पर्द्धिना ।
कुर्मः सर्वसमृद्धये त्रिजगदा–नन्दप्रदं भूयसा;
स्नानं सद्धनिकसत्कुशेशयपद–न्यासस्य शस्याकृतेः ॥ २ ॥ (शार्दू ल०)

'ॐ ह्राँ ह्रीँ परमार्हते परमेश्वराय गन्धपुष्पादिसंमिश्रक्षीरचन्दनसंयुतजलेन स्नापयामीति स्वाहा' ।

॥ इति चतुर्दशस्नात्रम् ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

-: पंदरमु (केशर-साकर) स्नात्रः-

केसर अने साकर पाणीमां नांखी नीचेना श्लोक तथा मंत्र बोली अभिषेक करवो.

कश्मीरजसुविलिप्तं, बिम्बं तन्नीरधारयाऽभिनवम् ।
सन्मन्त्रयुक्तया शुचि, जैनं स्नपयामि सिद्धयर्थम् ॥ १ ॥ (आर्या)

वाचःस्फारविचारसारमपरैः, स्याद्वादशुद्धामृत-
स्यन्दिन्यः परमार्हतः कथमपि, प्राप्यं न सिद्धात्मनः ।
मुक्तिश्रीरसिकस्य यस्य सुरस-स्नात्रेण किं तस्य च,
श्रीपादद्वयभक्तिभाविधिया, कुर्मः प्रभोस्तत्पुनः ॥ २ ॥ (शार्दूल०)

'ॐ ह्राँ ह्रीँ परमार्हते परमेश्वराय गन्धपुष्पादिसंमिश्रकश्मीरजशर्करासंयुतजलेन स्नापयामीति स्वाहा' ॥

॥ इति पञ्चदशस्नात्रम् ॥

[उपर प्रमाणेनी बाबत पहेला दिवसनी कुळ मर्यादारूप छे, पछी त्रीजे दिवसे चंद्र-सूर्यनुं दर्शन करावाय ॥१०५॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अेटले बिंबोने (चंद्र-सूर्यनुं स्वप्न के) आरीसो देखाडवो, पछी छठ्ठे दिवसे धर्मजागरण अेटले धर्म स्तुति करवी पछी दसुठण करवुं.]

:- सोळमुं (तीर्थोदक) स्नात्र :-

अहिं एकसोआठ तीर्थोनां पाणी कळशोमां भरी नीचेना श्लोक तथा मंत्र बोली अभिषेक करवो :-

जलधिनदीद्रहकुण्डेषु, यानि तीर्थोदकानि शुद्धानि ।
तैर्मन्त्रसंस्कृतैरिह, बिम्बं स्नपयामि सिद्ध्यर्थम् ॥ १ ॥ (आर्या)

नाकिनदीनदविहितैः, पयोभिरम्भोजरेणुभिः सुभगैः ।
श्रीमज्जिनेन्द्रपादौ, समर्चयेत् सर्वशान्त्यर्थम् ॥ २ ॥ (आर्या)

ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः परमार्हते परमेश्वराय गन्धपुष्पादिसंमिश्रतीर्थोदकेन स्नापयामीति स्वाहा ॥

॥ इति षोडशस्नात्रम् ॥

---

१. चंद्र-सूर्यदर्शनना मंत्रो प्रतिष्ठाकल्पमां आवतां नथी पण अष्टादशअभिषेक बृहद्विधिमां आवे छे अने हाल अढार अभिषेक समये बोलाय छे ते परिशिष्ट नं. १-ओ मां आपेल छे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

-: सत्तरमुं (कर्पूर) स्नात्रः-

कपूर पाणीमां नांखी कळशो भरी नीचेना श्लोक अने मंत्र बोली अभिषेक करवो :-

शशिकरतुषारधवला, उज्ज्वलगन्धा सुतीर्थजलमिश्रा ।
कर्पूरोदकधारा, सुमन्त्रपूता पततु बिम्बे ॥ १ ॥ (आर्या)

कनककरकनाली मुक्तधाराभिरद्भि-र्मिलितनिखिलगन्धैः, केलिकर्पूरभाभिः ।
अखिलभुवनशान्त्यै, शान्तिधारा जिनेन्द्र-क्रमसरसिजपीठे, स्नापयेद् वीतरागान् ॥२॥ (मालिनी)

ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः परमार्हते परमेश्वराय गन्धपुष्पादिसंमिश्रकर्पूरसंयुतजलेन स्नापयामीति स्वाहा ॥

॥ इति सप्तदशस्नात्रम् ॥

-: अढारमु (केशर-चंदन-पुष्प) स्नात्रः-

केशर-कस्तूरी-चंदनमिश्रितपाणीना कळशो भरी नीचेना श्लोक तथा मंत्र बोली अभिषेक करवो :-

सौरभ्यं घनसारपङ्कजरजो-भिः प्रीणितैः पुष्करैः;
शीतैः शीतकरावदातरुचिभिः, काश्मीरसम्मिश्रितैः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रीखण्डप्रसवाचलैश्च मधुरै-र्नित्यं लघिष्ठैर्वरैः;
सौरभ्योदकसख्यसार्व्वचरण-द्वन्द्वं यजे भावतः ॥१॥ (शार्दूल०)

'ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः परमार्हते परमेश्वराय गन्ध-पुष्पादिसंमिश्रकश्मीरजचन्दनादिसंयुतजलेन स्नापयामीति स्वाहा' ॥

॥ इति अष्टादशस्नात्रम् ॥ १८ ॥

[1]त्यार बाद नीचेनो श्लोक तथा मंत्र बोली कुसुमांजलि करवी :-

नानासुगन्धिपुष्पौघ-रञ्जिता चञ्चरीककृतनादा ।
धूपाऽऽमोदविमिश्रा, पततात्पुष्पाञ्जलिर्बिम्बे ॥ १ ॥ (आर्या)

'ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः परमार्हते परमेश्वराय पुष्पाञ्जलिभिरर्चयामीति स्वाहा' ॥

पछी श्री संघसहित अधिकृतजिननी स्तुति आदिकथी देववंदन करवुं ।

देववंदनविधिः- खमा०, इरियावहिया० करी सकलकुशल०, अधिकृतजिननुं के 'ॐ नमः पार्श्वनाथाय'

१. अहीं पुष्पांजलि कर्या बाद-घी-दूध-आदि पंचामृत, तथा शुद्धजलनो अभिषेक अष्टादश अभिषेक बृहद् विधि प्रमाणे करी शकाय छे. तेनी विधि परिशिष्ट नं.-१ पे मां आपेल छे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चैत्यवंदन कही जंकिंचि०, नमुत्थुणं०, अरिहंतचेइयाणं०, अन्नत्थ०, एक नवकारनो काउ० करी 'नमोऽर्हत्' कही नीचेनी स्तुति कहेवी :-

अर्हंस्तनोतु स श्रेयः-श्रियं यद्ध्यानतो नरैः ।
अप्यैन्द्री सकलाऽत्रैहि, रंहसा सह सौच्यत ॥ १ ॥ (अनु.)

पछी लोगस्स०, सव्वलोए अरि०, अन्नत्थ०, १ नव० नो काउ० करी स्तुति कहेवी :-

ॐमितिमन्ता यच्छा-सनस्य नन्ता सदा यदंह्रींश्च ।
आश्रीयते श्रिया ते, भवतो भवतो जिनाः पान्तु ॥ २ ॥ (आर्या)

पछी पुक्खर०, सुअस्स भगवओ०, वंदण०, अन्नत्थ०, १ नव० नो काउ० करी स्तुति कहेवी :-

नवतत्त्वयुता त्रिपदी, श्रिता रुचि-ज्ञान-पुण्य-शक्तिमता ।
वरधर्मकीर्ति-विद्या-ऽऽनन्दाऽऽस्या जैनगीर्जीयात् ॥ ३ ॥ (आर्या)

पछी 'श्रीशान्तिनाथआराधनार्थं' करेमि०, का० वंदण०, अन्नत्थ०, १ लोगस्स सागरवरगंभीरा० काउ० करी 'नमो०' स्तुतिः-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रीशान्तिः श्रुतशान्तिः, प्रशान्तिकोऽसावशान्तिमुपशान्तिम् ।
नयतु सदा यस्य पदाः, सुशान्तिदाः सन्तुसन्ति जने ॥ ४ ॥ (आर्या)

पछी 'सुयदेवयाए' करेमि, काउ०, अन्नत्थ०, १ नव० काउ० करी 'नमो०' कही स्तुति :-

वद वदति न वाग्वादिनि !, भगवति ! कः श्रुतसरस्वति ! गमेच्छुः ।
रङ्गत्तरङ्गमतिवर–तरणिस्तुभ्यं नम इतीह ॥ ५ ॥ (आर्या)

पछी 'शासनदेवयाए' करेमि, काउ०, अन्नत्थ०, १ नव० काउ० करी 'नमो०' कही स्तुति :-

उपसर्गवलयविलयन–निरता जिनशासनावनैकरताः ।
द्रुतमिह समीहितकृते स्युः, शासनदेवता भवताम् ॥ ६ ॥ (आर्या)

पछी 'श्री अम्बिकायै' करेमि, काउ०, अन्नत्थ०, १ नव० काउ० करी 'नमो०' कही स्तुति :-

अम्बा बालाऽङ्किताऽङ्काऽसौ, सौख्यख्यातिं ददातु नः ।
माणिक्यरत्नाऽलङ्कार–चित्रसिंहासनस्थिता ॥ ७ ॥ (अनु.)

पछी 'अच्छुताए' करेमि, काउ०, अन्नत्थ०, १ नव० काउ० करी. 'नमो०' कही स्तुति :-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चतुर्भुजा तडिद्वर्णा, कमलाक्षी वरानना ।
भद्रं करोतु सङ्घस्या-ऽच्छुप्ता तुरगवाहना ॥ ८ ॥ (अनु.)

पछी 'खित्तदेवयाए' करेमि, काउ०, अन्नत्थ०, १ नव० काउ० करी 'नमो०' कही स्तुति :-

यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया ।
सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान्नः सुखदायिनी ॥ ९ ॥ (अनु.)

पछी 'समस्त वेया०' करेमि, काउ०, अन्नत्थ०, १ नव० काउ० करी 'नमो०' कही स्तुति :-

सङ्घेऽत्र ये गुरुगुणौघनिधे सुवैया-वृत्त्यादिकृत्यकरणैकनिबद्धकक्षाः ।
ते शान्तये सह भवन्तु सुराः सुरीभिः,सद्दृष्टयो निखिलविघ्नविघातदक्षाः ॥१०॥ (वसन्ततिलका)

पछी नवकार०, नमु०, जावंति०, जावंत०, नमोऽर्हत् कही नीचे आपेल स्तवन कहेवुं :-

ओमिति नमो भगवओ, अरिहंत-सिद्धाऽऽयरिय-उवज्झाय ।
वरसव्वसाहुमुणिसंघ-धम्मतित्थपवयणस्स ॥ १ ॥ (आर्या)

सप्पणव नमो तह भगवई, सुयदेवयाइ सुहयाए । सिवसंतिदेवयाणं, सिवपवयणदेवयाणं च ॥२॥,,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इन्दागणिजमनेरईय-वरुण-वाऊ-कुबेर-ईसाणा। बम्भोनागुत्ति दसण्ह-मविय सुदिसाण पालाणं ॥३॥
(आर्या)

सोम-यम-वरुण वेसमण-वासवाणं तहेव पंचण्हं। तह लोगपालयाणं, सूराइगहाण य नवण्हं ॥४॥,,

साहंतस्स समक्खं, मज्झमिणं चेव धम्मणुट्ठाणं। सिद्धिमविग्घं गच्छउ, जिणाइनवकारओ धणियं ॥५॥,,

पछी जयवीयराय० कहेवा। ॥ इति देववंदनविधिः ॥

॥ इति अढारअभिषेकविधिः ॥

नामस्थापनविधिः—

* नामस्थापन करवुं, पत्रदान अने केशरना छांटणा करवा :-

पछी नीचेनो श्लोक तथा मंत्र बोल्या बाद (फईबाए) प्रभुजीने वस्त्राभरण पहेराववा :-

चञ्चच्चारुशुचिप्ररोहविसरत्-प्रद्योतिताशामुखे;
दिव्यश्रीकदिवाकरद्युतिभरा-दालुप्तदृग्गोचरे।

* नामस्थापन समये करवानी विशिष्ट विधि परिशिष्ट-नं.-१ 'अं' मां आपेल छे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निर्मूल्ये विशुचि शुचौ जिनमहे, दिव्यैकदेवाङ्गना-
ऽऽनीतैराभरणैरलङ्कृतमहादेहे दधे वाससी ॥ १ ॥ (शार्दूल०)

'ॐ ह्राँ ह्रीँ परमार्हते वस्त्राभरणेन चर्चयामीति स्वाहा' ॥

पछी नीचेनो श्लोक तथा मंत्र कही नैवेद्यपूजन करवुं :-

सज्जैः प्राज्याज्ययुक्तैः परिमलबहुलै-र्मोदकैर्मिश्रिखण्डैः;
खाद्याद्यैर्लप्पनश्री-घृतवरपृथुला-ऽपूपसारैरुदारैः ।
स्निग्धोभिर्नितान्तं चरुभिरभिनवैः कर्मवल्लीकुठारान् ;
चाग्रे निर्माय धुर्यान् सुरनरमहितान् चर्चयेदर्हवर्गान् ॥ १ ॥ (स्रग्धरा)

'ॐ ह्राँ ह्रीँ परमार्हते नैवेद्येन चर्चयामीति स्वाहा' ॥ पछी बलिबाकुला उडाववा. ॥

॥ इति अष्टमदिनविधिः ॥

卐

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अथ नवमदिनविधि

—:लेखशालाकरणविधि:—

'ॐ मिति नमो बंभीए लिवीए ॐ ह्राँ ह्रीँ परमार्हते लेखशालाकरणमिति स्वाहा' ॥

ए मंत्र बोली गोल-धाणा, लेखिनी अने मषी भाजननुं प्रदान करवुं.

विवाहमहोत्सवविधि:—

प्रतिष्ठा करनार श्रावकोए पोताना डाबा हाथथी जिनना जमणा हाथमां "साही" प्रदान करवुं. पछी जमणे हाथे सर्वे बिंबोना सर्व अंगे प्रथमथी ज अभिमंत्रित घट्ट सुखड अने केशरथी अर्चन करवुं अने दरेक बिंबो पासे फूल, धूप, वास वि. मूकवा.

पछी गुरु भगवंते जिनबिंबने +सुरभिमुद्रा, +पद्ममुद्रा अने +अंजलिमुद्रा देखाडवी.

त्यारबाद अधिवासना मंत्र:—

+ मुद्राओ माटे जुओ परिशिष्ट-नं. ४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१–" ॐ नमः शान्तये हुं क्षुं हूं सः " अथवा

२–" ॐ नमो खीरासवलद्धीणं, ॐ नमो संभिन्नसोआणं, ॐ नमो पयाणुसारीणं, ॐ नमो कुट्ठबुद्धीणं जमियं विज्जं पउंजामि सा मे विज्जा पसिज्झउ, ॐ अवतर २, सोमे २, कुरु २, वग्गु २, निवग्गु २, सुमणे सोमणसे महु महुरे ॐ कविले कः क्षः स्वाहा " ।

आ बेमांथी गमे ते एक अधिवासनामंत्रथी त्रणवार मींढळ मंत्री ऋद्धि वृद्धि सहित सर्व जिनबिंबोने मींढळनुं कंकण बांधवुं.

पंचांगस्पर्शविधिः—

तेमज बीजा अधिवास मंत्रथी–'मुक्ताशुक्ति' अने 'चक्रमुद्रा'ए करीने श्रावकोए बिंबोना मस्तक, बंने स्कंध अने बंने घुंटण एम पांच अंगो पर स्पर्श करवो. तथा धूप उखेववो.

जिनाह्वान विधिः—

पछी गुरुए 'परमेष्ठिमुद्रा' थी नीचेना मंत्रथी त्रणवार जिनाह्वान करवुं :—

" ॐ नमोऽर्हत्परमेश्वराय, चतुर्मुखपरमेष्ठिने, त्रैलोक्यगताय, अष्टदिक्कुमारीपरिपूजिताय, इन्द्रपरि-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पूजिताय, देवाधिदेवाय, दिव्यशरीराय, त्रैलोक्यमहिताय आगच्छ आगच्छ स्वाहा "।

त्यार बाद 'आसनमुद्रा' देखाडी वास, कपूर, आदिथी पूजन करवुं. श्रावकोए पण चंदन, फळ, फूल, धूप, वास वि. थी पूजन करीने दशीवाळा वस्त्र ढोकवां. ते उपर नव श्रीफळ मूकवां. तेमज श्रावकोए जुदी जुदी जातनां फळ, फूल, बलि, जंबीर, रायण, दाडम, करणां, केळा, द्राक्ष, खारेक, सिंघोडां, अखरोट, बदाम, कमळकाकडी, पस्तानां बीज वि. ढोकवां. पछी फूलेकुं चडाववुं.

स्त्रीओए प्रभुजीने पोंखवा, ते निमित्ते यथाशक्ति सुवर्णनुं दान देवुं. आरती-मंगळदीवो करवो. पछी श्रावकोए नवकार भणीने प्रियंगु, बरास, कपूर तथा गोरोचनथी बंने हाथे बिंबने हाथमां लेप करवो.

पछी "ॐ आदित्य" इत्यादिक कहीने नवे ग्रहोने बलिदान देवुं. बांट, खीर, करंबो, सेव, कूर, लापसी, पुडला, वडां तथा भजीआना थाळ भरीने आगळ मूकवां. पछी ग्रीवासूत्र तथा केसरथी रंगेला सूत्रथी वेष्टित चोरी बांधवी. तोरण सहित मंडप करवो. तेनी नीचे सिंहासन स्थापन करीने, ते पर प्रतिमा स्थापन करवी. सोनानो कळश प्रतिमा पासे मूकवो. घी गोळ सहित चार मंगळ दीवा स्थापवा, पछी बांट, खीर, कंसार, घेबर, करंबो, कूर, घी, मेवा, पुरी, सुखडी एटली वस्तु थाळमां भरीने सधवा स्त्री त्यां लावीने मूके. ओवारणां ले तेमज त्यां धान्य अने जळ मूके, चार नाना घडा त्यां स्थापे. सुंवालीनां कांकणा करवा. ते घडा उपर जवारानां शरावळां मूकवा, तेमज ते घडाओने ग्रीवासूत्र बांधवुं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पछी गुरुए शक्रस्तव पूर्वक चैत्यवंदन करवुं. तथा चंदन, वास, धूप अने फूल सहित कसुंबी वस्त्रथी तेओनुं मुख ढांकवुं. पछी गुरुए सूरिमंत्रथी मंत्रित वासक्षेप बिंबना मस्तक उपर अधिवासित करवो. अने ते वखते उपर कहेला १–" ॐ **नमः शान्तये—हुं क्षुं हूं सः** अथवा २–" ॐ **नमो खीरासवलद्धीणं**—इत्यादि अधिवासना मंत्रो भणवा. वस्त्र दूर करवुं.

पछी लग्न समये :—

संसारे भोगयोग्या श्रीः, गृहिधर्मस्य कारणम् ।
भोगफलसाधनार्थं, तस्माच्च करपीडनम् ॥१॥ (अनु.)

ए श्लोक भणीने हथेवाळामां ऋद्धि वृद्धि, सोपारी, केशर, सुखड आदिक मूकवा. तेमज ते वखते " ॐ ह्राँ ह्रीँ ऐँ क्लीँ ह्रौँ अव्यक्ताव्यक्तसंपन्नाय, संसारभोगकारणाय, मङ्गलार्थं पाणिपीडनमिति स्वाहा " ए मंत्र पण बोलवो. वाजिंत्र वगडाववां, धवल मंगळ गवडाववां, षोडशांश होम करवो. टीको कराववो. बिंबने वस्त्राभूषण पहेराववा. पछी पांच जातना २५ लाडवा मूकवा. मेवो वहेंचवो.

॥ इति विवाहमहोत्सवविधिः ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

राज्याभिषेक विधिः—

नीचेनो श्लोक तथा मंत्र बोली कुंवारिकाना हाथे राज्याभिषेक अने राज्यतिलक[१] करी पट्ट स्थापन करवुं :—

जयति जगति यस्य प्राग्भवं सम्यगात्मो-दयविजितविपक्षं विश्वकल्याणबीजम् ।
सुरसरिदमलाम्भोधारया धारणीयं, बहुगुणजिननाथं, स्थापयेत्पट्टभोगे ॥१॥ (मालिनी)

"ॐ ह्राँ ह्रीँ सिंहासनच्छत्रचामराद्यलङ्कृतैः राज्याभिषेकोऽयं पट्टस्थापनमिति स्वाहा"।

॥ इति पट्टस्थापनविधिः । राज्याभिषेकविधिः ॥

अथ दीक्षामहोत्सव-दीक्षाकल्याणकविधिः—

दीक्षास्नानम् :—

नीचेनो श्लोक तथा मंत्र बोली प्रभुजीने दीक्षास्नान करावबुं:—

---

१. राज्यतिलकनुं विधान प्र-क-मां आवतुं नथी परंतु करावाय छे. तो नीचेना मन्त्रथी करावबुं:—
ॐ नमो जिणाणं, सरणाणं, मंगलाणं, लोगुत्तमाणं, ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः अ-सि-आ-उ-सा-त्रैलोक्यललामभूताय अर्हते नमः स्वाहा ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संवत्सरं दानवरं वराणा–माधारसारैकवचश्चरित्रम् ।
परं पवित्रं पुरुषं पुराणं, पदप्रकृष्टं सुगरिष्ठज्येष्ठम् ॥१॥ (उपजाति)

'ॐ ह्राँ ह्रीँ परमार्हते जिननाथाय स्नापयामीति स्वाहा ।'

पंचमुष्टि लोचः—पछी महोत्सवपूर्वक इन्द्र इन्द्राणीथी परिवरित दान देता देता अशोकवृक्षनी नीचे जई [2] सर्व अलंकारोथी रहित **पंचमुष्टिलोच** करवो.

पछी '**ॐ नमो सिद्धाणं**' ए पाठ भणवो. ([3] सर्वविरतिनो स्वीकार.)

पछी नीचेना बे श्लोको तथा मंत्र बोलवो. (शक्रेन्द्र प्रभुजीना स्कंध उपर देवदूष्य वस्त्र स्थापन करे.)

चारित्रचक्रदधतं भुवनैकपूज्यं, स्याद्वादतोयनिधि–वर्धनपूर्ण(बाल)चन्द्रम् ।
तत्त्वार्थभावपरिदर्शनबोधदीप--मैश्वर्यवर्यसुमनं विगताभिमानम् ॥१॥ (वसन्त०)

---

१ अ–लोकान्तिकदेवोनी विनंतिः—-नवलोकान्तिकदेवोना नाम अने प्रभुने भावपूर्वक विनंति करे छे ते-परिशिष्ट नं. १—अः मां आपेल छे.

१ ब--कुलमहत्तरा (धावमाता) हितोपदेशरूप आशीर्वचन प्रभुजीने कहे छे ते परिशिष्ट-नं १–क. मां आपेल छे. ।

२ अलंकार-उतारता बोलवानो श्लोक—परिशिष्ट-नं. १–ख मां आपेल छे. ।

३ सर्वविरति स्वीकारतां बोलवानुं सूत्र-' करेमि सामाइयं ' परिशिष्ट-नं. १- ग मां आपेल छे. ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निर्ग्रन्थनाथममलं कृतदर्पनाशं, सर्वाङ्गभासुरमनन्तचतुष्टयाढ्यम् ।
मिथ्यात्वपङ्कपरिशोषणवासरेशं, क्रोधादिदोषरहितं वरपुण्यकायम् ॥२॥ (वसन्त.)

"ॐ ह्राँ ह्रीँ परमार्हते पञ्चमहाव्रत-पञ्चसमिति-त्रिगुप्तिधराय, मनःपर्यवज्ञान-विपुलमत्यात्मकाय जिननाथाय नमः स्वाहा" ॥

देववन्दनम्:—

प्रथम गुरुभगवंते चैत्यवंदन कही-यथाविधि-"अर्हंस्तनोतु" ॥१॥; "ॐमिति मन्ता" ॥२॥; "नवतत्त्वयुता" ॥३॥ ए त्रण थोय सुधी कही 'सिद्धाणं' कही. 'अधिवासनादेवीए' करेमि, काउ०, अन्नत्थ०, १ लोगस्सनो काउ० करी 'नमो०':—

पातालमन्तरिक्षं, भुवनं वा या समाश्रिता नित्यं ।
साऽत्राऽवतरतु जैनीं, प्रतिमामधिवासनादेवी ॥ ४ ॥ (आर्या)

थोय कही 'सुयदेवयाए' करेमि, काउ०, अन्नत्थ, १ नव० नो काउ० करी नमो०:—

१ दीक्षाकल्याणकचैत्यवन्दन हस्तलिखित प्रतमां मले छे. ते चैत्यवंदन परिशिष्ट-१-घ मां आपेल छे. ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वद वदति न वाग्वादिनि !; भगवति ! कः श्रुतसरस्वति ! गमेच्छुः ।
रङ्गत्तरङ्गमतिवर–तरणिस्तुभ्यं नम इतीह ॥ ५ ॥ (आर्या)

थोय कही ' संतिदेवयाए ' करेमि काउ०, अन्नत्थ, १ नव० नो काउ० करी नमो०:—

श्रीचतुर्विधसङ्घस्य, शासनोन्नतिकारिणी ।
शिवशान्तिकरी भूयाच्–छ्रीमती शान्तिदेवता ॥६॥ (अनु०)

थोय कही–' अम्बयाए देवयाए ' करेमि काउ०, अन्नत्थ०, १ नव० नो काउ० करी नमो०:--

अम्बा बालाऽङ्किताऽङ्काऽसौ, सौख्यख्यातिं ददातु नः ।
माणिक्यरत्नाऽलङ्कार–चित्रसिंहासनस्थिता ॥ ७ ॥ (अनु.)

थोय कही ' खित्तदेवयाए ' करेमि काउ०, अन्नत्थ०, १ नव० नो काउ० करी नमो०:--

यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया ।
सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान्नः सुखदायिनी ॥ ८ ॥ (अनु.)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

थोय कही " शासनदेवयाए " करेमि काउ०, अन्नत्थ०, १ नव० नो काउ० करी नमो०:—

या पाति शासनं जैनं, सद्यः प्रत्यूहनाशिनी । साऽभिप्रेतसमृद्ध्यर्थं, भूयाच्छासनदेवता ॥९॥ (अनु.)

थोय कही " समस्तवेयावच्च० संति० सम्म० " करेमि काउ०, अन्नत्थ०, १ नव० नो काउ० करी नमो०:—

सङ्घेऽत्र ये गुरुगुणौघनिधे सुवैया–वृत्यादिकृत्यकरणैकनिबद्धकक्षाः ।
ते शान्तये सह भवन्तु सुराः सुरीभिः, सद्दृष्टयो निखिलविघ्नविघातदक्षाः ॥१०॥ (वसन्त.)

थोय कही प्रगट नवकार, नमुत्थुणं०; जावंति०, जावंत०; उवसग्गहरं०; लघुशांति० तथा जयवीयराय० कहेवा.

॥ इति देववंदनम् ॥ ॥ इति दीक्षाकल्याणकविधि ॥

पछी गुरु बेसी नीचे प्रमाणे धारणा करे अने ते अधिवासना रात्रे थायः—

" स्वागता जिनाः सिद्धाः प्रसाददाः सन्तु, प्रसादं सुधियां कुर्वन्तु, अनुग्रहपरा भवन्तु, भव्यानां स्वागतमनुस्वागतम् "

॥ इति नवमदिनविधिः ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अथ दशमदिन विधिः

अधिवासनाविधिः

(१) इरियावही करवी. (२) सुश्रावक मींढळ बांधे. (बहुफळीना के मरडाशींगना.)

(३) दशदिक्पालपूजनः —नीचेनो श्लोक बोली दशदिक्पालनुं पूजन करवुं :—

शक्राऽग्न्यन्तक-नैर्ऋतेश-वरुण-श्रीवायु-वस्वीश्वरा;
ईशानोऽब्जभवः प्रभूतफणभृद्-देवा अमी सर्वतः ।
निघ्नन्तो दुरितानि शीघ्रमभित-स्तिष्ठन्तु पूजाक्षणे;
स्वस्वस्थानमनेकधा द्युतिभृतः प्रोद्यद्विकृष्टाऽसयः ॥ १ ॥ (शार्दूल.)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(४) नवग्रहपूजनः-नीचेनो श्लोक बोली नवग्रहनुं पूजन करवुंः—

+भानुश्चन्द्रनिशाकरो द्युतिकरो, भौमो बुधो निर्मलः,
शान्तिं विघ्नविनाशनं गुरुरथो, शुक्रः करोति स्वयम् ।
पीडानाशकरः शनिर्ग्रहवर–स्तत्कालमाराध्यताम्,
राहुः केतुसमाश्रितश्च भवता, पुष्पाक्षतैः पूज्यताम् ॥ १ ॥ (शार्दूल.)

(५) बलिबाकुला मंत्रवानो मंत्रः—(शांति बलिमंत्र)–त्रण वार बोली बलिबाकुला मंत्रवा :—

ॐ नमो भगवते अर्हते शान्तिनाथस्वामिने—

सकलातिशेषकमहा–सम्पत्तिसमन्विताय शस्याय ।
त्रैलोक्यपूजिताय च, नमो नमः शान्तिदेवाय (आर्या)

+ अर्थसंगति माटे मूलश्लोकना भावानुसार फेरफार करी आ श्लोक मूकेल छे. । मूल श्लोक आ प्रमाणे छे.—
भानुश्चन्द्र–निशाकरद्युतिकरौ, भौमं बुधं निर्मलं, शान्तिं निर्विघ्नं करोति च गुरुः, शुक्रं करोति स्वयम् ।
पीडादूरीकृतं शनैश्चरमतं तत्कारमाराधकं; राहुं केतुसमाश्रितं च भवता पुष्पाक्षतैः पूजयेत् ॥१॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सर्वामरसुसमूह-स्वामिकसंपूजिताय न जिताय। भुवनजनपालनोद्यत-तमाय सततं नमस्तस्मै ॥ (आर्या)

ॐ नमो भगवते-सर्वदुरितौघनाशन-कराय सर्वाऽशिवप्रशमनाय।
दुष्टग्रहभूतपिशाच-शाकिनीनां प्रमथनाय ॥ (आर्या)

ॐ नमो भगवति जये विजये अपराजिते जयंतीति जयावहे सर्वसङ्घस्य भद्रकल्याणमङ्गलप्रददे ! साधूनां शान्ति-तुष्टि-पुष्टिप्रदे ! स्वस्तिदे ! भव्यानाम् ऋद्धि-वृद्धि-निर्वृति-निर्वाणजननि !, सत्त्वानामभयप्रदान-निरते ! भक्तानां शुभावहे ! सम्यग्दृष्टीनां धृति-रति-मति-बुद्धि-प्रदानोद्यते !

जिनशासननिरतानां, शान्तिनतानां च जगति जन्तूनाम्।
श्रीसम्पत्कीर्तियशो-वर्धनि ! जयदेवि ! विजयस्व ॥ (आर्या)

रोग-जल-ज्वलन-विषधर-दुष्टज्वर-व्यन्तर-राक्षस-रिपुमारी-चौरेति-श्वापदोपसर्गादिभयेभ्यो रक्ष रक्ष शिवं कुरु कुरु; तुष्टिं कुरु कुरु; पुष्टिं कुरु कुरु, ॐ नमो नमो ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रः यः क्षः ह्रीँ फुट्ट फुट्ट स्वाहा ॥

(६) बलिप्रक्षेपः—

प्रतिष्ठा स्थानथी दशे दिशाओमां नाम लइ लइने (१) धूप, (२) दीप, (३) वास, (४) बलिबाकुला (५) फूल (६) ॥१२५॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अक्षत आ छ वस्तुओनो पाणी सहित प्रक्षेप करवो.

(७) +देववंदनः—पछी नीचे प्रमाणे देववंदन करवुं—

इरियावही०, सकलकुशल०, अधिकृत जिननुं अथवा 'ॐ नमः पार्श्वनाथाय'नुं चैत्यवंदन कहेवुंः--

ॐ नमः पार्श्वनाथाय, विश्वचिंतामणीयते । ह्रीँ धरणेन्द्रवैरोट्या-पद्मादेवीयुताय ते ॥१॥ (अनु.)

शान्ति-तुष्टि-महापुष्टि-धृति-कीर्तिविधायिने ।

ॐ ह्रीँ द्विड्व्याल-वेताल-सर्वाऽऽधि-व्याधिनाशिने ॥ २ ॥ (अनु.)

जयाऽजिताऽऽख्या-विजया-ऽऽख्याऽपराजितयाऽन्वितः ।

दिशांपालैर्ग्रहैर्यक्षै-र्विद्यादेवीभिरन्वितः ॥ ३ ॥ (अनु.)

ॐ अ-सि-आ-उ-साय नम-स्तत्र त्रैलोक्यनाथताम् ।

चतुष्षष्टिसुरेन्द्रास्ते, भासन्ते छत्रचामरैः ॥ ४ ॥ (अनु.)

+ अहीं मुद्रित प्र. क. नी प्रतप्रमाणे पहेला देववंदन अने पछी वस्त्राच्छादन-ए रीते विधि जणावी छे. हस्तलिखित प्रतोमां पहेला वस्त्राच्छादन अने पछी देववंदन आवे छे. ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्री शंखेश्वरमण्डन ! पार्श्वजिन ! प्रणतकल्पतरुकल्प ! ।
चूरय दुष्टव्रातं, पूरय मे वाञ्छितं नाथ ! ॥ ५ ॥ (आर्या)

जंकिंचि०; नमुत्थुणं०; अरिहंत चेइयाणं०; अन्नत्थ०; एक नवकारनो काउसग्ग करी नमोऽर्हत्० कही:--

अर्हस्तनोतु स श्रेयः-श्रियं यद् ध्यानतो नरैः ।
अप्यैन्द्री सकलाऽत्रैहि, रंहसा सह सौच्यत ॥१॥ (अनु.)

लोगस्स०, सव्वलोए०, अरिहंत०, अन्नत्थ० १ नव० नो काउ० थोय बीजी:--

ॐमिति मन्ता यच्छा सनस्य, नन्ता सदा यदंह्रींश्च ।
आश्रीयते श्रिया ते, भवतो भवतो जिनाः पान्तु ॥ २ ॥ (आर्या)

पुक्खर०; सुअस्स भगवओ०; वंदण०; अन्नत्थ०, १ नव० नो काउ० थोय त्रीजी:--

नवतत्त्वयुता त्रिपदी, श्रिता रुचि-ज्ञान-पुण्य-शक्तिमता ।
वरधर्म-कीर्ति-विद्या-ऽऽनन्दाऽऽस्या जैनगीर्जीयात् ॥ ३ ॥ (आर्या)

सिद्धाणं०, "प्रतिष्ठादेवयाए" करेमि काउ०, अन्नत्थ०, १ लोगस्स० नो काउ० नमोऽर्हत्-थोय चोथी:--

॥१२७॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

यदधिष्ठिताः प्रतिष्ठाः, सर्वाः सर्वास्पदेषु नन्दन्ति ।
श्रीजिनबिम्बं सा दिशतु; देवता सुप्रतिष्ठितमिदम् ॥ ४ ॥ (आर्या)

" शासनदेवयाए " करेमि०, काउ०, अन्नत्थ०, १ नव० काउ०, नमोऽर्हत्-थोय पांचमीः--

या पाति शासनं जैनं, सद्यः प्रत्यूहनाशिनी । साऽभिप्रेतसमृद्ध्यर्थं, भूयाच्छासनदेवता ॥५॥ (अनु.)

" खित्तदेवयाए " करेमि काउ०, अन्नत्थ०, १ नव० काउ०, नमोऽर्हत्-थोय छट्ठीः--

यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया ।
सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान्नः सुखदायिनि ॥६॥ (अनु.)

" संतिदेवयाए " करेमि, काउ०, अन्नत्थ०, १ नव० काउ०, नमोऽर्हत्-थोय सातमोः-

श्रीचतुर्विधसङ्घस्य, शासनोन्नतिकारिणी । शिवशान्तिकरी भूयाच्-छ्रीमती शान्तिदेवता॥७॥ (अनु.)

'समस्तवेया० संति० सम्म० समा०' करेमि, काउ०, अन्नत्थ०, १ नव० काउ०, नमोऽर्हत्-थोय आठमीः--

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सङ्घेऽत्र ये गुरुगुणौघनिधे सुवैया–वृत्यादिकृत्यकरणैकनिबद्धकक्षाः ।
ते शान्तये सह भवन्तु सुराः सुरीभिः, सद्दृष्टयो निखिलविघ्नविघातदक्षाः ॥८॥ (वसन्त.)

प्रगट नव०, नमुत्थुणं०, जावंति०, इच्छामि०, जावंत०, नमोऽर्हत्–

ओमिति नमो भगवओ, अरिहंत–सिद्धाऽऽयरिय–उवज्झाय ।
वरसव्वसाहुमुणिसङ्घ–धम्मतित्थपवयणस्स ॥१॥
सप्पणव नमो तह भगवई, सुअदेवयाए सुहयाइ ।
सिवसंतिदेवयाए, सिवपवयणदेवयाणं च ॥२॥
इन्दाऽगणि-जम-नेरईय––वरुण-वाऊ–कुबेर-ईसाणा ।
बंभो–नागुत्ति दसण्ह–मविय सुदिसाण पालाणं ॥३॥
सोम-यम-वरुण-वेसमण—वासवाणं तहेव पंचण्हं ।
तह लोगपालयाणं, सुराइगहाण य नवण्हं ॥४॥
साहंतस्स समक्खं, मज्झमिणं चेव धम्मणुट्ठाणं ।
सिद्धिमविग्घं गच्छउ, जिणाइनवकारओ धणियं ॥५॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उवस्स० जयवीयराय० ॥ इति देववन्दनम् ॥

(८) दरेक नूतन जिनबिंबोने कसुंबीवस्त्र ढांकवुं.

(९) वज्रपंजरः--" ॐ परमेष्ठिनमस्कारम् " इत्यादि.

(१०) ततः आत्मरक्षाः--नीचेना मंत्रोथी करवी. (त्रणवार):--

ॐ नमो अरिहंताणं ॥ हृदये ॥; ॐ नमो सिद्धाणं ॥ मस्तके ॥;
ॐ नमो आयरियाणं ॥ शिखायाम् ॥; ॐ नमो उवज्झायाणं ॥ सन्नाहः ॥;
ॐ नमो लोए सव्वसाहूणं ॥ दिव्यास्त्रम् ॥

(११) ततः शुचीकरणम् :--नीचेना मंत्रथी करवुं. (त्रणवार):--

ॐ नमो अरिहंताणं; ॐ नमो सिद्धाणं; ॐ नमो आयरियाणं; ॐ नमो उवज्झायाणं, ॐ नमो लोए सव्वसाहूणं, ॐ नमो आगासगामीणं, ॐ नमो चारणलद्धीणं, ॐ नमो हः क्षः ॐ अशुचिः शुचिर्भवामि स्वाहा ॥

आ मंत्र भणी पोताना हाथे पांच अंगे स्पर्श करवो.

(१२) ततः सकलीकरणम् :--नीचेना मंत्रथी करवुं. (त्रणवार):--

ॐ नमो अरिहंताणं हृदयं रक्ष रक्ष; ॐ नमो सिद्धाणं ललाटं रक्ष रक्ष;

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ॐ नमो आयरियाणं शिखां रक्ष रक्षः ॐ नमो उवज्झायाणं कवचं रक्ष रक्षः
ॐ नमो लोए सव्वसाहूणं अस्त्रं रक्ष रक्ष।

अथवा-क्षि-प-ॐ-स्वा-हा-ए मंत्र.

(१३) त्यार पछी मुक्ताशुक्ति अथवा चक्रमुद्रा सहित नीचेनो अधिवासना मंत्र खूब उच्चस्वरे त्रण वार बोलवोः--

स्वागता जिनाः सिद्धाः, प्रसाददाः सन्तु, प्रसादं सुधियां कुर्वन्तु।
अनुग्रहपरा भवन्तु, भव्यानां स्वागतमनुस्वागतम्॥

ॐ नमो खीरासवलद्धीणं, ॐ नमो महुआसवलद्धीणं, ॐ नमो संभिन्नसोआणं, ॐ नमो पयाणुसारीणं, ॐ नमो कुट्ठबुद्धीणं, जमियं विज्जं पउंजामि सा मे विज्जा पसिज्जउ ॐ अवतर अवतर, सोमे सोमे, कुरु कुरु वग्गु वग्गु निवग्गु निवग्गु, सुमणे सोमणसे महु महुरे कविले ॐ कः क्षः स्वाहा॥

अथवा (ॐ नमः शान्तये हुं क्षुं हूं सः।)

(१४) पछी सूरिमंत्र त्रणवार गणी प्रभुजी उपर वासक्षेप करवो.।

(१५) दरेक नूतन बिंबने धूप करवो.

(१६) जिनबिंबोने ढांकेलुं कसुंबी वस्त्र लइ लेवुं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(१७) पछी लग्न-समय नजीक आवता ऊंचा स्वरे अने ऊंचा श्वासे नीचेना मंत्रो बोली भगवंतनां पांचे अंगे अक्षरन्यास करवो.

ह्राँ (ललाटे); श्रीँ (नयनयोः); ह्रीँ (हृदये); रैँ रौँ (सर्व संधिषु); श्लौँ (पीठे-प्राकारे).

(१८) घीनुं पात्र मूकवुं.

(१९) पछी परमेष्ठिमुद्राथी नीचेना बे श्लोक तथा मंत्र बोली त्रणवार जिनाह्वान करवुं:—

उदयति परमात्म-ज्योतिरुद्योतिताशं, विषयविनययुक्त्या ध्वस्तमोहान्धकारम् ।
शुचितरघनसारो-ल्लासिभिश्चन्दनौघै-र्जिनपतिमिहगन्धैश्चर्चयेद् भक्तिभावात् ॥१॥ (मालिनी)
घातिक्षयोद्भूतविशुद्धबोधान्, प्रबोधिताऽशेषविशेषलोकान् ।
सुरेन्द्र-नागेन्द्र-नरेन्द्र-वन्द्यान्, समर्चयेत् श्रीजिननायकान् ज्ञः ॥२॥ (उपजाति)

ॐ ह्राँ ह्रीँ नमोऽर्हत्परमेश्वराय चतुर्मुखाय परमेष्ठिने त्रैलोक्यगताय अष्टदिक्कुमारीमहिताय इन्द्र-परिपूजिताय देवाधिदेवाय त्रैलोक्यमहिताय अष्टमहाप्रातिहार्यधराय आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥

(२०) नीचेना मंत्रथी अधिष्ठायक देव-देवीनुं आह्वान करवुं (त्रणवार):—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सदौषधिस्नानम्—

सहदेव्यादिसदौषधि-वर्गेणोद्वर्त्तितस्य बिम्बस्य । सम्मिश्रं बिम्बोपरि, पतज्जलं हरतु दुरितानि ॥ ६ ॥ (आर्या)

मूलिकास्नानम्—

सुपवित्रमूलिकावर्ग-मर्दिते तदुदकस्य शुभधारा । बिम्बेऽधिवासस्समये, यच्छतु सौख्यानि निपतन्ती ॥ ७ ॥ (,,)

प्रथमाष्टकवर्गस्नानम्—

नानाकुष्ठाद्यौषधि-सन्मृष्टे तद्युतं पतन्नीरम् । बिम्बे कृतसन्मन्त्रं, कर्मौघं हन्तु भव्यानाम् ॥ ८ ॥ (,,)

द्वितीयाष्टकवर्गस्नानम्—

मेदाद्यौषधिभेदो-ऽपरोऽष्टवर्गः सुमन्त्रपरिपूतः । निपतन् बिम्बस्योपरि, सिद्धिं विदधातु भव्यजने ॥ ९ ॥ (,,)

ततः सूरिरुत्थाय गरुडमुद्रया मुक्ताशुक्तिमुद्रया, परमेष्ठिमुद्रया, वा प्रतिष्ठाप्य देवताऽऽह्वानं तदग्रतो भूत्वा ऊर्ध्वः सन् करोति-" ॐ नमोऽर्हत्परमेश्वराय चतुर्मुखपरमेष्ठिने त्रैलोक्यगतायाष्टदिग्विभागकुमारीपरिपूजिताय देवाधिदेवाय दिव्यशरीराय त्रैलोक्यमहिताय आगच्छ २ स्वाहा " इत्यनेन । दिक्पालाश्चाहूयन्ते-" ॐ इन्द्राय सायुधाय सवाहनाय इह जिनेन्द्रस्थापने आगच्छ २ स्वाहा १, ॐ अग्नये सायुधाय आगच्छ २ स्वाहा " इत्यादिना शेषाणामप्याह्वानं कुर्यात्, पुष्पाणामञ्जलिक्षेपश्च ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सर्वौषधिस्नानम् —

सकलौषधिसंयुक्त्या, सुगन्धया घर्षितं सुगतिहेतोः । स्नपयामि जैनबिम्बं, मन्त्रिततन्नीरनिवहेन ॥ १० ॥ (आर्या)

ततः–"सिद्धजिनादि" मन्त्रः सूरिणा दृष्टिदोषघाताय दक्षिणहस्तामर्षेण तत्काले बिम्बे न्यसनीयः, स चायम्–

'इहागच्छन्तु जिनाः सिद्धा भगवन्तः स्वसमये महानुग्रहाय भव्यानां भः स्वाहा' 'हुं क्षाँ ह्रीँ क्ष्वीँ हूँ भः स्वाहा' इत्ययं वा। ततो लोहेनास्पृष्टश्वेतसिद्धार्थरक्षापोट्टलिका करे बन्धनीया, तदभिमन्त्रणमन्त्रः–
'ॐ क्षाँ क्ष्वीं ह्रीँ स्वाहा', चन्दनटिक्कक च, ततो जिनपुरतोऽञ्जलिं बद्ध्वा विज्ञप्तिकावचनं कार्यं, तच्चेदं–
'स्वागता जिनसिद्धाः प्रसाददाः सन्तु प्रसादधिया कुर्वन्तु अनुग्रहपरा भवन्तु भव्यानां स्वागतमनुस्वागतम्' ततोऽञ्जलिमुद्रया सुवर्णभाजनस्थार्घ्यं मन्त्रपूर्वकं निवेदयेत्, स च–'ॐ भः अर्घ्यं प्रतीच्छन्तु पूजां गृह्णन्तु जिनेन्द्राः स्वाहा' सिद्धार्थदध्यक्षतघृतदर्भरूपश्चार्घ्यमुच्यते । ततः–

इन्द्रमग्निं यमं चैव, निर्ऋतिं वरुणं तथा। वायुं कुबेरमीशानं, नागं ब्रह्माणमेव च ॥१॥

'ॐ इन्द्राय आगच्छ २ अर्घ्यं प्रतीच्छ २ पूजां गृह्ण २ स्वाहा' एवमेव शेषाणामपि नवानामाह्वानपूर्वकमर्घ्यनिवेदनं च कार्यम् । ततः कुसुमस्नानम्–

अधिवासितं सुमन्त्रैः, सुमनःकिंजल्कराजितं तोयम् । तीर्थजलादिसुपृक्तं, कलशोन्मुक्तं पततु बिम्बे ॥११॥ (आर्या)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ततो गन्धस्नानिकास्नानम्–

गन्धाङ्गस्नानिकया, सन्मृष्टं तदुदकस्य धाराभिः। स्नपयामि जैनबिम्बं, कर्मौघोच्छित्तये शिवदम् ॥१२॥ ((आर्या)

गन्धा एव शुक्लवर्णा वासा उच्यन्ते, त एव मनाक् कृष्णा गन्धा इति। ततो वासस्नानम्–

हृद्यैराह्लादकरैः, स्पृहणीयैर्मन्त्रसंस्कृतैर्जैनम्। स्नपयामि सुगतिहेतो–र्बिम्बमधिवासितं वासैः ॥१३॥ (,,)

ततः चन्दनस्नानम्–

शीतलसरससुगन्धि–मनोमतश्चन्दनद्रुमसमुत्थः। चन्दनकल्कः सजलो, मन्त्रयुतः पततु जिनबिम्बे ॥१४॥ (,,)

ततः कुङ्कुमस्नानम्–

कश्मीरजसुविलिप्तं, बिम्बं तन्नीरधारयाऽभिनवम्। सन्मन्त्रयुक्तया शुचि, जैनं स्नपयामि सिद्धयर्थम् ॥१५॥ (आर्या)

तत आदर्शकदर्शनं ततस्तीर्थोदकस्नानम्–

जलधिनदीह्रदकुण्डेषु, यानि तीर्थोदकानि शुद्धानि। तैर्मन्त्रसंस्कृतैरिह, बिम्बं स्नपयामि सिद्धयर्थम् ॥१६॥ (,,)

ततः कर्पूरस्नानं–

शशिकरतुषारधवला, उज्ज्वलगन्धा सुतीर्थजलमिश्रा। कर्पूरोदकधारा, सुमन्त्रपूता पततु बिम्बे ॥१७॥ (,,)

ततः कस्तूरिकास्नानम्–

मन्त्रपवित्रितपयसा, प्रकृष्टकस्तूरिकासुगन्धयुजा। विहितप्रणताभ्युदयं, बिम्बं स्नपयामि जैनेन्द्रम् ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अतिसुरभिबहुलपरिमल-वासितपानेन मृगमदस्नानैः। मन्त्रैः कृतैः पयोभिः, स्नपयामि शिवाढयजिनबिम्बम् ॥१८॥ (आर्या)

ततः पुष्पाञ्जलिक्षेपः-

नानासुगन्धपुष्पौघ-रञ्जिता चञ्चरीककृतनादा । धूपामोदविमिश्रा, पततात्पुष्पाञ्जलिर्बिम्बे ॥१९॥ (,,)

ततः शुद्धजलकलशैः अष्टोत्तरशत-१०८ स्नानविधिः-

चक्रे देवेन्द्रराजैः सुरगिरिशिखरे योऽभिषेकः पयोभि-र्नृत्यन्तीभिः सुराभिर्ललितपदगमं तूर्यनादैः सुदीप्तैः।

कर्तुं तस्यानुकारं शिवसुखजनकं मन्त्रपूतैः सुकुम्भै-र्बिम्बं जैनं प्रतिष्ठाविधिवचनपरः स्नापयाम्यत्र काले ॥१॥ (स्रग्धरा)

ततोऽभिमन्त्रितचन्दनेन सूरिर्वामकरधृतप्रतिमां दक्षिणकरेण सर्वाङ्गमालेपयति, कुसुमारोपणं, धूपोत्पाटनं, वासनिक्षेपः, सुरभिमुद्रादर्शनं, पद्ममुद्रा ऊर्ध्वा दर्श्यते, अञ्जलिमुद्रादर्शनं च ततः प्रियङ्गुकर्पूरगोरोचनाहस्तलेपः अधिवासनामन्त्रेण करे ऋद्धिवृद्धिसमेतमदनफलाख्यकङ्कणबन्धनं, स चायम्-" ॐ नमो खीरासवलद्धीणं ॐ नमो महुयासवलद्धीणं ॐ नमो संभिन्नसोईणं ॐ नमो पयाणुसारीणं ॐ नमो कुट्ठबुद्धीणं जमियं विज्जं पउंजामि सा मे विज्जा पसिज्झउ ॐ अवतर २ सोमे २ कुरु २ ॐ वग्गु निवग्गु सुमणे सोमणसे महुमहुरए कविले ॐ कः क्षः स्वाहा" अधिवासनामन्त्रः, यद्वा "ॐ नमः शान्तये हुं क्षुं हूं सः" कङ्कणमन्त्रः ५। अधिवासनामन्त्रेणैव मुक्ताशुक्त्या बिम्बे पञ्चाङ्गस्पर्शः-मस्तक १ खांध २ जानु २ वार ७, चक्रमुद्रया वा। धूपश्च निरन्तरं दातव्यः, परमेष्ठिमुद्रां सूरिः करोति, पुनरपि जिनाह्वानं, ततो निषद्यायामुप-

Jain Education International · For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

केवळज्ञानकल्याणकमहोत्सव विधिः—

पछी पद्ममुद्राए नीचेना मंत्रथी बिंबने समवसरणमां बेसाडवां:--

"ॐ इदं रत्नमयमासनमलङ्कुर्वन्तु, इहोपविष्टान् भव्यानवलोकयन्तु, हृष्टदृष्टया जिनाः स्वाहा" ॥

तेमज "ॐ ह्रोँ गन्धान् प्रतीच्छन्तु स्वाहा" ए मंत्राक्षर सहित त्रण नवकार गणी वासक्षेप करवो. तथा* ३६० करियाणानो पडो हाथ पर मूकवो.

चार स्त्रीओए पोंखणा करवा. तेज स्त्रीओना हाथे यथाशक्ति सुवर्णदान देवडाववुं. पछी फुलवासनी वृष्टि करवी. धूप करवो.

त्यारबाद नीचे प्रमाणे चैत्यवंदन कही देववंदन करवुं.

आकाशगामित्व–चतुर्मुखत्वं, विद्येश्वरत्वाऽमितवीर्यताद्यम् ।
प्रिया हिता वागपि यत्र नित्यं, नमो नमस्तीर्थकराय तस्मै ॥ १ ॥ (उपजाति)
देवेन्द्रवन्द्यमुनिसेवितपादपद्मं, सत्प्रातिहार्यविभवाङ्कितमक्षयं च ।
नाभेयमात्मगुणपूरितसर्वलोकं, चिद्रूपरूपविजितं प्रणमामि भक्त्या ॥२॥ (उपजाति)

---

* ३६० करियाणानी यादी परिशिष्ट नं. ८ मां आपेल छे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिंहासने रत्नमयूखचित्रे, ह्यशोकवृक्षाश्रितदिव्यकायः ।
छत्रत्रयं भाति जिनस्य मूर्ध्नि, सच्चामरैर्नित्यविराजमानम् ॥ ३ ॥ (उपजाति)

नित्योदयं दलितमोहमहान्धकारं, संसारतापहरणं शिवदं प्रकामम् ।
नष्टाष्टकर्मनिचयं च हिरण्यगर्भं, चिद्रूपरूपविजितं प्रणमामि भक्त्या ॥४॥ (उपजाति)

गजेन्द्र-सिंहादिभयं समुद्र-सङ्ग्राम-सर्पा-ऽग्नि-महोदराद्याः ।
यतः प्रणाशं ह्युपयान्ति सद्य-स्तस्मात्तमर्चे प्रवरं जिनेन्द्रम् ॥ ५ ॥ (उपजाति)

जंकिंचि०; नमुत्थुणं०; अरिहंत०; अन्नत्थ० जे तीर्थंकरनी प्रतिष्ठा होइ ते स्तुतिथी मांडी चार थोय सुधी कही नमुत्थुणं०, जावंति०, जावंत०, ते जिननुं स्तवन०, जयवीयराय० कहेवा.

॥ इति देववंदनम् ॥ ॥ इति केवळज्ञानकल्याणकमहोत्सवविधिः ॥

अथ निर्वाणकल्याणकविधि :—

पछी नीचेनां काव्यो तथा मंत्र भणी स्नात्र कराववुं :—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सर्वाऽपायव्यपाया–दधिगतविमल–ज्ञानमानन्दसारं;
योगीन्द्रं ध्येयमध्यं, त्रिभुवनमहितं, यत्तथाव्यक्तरूपम् ।
नीरन्ध्रं दर्शनाद्यं, शिवमशिवहरं, छिन्नसंसारपाशं,
चित्ते संचिन्तयामि, प्रकटमविकटं, मुक्तिकान्तासुकान्तम् ॥ १ ॥ (स्रग्धरा)

इत्थं सिद्धं प्रसिद्धं, सुरनरमहितं, द्रव्यभावद्धिकर्म–
पर्यायध्वंसलब्धा–ऽक्षयपुरविलसद्–राज्यमानन्दरूपम् ।
ध्यायेद्धिध्यातकर्मा, सकलमविकलं, सौख्यमाप्यैहिकं सद्-
ब्रह्मोपैति प्रमोदा–दसमसुखमयं, शाश्वतं हेलयैव ॥ २ ॥ (स्रग्धरा)

" ॐ ह्राँ ह्रीँ परमार्हते अष्टकर्मरहिताय सिद्धिपदं प्राप्ताय पारंगताय स्नापयामीति स्वाहा " ।

पछी " ॐ ह्रीँ अर्हं सिद्धाय नमः " ए मंत्र भणी नव अंगे पूजन करवुं.

पछी उदार अने उदात्त स्वरथी नीचेनुं काव्य १०८ वार बोलतां १०८ स्नात्र करवा :—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चक्रे देवेन्द्रराजैः, सुरगिरिशिखरे, योऽभिषेकः पयोभि–
नृत्यन्तीभिः सुरीभि–र्ललितपदगमं, तूर्यनादैः सुदीप्तैः ।
कर्तुं तस्याऽनुकारं, शिवसुखजनकं, मन्त्रपूतैः सुकुम्भै—
–र्बिम्बं जैनं प्रतिष्ठा–विधिवचनपरः, स्नापयाम्यत्र काले ॥ १ ॥ (स्रग्धरा)

पछी चैत्यवंदन करवुं.

पछी नीचेना भूतबलिमंत्रथी बलिदान मंत्रवुं :—

भूतबलिमंत्र :—ॐ नमो अरिहंताणं; ॐ नमो सिद्धाणं; ॐ नमो आयरियाणं; ॐ नमो उवज्झायाणं; ॐ नमो लोए सव्वसाहूणं, ॐ नमो आगासगामीणं, ॐ नमो चारणाइलद्धीणं, जे इमे किन्नर–किंपुरुस–महोरग–गरुल–सिद्ध–गंधव्व–जक्ख–रक्खस–पिसाय–भूय–पेय–साइणि–डाइणिप्पभिइओ जिणघरनिवासिणो नियनियनिलयठिया पवियारिणो सन्निहिया असन्निहिया य ते सव्वे विलेवण–धूव–पुप्फ–फल–पईव–सणाहं बलिं पडिच्छंता, तुट्ठिकरा भवन्तु, शिवंकरा भवन्तु, संतिकरा भवन्तु; सुत्थं जणं कुव्वंतु; सव्वजिणाणं सन्निहाणपभावओ पसन्नभावत्तणेण सव्वत्थ रक्खं कुणंतु; सव्वत्थ दुरियाणि नासंतु; सव्वासिवमुवसमंतु, संति–तुट्ठि–पुट्ठि–सिव–सुत्थयणकारिणो भवंतु स्वाहा" ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पछी ते बलि धूप, वास अने फल सहित करी दश दिक्पाल अने नवग्रहना नाम लइ लइ नांखवो.

पछी श्रावकोए बंने हाथमां फूल लइ नीचेना मंत्रो भणी बलिदान करवुं :—

"ॐ ह्म्र्यां गंधाद्यः प्रतीच्छन्तु स्वाहा; ॐ ह्म्र्यौं धूपं भजन्तु स्वाहा; ॐ ह्म्र्यें भूतबलिं जुषन्तु स्वाहा" ॥

पछी श्रावकोए कुसुमांजलि लइ नीचेना मंत्रथी त्रणवार बिंब सामे नांखवी :—

"ॐ ह्म्र्यैं सकलसत्त्वलोकमवलोकय भगवन्नवलोकय अवलोकय स्वाहा" ॥

पछी श्रावकोए पहेलां करेली सर्व पूजा दूर करवी; तेमज चंदन; केशर; फूल; आंगी, वस्त्र, आभरण आदिकथी सघळी नवी पूजा करवी. तेमज आगळ करेलुं सर्व बलिदान पण दूर करवुं. दान देवुं. तथा बीजोरां आदि फळ, लाडु, सुखडी, मेवो, मुखवास वि. नैवेद्य मूकवुं.

पछी उतारण विधि पूर्वक कपूर, घी अने साकरथी आरति अने मंगळ दीवो करवो.

॥ इति निर्वाणकल्याणकविधि ॥

देववंदन :—

पछी गुरु भगवंते संघ साथे चैत्यवंदनथी त्रण थोय सुधी कह्या बाद "प्रतिष्ठादेवताविसर्जनार्थं काउ० करुं" ॥१४१॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इच्छं; प्रतिष्ठादेवताविसर्जनार्थं करेमि काउ, वंदण; अन्नत्थ; १ लोगस्सनो काउ० (चंदेसु निम्मलयरा सुधी) नमो० कही--थोय चोथी--

यदधिष्ठिताः प्रतिष्ठाः, सर्वाः सर्वास्पदेषु नन्दन्ति ।
श्रीजिनबिम्बं सा विशतु, देवता सुप्रतिष्ठमिदम् ॥ ४ ॥ (आर्या)

" सुयदेवयाए " करेमि० काउ०, अन्नत्थ०, १ नव० नो काउ० नमो० कही—थोय पांचमी—

वद वदति न वाग्वादिनि !, भगवति ! कः श्रुतसरस्वति ! गमेच्छुः ।
रङ्गत्तरङ्गमतिवर–तरणिस्तुभ्यं नम इतीह ॥ ५ ॥ (आर्या)

पछी " संतिदेवयाए " करेमि० काउ०, अन्नत्थ०, १ नव० नो काउ० नमो० कही--थोय छठी--

उन्मृष्टरिष्टदुष्ट–ग्रहगतिदुःस्वप्नदुर्निमित्तादि ।
सम्पादितहितसम्प–न्नामग्रहणं जयति शान्तेः ॥ ६ ॥ (आर्या)

पछी " खित्तदेवयाए " करेमि० काउ०, अन्नत्थ०, १ नव० नो काउ० नमो० कही--थोय सातमी-- ॥१४२॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया ।
सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान्नः सुखदायिनी ॥७॥ (अनु.)

कही "शासनदेवयाए" करेमि० काउ०, अन्नत्थ०, १ नव० नो काउ० नमो० कही--थोय आठमी--

उपसर्गवलयविलयन–निरता जिनशासनाऽवनैकरता ।
द्रुतमिह समीहितकृते, स्युः शासनदेवता भवताम् ॥ ८ ॥ (आर्या)

पछी "समस्त वेया० संति० सम्म०" करेमि०, काउ०, अन्नत्थ०, १ नव० नो काउ० नमो० कही–थोय नवमी–

सङ्घेऽत्र ये गुरुगुणौघनिधे सुवैया–वृत्त्यादिकृत्यकरणैकनिबद्धकक्षाः ।
ते शान्तये सह भवन्तु सुराः सुरीभिः, सद्दृष्टयो निखिलविघ्नविघातदक्षाः ॥९॥ (वसन्त०)

पछी नवकार०, नमुत्थुणं, जावंति०, जावंत०, नमो० स्तवन अजितशांति अथवा मोटीशांति, जय वीयराय.

पछी श्रावकोए अखंड चोखा शेर सवा पांच प्रमाणनो थाळ गुरु पासे मूकवो. श्रावकोए पुष्पांजलि लइ तथा गुरुए अखंड चोखानी बे हाथे अंजलि लइ श्रीसंघ सहित ऊभा रही नीचे प्रमाणेनो मंगळ पाठ बोली श्रावकोए पुष्पांजलि तथा गुरुए चोखा उछाळवा मंगळपाठ :--

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जह सिद्धाण पइट्ठा, समग्गलोगस्स मज्झयारंमि। आचंद सूरियं तह, होउ इमा सुपइट्ठत्ति॥१॥ (आर्या)
जह सग्गस्स पइट्ठा, समग्गलोगस्स मज्झयारंमि। ,, ,, ,, ,, ,, ॥२॥ (आर्या)
जह मेरुस्स पइट्ठा, दीवसमुद्दाण मज्झयारंमि। ,, ,, ,, ,, ,, ॥३॥ (आर्या)
जह जम्बूस्स पइट्ठा, समत्थदीवाण मज्झयारंमि। ,, ,, ,, ,, ,, ॥४॥ (आर्या)
जह लवणस्स पइट्ठा, समत्थउदहीण मज्झयारंमि। ,, ,, ,, ,, ,, ॥५॥ (आर्या)

धमाऽधम्माऽऽगासा-त्थिकायमयस्स सव्वलोगस्स।
जह सासया पइट्ठा, एसा विय होउ सुपइट्ठा ॥ ६ ॥ (आर्या)

पंचण्ह वि सुपइट्ठा, परमिट्ठीणं जहा सुए भणिया।
नियया अणाइ निहणा, तह एसा होउ सुपइट्ठा ॥ ७ ॥ (आर्या)

धर्मदेशनाः-पछी गुरुए 'प्रवचन मुद्राथी' नीचे प्रमाणे प्रतिष्ठाना गुणोनुं वर्णन करवा पूर्वक धर्मदेशना आपवी.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

राया बलेण वड्ढइ, जसेण धवलेइ सयलदिसिभाए ।
पुण्णं वड्ढइ विउलं, सुपइट्ठा जस्स देसम्मि ॥ १ ॥ (आर्या)
उवहणइ रोगमारिं, दुब्भिक्खं हणइ कुणइ सुहभावे ।
भावेण कीरमाणा, सुपइट्ठा जस्स देसम्मि ॥ २ ॥ (आर्या)
जिणबिम्बपइट्ठं जे करिंति तह कारविंति भत्तीए ।
अणुमन्नंति पइदिणं, सव्वे सुहभाइणो हुंति ॥ ३ ॥ (आर्या)
दव्वं तमेव मन्ने, जिणबिम्बपइट्ठणाइकज्जेसु । जं लग्गइ तं सहलं, दुग्गइजणणं हवइ सेसं ॥४॥ (आर्या)
एवं नाउण सया, जिणवरबिम्बस्स कुणह सुपइट्ठं ।
पावेह जेण जरमरण–वज्जियं सासयं ठाणं ॥ ५ ॥

पछी बिंब आगळ पडदो करी श्रीसंघना मुखमां तंबोल आपवां.

पछी श्रीसंघे बिंबना मुख उघाडवा निमित्ते फळ वि. ढोकवा. पछी चैत्यवंदन करवुं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पछी प्रतिष्ठा करावनार श्रावके मोटो **मोठो** लाडवो. मूकवो.

ए रीते दश दिवस सुधी महोत्सवविधि करवो.

१० प्रकारना नैवेद्यः—कूरखांडघी; खीरखांडघी; घेबर; दहींकूरखांड; लापसी, गोळघुघरी, मीठो बाट (मीठी धूली); पक्वान्न, गुंना, सिंघोडा अने नारंगी, नाळियेर वि. फळ धरावबा.

पछी "**ॐ विसर विसर स्वस्थानं गच्छ गच्छ स्वाहा**" ए मंत्रथी नन्द्यावर्तनुं विसर्जन करवुं.

पछी नीचेनो श्लोक तथा मंत्र भणी अंजलिमुद्राथी प्रतिष्ठादेवनुं विसर्जन करवुंः–

देवदेवार्चनार्थं ये, पुराऽऽहूताश्चतुर्विधाः ।
ते विधायाऽर्हतां पूजां, यान्तु सर्वे यथाऽऽगताः ॥१॥ (अनु.)

'**ॐ विसर विसर प्रतिष्ठादेवते स्वस्थानं गच्छ गच्छ यः यः यः स्वाहा**' ॥

पछी नीचेनो श्लोक तथा मंत्र भणी सर्व देवताओनुं विसर्जन करवुं.

ये देवदेवीगणनागयक्षाः, समागतास्ते कृतशान्तिकृत्याः ।
जिनेश्वरं बिम्बविधानपूर्ण–मनोरथाः स्वं सदनं प्रयान्तु ॥ १ ॥ (उपजाति)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ह्रीँ विसर विसर सर्वे सुराः स्वस्थानं गच्छत गच्छत यः यः यः स्वाहा " ॥

पछी 'मोटी शान्ति' बोलवी. शांति धारा आपवी. चंदन, पुष्प अने धूप वि. विधि करवो. पछी कंकण छोडवुं अने नीचेनी गाथा बोलवी :--

थुइदाणमन्तनासो, आहवणं तह जिणाण दिसिबंधो ।

नेत्तुम्मीलणदेसण-गुरुअहिगारा छ इह कप्पे (आर्या)

॥ इति दशमदिनपूजाविधिः ॥

ए रीते प्रतिष्ठित करेलां नवीन जिनबिंबोने देवालयमां स्थापन करवां, पण ते पहेलां चाकनी माटी अने दर्भनो स्वस्तिक करवो. बधी जग्याए बलिक्षेप करवो तेमज आठ थोयनुं देववंदन करी क्षेत्रदेवतानी स्तुति कहेवी.

बिंबनी स्थापना अने दृष्टि-बार शाखना आठ भाग करी तेमां उपरना आठमो भाग छोडी सातमा भाग उपर मूळनायक बिंबनी स्थापना करवी अने ए सातमा भागना आठ भाग करी आठमो भाग छोडी सातमा भाग पर दृष्टि राखवी.

"ॐ कूर्म ! निजपृष्ठे जिनबिम्बं धारय धारय स्वाहा" ए मंत्रथी सातवार पृथ्वी मंत्री बिंबने स्थापन करवां अने " ॐ स्थावरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा " ए मंत्र सातवार भणवो.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पछी सुगंध धूप वि. थी अष्टप्रकारी पूजन करवुं. आरती-मंगळ दीवो तथा ध्वजारोपण करवुं. पछी चैत्यवंदन करवुं अने स्तवननी जग्याए शांति कहेवी.

पछी पक्वान्न वि. नैवेद्य अने फळादिथी चित्रविचित्र पूजा करवी अने प्रतिमास्थापन पछी “ लघुशांति, मोटीशांति, अजितशांति; भयहर उवसग्गहरं; थुणिमो केवलि० अने तिजयपहुत्तस्तोत्र भणवा अने अठ्ठाइ महोत्सव करवो.

चौदपूर्वी—पंचमश्रुतकेवळी श्रीभद्रबाहुस्वामीए विद्याप्रवादपूर्वमांथी उद्धृत प्रतिष्ठाकल्पमांथी श्रीजगच्चन्द्रसूरीश्वरे जे प्रतिष्ठाकल्प उद्धर्यो हतो तेना आधारे आ प्रतिष्ठाकल्प वाचक श्रीसकलचंद्रगणिए रच्यो अने ते पहेलाना-भट्टारक श्रीहरिभद्रसूरिकृत; हेमाचार्यकृत, श्यामाचार्यकृत, भट्टारकगुणरत्नाकरसूरिकृत प्रतिष्ठाकल्पोनी साथे श्रीविजयदानसूरीश्वर समक्ष मेळवी शोधन कर्युं.

॥ समाप्तः श्रीसकलचन्द्रजीकृतप्रतिष्ठाकल्पः ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

+सकलीकरणविधिः-“ ॐ नमो अरिहंताणं हृदयं रक्ष रक्ष, ॐ नमो सिद्धाणं ललाटं रक्ष रक्ष, ॐ नमो आयरियाणं शिखां रक्ष रक्ष, ॐ नमो उवज्झायाणं कवचं सर्वशरीरं रक्ष रक्ष, ॐ नमो लोए सव्वसाहूणं अस्त्रम् रक्ष रक्ष ” आ प्रमाणे सर्व ठेकाणे आचार्ये त्रणवार मन्त्रन्यास करवो. इति सकलीकरणविधिः।

शुचिविद्याः-“ ॐ नमो अरिहंताणं, ॐ नमो सिद्धाणं, ॐ नमो आयरियाणं, ॐ नमो उवज्झायाणं, ॐ नमो लोए सव्वसाहूणं । सात वार गणवी.

*ॐ नमो आगासगामीणं, ॐ नमो चारणलद्धीणं, ॐ [1]हः क्षः नमः, ॐ अशुचिः शुचिर्भवामि स्वाहा ” आ मन्त्रथी आचार्ये सर्व अङ्ग पवित्र करवां. केटलाकना मते स्नात्रीयाओ पण आनाथी ज अङ्गरक्षा करे.

गुरुए बलि मन्त्रवानो मन्त्रः-ॐ ह्रीँ क्ष्वीँ सर्वोपद्रवं बिम्बस्य रक्ष रक्ष स्वाहा ” आ मन्त्र २१ वार बोलवो.

— +प्रतिष्ठा-विधिः —

+ सकलीकरणविधि, शुचिविद्या अने बलिमन्त्रण जो के प्रतिष्ठाकल्पमां आवी जाय छे पण, वारंवार आवतां होवाथी ख्याल माटे अलग पाडी आपवामां आवेल छे. * ॐ नमो सव्वोसहिपत्ताणं ॐ नमो विज्जाहराणं इत्यादि कलिकायाम् ।

१ हः क्षः समाचार्याम् । कं क्षं नमः इति कलिकायाम् ।

+ निर्वाणकलिका, आचारदिनकर, विधिमार्गप्रपा, सुबोधा [चान्द्रीय] सामाचारी, तिलकाचार्यकृतप्रतिष्ठाकल्प, गुणरत्नसूरिकृतप्रतिष्ठाकल्प तथा नामोल्लेख सिवायना अन्य घणा प्रतिष्ठाकल्पोमां वास्तविक आ प्रमाणेनी अञ्जनशलाका—प्रतिष्ठाविधि हती ते आपवामां आवेल छे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अथातः संप्रवक्ष्यामि, प्रतिष्ठालक्षणं स्फुटम् । जिनशास्त्रानुसारेण, नत्वा वीरं जिनोत्तमम् ॥१॥ (अनु.)

इह तावदादौ निष्पन्नबिम्बस्य महोत्सवेन शुभवारतिथिनक्षत्रयोगेषु आयतने प्रतिष्ठास्थाने कृतविचित्रवस्त्रोल्लोचे पूर्वोत्तरदिगभिमुखस्य स्थापना, जघन्यतोऽपि हस्तशतप्रमाणक्षेत्रशुद्धिः, तत्र च गन्धोदकपुष्पप्रकरादिभिः सत्कारः, अमारिघोषणं, राजपृच्छनं, विज्ञानिकसन्माननं, सङ्घाह्वानं, महोत्सवेन पवित्रस्थानाज्जलानयनं, वेदिकारचना, दिक्पालस्थापनं, स्नपनकाराश्च समुद्राः, सकङ्कणाः, अक्षताङ्गाः, दक्षाः, अक्षतेन्द्रियाः, कृतबिम्बस्थापनानन्तरं श्रीखण्डरसेन ललाटे 'ॐ ह्रां,' हृदये 'ॐ ह्रीँ,' जान्वोः 'ह्रौ,' पादयोः 'ह्म,' इति बीजाक्षरा न्यसनीयाः, "ॐ नमोऽर्घ्यं प्रतीच्छन्तु पूजां गृह्णन्तु जिनेन्द्राः स्वाहा" इति कवचरक्षा, अखण्डितोज्ज्वलवेषा, उपोषिता, धर्मबहुमानिनः, कुलजाश्चत्वारः करणीयाः, तत्रैव मङ्गलाचारपूर्वकमविधवाभिश्चतुःप्रभृतिभिः प्रधानोज्ज्वलनेपथ्याभरणाभिर्विशुद्धशीलाभिः सकङ्कणहस्ताभिर्नारीभिः पञ्चरत्नकषायमाङ्गल्यमृत्तिकामूलिकाऽष्टवर्गसर्वौषध्यादीनां वर्त्तनं कारणीयं क्रमेण, ततो भूतबलिपूर्वकं विधिना पूर्वप्रतिष्ठितप्रतिमास्नानं, ततः सूरिः प्रत्यग्रवस्त्रपरिधानः स्नात्रकारयुक्तः शुचिरुपोषितो भूत्वा पूर्वं प्रतिमाग्रतश्चतुर्विधश्रमणसङ्घसहितोऽधिकृतस्तुत्या देववन्दनं करोति, ततः शान्तिनाथ-श्रुतदेवी-शासनदेवी-अम्बिका-ऽच्छुप्ता-समस्तवैयावृत्त्यकराणां कायोत्सर्गं, ततः सूरिः कङ्कणमुद्रिकाहस्तः सदशवस्त्रपरिधानः आत्मनः सकलीकरणं, शुचिविद्यां चारोपयति, तच्चेदम्-'ॐ नमो अरिहंताणं हृदये, ॐ नमो सिद्धाणं शिरसि, ॐ नमो आयरियाणं शिखायां, ॐ नमो उवज्झायाणं कवचं, ॐ नमो लोए सव्वसाहूणं अस्त्रं" त्रिस्त्रिर्मन्त्रन्यासः ॥ इति सकलीकरणम् ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ततः-"ॐ नमो अरिहंताणं, ॐ नमो सिद्धाणं, ॐ नमो आयरियाणं, ॐ नमो उवज्झायाणं, ॐ नमो लोए सव्वसाहूणं, ॐ नमो आगासगामीणं, ॐ हः क्षः नमः" इति शुचिविद्या, अनया त्रिपञ्चसप्तवारानात्मानं परिजपेत्, ततः स्नपकारानभिमन्त्र्याभिमन्त्रितदिशा बलिप्रक्षेपणं धूपसहितं सोदकं क्रियते, "ॐ ह्रीँ क्ष्वीं सर्वोपद्रवं बिम्बस्य रक्ष रक्ष स्वाहा" इत्यनेन एकविंशतिवारान् पठित्वा बल्यभिमन्त्रणं, कुसुमाञ्जलिक्षेपः—

अभिनवसुगन्धिविकसित-पुष्पौघभृता सुधूपगन्धाढ्या । बिम्बोपरि निपतन्ती, सुखानि पुष्पाञ्जलिः कुरुताम् ॥ १ ॥

तदनन्तरमाचार्येण मध्याङ्गुलीद्वयोर्ध्वीकरणेन तर्जनीमुद्रा रौद्रदृष्ट्या देया, तदनन्तरं वामकरे जलं गृहीत्वा प्रतिमा छण्टनीया, ततस्तिलकं पूजनं च प्रतिमायाः मुद्गरमुद्रादर्शनम् अक्षतभृतस्थालदानं वज्रगरुडादिमुद्राभिर्बिम्बस्य वज्ररक्षा-मन्त्रेण (बलिमन्त्रेण) "ॐ ह्रीँ क्ष्वीँ" इत्यादिना कवचं करणीयं दिग्बन्धाश्चानेनैव त्रिस्त्रिः पठनेन, श्रावकाः सप्तधान्यं (मुष्टिप्रायेण) सण १, लाज २, कुलत्थ ३, यव ४, कङ्गु ५, उडद ६, सर्षप ७ रूपं प्रतिमोपरि क्षिपन्ति, जिनमुद्रया कलशाभिमन्त्रणं जलाद्यभिमन्त्रणम् । जलाद्यभिमन्त्रणमन्त्राश्चैते—

"ॐ नमो यः सर्वशरीरावस्थिते महाभूते आ ३ आप ४ ज ४ जलं गृह्ण स्वाहा" इति जलाभिमन्त्रणमन्त्रः ।

"ॐ नमो यः सर्वशरीरावस्थिते पृथु २ गन्धान् गृह्ण ३ स्वाहा" इति गन्धाधिवासनमन्त्रः । सर्वौषधिचन्दनसमालम्भनमन्त्रश्च ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"ॐ नमो यः सर्वतो मे मेदिनी पुष्पवती पुष्पं गृह्ण २ स्वाहा" इति पुष्पाधिवासनामन्त्रः ।

"ॐ नमो यः सर्वतो बलिं दह २ महाभूते तेजोऽधिपते धु धु धूपं गृह्ण २ स्वाहा" धूपाभिमन्त्रणमन्त्रः ।

ततः पञ्चरत्नकग्रन्थिरङ्गुल्यां (दक्षिणस्यां) बध्यते ततः पञ्चमङ्गलसूचकं मुद्रामन्त्राधिवासितैर्जलादिद्रव्यैर्गीत-तूर्यपूर्वकं सुकुशलस्नात्रकारैः स्नात्रकरणं, तद्यथा हिरण्यकलशचतुष्टयस्नानम् —

सुपवित्रतीर्थनीरेण, संयुतं गन्धपुष्पसम्मिश्रम् । पततु जलं बिम्बोपरि, सहिरण्यं मन्त्रपरिपूतम् ॥ १ ॥ (आर्या)

सर्वस्नात्रेष्वन्तरा शिरसि चन्दनटिक्ककं पुष्पारोपणं धूपश्च १ । पञ्चरत्नजलस्नानम्—

नानारत्नौघयुतं, सुगन्धिपुष्पाधिवासितं नीरम् । पतताद्विचित्रवर्णं मन्त्राढ्यं स्थापनाबिम्बे ॥ २ ॥ (,,)

कषायस्नानम्—

प्लक्षाश्वत्थोदुम्बर-शिरीषछल्ल्यादिकल्कसन्मृष्टे । बिम्बे कषायनीरं, पततादधिवासितं जैने ॥ ३ ॥ (,,)

मृत्तिकास्नानम्—

पर्वतसरोनदीसङ्गमादि-मृद्भिश्च मन्त्रपूताभिः । उद्वर्त्य जैनबिम्बं, स्नपयाम्यधिवासनासमये ॥ ४ ॥ (,,)

पञ्चगव्यस्नानम्—

जिनबिम्बोपरि निपतद्-घृतदधिदुग्धादिद्रव्यपरिपूतम् । दर्भोदकसंमिश्रं, पञ्चगव्यं हरतु दुरितानि ॥ ५ ॥ (,,)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सदौषधिस्नानम्—

सहदेव्यादिसदौषधि–वर्गेणोद्वर्त्तितस्य बिम्बस्य । सन्मिश्रं बिम्बोपरि, पतज्जलं हरतु दुरितानि ॥ ६ ॥ (आर्या)

मूलिकास्नानम्—

सुपवित्रमूलिकावर्ग–मर्दिते तदुदकस्य शुभधारा । बिम्बेऽधिवाससमये, यच्छतु सौख्यानि निपतन्ती ॥ ७ ॥ (,,)

प्रथमाष्टकवर्गस्नानम्—

नानाकुष्ठाद्यौषधि–सन्मृष्टे तद्युतं पतन्नीरम् । बिम्बे कृतसन्मन्त्रं, कर्मौघं हन्तु भव्यानाम् ॥ ८ ॥ (,,)

द्वितीयाष्टकवर्गस्नानम्—

मेदाद्यौषधिभेदो–ऽपरोऽष्टवर्गः सुमन्त्रपरिपूतः । निपतन् बिम्बस्योपरि, सिद्धिं विदधातु भव्यजने ॥ ९ ॥ (,,)

ततः सूरिरुत्थाय गरुडमुद्रया मुक्ताशुक्तिमुद्रया, परमेष्ठिमुद्रया, वा प्रतिष्ठाप्य देवताऽऽह्वानं तदग्रतो भूत्वा ऊर्ध्वः सन् करोति–“ ॐ नमोऽर्हत्परमेश्वराय चतुर्मुखपरमेष्ठिने त्रैलोक्यगतायाष्टदिग्विभागकुमारीपरिपूजिताय देवाधिदेवाय दिव्यशरीराय त्रैलोक्यमहिताय आगच्छ २ स्वाहा ” इत्यनेन । दिक्पालाश्चाहूयन्ते–“ ॐ इन्द्राय सायुधाय सवाहनाय इह जिनेन्द्रस्थापने आगच्छ २ स्वाहा १, ॐ अग्नये सायुधाय आगच्छ २ स्वाहा ” इत्यादिना शेषाणामप्याह्वानं कुर्यात् , पुष्पाणामञ्जलिक्षेपश्च ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सर्वौषधिस्नानम्—

सकलौषधिसंयुक्त्या, सुगन्धया घर्षितं सुगतिहेतोः । स्नपयामि जैनबिम्बं, मन्त्रिततन्नीरनिवहेन ॥ १० ॥ (आर्या)

ततः—"सिद्धजिनादि" मन्त्रः सूरिणा दृष्टिदोषघाताय दक्षिणहस्तामर्षेण तत्काले बिम्बे न्यसनीयः, स चायम्—

'इहागच्छन्तु जिनाः सिद्धा भगवन्तः स्वसमये महानुग्रहाय भव्यानां भः स्वाहा' 'हुं क्षाँ ह्रीँ क्ष्वीँ ह्रूँ भः स्वाहा' इत्ययं वा । ततो लोहेनास्पृष्टश्वेतसिद्धार्थरक्षापोट्टलिका करे बन्धनीया, तदभिमन्त्रणमन्त्रः—

'ॐ क्षाँ क्ष्वीं ह्रीँ स्वाहा', चन्दनटिक्कं च, ततो जिनपुरतोऽञ्जलिं बद्ध्वा विज्ञप्तिकावचनं कार्यं, तच्चेदं—'स्वागता जिनसिद्धाः प्रसाददाः सन्तु प्रसादधिया कुर्वन्तु अनुग्रहपरा भवन्तु भव्यानां स्वागतमनुस्वागतम्' ततोऽञ्जलिमुद्रया सुवर्णभाजनस्थार्घ्यं मन्त्रपूर्वकं निवेदयेत्, स च—'ॐ भः अर्घ्यं प्रतीच्छन्तु पूजां गृह्णन्तु जिनेन्द्राः स्वाहा' सिद्धार्थदध्यक्षतघृतदर्भरूपश्चार्घ्यमुच्यते । ततः—

इन्द्रमग्निं यमं चैव, निर्ऋतिं वरुणं तथा । वायुं कुबेरमीशानं, नागं ब्रह्माणमेव च ॥१॥

'ॐ इन्द्राय आगच्छ २ अर्घ्यं प्रतीच्छ २ पूजां गृह्ण २ स्वाहा' एवमेव शेषाणामपि नवानामाह्वानपूर्वकमर्घ्यनिवेदनं च कार्यम् । ततः कुसुमस्नानम्—

अधिवासितं सुमन्त्रैः, सुमनःकिंजल्कराजितं तोयम् । तीर्थजलादिसुपृक्तं, कलशोन्मुक्तं पततु बिम्बे ॥११॥ (आर्या)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ततो गन्धस्नानिकास्नानम्–

गन्धाङ्गस्नानिकया, सन्मृष्टं तदुदकस्य धाराभिः। स्नपयामि जैनबिम्बं, कर्मौघोच्छित्तये शिवदम् ॥१२॥ ((आर्या)

गन्धा एव शुक्लवर्णा वासा उच्यन्ते, त एव मनाक् कृष्णा गन्धा इति। ततो वासस्नानम्–

हृद्यैराह्लादकरैः, स्पृहणीयैर्मन्त्रसंस्कृतैर्जैनम्। स्नपयामि सुगतिहेतो–र्बिम्बमधिवासितं वासैः ॥१३॥ (,,)

ततः चन्दनस्नानम्–

शीतलसरससुगन्धि–मनोमतश्चन्दनद्रुमसमुत्थः। चन्दनकल्कः सजलो, मन्त्रयुतः पततु जिनबिम्बे ॥१४॥ (,,)

ततः कुङ्कुमस्नानम्–

कश्मीरजसुविलिप्तं, बिम्बं तन्नीरधारयाऽभिनवम्। सन्मन्त्रयुक्तया शुचि, जैनं स्नपयामि सिद्ध्यर्थम् ॥१५॥ (आर्या)

तत आदर्शकदर्शनं ततस्तीर्थोदकस्नानम्–

जलधिनदीह्रदकुण्डेषु, यानि तीर्थोदकानि शुद्धानि। तैर्मन्त्रसंस्कृतैरिह, बिम्बं स्नपयामि सिद्ध्यर्थम् ॥१६॥ (,,)

ततः कर्पूरस्नानं–

शशिकरतुषारधवला, उज्ज्वलगन्धा सुतीर्थजलमिश्रा। कर्पूरोदकधारा, सुमन्त्रपूता पततु बिम्बे ॥१७॥ (,,)

ततः कस्तूरिकास्नानम्–

मन्त्रपवित्रितपयसा, प्रकृष्टकस्तूरिकासुगन्धयुजा। विहितप्रणताभ्युदयं, बिम्बं स्नपयामि जैनेन्द्रम् ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अतिसुरभिबहुलपरिमल–वासितपानेन मृगमदस्नानैः। मन्त्रैः कृतैः पयोभिः, स्नपयामि शिवाढ्यजिनबिम्बम् ॥१८॥ (आर्या)

ततः पुष्पाञ्जलिक्षेपः–

नानासुगन्धपुष्पौघ–रञ्जिता चञ्चरीककृतनादा । धूपामोदविमिश्रा, पततात्पुष्पाञ्जलिर्बिम्बे ॥१९॥ (,,)

ततः शुद्धजलकलशैः अष्टोत्तरशत–१०८ स्नानविधिः–

चक्रे देवेन्द्रराजैः सुरगिरिशिखरे योऽभिषेकः पयोभि–र्नृत्यन्तीभिः सुराभिर्ललितपदगमं तूर्यनादैः सुदीप्तैः ।

कर्तुं तस्यानुकारं शिवसुखजनकं मन्त्रपूतैः सुकुम्भै–र्बिम्बं जैनं प्रतिष्ठाविधिवचनपरः स्नापयाम्यत्र काले ॥१॥ (स्रग्धरा)

ततोऽभिमन्त्रितचन्दनेन सूरिर्वामकरधृतप्रतिमां दक्षिणकरेण सर्वाङ्गमालेपयति, कुसुमारोपणं, धूपोत्पाटनं, वासनिक्षेपः, सुरभिमुद्रादर्शनं, पद्ममुद्रा ऊर्ध्वा दर्श्यते, अञ्जलिमुद्रादर्शनं च ततः प्रियङ्गुकर्पूरगोरोचनाहस्तलेपः अधिवासनामन्त्रेण करे ऋद्धिवृद्धिसमेतमदनफलाख्यकङ्कणबन्धनं, स चायम्–" ॐ नमो खीरासवलद्धीणं ॐ नमो महुयासवलद्धीणं ॐ नमो संभिन्नसोईणं ॐ नमो पयाणुसारीणं ॐ नमो कुट्ठबुद्धीणं जमियं विज्जं पउंजामि सा मे विज्जा पसिज्झउ ॐ अवतर २ सोमे २ कुरु २ ॐ वग्गु निवग्गु सुमणे सोमणसे महुमहुरए कविले ॐ कः क्षः स्वाहा " अधिवासनामन्त्रः, यद्वा " ॐ नमः शान्तये हुं क्षुं हूं सः " कङ्कणमन्त्रः ५। अधिवासनामन्त्रेणैव मुक्ताशुक्त्या बिम्बे पञ्चाङ्गस्पर्शः–मस्तक १ खांध २ जानु २ वार ७, चक्रमुद्रया वा। धूपश्च निरन्तरं दातव्यः, परमेष्ठिमुद्रां सूरिः करोति, पुनरपि जिनाह्वानं, ततो निषद्यायामुप-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विश्य नन्द्यावर्त्त [1]मध्यात्प्रभृति पूजयेत्, सदशाव्यङ्गवस्त्रेण तमाच्छादयेत्, तदुपरि नालिकेरप्रदानं कार्यं तदुपरि प्रतिष्ठाप्यबिम्बस्थापनं, चलप्रतिष्ठाख्यापनाय विचित्रबलिविधानं, यथा-जम्बीर-बीजपूरक-नालिकेर-पनसा-ऽऽम्र-दाडिमादि-प्रशस्तफलकन्दमूलढौकनं, ततश्चतुःकोणेषु वेदिकायाः पूर्वन्यस्तायाश्चतुस्तन्तुवेष्टनं चतुर्दिशं श्वेतवारकोपरि गोधूमव्रीहियवानां यववारकाः स्थाप्याः, बाटुखीरिकिरम्बककीसरकूरुससिद्धविडिपूयक्षी इति सप्त बलिशरावाणि दीयन्ते, पुनस्तन्तुसहितसहिरण्यचन्दनचर्चितकलशाश्चत्वारः प्रतिमानिकटे स्थाप्यन्ते, घृतगुडसमेतमङ्गलप्रदीपाः ४ स्वस्तिकपट्टस्य चतसृष्वपि दिक्षु सकपर्दकसहिरण्यसजलसधान्यचतुर्वारकस्थापनं, तेषु च सुकुमालिकाकङ्कणानि करणीयानि यववाराश्च स्थाप्याः, पूर्णचतुःसूत्रेण वेष्टनं वारकाणाम्, ततः शक्रस्तवेन चैत्यवन्दनं कृत्वाऽधिवासनालग्नसमये पुष्पसमेतऋद्धिवृद्धियुतमदनफलारोपणपूर्वकं चन्दनयुक्तेन पुष्पवासधूपप्रत्यग्राभिवासितेन वस्त्रेण वदनाच्छादनं माइसाडी चारोप्यते, तदुपरि चन्दनच्छटा सूरिणा सूरिमन्त्रेणाधिवासनं च वारत्रयं कार्यं, ततो गन्धपुष्पयुक्तसप्तधान्यस्नपनमञ्जलिभिः, तच्चेदम्-सालि-यव-गोधूम-मुद्ग-वल्ल-चनक-चवलका इति, पुष्पारोपणं धूपोत्पाटनं, ततः स्त्रीभिरविधवाभिश्चतसृभिरधिकाभिर्वा प्रोंक्षणकं यथाशक्त्या हिरण्यदानं च, ताभिरेव पुनः प्रचुरलड्डुकादिबलिकरणं, पुटिकाः ३६० दीयन्ते, ततः श्राद्धा आरात्रिकाऽवतारणं मङ्गलदीपं च कुर्वन्ति, चैत्यवन्दनं कायोत्सर्गोऽधिवासनादेव्याः चतुर्विंशतिस्तवचिन्तनम्, तस्या एव स्तुतिः-

---

१ बृहद्बिम्बस्याधो वलकवियुक्तोऽपि नन्द्यावर्त्तः स्थाप्यते इति कस्यचिदाशयः (ता. टी.)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विश्वाशेषसुवस्तुषु मन्त्रै-र्योऽजस्रमधिवसति वसतौ । सेमामवतरतु श्री-जिनतनुमधिवासनादेवी ॥१॥ (आर्या)

यद्वा-पातालमन्तरिक्षं, भवनं वा या समाश्रिता भवने । साऽत्रावतरतु जैनीं, प्रतिमामधिवासनादेवी ॥२॥ (,,)

ततः श्रुतदेवी २ शान्ति ३ अम्बा ४ क्षेत्रदेवी ५ शासनदेवी ६ समस्तवेया० ७ कायोत्सर्गाः ।

या पाति शासनं जैनं, सद्यः प्रत्यूहनाशिनी । साऽभिप्रेतसमृद्ध्यर्थं, भूयाच्छासनदेवता ॥१॥ (अनु.)

पुनरपि धारणापविश्य कार्या सूरिणा, 'स्वागता जिनाः सिद्धाः' इत्यादिनेति ॥

अधिवासनाविधिरयम्-अधिवासना रात्रौ, दिवा प्रतिष्ठा प्रायसः कार्या, इतरथाऽपि कश्चित्कालं स्थित्वा विभिन्ने प्रतिष्ठालग्ने प्रतिष्ठा विधेया, तत्र प्रथमं शान्तिबलिः चैत्यवन्दनं प्रतिष्ठादेवतायाः कायोत्सर्गः चतुर्विंशतिस्तवचिन्तनं, ततः स्तुतिदानम्-

यदधिष्ठिताः प्रतिष्ठाः, सर्वाः सर्वास्पदेषु नन्दन्ति । श्रीजिनबिम्बं सा विशतु, देवता सुप्रतिष्ठमिदम् ॥१॥

शासनदेवी १ क्षेत्रदेवी २ समस्तवेया० ३, धूपमुत्क्षिप्याच्छादनमपनयेत् लग्नसमये, ततो घृतभाजनमग्रे कृत्वा सौवीरकघृतमधुशर्कराभृतरूप्यवर्तिकायां सुवर्णशलाकया प्रतिमानेत्रोन्मीलनं वर्णन्यासपूर्वकं, यथा-ह्रूँ ललाटे, श्रीँ नयनयोः, ह्रीँ हृदये, रैँ सर्वसन्धिषु, क्ष्लौं सिंहासने विलिख्य प्राकारेण वेष्टयेत्त्रिगुणं व्योम्नि अन्ते क्रौं समालिखेत्, प्राकारः कुम्भकेन न्यासः शिरसि अभिमन्त्रितवासदानं दक्षिणकर्णे श्रीखण्डादिचर्चित आचार्यमन्त्रन्यासः, प्रतिष्ठामन्त्रेण

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

त्रिपञ्चसप्तवारान् सर्वाङ्गं प्रतिमां स्पृशेत् चक्रमुद्रया, सामान्ययतिं प्रति मन्त्रो यथा–"वीरे २ जयवीरे सेणवीरे महावीरे जये विजये जयन्ते अपराजिते स्वाहा" अयं प्रतिष्ठामन्त्रः, ततो दधिभाण्डकादर्शकदर्शनं दृष्टेश्चक्षूरक्षणाय सौभाग्याय स्थैर्याय च समुद्रा मन्त्रा न्यसनीयाः, "ॐ अवतर २ सोमे २ कुरु २ वग्गु २" इत्यादिकं, ततः सौभाग्यमुद्रादर्शनं १, सुरभिमुद्रा, २, प्रवचनमुद्रा, ३, कृताञ्जलिः, ४, गरुडा पर्यन्ते पुनरप्यवमननं (प्रोंक्षणं) स्त्रीभिः, इह च स्थिरप्रतिमाधः घृतवर्त्तिकाश्रीखण्डतन्दुलयुतपञ्चधातुकं कुम्भकारचक्रमृत्तिकासहितं पूर्वमेव बिम्बनिवेशसमये न्यसेत् , ततः "ॐ स्थावरे तिष्ठ २ स्वाहा" इति स्थिरीकरणमन्त्रो न्यसनीयः चलप्रतिष्ठायां तु नैषः, नवरं चलप्रतिमाधः सशिरस्कदर्भो वालुका च प्रथमत एव वामाङ्गे न्यसनीया, तत्र च–"ॐ जये श्रीँ ह्रीँ सुभद्रे नम" इति मन्त्रश्च न्यस्यः, ततः पद्ममुद्रया रत्नासनस्थापनं कार्यमिति वदता यथा–'इदं रत्नमयमासनमलङ्कुर्वन्तु इहोपविष्टा भव्यानवलोकयन्तु हृष्टदृष्टया जिनाः स्वाहा,' ततः 'ॐ ह्मये गन्धान् प्रतीच्छन्तु स्वाहा, ॐ ह्मये पुष्पाणि गृह्णन्तु स्वाहा, ॐ ह्मये धूपं भजन्तु स्वाहा, ॐ ह्मये भूतबलिं जुषन्तु स्वाहा', ॐ ह्मये सकलसत्त्वालोककर ! अवलोकय भगवन् ! अवलोकय स्वाहा' इति पठित्वा पुष्पाञ्जलित्रयं क्षिपेत् , ततो वस्त्रालङ्कारादिभिः समस्तपूजा माइसाडी कङ्कणिकारोपश्च पुष्पारोपणं बल्यादिश्च मोरिंडासुंहालियप्रभृतिको दीयते, ततो लवणावतारणं आरात्रिकस्यावतारणं मङ्गलप्रदीपस्य च कारणं, ततः सङ्घेन सहितः चैत्यवन्दनं कायोत्सर्गाः श्रुतदेव्यादीनां 'सुयसंतिखेत्तपवयणाईणं' तिवचनात् शक्रस्तवपाठः शान्तिस्तवभणनं, ततोऽखण्डाक्षताञ्जलिभृतलोकसमेतेन मङ्गलगाथापाठः कार्यः नमोऽर्हत्सिद्धाचार्येत्यादिपूर्वकं यथा–

जह सिद्धाण पइट्ठा, तिलोयचूडामणिंमि सिद्धिपए। आचंदसूरियं तह, होउ इमा सुपइट्ठत्ति ॥१॥ (आर्या)
जह सग्गस्स पइट्ठा, समत्थलोयस्स मज्झयारंमि। ,, ,, ,, ,, ,, ॥२॥ (,,)
जह मेरुस्स पइट्ठा, दीवसमुद्दाण मज्झयारंमि। ,, ,, ,, ,, ,, ॥३॥ (,,)
जह जंबुस्स पइट्ठा, जंबुद्दिवाण मज्झयारंमि। ,, ,, ,, ,, ,, ॥४॥ (,,)
जह लवणस्स पइट्ठा, समत्थउदहीण मज्झयारंमि। ,, ,, ,, ,, ,, ॥५॥ (,,)

इति पठित्वाऽक्षतान् त्रिः क्षिपेत्, पुष्पाञ्जलींश्च क्षिपेत्, ततः प्रवचनमुद्रया सूरिणा धर्मदेशना कार्या, ततः सङ्घदानं मुखोद्घाटनं दिनत्रयं पूजा अष्टाह्निकापूजा वा, तत्रापि प्रशस्तदिवसे ३।५। स्नात्रं कृत्वा जिनबलिं विधाय भूतबलिं प्रक्षिप्य चैत्यवन्दनं विधाय कङ्कणमोचनाद्यर्थं प्रतिष्ठादेवताविसर्जनकायोत्सर्गः चतुर्विंशतिस्तवचिन्तनं तस्यैव पठनं, श्रुतदेवी १, शान्ति०—

उन्मृष्टरिष्टदुष्ट-ग्रहगतिदुःस्वप्नदुर्निमित्तादि। संपादितहितसम्प-न्नामग्रहणं जयतु शान्तेः ॥१॥ (आर्या)

क्षेत्र०, वैया० कायोत्सर्गः, ततः सौभाग्यमन्त्रन्यासपूर्वकं मदनफलोच्चारणं, स च–'ॐ अवतर २' इत्यादि; ततो नन्द्यावर्त्तपूजनं विसर्जनं च, 'ॐ विसर २ स्वस्थानं गच्छ २ स्वाहा;' नन्द्यावर्त्तविसर्जनमन्त्रः। 'ॐ विसर २ प्रतिष्ठादेवते! स्वाहा' इति प्रतिष्ठादेवताविसर्जनमन्त्रः। प्रतिष्ठावृत्तौ द्वादशमासिकस्नपनानि कृत्वा पूर्णे वत्सरे अष्टाह्निकाविशेषः, पूजां च विधाय आयुर्ग्रन्थिं निबन्धयेत्; उत्तरोत्तरपूजा च यथा स्यात्तथा विधेयम्, एवम्—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लेप्पाइमए वि विही, बिंबे एसेव किंतु सविसेसं । कायव्वं ण्हाणाई, दप्पणसंकंतपडिबिम्बे ॥१॥ (आर्या)

'ॐ क्ष्रीँ नमः' अम्बिकादीनामधिवासनामन्त्रः । 'ॐ ह्रीँ क्ष्रूँ नमो वीराय स्वाहा' तेषामेव प्रतिष्ठामन्त्रः, यद्वा 'ॐ ह्रीँ क्ष्मीँ स्वाहेति' देवीप्रतिष्ठामन्त्रः । पश्चान्नन्द्यावर्त्तलेखनं पूजनं च कार्यम् ।

॥ समाप्तः संक्षिप्तप्रतिष्ठाविधिः ॥

— अथ जिनबिम्ब-परिकर-प्रतिष्ठाविधिः —

यदि जिनबिम्बेन सह परिकरो भवति तदा जिनबिम्बप्रतिष्ठायामेव वासक्षेपमात्रेण परिकरप्रतिष्ठा पूर्यते । प्रथमभूते परिकरे पृथक्प्रतिष्ठा विधीयते ।

परिकराकारो यथा-बिम्बाधो गजसिंहकीचरूपाङ्कितं सिंहासनं पार्श्वयोश्चमरधरौ तयोर्बहिश्चाञ्जलिकरौ मस्तकोपरि क्रमोपरिस्थं छत्रत्रयं तत्पार्श्वयोरुभयोः काञ्चनकलशाङ्कितशुण्डाग्रं श्वेतगजद्वयं गजोपरि झञ्झरवाद्यकराः पुरुषाः तदूर्ध्वयोः मालाकारौ शिखरे शाङ्खीयाः तदुपरि कलशः, मतान्तरे-सिंहासनमध्यभागे हरिणद्वयतोरणाङ्कितं धर्मचक्रं तत्पार्श्वयोरुभयोः ग्रहमूर्त्तयः एवं निष्पन्ने परिकरे बिम्बप्रतिष्ठोचिते लग्ने-भूमिशुद्धिकरणं, अमारिघोषणं, सङ्घाह्वानम्, बृहत्स्नात्रविधिना जिनस्नात्रं, लघुपञ्चवलयनन्द्यावर्त्तस्थापनम्, तत्पूजनम्, कलशप्रतिष्ठावत् । ततः परिकरे सप्तधान्यपूर्वकं वर्द्धापनं अङ्-गुलीद्वयोर्ध्वीकरणेन रौद्रदृष्ट्या वामहस्तचुलुकेन जलाच्छोटनम्, अक्षतघृतपात्रदानम्, ततः 'ॐ ह्रीँ श्रीँ जयन्तु जिनो-पासकाः सकला भवन्तु स्वाहा'' इति मन्त्रेण परिकरस्य गंधाक्षतपुष्पधूपदीपनैवेद्यैः पूजनं सदशवस्त्रेणाच्छादनं ततश्च ॥१६१॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

तिसृभिः स्तुतिभिश्चैत्यवन्दनं ततः शान्ति–श्रुत–क्षेत्र–भवन–शासन–वैयावृत्यकर–प्रतिष्ठादेवताकायोत्सर्गस्तुतयः पूर्ववत् ततः सम्प्राप्तायां लग्नवेलायां द्वादशभिर्मुद्राभिः सूरिमन्त्रेण वासमभिमन्त्र्य सर्वजनं दूरतः कृत्वा एभिर्मन्त्रैर्वासक्षेपं विदध्यात् मन्त्रो यथा--

"ॐ ह्रीँ श्रीँ अप्रतिचक्रे धर्मचक्राय नमः" इति धर्मचक्रे वासक्षेपस्त्रिः ।

"ॐ घृणि च द्रां ऐँ ह्रौँ ठःठः क्षां क्षीं सर्वग्रहेभ्यो नमः" इति ग्रहेषु वासक्षेपस्त्रिः ।

"ॐ ह्रीँ श्रीँ आधारशक्तिकमलासनाय नमः" इति सिंहासने वासक्षेपस्त्रिः ।

"ॐ ह्रीँ श्रीँ अर्हद्भक्तेभ्यो नमः" इति चामरकरद्वये वासक्षेपस्त्रिः ।

"ॐ ह्रीँ विमलवाहनाय नमः" इति गजद्वये वासक्षेपस्त्रिः ।

"ॐ पुष्करेभ्यो नमः" इति मालाद्वये वासक्षेपस्त्रिः "ॐ श्रीशार्ङ्गधराय नमः" इति शार्ङ्गधरे वासक्षेपस्त्रिः ।

"ॐ पूर्णकलशाय नमः" इति कलशे वासक्षेपस्त्रिः ।

ततोऽनेकफलनैवेद्यढौकनम्, पुनर्जिनस्नात्रं बृहत्स्नात्रविधिना, ततश्चैत्यवन्दनम् । प्रतिष्ठादेवताविसर्जनकायोत्सर्गः । चतुर्विंशतिस्तवचिन्तनं भणनं च नन्द्यावर्त्तविसर्जनं पूर्ववत् । अष्टाह्निकामहोत्सवः । सङ्घपूजनं । दीनमार्गणपोषणं । जलपट्टप्रतिष्ठायां तु जलपट्टोपरि बृहन्नन्द्यावर्त्तस्थापनम् । तत्पूर्ववत् जलपट्टे क्षीरस्नात्रं पञ्चरत्ननिक्षेपः वासमन्त्रेण वासनिक्षेपः । नन्द्यावर्त्त-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विसर्जनम् । इति जलप्रतिष्ठा । तोरणप्रतिष्ठायां तु बृहत्स्नात्रविधिना जिनस्नात्रं मुकुटमन्त्रेण तोरणे द्वादशमुद्राभिर्मन्त्रितवास-क्षेपः । मन्त्रो यथा-"ॐ अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ इत्यादि हकारपर्यन्त नमो जिनसुरपतिमुकुटकोटिसंघट्टितपदाय इति तोरणे समालोकय समालोकय स्वाहा"

। इति तोरणप्रतिष्ठा । इति प्रतिष्ठाधिकारे परिकरप्रतिष्ठाविधिः सम्पूर्णः ॥

॥ अथ कलशारोपणविधिः ॥

तत्र भूमिशुद्धिः गन्धोदकपुष्पादिसत्कारः, आदित एव कलशाधः पञ्चरत्नकं-सुवर्ण[१]-रूप्य[२]-मुक्ता[३]-प्रवाल[४]-लोह[५]-कुम्भकार-मृत्तिकासहितं न्यसनीयम् । पवित्रस्थानाज्जलानयनं प्रतिमास्नात्रं नन्द्यावर्त्तपूजनं शान्तिबलिः सोदक-सर्वौषधिवर्तनं स्त्रीभिः (४) स्नात्रकाराभिमन्त्रणं सकलीकरणं शुचिविद्यारोपणं चैत्यवदनं शान्तिनाथादिकायोत्सर्गः । श्रुत १ शान्ति २ शासन ३ क्षेत्र ४ समस्तवेया० ५ नमुत्थुणं स्तवन लघुशान्ति जयवीयरायः कलशे कुसुमाञ्जलिक्षेपः । तदनन्तरमाचार्येण मध्याङ्गुलीद्वयोर्ध्वीकरणेन तर्जनीमुद्रा रौद्रदृष्ट्या देया । तदनु वामकरे जलं गृहीत्वा कलशः आच्छोटनीयः । तिलकं पूजनं च । मुद्गरमुद्रादर्शनम् । "ॐ ह्रीँ क्ष्वीँ सर्वोपद्रवं रक्ष रक्ष स्वाहा ।" चक्षूरक्षाकलशस्य सप्तधान्यकप्रक्षेपः हिरण्यकलशचतुष्टयस्नानं[१], सर्वौषधिस्नानं[२],

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मूलिकास्नानं[3], गन्धोदक[4]-वासोदक[5]-चन्दनोदक[6]-कुङ्कुमोदक[7], कर्पूरकुसुमजलकलश[8]स्नानं[9] पञ्चरत्न-सिद्धार्थकसमेतग्रन्थिबन्धः। वामकरधृतकलशस्य दक्षिणकरेण चन्दनेन सर्वाङ्गमालिप्य पुष्पसमेतमदनफलऋद्धियुतारोपणम्। कलशपञ्चाङ्गस्पर्शः, धूपदानं, कङ्कणबन्धः, स्त्रीभिः प्रोंखणं, सुरभि[1]-परमेष्ठि[2]-गरुड[3]-अञ्जलि[4]-गणधर[5]-मुद्रादर्शनम्, सूरिमन्त्रेण वारत्रयाधिवासनम्। "ॐ स्थावरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा" वस्त्रेणाच्छादनं, जम्बीरादिफलोहलिबलेर्निक्षेपः। तदुपरि सप्तधान्यकस्य च आरात्रिकावतारणं[1] चैत्यवन्दनम्। स्तुतित्रिकानन्तरम् सिद्धा० अधिवासनादेव्याः कायोत्सर्गः। चतुर्विंशतिस्तवचिन्ता। तस्याः स्तुतिः-

पातालमन्तरिक्षं, भुवनं वा या समाश्रिता नित्यम्। साऽत्राऽवतरतु जैने, कलशेऽधिवासनादेवी ॥ (आर्या)

शां० १ अं० २ समस्तवै० ३। तदनन्तरं नमु० तः जयवीयरायान्तं तदनु शान्तिबलिं क्षिप्त्वा शक्रस्तवेन चैत्यवन्दनं शान्तिभणनं प्रतिष्ठादेवताकायोत्सर्गः चतुर्विंश०। यदधिष्ठिता० प्रतिष्ठास्तुतिदानम्। अक्षताञ्जलिभृतलोकसमेतेन मङ्गलगाथा-पाठः कार्यः। नमोऽर्हत् सिद्धा०

जह सिद्धाण पइट्ठा० ॥ जह सग्गस्स पइट्ठा० ॥ जह मेरुस्स पइट्ठा० ॥ जह लवणस्स पइट्ठा, समत्थउदहीण मज्झयारंमि० ॥ जह जम्बूस्स पइट्ठा, जम्बूदीवस्स मज्झयारंमि ॥ आचंद० ॥ पुष्पाञ्जलिप्रक्षेपः। धर्मदेशना ॥

॥ इति कलशप्रतिष्ठाविधिः ॥

१ आरतिश्लोकः- दुष्टसुरासुररचितं, नरैःकृतं, दृष्टिदोषजं विघ्नम्। तद् गच्छत्वतिदूरं, भविककृतारात्रिकविधाने ॥ (आर्या)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

— अथ ध्वजारोपणविधिः —

भूमिशुद्धिः, गन्धोदकपुष्पादिसत्कारः। अमारिघोषणम्। संघाह्वानम्। दिक्पालस्थापनम्। वेदिकाविरचनम्।[१] नन्द्यावर्त्तलेखनम्। ततः सूरिः कंकणमुद्रिकाहस्तः सदशवस्त्रपरिधानः सकलीकरणं शुचिविद्यां चारोपयति। स्नपनकारानभिमन्त्रयेत्। अभिमन्त्रितदिशाबलिप्रक्षेपणं धूपसहितं सोदकं क्रियते। "ॐ ह्रीँ क्ष्वीँ सर्वोपद्रवं रक्ष रक्ष स्वाहा" इति बल्यभिमन्त्रणम्। दिक्पालाह्वानम्–ॐ इन्द्राय[१] सायुधाय सवाहनाय सपरिजनाय ध्वजारोपणे आगच्छ आगच्छ स्वाहा। एवं–ॐ अग्नये[२]–ॐ यमाय[३]–ॐ नैर्ऋतये[४]–ॐ वरुणाय[५]–ॐ वायवे[६]–ॐ कुबेराय[७]–ॐ ईशानाय[८]–ॐ ब्रह्मणे[९]–ॐ नागाय[१०]–आगच्छ आगच्छ स्वाहा। शान्तिबलिपूर्वकं विधिना मूलप्रतिमास्नानम्। तदनु चैत्यवन्दनं संघसहितेन (नंदीना देववंदन करवा स्तवन लघुशांति) गुरुणा कार्यम्। 'वंशे–अभिनवसुगंधिविकसित' कुसुमाञ्जलिक्षेपः, तिलकं पूजनं च। हिरण्यकलशादिस्नानानि पूर्ववत्। कनक[१]–पञ्चरत्न[२]–कषाय[३]–मृत्तिका[४]–मूलिका[५]–अष्टवर्ग्ग[६]–सर्वौषधि[७]–गन्ध[८]–वास[९]–चन्दन[१०]–कुङ्कुम[११]–तीर्थोदक[१२]–कर्प्पूर[१३] (तत इक्षुरस[१४]–घृतदधि[१५]-दुग्ध)–स्नानम्। वंशस्य चर्चनम्। पुष्पारोपणम्। लग्नसमये सदशवस्त्रेणाच्छादनम्। + मुद्रान्यासः। चतुःस्त्रीप्रोंखणकम्।

---

१ चार खूणे चार नव नव इंचनी वेदिकाओ करवी.

+ चक्रमुद्राथी दंडने सर्व जग्याए स्पर्श करवो. अने सुरभि–परमेष्ठि–गरुड–अंजलि अने गणधरमुद्रा देखाडवी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ध्वजाधिवासनं वासधूपादिप्रदानतः। × ॐ श्रीँ ठः'-ध्वजावंशस्याभिमन्त्रणम् इत्यधिवासना। जवारक-फलोहलिबलि-ढौकनम्। *आरात्रिकावतारणम्। अधिकृतजिनस्तुत्या चैत्यवन्दनम्। स्तुतित्रिकानन्तरं शान्तिनाथकायोत्सर्गः पश्चात् श्रुतदे० १, शान्तिदे० २, शासनदे० ३, अम्बिकादे० ४, क्षेत्रदे० ५, अधिवासनादे० ६, कायोत्सर्गः चतुर्विंशतिस्तवचिन्तनं तस्या एव स्तुतिः-'पातालमन्तरिक्षं, भवनं वा०' समस्तवैयावृत्यकरकायोत्सर्गः। स्तुतिदानम्। उपविश्य शक्रस्तवपाठः। शान्तिस्तवादिभणनम्। बलिसप्तधान्यफलोहलिवासपुष्पधूपादिवासनम्। ध्वजस्य चैत्यपार्श्वेण प्रदक्षिणाकरणम्। शिखरे पुष्पाञ्जलिः। कलशस्नानम्। ध्वजागृहे मर्कटिकारूपे पञ्चरत्ननिक्षेपः। इष्टांशे ध्वजानिक्षेपः। 'ॐ श्रीँ ठः' अनेन सूरिमन्त्रेण वासक्षेपः। इति *प्रतिष्ठा। फलोहलि-सप्तधान्यबलि-मोरिंडकमोदकादिवस्तूनां प्रक्षेपणम्। महाध्वजस्य ऋजुगत्या प्रतिमाया दक्षिणकरे बन्धनम्। प्रवचनमुद्रया सूरिणा धर्मदेशना कार्या। संघदानम्। अष्टाह्निकापूजा विषमदिने ३, ५, ७, जिनबलिं प्रक्षिप्य चैत्यवन्दनं विधाय शान्तिनाथादिकायोत्सर्गान् कृत्वा महाध्वजस्य छोटनम्। संघादिपूजाकरणं यथाशक्त्या॥

॥ इति ध्वजारोपणविधिः समाप्तः॥

ध्वजादंड शिखर अने ध्वजानो मंत्र।

ॐ ह्रीँ श्रीँ ग्म्ल्यूँ क्ष्म्ल्यूँ ह्म्ल्यूँ क्लीँ ३ आँ क्रोँ अरिहंत-शिखर-दंड-ध्वजेषुवासिदेवदेवीनां संघस्य च

× ७-२१ के १०८ वार मन्त्र भणवो श्लोक कलशप्रतिष्ठामां जुओ. * प्रतिष्ठामन्त्रः-'ॐ वीरे वीरे जयवीरे' सात वार।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शांति पुष्टिं तुष्टिं ऋद्धिं वृद्धिं कुरु कुरु स्वाहा ॥

ध्वजा तथा दंडनुं माप विगेरे ।

(१) रेखाए देरासर जेटलुं लांबुं होय, तेटलो ध्वजादंड लांबो करवो. घुमटना प्रमाणनो दंड लांबो चाली शके.

(२) गभारा करतां शिखर बे इंच रेखाए मोटुं होय तेथी ध्वजादंड गभाराना पद करतां बे इंच मोटो करवो.

(३) मंदिरनी उंचाईना त्रीजा भागे ध्वजादंड लांबो करवो.

(४) ध्वजादंड जेटलो लांबो होय तेना पहेला गजे ०।।। अंगुल अने बाकीना गजे ०।। अंगुल व्यास लेवो.

(५) ध्वजादंडनी लंबाईना छठ्ठा भागे पाटलीनी लंबाई करवी.

(६) लंबाईनी अडधी पहोळाई करवी, अने पहोळाईथी अडधी जाडाई करवी.

(७) गाळा एकी करवा अने बंगडी बेकी राखवी. आ सर्व मान मध्यम समजवुं. जो श्रेष्ठ मान करवुं होय तो ते माननो दशमो भाग वधारवाथी थाय अने दशमो भाग घटाडवाथी कनिष्ठ मान थाय. आ सर्व मानथी साल अलग जाणवुं.

(८) कपडानी ध्वजा दंड प्रमाणे लांबी करवी अने पहोळाई लंबाईना आठमा भागे करवी.

(९) पताका तथा पताकडी विगेरे देशाचार प्रमाणे करवी. शास्त्रीय रीत नथी.

(१०) घुमटना आमलशाळानी पहोळाईथी त्रण गणो घुमटनो ध्वजादंड लांबो करवो.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(११) वरसगांठ वखते नवी ध्वजा उपर अगर शरुआतमां ध्वजा उपर चोत्रीसो यंत्र जमणी बाजु लखवो.

चोत्रीसो यंत्र

५	१६	३	१०
४	९	६	१५
१४	७	१२	१
११	२	१३	८

ध्वजा-दंड तथा कलश प्रतिष्ठाना सामाननी यादी ।

औषधिओ, पाघडी, सोनानो कळश, कळश नं. ४, तीर्थजल, गुलाबीखेस, दश दिक्पालनो पाटलो, पोंखणां, कंकु, कपूर, मींढळ, मरडासींग, फुल, पान, सोपारी, चोखा, वासक्षेप, फल, नैवेद्य, बाकळा शेर १।, जवारा, कसुंबी वस्त्र, आंसळी रूपानी, रु. ३१), पैसा ५१).

रोगने दूर करनार अप्रसिद्ध पण जे कोइ औषध पृथ्वीतलमां मले तेने करियाणा तरीके गणी शकाय छे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एटला ज माटे करियाणां अनेक प्रकारनां बतावबामां आव्यां छे. छतां तेमांथी लाभालाभनी दृष्टिए योग्य लागे ते लेवां, बीजां छोडी पण देवां, नवां बीजां पण रोगहर लेवां, एम दरेक जातनी छुट छे.

अष्टमङ्गलश्लोकाः

मङ्गलं श्रीमदर्हन्तो, मङ्गलं जिनशासनम् । मङ्गलं सकलसङ्घो, मङ्गलं पूजका अमी ॥१॥ (अनु.)

स्वस्ति भूगगननागविष्टपे-षूदितं जिनवरोदयेक्षणात् ।
स्वस्तिकं तदनुमानतो जिन-स्याग्रतो बुधजनैर्विलिख्यते ॥२॥ (रथोद्धता)

अन्तःपरमज्ञानं, यद् भाति जिनाधिनाथहृदयस्य । तच्छ्रीवत्सव्याजात्, प्रकटीभूतं बहिर्वन्दे ॥३॥ (आर्या)

विश्वत्रये च स्वकुले जिनेशो, व्याख्यायते श्रीकलशायमानः ।
अतोऽत्र पूर्णं कलशं लिखित्वा, जिनार्चनाकर्म कृतार्थयामः ॥४॥ (उपजाति)

जिनेन्द्रपादैः परिपूज्यपुष्टै-रतिप्रभावैरतिसन्निकृष्टम् ।
भद्रासनं भद्रकरं जिनेन्द्र-पुरो लिखेन्मङ्गलसत्प्रयोगम् ॥५॥ (,,)

त्वत्सेवकानां जिननाथ ! दिक्षु, सर्वासु सर्वे निधयः स्फुरन्ति ।
अतश्चतुर्धा नवकोणनन्द्या-वर्तः सतां वर्तयतां सुखानि ॥६॥ (,,)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुण्यं यशःसमुदयः प्रभुता महत्वं, सौभाग्य-धी-विनय-शर्म-मनोरथाश्च ।
वर्धन्त एव जिननायक ! ते प्रसादात्-तद्वर्धमानयुगसंपुटमादधामः ॥७॥ (वसन्त)

त्वद्वध्यपञ्चशरकेतनभावक्लृप्तं, कर्तुं मुधा भुवननाथ ! निजापराधम् ।
सेवां तनोति पुरतस्तव मीनयुग्मं, श्राद्धैः पुरो विलिखितं निरुजाऽऽङ्गयुक्त्या ॥८॥ (,,)

आत्माऽऽलोकविधौ जिनोऽपि सकल-स्तीव्रं तपो दुश्चरं;
दानं ब्रह्म परोपकारकरणं, कुर्वन् परिस्फूर्जति ।
सोऽयं यत्र सुखेन राजति स वै, तीर्थाधिपस्याग्रतो,
निर्मेयः परमार्थवृत्तिविदुरैः, संज्ञानिभिर्दर्पणः ॥९॥ (शार्दूल)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट-१

प्रतिष्ठाकल्पनी प्रतमां केटलाक विधान संक्षेपथी ज बताव्या छे. तेमज केटलाक विधान आवता नथी परंतु वर्तमानमां लोकव्यवहारथी कराय छे, आचारदिनकरादि विधिग्रन्थोना आधारे ते सर्व विधान अने च्यवनकल्याणकादिना चैत्यवंदन-स्तवनो केटलीक हस्तलिखित प्रतिष्ठाकल्पमां मले छे. ते पण अहीं परिशिष्ट-नं.-१ मां आपेल छे. ते सिवायना परिशिष्टमां ग्रह-दिक्पाल स्थापनादि; मंडपवेदिका रचना, मुद्रा; विधि-विधाननी सामग्री तेमज दशे दिवसना विधानने वर्णवतुं प्राचीन छतां अप्रकाशित १९ ढालनुं स्तवनादिक आपेल छे.

'परिशिष्ट नं. १-अ'

मंडपमुहूर्त-माणेकस्थंभारोपणविधिः-(पाना नं. १५ नी टिप्पण.)

महोत्सवना प्रथम दिवसे सौप्रथम मंगलनिमित्ते माणेकस्तंभस्थापननी आ विधि कराय छे. ते विधि समये नीचेना त्रण श्लोको अने मङ्गलगीतो गवडावी शकाय.

१. **अर्हन्तो भगवन्त इन्द्रमहिताः०** २. **शिवमस्तु सर्वजगतः०** अने ३.

सर्वेऽपि सन्तु सुखिनः; सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत् ॥ (अनु.)

॥ इति माणेकस्थंभारोपणविधिः ॥ ॥ परि-१-अ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

' परिशिष्ट नं. १-आ '

तोरण बांधता बोलवानो मंत्रः-(पाना नं. १५ नी टिप्पण.)

ॐ अ-आ-इ-ई-उ-ऊ-ऋ-ॠ-ऌ-ॡ-ए-ऐ-ओ-औ-अं-अः, क-ख-ग-घ-ङ, च-छ-ज-झ-ञ्, ट-ठ-ड ढ-ण, त-थ-द-ध-न, प-फ-ब-भ-म, य-र-ल-व, श-ष-स-ह नमो जिनाय सुरपतिमुकुटकोटिसंघट्टितपदाय इति तोरणे समालोकय समालोकय स्वाहा ॥

॥ इति तोरणस्थापनाप्रतिष्ठामंत्रः ॥ ॥ परि. १-आ ॥

' परिशिष्ट नं. १-इ '

लघुनन्द्यावर्तपूजनविधिः-(पाना नं. १९ नी टिप्पण)

दस वलयवाळो नन्द्यावर्तनो पट्ट होय तो बिंबप्रवेशविधि आदि प्रतोमां आवती विधि प्रमाणे पूजन करवुं.

(१) श्री जिनबिंबनी प्राणप्रतिष्ठा वगेरे प्रसंगे श्री नन्द्यावर्तपूजन कराय छे. ते विस्तारथी करवानो विधि आचारदिनकरमां छे. संक्षेपथी करवानो विधि आ प्रमाणे छे.

(२) जो चळबिंब होय अर्थात् प्रतिमाजी स्थिर स्थापन करेला न होय-एक स्थळेथी बीजे स्थळे लइ जइ शकाय एम होय तो नन्द्यावर्तनुं आलेखन करीने तेना उपर ते बिंब स्थापन करवा अने पछी आगळ जणाव्या प्रमाणे वलयक्रमे पूजन करवुं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(३) जो स्थरबिंब होय तो आगळ वेदिका करीने अथवा भूमिपर नन्द्यावर्त स्थापन करी पूजन करवुं.

(४) (अ) पूजनकारक अने विधिकारक भद्रासन उपर बेसीने पूजन करे.

(ब) कर्पूर मिश्रित चंदनना सातलेपथी लींपेला श्रीपर्णीना पाटला उपर कर्पूर, कस्तूरी अने गोरोचंद-नथी मिश्रित केसररस वडे प्रदक्षिणाना क्रमे नवखूणावाळो नन्द्यावर्त आलेखवो.

(क) मध्यभागथी आरंभीने वलयो अनुक्रमे बहारना भाग तरफ करवा.

तेमां मध्ये नन्द्यावर्तनी जमणी बाजु सौधर्मेन्द्रनी[1], डाबी बाजु ईशानेन्द्रनी[2] अने नीचे श्रुतदेवतानी[3] स्थापना करवी.

(५) मध्यभागनी परिधिने गोळ वेष्टन करीने तेने फरता दश वलय करवा.

---

१ सौधर्मेन्द्रनुं स्वरूपः—वर्ण सुवर्णसमानपीत, हाथ चार, हाथीनुं वाहन, वस्त्रो पंचरंगी, बे हाथ अंजलिबद्ध अने बीजा बे हाथमांथी एक हाथमां अभय अने बीजा हाथमां वज्र.

२ ईशानेन्द्रनुं स्वरूपः—वर्ण उज्ज्वळ-श्वेत; वाहन वृषभनुं; वस्त्र नीलुं अने रातुं, हाथ चार-तेमां एक हाथमां जय, बीजा हाथमां शूळ अने चाप, बाकी बे हाथ अंजलिबद्ध.

३ श्रुतदेवतानुं स्वरूपः—वर्ण श्वेत; वस्त्र श्वेत; वाहन हंसनुं, श्वेत सिंहासन पर बेठेली, भामंडळथी शोभित, हाथ चार तेमां बे डाबा हाथमां श्वेत कमळ अने वीणा, तथा जमणा बे हाथमां पुस्तक तथा मुक्तामाळा.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रथम वलयमां:-अष्टदल वलय करी पूर्वादिक्रमे अर्हदादि आठनी आ प्रमाणे स्थापना करवी :—
१. ॐ नमोऽर्हद्भ्यः स्वाहा; २. ॐ नमः सिद्धेभ्यः स्वाहा; ३. ॐ नम आचार्येभ्यः स्वाहा; ४. ॐ नम उपाध्यायेभ्यः स्वाहा; ५. ॐ नमः सर्वसाधुभ्यः स्वाहा; ६. ॐ नमो ज्ञानाय स्वाहा, ७. ॐ नमो दर्शनाय स्वाहा; ८. ॐ नमश्चारित्राय स्वाहा ॥१॥

बीजा वलयमां :-चतुर्विंशतिदल वलय करी तेमां अनुक्रमे २४ जिन माताओनी आ प्रमाणे स्थापना करवी:-
१ ॐ नमो मरुदेव्यै स्वाहा; २ ॐ नमो विजयायै स्वाहा; ३ ॐ नमः सेनायै स्वाहा; ४ ॐ नमः सिद्धार्थायै स्वाहा; ५ ॐ नमो मङ्गलायै स्वाहा; ६ ॐ नमः सुसीमायै स्वाहा; ७ ॐ नमः पृथ्व्यै स्वाहा; ८ ॐ नमो लक्ष्मणायै स्वाहा; ९ ॐ नमो रामायै स्वाहा; १० ॐ नमो नन्दायै स्वाहा; ११ ॐ नमो वैष्णव्यै स्वाहा; १२ ॐ नमो जयायै स्वाहा; १३ ॐ नमः श्यामायै स्वाहा; १४ ॐ नमः सुयशायै (सुयशसे) स्वाहा; १५ ॐ नमः सुव्रतायै स्वाहा; १६ ॐ नमोऽचिरायै स्वाहा; १७ ॐ नमः श्रियै स्वाहा; १८ ॐ नमो देव्यै स्वाहा; १९ ॐ नमः प्रभावत्यै स्वाहा; २० ॐ नमः पद्मावत्यै स्वाहा; २१ ॐ नमो वप्रायै स्वाहा; २२ ॐ नमः शिवायै स्वाहा; २३ ॐ नमो वामायै स्वाहा; २४ ॐ नमस्त्रिशलायै स्वाहा ॥२॥

त्रीजा वलयमां :-षोडशदल वलय करी सोळ विद्यादेवीओनी आ प्रमाणे स्थापना करवी :-
१ ॐ नमो रोहिण्यै स्वाहा; २ ॐ नमः प्रज्ञप्त्यै स्वाहा; ३ ॐ नमो वज्रशृङ्खलायै स्वाहा; ४ ॐ नमो वज्राङ्कुश्यै

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्वाहा; ५ ॐ नमोऽप्रतिचक्रायै स्वाहा; ६ ॐ नमः पुरुषदत्तायै स्वाहा; ७ ॐ नमः काल्यै स्वाहा; ८ ॐ नमो महाकाल्यै स्वाहा; ९ ॐ नमो गौर्यै स्वाहा; १० ॐ नमो गान्धार्यै स्वाहा; ११ ॐ नमः सर्वास्त्रमहाज्वालायै स्वाहा; १२ ॐ नमो मानव्यै स्वाहा; १३ ॐ नमोऽच्छुप्तायै स्वाहा; १४ ॐ नमो वैरोट्यायै स्वाहा; १५ ॐ नमो मानस्यै स्वाहा; १६ ॐ नमो महामानस्यै स्वाहा ॥३॥

चोथा वलयमां :-चतुर्विंशतिदल वलय करी २४ लोकान्तिक देवोनी आ प्रमाणे स्थापना करवी :-

१ ॐ नमः सारस्वतेभ्यः स्वाहा; २ ॐ नम आदित्येभ्यः स्वाहा; ३ ॐ नमो वह्निभ्यः स्वाहा; ४ ॐ नमो वरुणेभ्यः स्वाहा; ५ ॐ नमो गर्दतोयेभ्यः स्वाहा; ६ ॐ नमस्तुषितेभ्यः स्वाहा; ७ ॐ नमोऽव्याबाधितेभ्यः स्वाहा; ८ ॐ नमोऽरिष्टेभ्यः स्वाहा; ९ ॐ नमोऽग्न्याभेभ्यः स्वाहा; १० ॐ नमः सूर्याभेभ्यः स्वाहा; ११ ॐ नमश्चन्द्राभेभ्यः स्वाहा; १२ ॐ नमः सत्याभेभ्यः स्वाहा; १३ ॐ नमः श्रेयस्करेभ्यः स्वाहा; १४ ॐ नमः क्षेमङ्करेभ्यः स्वाहा; १५ ॐ नमो वृषभेभ्यः स्वाहा; १६ ॐ नमः कामचारेभ्यः स्वाहा; १७ ॐ नमो निर्वाणेभ्य स्वाहा; १८ ॐ नमो दिशान्तरक्षितेभ्यः स्वाहा; १९ ॐ नम आत्मरक्षितेभ्यः स्वाहा; २० ॐ नमः सर्वरक्षितेभ्यः स्वाहा; २१ ॐ नमो मारुतेभ्यः स्वाहा; २२ ॐ नमो वसुभ्यः स्वाहा; २३ ॐ नमोऽश्वेभ्यः स्वाहा; २४ ॐ नमो विश्वेभ्यः स्वाहा ॥४॥

पांचमा वलयमां :-चतुःषष्टिदल वलय करी ६४ इन्द्रोनी आ प्रमाणे स्थापना करवी :-

१ ॐ नमश्चमराय स्वाहा । २ ॐ नमो बलये स्वाहा । ३ ॐ नमो धरणाय स्वाहा । ४ ॐ नमो भूतानन्दाय स्वाहा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५ ॐ नमो वेणुदेवाय स्वाहा। ६ ॐ नमो वेणुदारिणे स्वाहा। ७ ॐ नमो हरिकान्ताय स्वाहा। ८ ॐ नमो हरिसहाय स्वाहा। ९ ॐ नमोऽग्निशिखाय स्वाहा। १० ॐ नमोऽग्निमानवाय स्वाहा। ११ ॐ नमः पुण्याय स्वाहा। १२ ॐ नमो वशिष्ठाय स्वाहा। १३ ॐ नमो जलकान्ताय स्वाहा। १४ ॐ नमो जलप्रभाय स्वाहा। १५ ॐ नमोऽमितगतये स्वाहा। १६ ॐ नमोऽमितवाहनाय स्वाहा। १७ ॐ नमो वेलम्बाय स्वाहा। १८ ॐ नमः प्रभञ्जनाय स्वाहा। १९ ॐ नमो घोषाय स्वाहा। २० ॐ नमो महाघोषाय स्वाहा। २१ ॐ नमः कालाय स्वाहा। २२ ॐ नमो महाकालाय स्वाहा। २३ ॐ नमः सुरूपाय स्वाहा। २४ ॐ नमः प्रतिरूपाय स्वाहा। २५ ॐ नमः पूर्णभद्राय स्वाहा। २६ ॐ नमो मणिभद्राय स्वाहा। २७ ॐ नमो भीमाय स्वाहा। २८ ॐ नमो महाभीमाय स्वाहा। २९ ॐ नमः किन्नराय स्वाहा। ३० ॐ नमः किंपुरुषाय स्वाहा। ३१ ॐ नमः सत्पुरुषाय स्वाहा। ३२ ॐ नमो महापुरुषाय स्वाहा। ३३ ॐ नमोऽतिकायाय स्वाहा। ३४ ॐ नमो महाकायाय स्वाहा। ३५ ॐ नमो गीतरतये स्वाहा। ३६ ॐ नमो गीतयशसे स्वाहा। ३७ ॐ नमः सन्निहिताय स्वाहा। ३८ ॐ नमः सन्मानाय (महाकायाय) स्वाहा। ३९ ॐ नमो धात्रे स्वाहा। ४० ॐ नमो विधात्रे स्वाहा। ४१ ॐ नम ऋषये स्वाहा। ४२ ॐ नम ऋषिपालाय स्वाहा। ४३ ॐ नम ईश्वराय स्वाहा। ४४ ॐ नमो महेश्वराय स्वाहा। ४५ ॐ नमः सुवक्षसे स्वाहा। ४६ ॐ नमो विशालाय स्वाहा। ४७ ॐ नमो हासाय स्वाहा। ४८ ॐ नमो हासरतये स्वाहा। ४९ ॐ नमः श्वेताय स्वाहा। ५० ॐ नमो महाश्वेताय स्वाहा। ५१ ॐ नमः पतगाय स्वाहा। ५२ ॐ नमः पतगरतये स्वाहा। ५३ ॐ नमः सूर्याय स्वाहा। ५४ ॐ नमश्चन्द्राय स्वाहा। ५५ ॐ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नमः सौधर्मेन्द्राय स्वाहा। ५६ ॐ नम ईशानेन्द्राय स्वाहा। ५७ ॐ नमः सनत्कुमारेन्द्राय स्वाहा। ५८ ॐ नमो माहेन्द्राय स्वाहा। ५९ ॐ नमो ब्रह्मेन्द्राय स्वाहा। ६० ॐ नमो लान्तकेन्द्राय स्वाहा। ६१ ॐ नमः शुक्रेन्द्राय स्वाहा। ६२ ॐ नमः सहस्रारेन्द्राय स्वाहा। ६३ ॐ नम आनतप्राणतेन्द्राय स्वाहा। ६४ ॐ नम आरणाच्युतेन्द्राय स्वाहा ॥५॥

छट्ठा वलयमां :–चतुःषष्टिदल वलय करी ६४ इन्द्राणीओनी आ प्रमाणे स्थापना करवी :–

१ ॐ नमश्चमरदेवीभ्यः स्वाहा। २ ॐ नमो बलिदेवीभ्यः स्वाहा। ३ ॐ नमो धरणदेवीभ्यः स्वाहा। ४ ॐ नमो भूतानन्ददेवीभ्यः स्वाहा। ५ ॐ नमो वेणुदेवीभ्यः स्वाहा। ६ ॐ नमो वेणुदारिदेवीभ्यः स्वाहा। ७ ॐ नमो हरिकान्तदेवीभ्यः स्वाहा। ८ ॐ नमो हरिसहदेवीभ्यः स्वाहा। ९ ॐ नमोऽग्निशिखदेवीभ्यः स्वाहा। १० ॐ नमोऽग्निमानवदेवीभ्यः स्वाहा। ११ ॐ नमः पूर्णदेवीभ्यः स्वाहा। १२ ॐ नमो वशिष्ठदेवीभ्यः स्वाहा। १३ ॐ नमो जलकान्तदेवीभ्यः स्वाहा। १४ ॐ नमो जलप्रभदेवीभ्यः स्वाहा। १५ ॐ नमोऽमितगतिदेवीभ्यः स्वाहा। १६ ॐ नमोऽमितवाहनदेवीभ्यः स्वाहा। १७ ॐ नमो वेलम्बदेवीभ्यः स्वाहा। १८ ॐ नमः प्रभञ्जनदेवीभ्यः स्वाहा। १९ ॐ नमो घोषदेवीभ्यः स्वाहा। २० ॐ नमो महाघोषदेवीभ्यः स्वाहा। २१ ॐ नमः कालदेवीभ्यः स्वाहा। २२ ॐ नमो महाकालदेवीभ्यः स्वाहा। २३ ॐ नमः सुरूपदेवीभ्यः स्वाहा। २४ ॐ नमः प्रतिरूपदेवीभ्यः स्वाहा। २५ ॐ नमः पूर्णभद्रदेवीभ्यः स्वाहा। २६ ॐ नमो मणिभद्रदेवीभ्यः स्वाहा। २७ ॐ नमो भीमदेवीभ्यः स्वाहा। २८ ॐ नमो महाभीमदेवीभ्यः स्वाहा। २९ ॐ नमः किन्नरदेवीभ्यः स्वाहा। ३० ॐ नमः किंपुरुषदेवीभ्यः स्वाहा। ३१ ॐ नमः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सत्पुरुषदेवीभ्यः स्वाहा। ३२ ॐ नमो महापुरुषदेवीभ्यः स्वाहा। ३३ ॐ नमोऽहिकायदेवीभ्यः स्वाहा। ३४ ॐ नमो महाकायदेवीभ्यः स्वाहा। ३५ ॐ नमो गीतरतिदेवीभ्यः स्वाहा। ३६ ॐ नमो गीतयशोदेवीभ्यः स्वाहा। ३७ ॐ नमः सन्निहितदेवीभ्यः स्वाहा। ३८ ॐ नमः सन्मानदेवीभ्यः स्वाहा। ३९ ॐ नमो धातृदेवीभ्यः स्वाहा। ४० ॐ नमो विधातृदेवीभ्यः स्वाहा। ४१ ॐ नम ऋषिदेवीभ्यः स्वाहा। ४२ ॐ नम ऋषिपालदेवीभ्यः स्वाहा। ४३ ॐ नम ईश्वरदेवीभ्यः स्वाहा। ४४ ॐ नमो महेश्वरदेवीभ्यः स्वाहा। ४५ ॐ नमः सुवक्षोदेवीभ्यः स्वाहा। ४६ ॐ नमो विशालदेवीभ्यः स्वाहा। ४७ ॐ नमो हासदेवीभ्यः स्वाहा। ४८ ॐ नमो हासरतिदेवीभ्यः स्वाहा। ४९ ॐ नमः श्वेतदेवीभ्यः स्वाहा। ५० ॐ नमो महाश्वेतदेवीभ्यः स्वाहा। ५१ ॐ नमः पतगदेवीभ्यः स्वाहा। ५२ ॐ नमः पतगरतिदेवीभ्यः स्वाहा। ५३ ॐ नमः सूर्यदेवीभ्यः स्वाहा। ५४ ॐ नमश्चन्द्रदेवीभ्यः स्वाहा। ५५ ॐ नमः सौधर्मेन्द्रदेवीभ्यः स्वाहा। ५६ ॐ नम ईशानेन्द्रदेवीभ्यः स्वाहा। ५७ ॐ नमः सनत्कुमारेन्द्रपरिजनाय स्वाहा। ५८ ॐ नमो माहेन्द्रपरिजनाय स्वाहा। ५९ ॐ नमो ब्रह्मेन्द्रपरिजनाय स्वाहा। ६० ॐ नमो लान्तकेन्द्रपरिजनाय स्वाहा। ६१ ॐ नमः शुक्रेन्द्रपरिजनाय स्वाहा। ६२ ॐ नमः सहस्रारेन्द्रपरिजनाय स्वाहा। ६३ ॐ नम आनतप्राणतेन्द्रपरिजनाय स्वाहा। ६४ ॐ नम आरणाच्युतेन्द्रपरिजनाय स्वाहा ॥६॥

सातमा वलयमां :-चतुर्विंशतिदल वलय करी २४ यक्षोनी आ प्रमाणे स्थापना करवी :—

१ ॐ नमो गोमुखाय स्वाहा। २ ॐ नमो महायक्षाय स्वाहा। ३ ॐ नमस्त्रिमुखाय स्वाहा। ४ ॐ नमो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

यक्षनायकाय स्वाहा। ५ ॐ नमस्तुम्बरवे स्वाहा। ६ ॐ नमः कुसुमाय स्वाहा। ७ ॐ नमो मातङ्गाय स्वाहा। ८ ॐ नमो विजयाय स्वाहा। ९ ॐ नमोऽजिताय स्वाहा। १० ॐ नमो ब्रह्मणे स्वाहा। ११ ॐ नमो यक्षाय स्वाहा। १२ ॐ नमः कुमारयक्षाय स्वाहा। १३ ॐ नमः षण्मुखाय स्वाहा। १४ ॐ नमः पातालाय स्वाहा। १५ ॐ नमः किन्नराय स्वाहा। १६ ॐ नमो गरुडाय स्वाहा। १७ ॐ नमो गन्धर्वाय स्वाहा। १८ ॐ नमो यक्षेशाय स्वाहा। १९ ॐ नमः कुबेराय स्वाहा। २० ॐ नमो वरुणाय स्वाहा। २१ ॐ नमो भृकुटये स्वाहा। २२ ॐ नमो गोमेधाय स्वाहा। २३ ॐ नमः पार्श्वाय स्वाहा। २४ ॐ नमो मातङ्गाय स्वाहा ॥७॥

आठमा वलयमां :–चतुर्विंशतिदल वलय करी २४ यक्षिणीओनी आ प्रमाणे स्थापना करवी :—

१ ॐ नमश्चक्रेश्वर्यै स्वाहा। २ ॐ नमोऽजितबलायै स्वाहा। ३ ॐ नमो दुरितायै स्वाहा। ४ ॐ नमः कालिकायै स्वाहा। ५ ॐ नमो महाकालिकायै स्वाहा। ६ ॐ नमः श्यामायै स्वाहा। ७ ॐ नमः शान्तायै स्वाहा। ८ नमो भृकुटयै स्वाहा। ९ ॐ नमः सुतारिकायै स्वाहा। १० ॐ नमोऽशोकायै स्वाहा। ११ ॐ नमो मानव्यै स्वाहा। १२ ॐ नमश्चण्डायै स्वाहा। १३ ॐ नमो त्रिदितायै स्वाहा। १४ ॐ नमोऽङ्कुशायै स्वाहा। १५ ॐ नमः कन्दर्पायै स्वाहा। १६ नमो निर्वाण्यै स्वाहा। १७ ॐ नमो बलायै स्वाहा। १८ ॐ नमो धारिण्यै स्वाहा। १९ ॐ नमो धरणप्रियायै स्वाहा। २० ॐ नमो नरदत्तायै स्वाहा। २१ ॐ नमो गान्धार्यै स्वाहा। २२ ॐ नमोऽम्बिकायै स्वाहा। २३। ॐ नमः पद्मावत्यै स्वाहा। २४ ॐ नमः सिद्धायिकायै स्वाहा ॥८॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नवमा वलयमां :–दशदल वलय करी दशदिक्पालोनी आ प्रमाणे स्थापना करवी :—

१ ॐ नम इन्द्राय स्वाहा। २ ॐ नमोऽग्नये स्वाहा। ३ नमो यमाय स्वाहा। ४ ॐ नमो निर्ऋतये स्वाहा। ५ ॐ नमो वरुणाय स्वाहा। ६ नमो वायवे स्वाहा। ७ ॐ नमः कुबेराय स्वाहा। ८ ॐ नम ईशानाय स्वाहा। ९ ॐ नमो ब्रह्मणे स्वाहा। १० ॐ नमो नागेभ्यः स्वाहा ॥९॥

दशमा वलयमां :–दशदल वलय करी सक्षेत्रपाल नवग्रहोनी आ प्रमाणे स्थापना करवी :—

१ ॐ नमः सूर्याय स्वाहा। २ ॐ नमश्चन्द्राय स्वाहा। ३ ॐ नमो भौमाय स्वाहा। ४ ॐ नमो बुधाय स्वाहा। ५ ॐ नमो गुरवे स्वाहा। ६ ॐ नमः शुक्राय स्वाहा। ७ ॐ नमः शनैश्चराय स्वाहा ८ ॐ नमो राहवे स्वाहा। ९ ॐ नमः केतवे स्वाहा। १० ॐ नमः क्षेत्रपालाय स्वाहा ॥१०॥

(६) आ सर्वने परिधि करी तेनी बहार चार चार वज्रना चिह्नवाळुं चार खूणावाळुं भूमिपुर करवुं. तेना दरेक खूणामां "ल" अने मध्यभागमां "क्ष" नुं चिह्न करवुं.

तेमां आ प्रमाणे देवो स्थापवा :– १ (ईशान खूणामां) ॐ नमो वैमानिकेभ्यः स्वाहा। २ (अग्नि खूणामां) ॐ नमो भवनपतिभ्यः स्वाहा। ३ (नैर्ऋत खूणामां) ॐ नमो व्यन्तरेभ्यः स्वाहा। ४ (वायव्य खूणामां) ॐ नमो ज्योतिष्केभ्यः स्वाहा॥

॥ इति नन्द्यावर्त स्थापना ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(७) अथ नन्द्यावर्तपूजनविधिः–

सौ प्रथम नीचेनो श्लोक बोली नन्द्यावर्तना पट्ट उपर पुष्पांजलि करवी :—

कल्याणवल्लिकन्दाय, कृतानन्दाय साधुषु । सदा शुभविवर्ताय, नन्द्यावर्ताय ते नमः ॥ १ ॥ (अनु.)

(पछी दशे वलयोमां यथाक्रम स्थापनामंत्रानुसार ते ते पदो उपर कुसुमांजलि करवी.)

त्यारबाद नीचे प्रमाणे बोलीने पूजा करवी :—

ॐ नमः सर्वतीर्थकरेभ्यः; सर्वगतेभ्यः; सर्वविद्भ्यः; सर्वदर्शिभ्यः; सर्वहितेभ्यः, सर्वदेभ्य इह नन्द्यावर्तस्थापनायां स्थिताः, सातिशयाः, सप्रातिहार्याः, सवचनगुणाः, सज्ञानाः, ससङ्घाः, सदेवाऽसुरनराः प्रसीदन्तु, इदमर्घ्यं गृह्णन्तु २; गन्धं गृह्णन्तु२; पुष्पं गृह्णन्तु२; धूपं गृह्णन्तु२; दीपं गृह्णन्तु२; अक्षतान् गृह्णन्तु२; नैवेद्यं गृह्णन्तु२; फलं गृह्णन्तु२ स्वाहा ॥

ए प्रमाणे अनुक्रमे अर्घ्य, पाद्य, गंध, पुष्प, धूप, दीप, अक्षत, नैवेद्य अने फल पट्ट उपर मूकवा.

॥ इति नन्द्यावर्तपूजनविधिः ॥ परि. १. इ ॥

'परिशिष्ट नं. १ ई'

श्री षोडशविद्यादेवीपूजनश्लोका :–(पाना नं. ४० नी टिप्पण)

षोडशविद्यादेवीपूजनविधि प्रतिष्ठाकल्पमां संक्षेपथी ज आवे छे. परन्तु ते विधान आचारदिनकरादिकमां विस्तारथी आवे छे. ते रीते नीचे प्रमाणे करी शकाय.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सौ प्रथम प्रतिष्ठाकल्पनी विधि प्रमाणे "रोहिणी प्रथमं तासु—" (पाना नं. ३९) आदि त्रण श्लोक तथा ॐ ऐँ क्लीँ—' ए मंत्र द्वारा सोलविद्यादेवीनुं आह्वान-स्थापन करवुं.

त्यार बाद षोडशविद्यादेवीना पट्ट उपर कुसुमांजलि नीचेनो श्लोक बोली करवी : -

यासां मन्त्रपदैर्विशिष्टमहिम-प्रोद्भूतभुत्युत्करैः; षट् कर्माणि कुलाध्वसंश्रितधियः, क्षेमात् क्षणात् कुर्वते ।
ता विद्याधरवृन्दवन्दितपदा विद्यावलीसाधने; विद्यादेव्य उरुप्रभावविभवं, यच्छन्तु भक्तिस्पृशाम् ॥ (शार्दूल०)

त्यार बाद नीचेना श्लोक तथा मंत्र बोलता 'रोहिणी' आदि विद्यादेवीओ उपर क्रमशः कुसुमांजलि करवाः-

१-रोहिणीः-शङ्खाक्षमालाशरचापशालि-चतुष्करा कुन्दतुषारगौरा ।
गोगामिनी गीतवरप्रभावा; श्री रोहिणी सिद्धिमिमां ददातु ॥१॥ (उपजाति)

ॐ ह्रीँ श्रीरोहिण्यै विद्यादेव्यै स्वाहा ॥

२-प्रज्ञप्तिः-शक्तिसरोरुहहस्ता, मयूरकृतयानलीलया कलिता । प्रज्ञप्तिर्विज्ञप्तिं, शृणोतु नः कमलपत्राभा ॥२॥ (आर्या)

ॐ हं सं क्लीं श्रीप्रज्ञप्त्यै विद्यादेव्यै स्वाहा ॥

३-वज्रशृङ्खलाः-सशृङ्खला गदाहस्ता; कनकप्रभविग्रहा । पद्मासनस्था श्रीवज्रशृङ्खला हन्तु नः खिलान् ॥३॥ (अनु.)

ॐ श्रीवज्रशृङ्खलायै विद्यादेव्यै स्वाहा ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४-वज्राङ्कुशाः-निस्त्रिंशवज्रफलकोत्तमकुन्तयुक्त-हस्ता सुतप्तविलसत्कलधौतकान्तिः ।
उन्मत्तदन्तिगमना भुवनस्य विघ्नं; वज्राङ्कुशा हरतु वज्रसमानशक्तिः ॥४॥ (वसन्त.)

ॐ लं लं लं श्रीवज्राङ्कुशायै विद्यादेव्यै स्वाहा ॥

५-अप्रतिचक्राः-गरुत्मत्पृष्ठ आसीना, कार्तस्वरसमच्छविः । भूयादप्रतिचक्रा नः, सिद्धये चक्रधारिणी ॥५॥ (अनु.)

ॐ श्रीअप्रतिचक्रायै विद्यादेव्यै स्वाहा ॥

६-पुरुषदत्ताः-खड्गस्फराऽङ्कितकरद्वयभासमाना; मेघाभसैरिभपट्टुस्थितिभासमाना ।
जात्यार्जुनप्रभतनुः पुरुषाग्रदत्ता; भद्रं प्रयच्छतु सतां पुरुषाग्रदत्ता ॥६॥ (वसन्त.)

ॐ हं सं श्रीपुरुषदत्तायै विद्यादेव्यै स्वाहा ॥

७-कालीः-शरदम्बुधरप्रमुक्तचश्वद्-गगनतलाभतनुद्युतिर्दयाढ्या ।
विकचकमलवाहना गदाभृत्, कुशलमलङ्कुरुतात् सदैव काली ॥७॥ (औपच्छन्दसिक)

ॐ ह्रीँ श्रीकालिकायै विद्यादेव्यै स्वाहा ॥

८-महाकालीः-नरवाहना शशधरोपलोज्ज्वला; रुचिराक्षसूत्रफलविस्फुरत्करा ।
शुभघण्टिका पवित्रवरेण्यधारिणी; भुवि कालिका शुभकरा महापरा ॥८॥ (मञ्जुभाषिणी)

ॐ ह्रूँ घेँ श्रीमहाकाल्यै विद्यादेव्यै स्वाहा ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९-गौरीः-गोधासनसमासीना, कुन्दकर्पूरनिर्मला । सहस्रपत्रसंयुक्त-पाणिर्गौरी श्रियेऽस्तु नः ॥ ९ ॥ (अनु.)

ॐ ए श्रीगौर्यै विद्यादेव्यै स्वाहा ॥

१०-गांधारीः-शतपत्रस्थितचरणा, मुसलं वज्रं च हस्तयोर्दधती ।
कमनीयाञ्जनकान्ति-र्गान्धारी गां शुभां दद्यात् ॥ १० ॥ (आर्या.)

ॐ गं गां श्रीगान्धार्यै विद्यादेव्यै स्वाहा ॥

११-महाज्वालाः-मार्जारवाहना नित्यं, ज्वालोद्भासिकरद्वया ।
शशाङ्कधवला ज्वाला-देवी भद्रं ददातु नः ॥ ११ ॥ (अनु.)

ॐ क्लीं श्रीमहाज्वालायै विद्यादेव्यै स्वाहा ॥

१२-मानवीः-नीलाङ्गी नीलसरोज-वाहना वृक्षभासमानकरा ।
मानवगणस्य सर्वस्य, मङ्गलं मानवी दद्यात् ॥ १२ ॥ (आर्या.)

ॐ व च श्रीमानव्यै विद्यादेव्यै स्वाहा ।

१३-वैरोट्याः-खड्गस्फुरत्स्फुरितवीर्यवदूर्ध्वहस्ता, सद्दन्दशूकवरदापरहस्तयुग्मा ।
सिंहासनाऽब्जमुदतारतुषारगौरा; वैरोट्यया-प्यभिधयाऽस्तु शिवाय देवी ॥ १३ ॥ (वसन्त.)

ॐ जं जं श्रीवैरोट्यायै विद्यादेव्यै स्वाहा ॥

॥१८४॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१४-अच्छुप्ताः-सव्यपाणिधृ-तकार्मुकस्फरा-न्यस्फुरद् विशि-खखड्गधारिणी ।
विद्युदाभत-नुरश्ववाहना-ऽच्छुप्तिका भग-वती ददातु शम् ॥ १४ ॥ (रथोद्धता.)

ॐ अं ऐं श्रीअच्छुप्तायै विद्यादेव्यै स्वाहा ॥

१५-मानसीः-हंसासनसमासीना, वरदेन्द्रायुधाऽन्विता ।
मानसी मानसीं पीडां, हन्तु जाम्बूनदच्छविः ॥ १५ ॥ (अनु.)

ॐ ह्रीँ अर्हं श्रीमानस्यै विद्यादेव्यै स्वाहा ॥

१६-महामानसीः-करखड्गरत्नवरदाढ्य-प्राणिभृच्छशिनिभा मकरगमना ।
सङ्घस्य रक्षणकरी, जयति महामानसी देवी ॥ १६ ॥ (आर्या)

ॐ हं हं हं सं श्रीमहामानस्यै विद्यादेव्यै स्वाहा ॥

त्यार बाद नीचेनो मंत्र बोली सोले विद्यादेवीनुं परिपिंडत पूजन करवुंः-

ॐ ह्रीँ षोडशमहादेवीभ्यो नमः ॥

॥ इति षोडशविद्यादेवीपूजनश्लोकाः ॥ परि. १ ई ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'परिशिष्ट-नं. १. उ'

सिद्धचक्रपूजने-दर्शन-ज्ञान-चारित्र-तपःपद पूजनश्लोकाः—(पाना. नं. ६०नी टिप्पण.)

प्रतिष्ठा-कल्पमां सिद्धचक्रपूजनमां दर्शनादिचारे पदोना पूजनना मात्र मंत्रो ज आप्या छे श्लोको आप्या नथी परंतु आचारदिनकरादिमां ते ते पदोने लगता श्लोको आवे छे ते दर्शनादि पदोना पूजन समये बोली शकाय छे.

॥ ६ ॥ **दर्शनपदपूजनश्लोकः**—

अविरति-विरतिभ्यां जातखेदस्य जन्तो-र्भवति यदि विनष्टं मोक्षमार्गप्रदायि ।
भवतु विमलरूपं दर्शनं तन्निरस्ता-खिलकुमतविषादं देहिनां बोधिभाजाम् ॥ ६ ॥ (मालिनी)

॥ ७ ॥ **ज्ञानपदपूजनश्लोकः**—

कृत्याकृत्ये भवशिवपदे पापपुण्ये यदीय-प्राप्त्या जीवाः सुषमविषमा विन्दते सर्वथैव ।
तत्पश्चाङ्गं प्रकृतिनिचयैरप्यसङ्ख्यैर्विभिन्नं; ज्ञानं भूयात् परमतिमिर-व्रातविध्वंसनाय ॥ ७ ॥ (मन्दाक्रान्ता)

॥ ८ ॥ **चारित्रपदपूजनश्लोकः**—

गुणपरिचयं कीर्तिं शुभ्रां प्रतापमखण्डितं; दिशति यदिहा-ऽमुत्र सवर्गं शिवं च सुदुर्लभम् ।
तदमलमलङ्कुर्याच्चित्तं सतां चरणं सदा; जिनपरिवृढै-रप्याचीर्णं जगत्स्थितिहेतवे ॥ ८ ॥ (हरिणी)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

॥ ९ ॥ तपःपदपूजनश्लोकः—

विघ्नौघघाति सुनिकाचितकर्मपातिः; जातिस्मृति प्रभृतिदं हतमन्मथार्ति ।
चेतोविशुद्धिकरमस्तसमस्तरोषं; पोषं ददातु चरणस्य तपोऽस्तदोषम् ॥९॥ (वसन्त.)

॥ इति दर्शनादिपदपूजनश्लोकाः ॥ (परि. १–उ)

'परिशिष्ट. नं. १. ऊ'

श्रीविंशतिस्थानकपदपूजनश्लोकाः—(पाना. नं. ६६नी टिप्पण.)

प्रतिष्ठाकल्पमां वीशस्थानकपूजनना केवल मंत्रो आपेला छे. परंतु तेनी साथो साथ अन्यत्र आवतां वीशे पदो संबंधी श्लोको बोलीने पण पूजन थइ शके छे.

पूजन प्रारंभ करता पहेला क्षेत्रपाल–दिक्पाल–ग्रह–षोडशविद्यादेवी० शासनदेवी–आदिकनुं पूजन पूर्वोक्त (पाना नं. ६४) मंत्रोथी करवुं. त्यार बाद 'रोगशोकादिभिर्दोषैः—' आदि शांतिघोषणा (पाना. नं. ६४) ना १० श्लोको तेमज नवकार पूर्वक 'चत्तारि मंगलं' 'चत्तारि लोगुत्तमा', 'चत्तारि सरणं' आदि कही वज्रपंजरस्तोत्र कहेवुं.

त्यार बाद नीचेनो श्लोक बोली वीशस्थानक यंत्र उपर कुसुमांजलि करवीः—

---

१ श्री सिद्धचक्रपूजन तथा श्रीवीशस्थानकपूजन समये नवा जेटला श्रीसिद्धचक्र तेमज श्रीवीशस्थानकना यंत्रो होय ते सर्व पण पूजनमां मूकवा. अने पूजन बाद वासक्षेपथी अधिवासित करवा. त्यारथी ते सर्व पूजनीय बनी जाय छे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आराधयन्ति स्वभवात्तृतीये, भवे जिना यत्पदमेव वर्य्यम् ।
निःशेषकर्मापगमाय कामं, तद् विंशतिस्थानकमानमामि ॥ (उपजाति.)

त्यार बाद नीचेना श्लोक तथा मंत्रोथी क्रमसर अरिहंतादि वीशेपदोनुं चंदन, पत्र, पुष्प, फल, सोपारीना टुकडा तथा अक्षतादिकथी पूजन करवुं :—

१. **अरिहंतपदः**–णमोणंतविन्नाणसद्दंसणाणं, सयाणंदियासेसजंतूगणाणं ।
भवांभोजविच्छेयणे वारणाणं; णमो बोहियाणं वराणं जिणाणं ॥ १ ॥ (भुजङ्गप्रयात)

'**ॐ ह्रीँ नमो अरिहंताणं**' ए मंत्रथी अरिहंतपदनुं पूजन करवुं. अने समयानुसार यथाशक्य ए ज मंत्रनो जाप करवो. बाकीना पदोमां पण एज रीते पूजनमंत्रनो जाप करवो. वर्ण–उज्ज्वल. गुण. १२. ॥ १ ॥

२. **सिद्धपदः**–लोगग्गभागोवरि संठियाणं, बुद्धाण सिद्धाणमणिंदियाणं ।
णिस्सेसकम्मक्खयकारगाणं, णमो सया मंगलधारगाणं ॥ २ ॥ (उपजाति)

'**ॐ ह्रीँ नमो सिद्धाणं**' ए मंत्रथी सिद्धपदनुं पूजन करवुं. वर्ण–लाल–गुण–८ ॥ २ ॥

३. **प्रवचनपदः**–अणंतसंसुद्धगुणायरस्स, दुक्खंधयारुग्गदिवायरस्स ।
अणंतजीवाण दयागिहस्स, णमो णमो संवचउव्विहस्स ॥ ३ ॥ (उपजाति.)

'**ॐ ह्रीँ नमो पवयणस्स**' ए मंत्रथी प्रवचनपदनुं पूजन करवुं. वर्ण–उज्ज्वल. गुण. २७.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४. आचार्यपदः–कुवादिकेलीतरुसिंधुराणं, सूरीसराणं मुणिबंधुराणं ।
धीरत्तसंतज्जियमंदराणं, णमो सया मंगलमंदिराणं ॥ ४ ॥ (उपजाति.)
'ॐ ह्रीँ नमो आयरियाणं' ए मंत्रथी आचार्यपदनुं पूजन करवुं. वर्ण–पीलो. गुण. ३६.

५. स्थविरपदः–सम्मत्त संयम पतित भविजन अतिह थिर करता भला;
अवगुण अदूषित गुणविभूषित चन्द्रकिरण समोज्ज्वला ।
अष्टाधिका दश सहस सीलांग रथ रुचिर धारा धरा;
भवसिंधु तारण भवरकारण नमो थिविरमुणीसरा ॥ ५ ॥ (हरिगीत.)
'ॐ ह्रीँ नमो थेराणं' ए मंत्रथी स्थविरपदनुं पूजन करवुं. वर्ण–श्याम. गुण. १०.

६–उपाध्यायपदः–सव्वोहिबीजंकुरकारणाणं, णमो णमो वायगवारणाणं ।
कुव्वोहिदंतीहरिणेसराणं; विग्घोघसंतावपयोहराणं ॥ ६ ॥ (उपजाति.)
'ॐ ह्रीँ नमो उवज्झायाणं' ए मंत्रथी उपाध्यायपदनुं पूजन करवुं. वर्ण–लीलो. गुण. २५

७–साधुपदः–संतज्जियासेसपरीसहाणं; णिस्सेसजीवाण दयागिहाणं ।
सण्णाण–पज्जाय–तरूवणाणं; णमो णमो होउ तवोधणाणं ॥ ७ ॥ (उपजाति.)
'ॐ ह्रीँ नमो लोए सव्वसाहूणं' ए मंत्रथी साधुपदनुं पूजन करवुं. वर्ण–श्याम–गुण–२७.

॥१८९॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८-ज्ञानपदः-छद्दव्वपज्जायगुणायरस्स; सया पयासी करणो धुरस्स ।
मिच्छत्तअण्णाणतमोहरस्स, णमो णमो णाणदिवायरस्स ॥८॥ (उपजाति.)
'ॐ ह्रीँ **नमो नाणस्स**' ए मंत्रथी ज्ञानपदनुं पूजन करवुं. वर्ण-उज्ज्वल-गुण-५।५१.

९-दर्शनपदः-अणंतविण्णाणसुकारणस्स, अणंतसंसारविदारणस्स ।
अणंतकम्मावलिधंसणस्स; णमो णमो णिम्मलदंसणस्स ॥ ९ ॥ (उपेन्द्रवज्रा.)
'ॐ ह्रीँ **नमो दंसणस्स**' ए मंत्रथी दर्शनपदनुं पूजन करवुं. वर्ण-उज्ज्वल-गुण-६७.

१०-विनयपदः-आणंदियासेसजगज्जणस्स, कुंदिंदुपादामलताचणस्स ।
सुधम्मजुत्तस्स दयासयस्स; णमो णमो श्रीविणयालयस्स ॥ १० ॥ (उपजाति.)
'ॐ ह्रीँ **नमो विणयस्स**' ए मंत्रथी विनयपदनुं पूजन करवुं. वर्ण-उज्ज्वल-गुण-५२.

११-चारित्रपदः-कम्मोघकंतारदवाणलस्स; महोदयाणंदलयाजलस्स ।
विण्णाणपंकेरुहकारणस्स; णमो चरित्तस्स गुणायरस्स ॥ ११ ॥ (उपजाति.)
'ॐ ह्रीँ **नमो चरित्तस्स**' ए मंत्रथी चारित्रपदनुं पूजन करवुं. वर्ण-उज्ज्वल-गुण-१७।७०

१२-ब्रह्मचर्यपदः-सग्गापवग्गग्गसुहप्पयस्स; सुणिम्मलाणंतगुणालयस्स ।
सव्वव्वयाभूसणभूसणस्स; णमो हि सीलस्स अदूसणस्स ॥१२॥ (उपजाति.)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'ॐ ह्रीँ नमो बंभवयधारीणं' ए मंत्रथी ब्रह्मचर्यपदनुं पूजन करवुं. वर्ण–उज्ज्वल–गुण–१८.

१३–क्रियापदः–विसुद्धसद्धाण विभूसणस्स; सुलद्धिसंपत्तिसुपोसणस्स ।
णमो सदाणंतगुणप्पदस्स; णमो णमो सुद्धकियापदस्स ॥ १३ ॥ (उपेन्द्रवज्रा.)

'ॐ ह्रीँ नमो किरियाणं' ए मंत्रथी क्रियापदनुं पूजन करवुं. वर्ण–उज्ज्वल–गुण–२५.

१४–तपपदः–लद्धिसरोजावलितावणस्स; सुरूवसंलग्गसुपावणस्स ।
अमंगलाणोकुहकुद्दवस्स; णमो णमो तिव्वतवोभरस्स ॥ १४ ॥ (उपजाति.)

'ॐ ह्रीँ नमो तवस्स' ए मंत्रथी तपपदनुं पूजन करवुं. वर्ण–उज्ज्वल–गुण–१२.

१५–गौतमपदः–अणंतविण्णाणविभायरस्स; दुवालसंगीकमलाकरस्स ।
सुबुद्धिवासा जय गोयमस्स, णमो गणाधीसरगोयमस्स ॥ १ ॥ (उपेन्द्रवज्रा.)

'ॐ ह्रीँ नमो गोयमस्स' ए मंत्रथी गौतमपदनुं पूजन करवुं. वर्ण–पीलो–गुण–११.

१६–वैयावृत्यपदः–मणुण्णसव्वातिसयासयाणं, सुरासुराधीसर–वंदियाणं ।
रवींदुबिंबामलसग्गुणाणं, दयाधणाणं हि णमो जिणाणं ॥ १६ ॥ (उपेन्द्रवज्रा)

'ॐ ह्रीँ नमो जिणाणं' ए मंत्रथी वैयावृत्यपदनुं पूजन करवुं. वर्ण–उज्ज्वल–गुण–२०.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१७-संयमपदः-सव्विंदियापारविकारदारी; अकारणासेसजणोवगारी ।
महाभवातंकरणापहारी; जयो सदा सुद्धचरित्तधारी ॥१७॥ (उपजाति)

'ॐ ह्रीँ नमो चरित्तधरस्स' ए मंत्रथी संयमपदनुं पूजन करवुं. वर्ण-उज्ज्वल. गुण. १७.

१८-अभिनवज्ञानपदः-सुद्धक्रियामंडलमंडणस्स; संदेहसंदोहविखंडणस्स ।
मुत्तीउपादानसुकारणस्स; णमो हि णाणस्स जसोधणस्स ॥१८॥ (उपजाति)

'ॐ ह्रीँ नमो नाणधरस्स' ए मंत्रथी अभिनवज्ञानपदनुं पूजन करवुं. वर्ण-उज्ज्वल. गुण. ५/५१.

१९-श्रुतज्ञानपदः-अण्णाणवल्लीघर-वारणस्स; सुबोहिबीजंकुरकारणस्स ।
अणंतसंसुद्धगुणालयस्स; णमो दयामंदिरसत्थयस्स ॥१९॥ (उपजाति)

'ॐ ह्रीँ नमो सुयधरस्स' ए मंत्रथी श्रुतज्ञानपदनुं पूजन करवुं. वर्ण-उज्ज्वल. गुण. २०.

२०-तीर्थपदः-महामहानन्दपदप्रदाय; जगत्त्रयाधीश्वर-वन्दिताय ।
जिनश्रुतज्ञानपयोनदाय; नमोऽस्तु तीर्थाय शुभंददाय ॥२०॥ (उपेन्द्रवज्रा)

'ॐ ह्रीँ नमो तित्थस्स' ए मंत्रथी तीर्थपदनुं पूजन करवुं. वर्ण-उज्ज्वल. गुण. ३८.

आ रीते वीशे पदोना पूजन कर्या बाद श्रीआदिजिनकलश कही आरती-मंगलदीवो उतारी आठ थोयनुं देववंदन करवुं.

॥ इति विंशतिस्थानकपदश्लोकाः ॥ परि. १ ऊ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट नं. १ क

इन्द्र–इन्द्राणीने यज्ञोपवीतादिक धारण करावता बोलवाना विशिष्ट मंत्रोः—(पाना नं. ६८नी टिप्पण)

च्यवनकल्याणकसमये इन्द्र-इन्द्राणीनी स्थापना करता पहेला यज्ञोपवीतादि आभूषणो ते ते श्लोकोथी मंत्रित करी पहेरावाय छे. ते आभूषणो पहेरावता श्लोकोनी साथे नीचेना विशिष्ट मंत्रो बोली शकाय छे.

१–'**यज्ञोपवीत**' (सोनानो सांकली) इन्द्रने धारण करावता–श्लोक बोल्या बाद बोलवानो मंत्रः—

ॐ ह्रीँ इन्द्राय यज्ञोपवीतं परिधापयामीति स्वाहा ॥१॥

२–'**मुकुट**' अने 'तिलक' इन्द्रने धारण करावता–श्लोक बोल्या बाद बोलवानो मंत्रः—

ॐ ह्रीँ इन्द्राय मुकुटं परिधापयामीति स्वाहा ॐ ह्रीँ इन्द्राय तिलकं परिकल्पयामीति स्वाहा ॥२॥

३ '**कङ्कण**' इन्द्रने धारण करावता–श्लोक बोल्या बाद बोलवानो मंत्रः—

ॐ ह्रीँ इन्द्राय कङ्कणं परिधापयामीति स्वाहा ॥३॥

४ '**मुद्रिका**' (वींटी) इन्द्रने धारण करावता–श्लोक बोल्या बाद बोलवानो मंत्रः—

ॐ ह्रीँ इन्द्राय मुद्रिकां परिधापयामीति स्वाहा ॥४॥

५ '**षोडशाभूषण**' इन्द्रने धारण करावता–श्लोक बोल्या बाद बोलवानो मंत्रः–

ॐ ह्रीँ इन्द्राय केयूरहारादिषोडशाभूषणानि परिधापयामीति स्वाहा ॥५॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इन्द्राणीनी स्थापनानो मंत्र प्रतिष्ठाकल्पमां आवे छे. परंतु स्थापना पहेला इन्द्राणीने कङ्कणादि आभूषणो पहेरावता बोलवानो मंत्र आवतो नथी. तो कङ्कणादि आभूषणो वासक्षेपथी मंत्रित करी नीचेना मंत्रथी पहेराववाः-(पाना नं. ७०नी टिप्पण)

ॐ ह्रीँ इन्द्राण्यै कङ्कणादिकषोडशाभूषणानि परिधापयामीति स्वाहा ॥

॥ इन्द्र-इन्द्राणीने यज्ञोपवीतादिक धारण कराववता-बोलवाना विशिष्ट मंत्रो ॥ परि. १ क ॥

॥ परिशिष्ट नं. १ क

मात-पितानी स्थापनानी विशिष्ट विधिः-(पाना नं. ७०नी टिप्पण)

मात-पितानी स्थापनानी विधि प्रतिष्ठाकल्पमां आवती नथी परंतु ते विधि प्रचलित छे. तो आ रीते करावी शकाय.

प्रथम मात-पिताने धारण करवाना मींढलादि आभूषणो वासक्षेपथी मंत्रित करी नीचेना मंत्रथी पहेराववाः-

ॐ ह्रीँ भगवतः पित्रे मुकुटादिकं परिधापयामीति स्वाहा ।

ॐ ह्रीँ भगवतो मात्रे कङ्कणादिकं परिधापयामीति स्वाहा ।

त्यार बाद बन्नेना मस्तके सूरिमंत्रथी वासक्षेप करी नीचेना मंत्रथी मात-पिता तरीके स्थापना करवीः-

ॐ ह्रीँ भगवतो माता-पितरौ परिकल्पयामीति स्वाहा ॥

॥ इति मात-पितानी स्थापनानी विशिष्ट विधिः ॥ परि. १ क ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट नं. १ लृ

च्यवनकल्याणकचैत्यवन्दन तथा स्तवन–(पाना नं. ७८नी टिप्पण)

च्यवनकल्याणकचैत्यवन्दनम्ः–च्यवनकल्याणकनी विधि थया बाद देववंदन करती वखते च्यवनकल्याणकनुं चैत्यवंदन तथा स्तवन केटलाक प्रतिष्ठाकल्पमां मले छे. ते बोली शकाय छे.

तुज्झ नमो जिण निहयाऽरिवग्ग–भयवंत णाह ! आइगर ! । तित्थयर सयंचिय, जायबोह पुरिसोतम पसिद्ध ॥ १ ॥

भवभीम-महाडवि-पडिय–पाणिगण-सत्थवाह गयबाह । सिवमयलमणंतसुह-संपाविय-गयकाम ॥ २ ॥

परमेसर तत्थ गओऽवि, ताव अक्खलिय-नाणनयणेण । एत्थ गयंपि हु पणयं, मं पेच्छसु किंकरसरिच्छं ॥ ३ ॥

चतुर्दशस्वप्नस्तवनम्–(राग–जागने जादवां)

करड-तड-गलिय-मय-सलिल-गंधुद्धुरं, गुलगुलंतं सुदंतं महासिंधुरं ।

गब्भ अणुभावओ पच्छिमरयणीए, देवीवयणम्मि पविसंतयं पेच्छए ॥ १ ॥ (१-गय)

वसहमुल्लासि सुइलंबपुच्छच्छटं, चारुसिंगं सुतुंगं रवेणुब्भडं ॥ २ ॥ गब्भ. (२ वृषभ)

घुसिण-रस-राग-केसर-सडाऽऽडंबरं, केसरिं कंठरव-भरियगयणंतरं ॥ ३ ॥ गब्भ. (३ सिंह)

कुंभि-कर-कलिय-कलसेहि कयमज्जणं, लच्छिमुद्दाम-कामत्थि-थुय-सासणं ॥ ४ ॥ गब्भ. (४ लक्ष्मी)

मालई मल्लिया कमलरेहंतयं, माल-ममिलाण-मलि-वलय-लीढंतयं ॥ ५ ॥ गब्भ. (५ माला)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

किरणजालं मुयंतं ससिं सुंदरं, निहय-तम-पसर-मइरुग्गयं दिणयरं ॥ ६ ॥ गब्भ. (६ चंद्र ७ सूर्य)
फलिह-डंडग्ग-लोलंत-सिय-धयवडं, पुन्नकलसं च सुहकमल-गंधुब्भडं ॥ ७ ॥ गब्भ. (८ ध्वजा ९ कुंभ)
कुमुयकतहार-रम्मं महंतं सरं, बहुल-कल्लोल-मालाउरं सायरं ॥ ८ ॥ गब्भ. (१० पद्मसरोवर; ११ सागर)
विविह-मणि-थंभ-सालं विमाणं वरं, कंति-कब्बुरिय-गयणं च रयणुक्करं ॥ ९ ॥ गब्भ. (१२ विमान, १३ रत्नराशि)
धूमरहियं तहा हुयवहं सुमिणए, देवी वयणम्मि पविसंतयं पेच्छए ॥ १० ॥ गब्भ. (१४ निर्धूम अग्नि)

॥ इति च्यवनकल्याणकचैत्यवन्दन तथा स्तवन ॥ परि. १ लृ ॥

परिशिष्ट नं. १ लॄ

बृहत्स्नात्रविधिः-(पाना नं. ९०नी टिप्पण)

मेरु पर्वत उपर प्रभुजीने लई गया बाद आचारदिनकर-अर्हत्पूजनादिकमां आवतो "बृहत्स्नात्रविधि" प्रमाणे समयानुसार संपूर्ण श्रीजिनजन्माभिषेकमहोत्सव करावी शकाय; २५० अभिषेक सुधी विधि करावी अष्टप्रकारी पूजा करावी शकाय अथवा केवल 'पूर्वं जन्मनि विश्वभर्तुरधिकं' आदि १९ श्लोको बोलीने पण २५० अभिषेक करावी अष्टप्रकारी पूजादिक करावी शकाय ॥

सौ प्रथम कुसुमांजलि हाथमां लइ नीचेनो श्लोक बोली कुसुमांजलि करवीः-नमोऽर्हत्-

पूर्वं जन्मनि मेरुभूध्रशिखरे, सर्वैः सुराधीश्वरै-राज्योद्भूतिमहे महर्द्धिसहितैः, पूर्वेऽभिषिक्ता जिनाः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तामेवानुकृतिं विधाय हृदये, भक्तिप्रकर्षान्विताः; कुर्मः स्वस्वगुणानुसारवशतो, बिम्बाभिषेकोत्सवम् ॥१॥ (शार्दूल.)

बीजीवार कुसुमांजलिः–नमोऽर्हत्–

मृत्कुम्भाः कलयन्तु रत्नघटितां, पीठं पुनर्मेरुता–मानीतानि जलानि सप्तजलधि–क्षीराज्यदध्यात्मताम् ।
बिम्बं पारगतत्वमत्र सकलः, सङ्घः सुराधीशतां, येन स्यादयमुत्तमः सुविहितः, स्नात्राभिषेकोत्सवः ॥२। (शार्दूल.)

त्रीजीवार कुसुमांजलिः–नमोऽर्हत्—

आत्मशक्तिसमानीतैः, सत्यं चामृतवस्तुभिः । तद्वार्द्धिकल्पनां कृत्वा, स्नापयामि जिनेश्वरम् ॥ ३ ॥ (अनु.)

पछी दूधनो कळश लइ नीचेनो श्लोक बोली अभिषेक करवोः—

भगवन्मनोगुणयशोऽनुकारि–दुग्धाब्धितः समानीतम् । दुग्धं विदग्धहृदयं, पुनातु दत्तं जिनस्नात्रे ॥ १ ॥ (आर्या)

पछी दहीनो कळश लइ नीचेनो श्लोक बोली अभिषेक करवोः—

दधिमुखमहीध्रवर्णं, दधिसागरतः समाहृतं भक्त्या । दधि विदधातु शुभविधिं, दधिसारपुरस्कृतं जिनस्नात्रे ॥२॥ (आर्या)

पछी घीनो कळश लइ नीचेनो श्लोक बोली अभिषेक करवोः—

स्निग्धं मृदु पुष्टिकरं, जीवनमतिशीतलं सदाभिख्यम् । जिनमतवद् घृतमेतत्, पुनातु लग्नं जिनस्नात्रे ॥ ३ ॥ (आर्या)

पछी शेरडीना रसनो कळश लइ नीचेनो श्लोक बोली अभिषेक करवोः—

मधुरिममधुरीणविधुरित-सुधाऽधराऽऽधार आत्मगुणवृत्त्या । शिक्षयतादिक्षुरसो विचक्षणौघं जिनस्नात्रे ॥ ४ ॥ (आर्या) ॥१९७॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पछी शुद्ध पाणीनो कळश लइ नीचेनो श्लोक बोली अभिषेक करवोः—

जीवनममृतं प्राणद-मकलुषितमदोषमस्तसर्वरुजम् । जलममलमस्तु तीर्था-धिनाथबिम्बानुगे स्नात्रे ॥ ५ ॥ (आर्या)

पछी सहस्रमूलमिश्र पाणीनो कळश लइ नीचेनो श्लोक बोली अभिषेक करवोः—

विघ्नसहस्रोपशमं, सहस्रनेत्रप्रभावसद्भावम् । दलयतु सहस्रमूलं, शत्रुसहस्रं जिनस्नात्रे ॥ ६ ॥ (आर्या)

पछी शतमूलमिश्र पाणीनो कळश लइ नीचेनो श्लोक बोली अभिषेक करवोः—

शतमर्त्यसमानीतं, शतमूलं शतगुणं शताख्यं च । शतसंख्यं वाञ्छितमिह, जिनाभिषेके सपदि कुरुतात् ॥ ७ ॥ (आर्या)

पछी सर्वौषधिमिश्र पाणीनो कळश लइ नीचेनो श्लोक बोली अभिषेक करवोः—

सर्वप्रत्यूहहरं, सर्वसमीहितकरं विजितसर्वम् । सर्वौषधिमण्डलमिह, जिनाभिषेके शुभं ददताम् ॥ ८ ॥ (आर्या)

पछी धूप लइ नीचेनो श्लोक बोली धूप करवोः—

ऊर्ध्वाधोभूमिवासि-त्रिदशदनुसुत-क्ष्मासृशां घ्राणहर्ष—प्रौढिप्राप्तप्रकर्षः क्षितिरुहरसजः क्षीणपापावगाहः ।

धूपोऽकूपारकल्प-प्रभवमृतिजरा-कष्टविस्पष्टदुष्ट—स्फूर्जत्संसारपारा-धिगममतिधियां विश्वभर्तुः करोतु ॥ ९ ॥ (स्रग्धरा)

पछी "नमुत्थुणं" कही स्वस्तिकादिथी तैयार करेल, चंदन—पुष्पादिवासित पाणीथी भरेल कळशो नवकार गणी हाथमां लइ नीचेना १९ जिनाभिषेक श्लोको बोली अभिषेक करवोः—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नमो अरिहंताणं; नमोऽर्हत्--

पूर्वे जन्मनि विश्वभर्तुरधिकं, सम्यक्त्वभक्तिस्पृशः। सूतेः कर्मसमीरवारिदमुखं, काष्ठाकुमार्यो व्यधुः।
तत्कालं तविषेश्वरस्य निबिडं, सिंहासनं प्रोन्नतं; वातोद्भूतसमुद्धुरध्वजपट-प्रख्यां स्थितिं व्यानशे ॥ १ ॥ (शार्दूल)
क्षोभात्तत्र सुरेश्वरः प्रसृमर-क्रोधक्रमाक्रान्तधीः, कृत्वाऽलककसिक्तकूर्मसदृशं, चक्षुःसहस्रं दधौ।
वज्रं च स्मरणागतं करगतं, कुर्वन् प्रयुक्तावधि-ज्ञानात्तीर्थकरस्य जन्म भुवने, भद्रंकरं ज्ञातवान् ॥ २ ॥ (शार्दूल)
नम नम इति शब्दं, ख्यापयंस्तीर्थनाथं; स झटिति नमति स्म, प्रौढसम्यक्त्वभक्तिः।
तदनु दिवि विमाने, सा सुघोषाख्यघण्टा। सुररिपुमदमोघा-घातिशब्दं चकार ॥ ३ ॥ (मालिनी)
द्वात्रिंशल्लक्षविमान-मण्डले तत्समा महाघण्टाः। नेदुः सुदुःप्रधर्षाः, हर्षोत्कर्षं वितन्वन्त्यः ॥ ४ ॥ (आर्या)

तस्मान्निश्चित्य विश्वा-धिपतिजनुरथो, निर्जरेन्द्रः स्वकल्पान्;
कल्पेन्द्रान् व्यन्तरेन्द्रा-नपि भवनपतीं-स्तारकेन्द्रान् समस्तान्।
आह्वाय्याऽऽह्वाय्य तेषां, स्वमुखभवगिरा-ख्याय सर्वं स्वरूपं;
श्रीमत्कार्त्तस्वराद्रेः, शिरसि परिकरा-लङ्कृतान् प्राहिणोच्च ॥ ५ ॥ (स्रग्धरा)

ततः स्वयं शक्रसुराधिनाथः, प्रविश्य तीर्थंकरजन्मगेहम्।
परिच्छदैः सार्द्धमथो जिनाम्बां, प्रस्वापयामास वरिष्ठविद्यः ॥ ६ ॥ (उपेन्द्रवज्रा)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कृत्वा पञ्चवपूंषि विष्टपपतिः, संधारणं हस्तयो-श्छत्रस्योद्वहनं च चामरयुग-प्रोल्लासनाचालनम् ।
वज्रेणापि धृतेन नर्तनविधिं, निर्वाणदातुः पुरो, रूपैः पञ्चभिरेवमुत्सुकमनाः, प्राचीनबर्हिर्व्यधात् ॥ ७ ॥ (शार्दूल)
सामानिकाङ्गरक्षै-रेवं परिवारितः सुराधीशः । बिभ्रत् त्रिभुवननाथं, प्राप सुराद्रिं सुरगणाढ्यम् ॥ ८ ॥ (आर्या)
तत्रेन्द्रास्त्रिदशाप्सरःपरिवृता विश्वेशितुः संमुखं, मङ्क्ष्वागत्य नमस्कृतिं व्यधुरलं, स्वालङ्कृतिभ्राजिताः ।
आनन्दान्ननृतुस्तथा सुरगिरि-स्त्रुटयद्भिराभास्वरैः, शृङ्गैः काञ्चनदानकर्मनिरतो, भाति स्म भक्त्या यथा ॥ ९ ॥ (शार्दूल)
अतिपाण्डुकम्बलाया, महाशिलायाः शशाङ्कधवलायाः । पृष्ठे शशिमणिरचितं, पीठमधुर्देवगणवृषभाः ॥ १० ॥ (आर्या)
तत्राधायोत्सङ्गे, ईशानसुरेश्वरो जिनाधीशम् । पद्मासनोपविष्टो, निबिडां भक्तिं दधौ मनसि ॥ ११ ॥ (आर्या)
इन्द्रादिष्टास्तत,आभियोगिकाः कलशगणमथानिन्युः । वेदरसखर्वसुसंख्यं, मणिरजतसुवर्णमृद्रचितम् ॥ १२ ॥ (आर्या)

कुम्भाश्च ते योजनमात्रवक्त्रा, आयाम औन्नत्यमथैषु चैवम् ।
दशाष्टबार्हत्करयोजनानि, द्वित्र्येकधातुप्रतिषङ्गगर्भाः ॥ १३ ॥ (उपेन्द्रवज्रा)

नीरैः सर्वसरित्तडागजलधि-प्रख्यान्यनीराशयाऽऽ-नीतैः सुन्दरगन्धगर्भिततरैः स्वच्छैरलं शीतलैः ।
भृत्यैर्देवपतेर्मणीमयमहा-पीठस्थिताः पूरिताः; कुम्भास्ते कुसुमस्रजां समुदयैः कण्ठेषु संभाविताः ॥ १४ ॥ (शार्दूल)

पूर्वमच्युत-पतिर्जिनेशितुः, स्नात्रकर्म विधिवद् व्यधान्महत् ।
तैर्महाकलशवारिभिर्घनैः, प्रोल्लसन्मलयगन्धधारिभिः ॥ १५ ॥ (रथोद्धता ५-६)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चतुर्वृषभशृङ्गोत्थ-धाराष्टकमुदश्चयन् । सौधर्माधिपतिः स्नात्रं, विश्वभर्तुरपूरयत् ॥ १६ ॥ (अनु.)

शेषं क्रमेण तदनन्तरमिन्द्रवृन्दं, कल्पासुरर्क्ष-वननाथमुखं व्यधत्त ।
स्नात्रं जिनस्य कलशैः कलितप्रमोदं, प्रावारवेषविनिवारितसर्वपापम् ॥ १७ ॥ (वसन्त.)

तस्मिन् क्षणे बहुलवादितगीतनृत्य-गर्भं महं च सुमनोऽप्सरसो व्यधुस्तम् ।
येनादधे स्फुटसदाविनिविष्टयोग-स्तीर्थङ्करोऽपि हृदये परमाणु चित्तम् ॥१८॥ (वसन्त.)

मेरुशृङ्गे च यत्स्नात्रं, जगद्भर्तुः सुरैः कृतम् । बभूव तदिहास्त्वेत-दस्मत्करनिषेकतः ॥१९॥ (अनु.)

आ ज "मेरुशृङ्गे" श्लोक बोली दरेके अभिषेक करवा त्यार बाद कोमळ हाथे अंगलूछणादिक करी सौ प्रथम कस्तूरी चंदनादिनुं विलेपन नीचेना बे श्लोक बोली करवुं :—

कस्तूरिकाकुङ्कुमरोहणद्रुः, कर्पूरकल्लोलविशिष्टगन्धम् ।
विलेपनं तीर्थपतेः शरीरे, करोतु सङ्घस्य सदा विवृद्धिम् ॥१॥ (उपेन्द्रवज्रा)

तुराषाट् स्नात्रपर्यन्ते, विदधे यद्विलेपनम् । जिनेश्वरस्य तद्भूया-दत्र बिम्बेऽस्मदाहृतम् ॥२॥ (अनु.)

पछी नीचेना बे श्लोक बोली फूलनी माळा चढाववी :—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मालती-विचकिलोज्ज्वलमल्ली-कुन्दपाटलसुवर्णसुमैश्च ।
केतकैर्विरचिता जिनपूजा, मङ्गलानि सकलानि विदध्यात् ॥१॥ (स्वागता ३-८)
स्नात्रं कृत्वा सुराधीशै-र्जिनाधीशस्य वर्ष्मणि । यत्पुष्पारोपणं चक्रे, तदस्त्वस्मत्करैरिह ॥२॥ (अनु.)

पछी नीचेना बे श्लोक बोली मुगट-कुंडल-हारादि आभूषणो पहेराववा :—

केयूरहारकटकैः पट्टभिः किरीटैः, सत्कुण्डलैर्मणिमयीभिरथोर्मिकाभिः ।
बिम्बं जगत्त्रयपतेरिह भूषयित्वा, पापोच्चयं सकलमेव निकृन्तयामः ॥१॥ (वसन्त.)
या भूषा त्रिदशाधीशैः, स्नात्रान्ते मेरुमस्तके । कृता जिनस्य सा ऽत्राऽस्तु, भविकैर्भूषणार्जिता ॥२॥ (अनु.)

पछी नीचेना बे श्लोक बोली फळपूजा करवी :—

सन्नालिकेर-फलपूर-रसाल-जम्बु-द्राक्षा-परूषक-सुदाडिम-नागरिङ्गैः ।
वाताम-पूग-कदलीफल-जम्भमुख्यैः, श्रेष्ठैः फलैर्जिनपतिं परिपूजयामः ॥१॥ (वसन्त.)
यत्कृतं स्नात्रपर्यन्ते, सुरेन्द्रैः फलढौकनम् । तदिहास्मत्करादस्तु, यथासम्पत्तिनिर्मितम् ॥२॥ (अनु.)

पछी नीचेनो श्लोक बोली अक्षतपूजा करवी :—

अखण्डिताक्षतैः पूजा, या कृता हरिणाऽर्हतः । साऽस्तु भव्यकराम्भोजै-रत्र बिम्बे विनिर्मिता ॥१॥ (अनु.)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पछी नीचेना बे श्लोक बोली बिंब आगळ पाणीनो कळश मूकवो :—

निर्झरनदीपयोनिधि-वापीकूपादितः समानीतम् । सलिलं जिनपूजाया-महाय निहन्तु भवदाहम् ॥१॥ (आर्या)

मेरुशृङ्गे जगद्भर्तुः, सुरेन्द्रैर्यज्जलार्चनम् । विहितं तदिह प्रौढि-मातनोत्वस्मदादृतम् ॥२॥ (अनु.)

पछी नीचेना बे श्लोक बोली धूपपूजा करवी :—

कर्पूरागरुचन्दनादिभिरलं, कस्तूरिकामिश्रितैः; सिल्हाद्यैः सुसुगन्धिभिर्बहुतरै-र्धूपैः कृशानूद्गतैः ।
पातालक्षितिगोनिवासिमरुतां, संप्रीणकैरुत्तमै-र्धूमाक्रान्तनभस्तलैर्जिनपतिं, संपूजयामोऽधुना ॥१॥ (शार्दूल.)

या धूपपूजा देवेन्द्रैः, स्नात्रानन्तरमादधे । जिनेन्द्रस्यास्मदुत्कर्षा-दस्तु साऽत्र महोत्सवे ॥२॥ (अनु.)

पछी नीचेना बे श्लोक बोली दीप करवो :-

अन्तर्ज्योति-र्द्योतितो यस्य कायो; यत्संस्मृत्या, ज्योतिरुत्कर्षमेति ।
तस्याऽभ्याशे, निर्मितं दीपदानं; लोकाचार-ख्यापनाय प्रभाति ॥ १ ॥ (शालिनी)

या दीपमाला देवेन्द्रैः, सुमेरौ स्वामिनः कृता । साऽत्रान्तर्गतमस्माकं, विनिहन्तु तमोभरम् ॥ २ ॥ (अनु.)

पछी नीचेनो श्लोक बोली नैवेद्यपूजा करवी :-

ओदनैर्विविधैः शाकैः, पक्वान्नैः षड्रसान्वितैः । नैवेद्यैः सर्वसिद्ध्यर्थं, जायतां जिनपूजनम् ॥ १ ॥ (अनु.)

पछी नीचेनो श्लोक बोली सर्वधान्य मूकवा :-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गोधूम-तन्दुल-तिलैर्हरिमन्थकैश्च; मुद्गा-ऽऽढकी-यव-कलाय-मकुष्ठकैश्च
कुल्माष-वल्ल-चरचीनक-देवधान्यैर्मर्त्यैः कृता जिनपुरः फलदोपदाऽस्तु ॥ १ ॥ (वसन्त.)

पछी नीचेनो श्लोक बोली सर्व वेषवार मूकवा :-

शुंठी-कणा-मरीच-रामठ-जीर-धान्य-श्यामा-सुराप्रभृतिभिः पटुवेसवारैः ।
संढौकनं जिनपुरो मनुजैर्विधीय-मानं मनांसि यशसा विमलीकरोतु ॥ १ ॥ (वसन्त.)

पछी नीचेनो श्लोक बोली सर्वौषधि मूकवी :-

उशीर-वटिका-शिरो-ज्ज्वलनचव्यधात्रीफलै-र्बलासलिलवत्सकै-र्धनविभावरीवासकैः ।
वचावर-विदारिका-मिशि-शताह्वायाचन्दनैः; प्रियङ्गुतगरैर्जिने-श्वरपुरोऽस्तु नो ढौकनम् ॥ १ ॥ (पृथ्वी. ८, ९)

पछी नीचेनो श्लोक बोली तंबोळ मूकवा :-

भुजङ्गवल्लीछदनैः सिताभ्र-कस्तूरिकैला सुरपुष्पमिश्रैः ।
सजातिकोशैः सममेव चूर्णै-स्ताम्बूलमेवं तु कृतं जिनाग्रे ॥ १ ॥ (उपेन्द्रवज्रा)

पछी नीचेना बे श्लोक बोली वस्त्रपूजा करवी.

सुमेरुशृङ्गे सुरलोकनाथः, स्नात्रावसाने प्रविलिप्य गन्धैः ।
जिनेश्वरं वस्त्रचयैरनेकै-राच्छादयामास निषक्तभक्तिः ॥ १ ॥ (उपेन्द्रवज्रा)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ततस्तदनुकारेण, साम्प्रतं श्राद्धपुङ्गवाः । कुर्वन्ति वसनैः पूजां, त्रैलोक्यस्वामिनोऽग्रतः ॥ २ ॥ (अनु.)

पछी नीचेनो श्लोक बोली सुवर्णमुद्रादिथी बिंबनी पूजा करवी :-

सुवर्णमुद्रामणिभिः कृताऽस्तु, पूजा जिनस्य स्नपनाऽवसाने ।
अनुष्ठिता पूर्वसुराधिनाथैः, सुमेरुशृङ्गे धृतशुद्धभावैः ॥ १ ॥ (उपेन्द्रवज्रा)

त्यार बाद अष्टमंगलनुं आलेखन करवुं.

॥ इति बृहत्स्नात्रविधिः ॥ ॥ परि० १-लृ ॥

परिशिष्ट-नं. १-ए

श्री जिनजन्माभिषेकस्तवनम् :- (प्रतिष्ठा-कल्प-पृष्ठ-) (पाना नं. ९२ नी टिप्पण.)

मेरुपर्वत उपर २५० अभिषेकादिविधि थया बाद देववंदन करती वखते प्रतिष्ठाकल्पमां जिनजन्माभिषेकस्तवन आवे छे-ते बोली शकाय छे. ते स्तवन नीचे प्रमाणे छे :-

जय भुवणत्तयवंदिय !, लीलाचलणग्गचालियगिरिंद ! । भवकूवमज्झनिवडंत-जंतुनित्थारणसमत्थ ! ॥ १ ॥
परमेसर ! सरणागय-परूढदढवज्जपंजर जिणिंद ! । वम्मह कुरंगकेसरि-मच्छर तमपसरदिवसयर ! ॥ २ ॥
सच्चं चिय सिद्धत्थो; कहं न सामिय जहत्थनामत्थो । चिंतामणिसरिच्छो; जस्स सुउत्तो विसालच्छो ॥ ३ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अच्चंतमविरइपरायणो वि; अइपुन्नवंतमप्पाणं । मन्नेमो जिण ! जं तुज्झ; मज्जणे एवमुवरिया ॥ ४ ॥
भद्दं भारहखेत्तस्स; नाह ! तं जत्थ पाविओ जम्मं । धरणी वि वंदणिज्जा; जा वहिही तुज्झ करकमलं ॥ ५ ॥
जइ तुह पयसेवाए; जिणिंद ! फलमत्थि ता सया कालं । एवंविह परममहं; अम्हे पेच्छंतया होमो ॥ ६ ॥

॥ इति जिनजन्माभिषेकस्तवनम् ॥ परि. १ ए ॥

परिशिष्ट नं. १–ऐ

श्री जिनाह्वानबृहद्विधि :– (पाना नं. १०० नी टिप्पण.)

अढार अभिषेकमां आठ अभिषेक थया बाद जिनाह्वान करवामां आवे छे. ते विधान बिंबप्रवेशादिविधिमां आवती बृहद्विधि प्रमाणे पण थइ शके छे ते विधि नीचे प्रमाणे छे :–

सौ प्रथम नीचेनो श्लोक तथा मंत्र बोली **कुसुमांजलि** करवी :–

सर्वस्थिताय विबुधाऽसुरसेविताय, सर्वात्मकाय चिदुदीरितविष्टपाय ।
बिम्बाय लोकनयनप्रमदप्रदाय; पुष्पाञ्जलिर्भवतु सर्वसमृद्धिहेतुः ॥ १ ॥ (वसंततिलका.)

ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः परमार्हते परमेश्वराय पुष्पाञ्जलिभिरर्चयामीति स्वाहा ॥

त्यार बाद सूरि भगवंत ऊभा थई १. परमेष्ठिमुद्रा; २ गरुडमुद्रा; ३ मुक्ताशुक्ति–एम त्रण मुद्राथी जिनेश्वरनुं आह्वान नीचेना मंत्रथी करे :

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ॐ नमोऽर्हत्परमेश्वराय चतुर्मुखाय परमेष्ठिने त्रैलोक्यनताय अष्टदिग्भाग-कुमारीपरिपूजिताय देवेन्द्र-महिताय देवाधिदेवाय दिव्यशरीराय त्रैलोक्यमहिताय भगवन्तोऽर्हन्तः श्रीऋषभदेवादिस्वामिनः अत्र आगच्छन्तु आगच्छन्तु स्वाहा ॥

॥ इति जिनाह्वानबृहद्विधिः ॥ परि० १-ऐ ॥

परिशिष्ट नं. १-ओ

चंद्र-सूर्यदर्शनमन्त्रः—(पाना नं. १०६ नी टिप्पण)

अढार अभिषेकमां १५ अभिषेक थया बाद चंद्र-सूर्यना दर्शननी विधि कराववामां आवे छे. अष्टादशअभिषेकबृहद्-विधिमां तेना मंत्रो आवे छे ते अहीं बोली शकाय छे. प्रथम चंद्रदर्शन कराववुं. चंद्रदर्शनमन्त्रः –

ॐ अर्हं चन्द्रोऽसि, निशाकरोऽसि, सुधाकरोऽसि, चन्द्रमा असि, ग्रहपतिरसि, नक्षत्रपतिरसि, कौमुदीपतिरसि, निशापतिरसि, मदनमित्रमसि, जगज्जीवनमसि, जैवातृकोऽसि, क्षीरसागरोद्भवोऽसि, श्वेतवाहनोऽसि, राजाऽसि, राजराजोऽसि, औषधीगर्भोऽसि, वन्द्योऽसि, पूज्योऽसि, नमस्ते भगवन् ! अस्य कुलस्य ऋद्धिं कुरु २; वृद्धिं कुरु २; तुष्टिं कुरु २; पुष्टिं कुरु २; जयं कुरु २; विजयं कुरु २; भद्रं कुरु २; प्रमोदं कुरु २; श्री शशाङ्काय नमः ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ॐ अर्हं-सर्वौषधिमिश्रमरीचिजालः, सर्वाऽऽपदां संहरणप्रवीणः।
करोतु वृद्धिं सकलेऽपि वंशे, युष्माकमिन्दुः सततं प्रसन्नः ॥१॥ (उपजाति)

पछी सूर्यदर्शन कराववुं. सूर्यदर्शनमंत्रः—

ॐ अर्हं सूर्योऽसि, दिनकरोऽसि, सहस्रकिरणोऽसि, विभावसुरसि, तमोऽपहोऽसि, प्रियङ्करोऽसि, शिवङ्करोऽसि, जगच्चक्षुरसि, सुरवेष्टितोऽसि; मुनिवेष्टितोऽसि, विततविमानोऽसि, तेजोमयोऽसि, अरुण-सारथिरसि, मार्तण्डोऽसि, द्वादशात्माऽसि; चक्रबान्धवोऽसि नमस्ते भगवन्! प्रसीदाऽस्य कुलस्य तुष्टिं पुष्टिं प्रमोदं कुरु २ सन्निहितो भव ॥

ॐ अर्हं-सर्वसुराऽसुरवन्द्यः, कारयिता सर्वधर्मकार्याणाम्। भूयात् त्रिजगच्चक्षु-र्मङ्गलदस्ते सपुत्रायाः ॥२॥ (आर्या)

॥ इति चन्द्र-सूर्यदर्शनमन्त्रः ॥ परि० १-ओ ॥

परिशिष्ट नं. १-औ

अष्टादशअभिषेक बृहद्विधिमां आवता छेल्ला पांच अभिषेकनी विधिः-(पाना नं. १०८ नी टिप्पण)

प्रतिष्ठाकल्पनी विधि प्रमाणे अढार अभिषेक थया बाद बृहद्विधिमां आवता घी, दूध, दहीं, शेरडीनो रस तेमज सर्वौषधिमिश्रित पंचामृतथी पांच अभिषेक करवा होय तो नीचेनी विधि प्रमाणे करावी शकाय छे. छेवटे शुद्धजलनो अभिषेक तो अवश्य करवो.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(१) **घीनो अभिषेकः**–घृतमायुर्वृद्धिकरं, भवति परं जैनदृष्टिसंपर्कात् ।
तद्भगवतोऽभिषेके, पातु घृतं घृतसमुद्रस्य ॥ १ ॥ (आर्या)
ॐ ह्राँ ह्रीँ परमार्हते परमेश्वराय, दुग्धप्रधानपञ्चामृतेन स्नापयामीति स्वाहा ॥
(२) **दूधनो अभिषेकः**–दुग्धं दुग्धाम्भोधे–रुपाहृतं यत् पुरा सुरवरेन्द्रैः ।
तद्बलपुष्टि नेमित्तं, भवतु सतां भगवदभिषेकात् ॥ २ ॥ (आर्या)
ॐ ह्राँ ह्रीँ परमार्हते परमेश्वराय घृतप्रधानपञ्चामृतेन स्नापयामीति स्वाहा ॥
(३) **दहीनो अभिषेकः**–दधि मङ्गलाय सततं; जिनाभिषेकोपयोगतोऽप्यधिकम् ।
भवतु भविनां शिवाऽध्वनि, दधिजलधेराहृतं त्रिदशैः ॥ ३ ॥ (आर्या)
ॐ ह्राँ ह्रीँ परमार्हते परमेश्वराय दधिप्रधानपञ्चामृतेन स्नापयामीति स्वाहा ॥
(४) **शेरडीना रसनो अभिषेकः**–इक्षुरसोदादुपहृत, इक्षुरसः सुरवरैस्त्वदभिषेके ।
भवदवदवथोर्भविनां, जनयतु नित्यं सदानन्दम् ॥ ४ ॥ (आर्या)
ॐ ह्राँ ह्रीँ परमार्हते परमेश्वराय इक्षुरसप्रधानपञ्चामृतेन स्नापयामीति स्वाहा ॥
(५) **सर्वौषधिमिश्रजलाभिषेकः**–सर्वौषधीषु निवसे–दमृतमिह सत्यमर्हदभिषेके ।
तत् सर्वौषधिसहितं, पञ्चामृतमस्तु वः सिद्ध्यै ॥ ५ ॥ (आर्या)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ॐ ह्रां ह्रीं परमार्हते परमेश्वराय सर्वौषधिमिश्रितपञ्चामृतेन स्नापयामीति स्वाहा ॥

(६) शुद्धजलनो अभिषेकः—आ पांच अभिषेक थया बाद नीचेनो श्लोक बोली शुद्धजलनो अभिषेक करवोः—

वृन्दैर्वृन्दारकाणां सुरगिरिशिखरे बद्धसङ्गीतरङ्गै—
श्चक्रे क्षीराब्धिनीरैः स्नपनमहविधि—र्जन्मकाले जिनानाम् ।
सम्यग् भावेन तस्या—ऽनुकृतिमहमपि प्रीतितः कर्तुकामो;
बिम्बं तीर्थेश्वरस्या—ऽमलजलकलशैः सम्प्रति स्नापयामि ॥ १ ॥ (स्रग्धरा)

ॐ ह्रां ह्रीं परमार्हते परमेश्वराय शुद्धजलेन स्नापयामीति स्वाहा ॥

॥ इति पञ्चाभिषेकविधिः ॥ परि. १ लृ ॥

परिशिष्ट नं. १ अं

नामस्थापनविधिः—(पाना नं. ११२ नी टिप्पण)

प्रभुनुं नामस्थापन करतां करवानी विशिष्टविधि केटलीक हस्तलिखित प्रतिष्ठा कल्पमां मले छे. ते विधि अहीं पण करी शकाय छे. ते विधिः—

पित्रादयो गृहस्थगुरुं प्रणामपूर्वकं प्रार्थयन्ति "भगवन् ! नामकरणं क्रियताम्" । लग्नं ग्रहांश्च मुद्रा—फल— ॥२१०॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नैवेद्यादिभिः पूजयित्वा कुलवृद्धा (पितृष्वसा–फईवा) कर्णे परमेष्ठिमंत्रभणनपूर्वकं नाम स्थापयेत् । कुलवृद्धा च जनसमक्षं नाम वर्णयति । पुत्रोत्सङ्गा माता सङ्घश्च जिनं मुद्रा–फल–नैवेद्यादिभिः पूजयित्वा चैत्यवन्दनं करोति इति ॥

॥ इति नामस्थापनविधिः ॥ परि. १ अं ॥

परिशिष्ट नं. १ अ

नवलोकान्तिकदेवोनी विनंतिः—(पाना नं. ११९ नी टिप्पण)

लोकान्तिकदेवोनी विनंतिनुं विधान प्रतिष्ठाकल्पमां आवतुं नथी. परंतु हाल पट्टस्थापनविधि बाद करावाय छे. तो नीचे प्रमाणे करावी शकाय:—

१ सारस्वत; २ आदित्य; ३ वह्नि; ४ वरुण; ५ गर्दतोय; ६ तुषित; ७ अव्याबाध; ८ आग्नेय; ९ अरिष्ट–आ नव लोकान्तिकदेवो प्रभु पासे आवी आ प्रमाणे विनंति करे:—

“ जय जय नन्दा, जय जय भद्दा, भद्दं ते भयवं, सयलजगज्जीवहियं धम्मतित्थं पवत्तेह ” ॥

॥ इति नवलोकान्तिकदेवोनी विनंति ॥ परि० १ अः ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट नं. १ क

कुलमहत्तराहितोपदेशः—(पाना नं. ११९ नी टिप्पण)

दीक्षा प्रसंगे कुलमहत्तरा (धात्रमाता) भगवंतने हितोपदेशगर्भित आशीर्वचन जणावे छे ते अहीं दीक्षाकल्याणक प्रसंगे कही शकाय छे:—

इक्खागकुलसमुप्पन्नेऽसि णं तुमं जाया !; कासवगुत्तेऽसि णं तुमं जाया !; उदितोदितनायकुलनहयलमिअंक !; सिद्धत्थजच्चखत्तअसुएऽसि णं तुमं जाया !; जच्च खत्तिआणीए तिसलाए सुएऽसि णं तुमं जाया !; देविंदनरिंदपहिअकित्तीऽसि णं तुमं जाया !; एत्थ सिग्घं चंकमिअव्वं; गुरुअं आलंबेअव्वं, असिधारमहव्वयं चरिअव्वं जाया !; परक्कमियव्वं जाया !; अस्सिं च णं अट्ठे नो पमाइअव्वं ॥

॥ इति कुलमहत्तराहितोपदेशः ॥ परि० १–क ॥

परिशिष्ट नं. १ ख

अलङ्कारावतरणश्लोकः—(पाना नं. ११९ नी टिप्पण)

दीक्षाकल्याणकमां दीक्षासमये प्रभुजीना अलंकार कल्पसूत्रसुबोधिकामां आवतो नीचेनो श्लोक बोली उतारी शकाय छे :—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अङ्गुलिभ्यश्च मुद्रावलिं पाणितो, वीरवलयं भुजाभ्यां झटित्यङ्गदे ।
हारमथ कण्ठतः कर्णतः कुण्डले, मस्तकान्मुकुटमुन्मुञ्चति श्रीजिनः ॥

॥ इति अलङ्कारावतारणश्लोकः ॥ परि० १–ख ॥

परिशिष्ट नं. १ ग

सर्वविरतिस्वीकारसूत्रम् :—(पाना नं. ११९ नी टिप्पण)

दीक्षाकल्याणकमां प्रभुजीने सर्वविरतिना स्वीकारनी विधि "करेमि सामाइयं" सूत्र बोली करावी शकाय छे :—

करेमि सामाइयं सव्वं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि, न कारवेमि, करंतंपि अन्नं न समणुजाणामि तस्स पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

॥ इति सर्वविरतिस्वीकारसूत्रम् ॥ परि० १–ग ॥

卐

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट नं. १ घ

श्रीदीक्षाकल्याणकचैत्यवन्दनम् :—(पाना नं. १२० नी टिप्पण)

दीक्षाकल्याणकनी विधि थया बाद देववंदन करतां प्रतिष्ठा-कल्पमां दीक्षाकल्याणकनुं चैत्यवंदन आवे छे ते बोली शकाय छे. ते चैत्यवंदन नीचे प्रमाणे छेः—

राज्यं प्राज्यसुखं विमुच्य भगवान् , निःसङ्गतां योऽग्रहीद् ; धन्यैरेष जनैरचिन्त्यमहिमा, विश्वप्रभुर्वीक्ष्यते ।
धर्मध्याननिबद्धबुद्धिरसुहृद्-भक्तेष्वभिन्नाशयो, जाग्रज्ज्ञानचतुष्टयस्तृणमणि-स्वर्णोपलादौ सदृक् ॥ १ ॥ (शार्दूल०)
निसङ्गं विहरन्निदानरहितं, कुर्वन् विचित्रं तपः; सत्पुण्यैरवलोक्यते त्रिजगती-नाथः प्रशान्ताऽऽकृतिः ।
विस्फूर्जन्मदवारिवारणघटं, रङ्गत्तुरङ्गोद्भटं; हर्षोल्लासिविलासिनीव्यतिकरः, निःसीमसम्पद्भरम् ॥ २ ॥ (शार्दूल०)
जय त्रिजगतीपते ! देहिनां श्रीजिन !; प्रसादवशतस्तव, स्फुरतु मे विवेकः परः ।
भवेद् भवविरागिता, भवतु संयमे निर्वृतिः; परार्थकरणोद्यमः, सह गुणार्जनैर्जायताम् ॥ ३ ॥ (पृथ्वी ८-९)
माद्यद्दन्ति-समीर-जित्वरहय-प्रोद्यन्मणी काञ्चन-स्वर्नारीसमरूपभूरिवनिताः, प्रोल्लासिचक्रिश्रियम् ।
यस्त्यक्त्वा तृणवल्ललौ व्रतरमां, तीर्थङ्करः षोडशः; स श्रीशान्तिजिनस्तनोतु भविनां, शान्तिं नताखण्डलः ॥४॥ (शार्दूल०)

॥ इति श्रीदीक्षाकल्याणकचैत्यवन्दनम् पृ. ॥ परि. १-घ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट नं. २-अ-दिक्पालोनी रचना :-
दिक्पालो भगवानने डाबे पडखे स्थापवा

ॐ ईशानाय नमः ८ ईशानकूणे	ॐ इन्द्राय नमः १ पूर्वे	ॐ आग्नेयाय नमः २ अग्निकूणे
ॐ कुबेराय नमः ७ उत्तरदिशि	ॐ ब्रह्मणे नमः ऊर्ध्वे ९ ॐ नागाय नमः अधः १०	ॐ यमाय नमः ३ दक्षिणदिशि
ॐ वायवेयाय नमः वायुकूणे ६	ॐ वरुणाय नमः ५ पश्चिमे	ॐ नैर्ऋतये नमः ४ नैर्ऋतकूणे

परिशिष्ट-नं. २-ब-ग्रहोनी रचना :-
भगवानने जमणे पडखे स्थापवा

ॐ नमो बुधाय ४	ॐ नमः शुक्राय ६	ॐ नमः सोमाय २
ॐ नमो गुरवे ५	ॐ नमः सूर्याय १	ॐ नमो भौमाय ३
ॐ नमः केतवे ९	ॐनमःशनैश्चराय ७	ॐ नमो राहवे ८

परिशिष्ट-नं. २-क अष्टमंगलनी रचना:-
भगवाननी सन्मुख आलेखवां

स्वस्तिक १	श्रीवत्स २	कुम्भ ३	भद्रासन ४
नंद्यावर्त्त ५	वर्धमान ६	दर्पण ७	मत्स्ययुग्म ८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्टं नं. २-ड

—दिक्पालोनां उपकरण—

	नाम	आलेखन	पूजन	फुल	फल	वस्त्र	नैवेद्य	द्रव्यादि
१	इन्द्र	गोरुचंदन	केसर	चंपो	जामफल	पीलुं	मोतीचूर	अक्षत, षात
२	अग्नि	रतांजली	,,	जासुद	राती सोपारी	रातुं	चूरमानो	सोपारी
३	यम	कस्तुरी, चुओ	कंकु	मरवो	काळी सोपारी	काळुं	अडदनो	तांबा ताणुं
४	नैर्ऋत	कस्तुरी	चुओ, सुखड	मालती बोलसीरी	दाडम	उदुं	तलनो	,,
५	वरुण	कस्तुरी, चुओ	,, ,,	बोलसीरी दमणो	दाडम	आसमानी	मगनो	,,
६	वायु	सुखड, केसर कस्तुरी	कस्तुरी वासुचुओ	दमणो, चंपक	नारंगी, केळां	नीलुं	मगनो	,,
७	कुबेर	सुखड, बरास	सुखड, बरास	जुइ, सेवंत्रा	बीजोरुं	श्वेत	घेबर	,,
८	ईशान	सुखड	सुखड	कुमुद	सेलडी	,,	घेसोंदळ	,,
९	ब्रह्म	सुखड, कर्पूर	,,	सेवंत्रा	बीजोरुं	,,	घेबर	,,
१०	नाग	सुखड, दूध	,,	मोगरो	उजळी बदाम	,,	पेंडा	,,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट नं. २-इ

ग्रहोनी स्थापनानो आकार तथा उपकरणः—

नंबर	ग्रहनाम	आकार	आलेख	दिशा	गोठवण	कापड	लाडु	फुल
१	सूर्य	मंडलाकार	रतांजली	पूर्वसन्मुख	मध्यमां	लाल	घउंनादळनो	लाल कणेर
२	चंद्र	चोरस	सुखड	पश्चिमसन्मुख	अग्निकूणे	धोळुं	ममरानो	चंद्रविकाशी कुमुद वा मोगरो
३	मंगल	त्रिकोण	रतांजली	उत्तरसन्मुख	दक्षिणदिशामां	लाल	गोळधाणीनो	जासुद
४	बुध	बाणाकार	सुखड, केसर	दक्षिणसन्मुख	ईशानकूणे	लीलुं	मगनो	जुइ वा चमेली
५	गुरु	पाटीनाआकारे	गोरुचंदन	उत्तरसन्मुख	उत्तरदिशामां	पीलुं	चणानी दालनो	चंपो
६	शुक्र	पंचखुण	सुखड	पूर्वसन्मुख	पूर्वदिशामां	सफेद	पीसेला चोखानो	सेवंत्रानां
७	शनि	धनुषाकार	कस्तुरी, चुवो	पश्चिमसन्मुख	पश्चिमदिशामां	गलीरंगजेवुं	अडदमगनो साथे	बावळनां
८	राहु	सूर्पाकार	कस्तुरी, चुवो	दक्षिणसन्मुख	नैऋत्यकूणे	काळुं	अडदनो	मचकुंद
९	केतु	ध्वजाकार	यक्षकर्दम	दक्षिणसन्मुख	वायव्यकूणे	छींट	अडद-मग-चणा-ममरानो साथे	पंचरंगी

सूचना :—नवे य ग्रहो माटे—अधेलां, सोपारी, अक्षत, चंदन, धूप अने दक्षिणा ए नव नव लेवां.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट नं. ३ मंडप-वेदिकानुं मापः—

अञ्जनशलाका-प्रतिष्ठामहोत्सवमां प्रतिष्ठामंडप के अधिवासनामंडप पण एक आवश्यक अंग छे. पूर्वकालमां प्रतिष्ठा-मंडप के वेदिका समचोरस, चतुर्मुख थता अने लंबाई-पहोलाईनुं माप प्रतिष्ठाप्य प्रतिमाना प्रमाणने अनुसारे न्हाना-मोटां बनता. पूज्य श्रीपादलिप्तसूरिकृतनिर्वाणकलिकामां जणाव्युं छे के-

“स च षष्ठाष्टमादितपोविशेषं विधाय कारापकानुकूले लग्ने हस्तादारभ्य नवहस्तान्तानां प्रतिमानामाद्यासु तिसृषु अष्ट-नव-दशहस्तमितरासु चतुर्हस्तादिप्रतिमासु हस्तद्वयवृद्ध्या, यद्वा एकहस्तादिक्रमेणैव द्वादशद्विहस्तवृद्ध्या प्रागेव मण्डपं प्रासादस्याग्रतः कारयित्वा तस्य च प्राच्यामीशान्यां वा स्नानमण्डपमधिवासनामण्डपार्घेन निवेश्य लघुप्रतिमासु पञ्च-षट् - सप्तहस्तानि तोरणानि, इतरासु च वसुवेदाङ्गुलाग्राणि न्यग्रोधोदुम्बराश्वत्थप्लक्षद्रुमसमुद्भवानि पूर्वादारभ्य शान्ति-भूति-बलाऽरोग्यसंज्ञकानि तोरणान्यस्त्रशुद्धानि वर्मावगुण्ठितानि प्रणवेन विन्यस्य हृन्मन्त्रैः स्वनामभिरभ्यर्च्य तच्छाखयोर्मेघमहा-मेघौ कालनीलौ जलाजलौ अचलभूलितौ प्रणवादिस्वाहान्तैः स्वनामभिः संपूज्य, ततो द्वारेषु कमलश्वेत-इन्द्रप्रायरक्त-कृष्ण-नीलमेघ-पीतपञ्चवर्णाः पताकाश्च दत्त्वा मध्ये श्वेतचित्रे वा ध्वजे सम्पूज्य पाश्चात्यद्वारेण प्रविशेत् ।”

ते आचार्य भगवंत छट्ठ-अट्ठमादिक तपविशेष करी प्रतिष्ठाकारकने चन्द्रबल पहोचतुं होय तेवा अनुकूल शुभमुहूर्त अने शुभलग्ने प्रतिष्ठामंडप बनाववानो कार्यारंभ करवो. तेमां जो प्रतिष्ठाप्य प्रतिमानी ऊंचाई जो १-२ के ३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हाथनी होय तो तेने योग्य प्रतिष्ठामंडप अनुक्रमे ८-९-१० हाथ लांबो-पहोलो होवो जोइये. ४-५-६-७-८-९ हाथनी प्रतिमा होय तो मंडप बे हाथनी वृद्धिथी एटले अनुक्रमे १२-१४-१६-१८-१९-२०-२२ हाथ लांबो पहोलो होवो जोइये अथवा १ थी ९ हाथ सुधी प्रतिमाने योग्य मंडप १२ हाथथी लइने बे बे हाथ वधारता २८ हाथ सुधीनो मंडप जिनालयनी आगल करवो. (९हाथथी मोटी प्रतिमा होती नथी.) अने त्यार बाद प्रतिष्ठामंडपनी पूर्व के ईशानदिशामां स्नानमण्डप अधिवासनामंडपनी लंबाई-पहोलाईथी अडधा मापनो करवो. तोरणोनी ऊंचाई मंडपमां स्थापित थनार प्रतिमा जो १-२-३ हाथनी होय अने मंडप तेने अनुरूप बनावेल होय तो तोरणो अनुक्रमे ५-६-७ हाथ ऊंचा होवा जोइये-प्रतिमा जो तेथी मोटा होय तो ७ हाथ उपर ८ अंगुल, १२ अंगुल विशेष ए रीते लेवा. पूर्वादि दिशाना तोरणो वड, उंबर, पारस-पीपल अने पीपलमांथी बनावेला अने शांति-भूति-बल-आरोग्य नामना होय छे. तेमनी ते ते नामयुक्त मंत्रोथी पूजा करी, तेनी बे बे शाखाओ अनुक्रमे मेघ-महामेघ, काल-नील; जल-अजल; अचल-भूलित नामनी राखी नामयुक्तमंत्रोथी पूजी-चारे द्वारो उपर श्वेत, रक्त, नील, पीतवर्णनी ध्वजाओ रची पूजी सन्मुखदरवाजेथी प्रवेश करवो.

आ रीते मंडप-वेदिकानुं विशिष्ट वर्णन विविधप्रतिष्ठाकल्पोमां आवे छे. किंतु वर्तमानकाळमां तो स्थाननी अनुकूलता, नूतनबिंबोनी संख्या अने गुरुभगवंत तथा विधिकारकनी सूचनानुसार मंडप-वेदिकानी रचना थाय छे. लंबाई-पहोलाई बंने विषम (एकी) संख्यामां लेवी. शुभदिवसे तथा शुभसमये बनाववानो प्रारंभ करी महोत्सवना प्रारंभमां मंगल-मुहूर्ते तेना उपर प्रभुजी पधराववामां आवे छे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट नं. ४-विविध २५ मुद्राओनुं स्वरूपः—

अंजनशलाका-प्रतिष्ठा, अढार अभिषेक, ध्वजदंडप्रतिष्ठा; परिकरप्रतिष्ठा वासक्षेपमंत्रवा वगेरे विधिओमां मुद्राओनो खास उपयोग थाय छे. ते गुरुगमथी योग्य अधिकारीओए जाणवी. तेनुं सामान्य स्वरूप आ परिशिष्ट नं. ४मां बतावेल छे.।

१ जिनमुद्रा

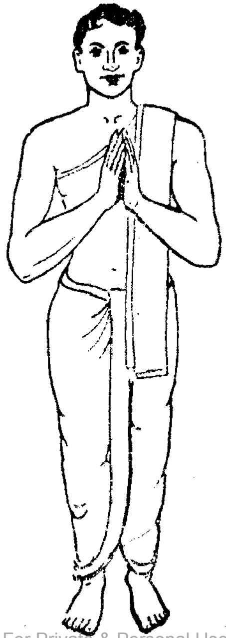

चत्तारि अंगुलाइं; पुरओ उणाइं जत्थपच्छिमओ ।
पायाणं उस्सग्गो, एसा पुण होइ जिणमुद्दा ॥

चार आंगल (जेटलुं अंतर-बे पगना) आगलना भागमां; तेथी ओछा आंगल (जेटलुं अंतर) पाछलना भागमां राखी बे पगथी काउसग्ग करवो (बंने पगे सीधा ऊभा रहेवुं.) ए रीते जिनमुद्रा थाय छे. ॥१॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२ परमेष्ठिमुद्राः-

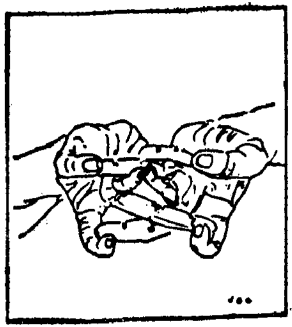

३ गरुडमुद्राः-

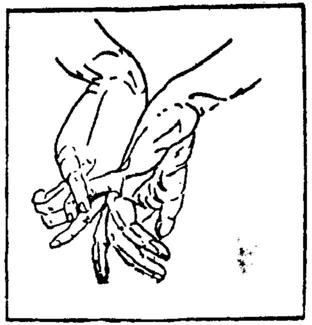

४ मुक्ताशुक्तिमुद्राः-

२ उत्तानहस्तद्वयेन वेणीबन्धं विधायाऽङ्गुष्ठाभ्यां कनिष्ठे, तर्जनीभ्यां मध्यमे संगृह्य अनामिके समीकुर्यादिति परमेष्ठिमुद्रा ॥
बे हाथ अवला राखी आंगलीओनो वेणीबंध करी बे अंगुठा वडे बे कनिष्ठाने अने बे तर्जनी वडे बे मध्यमाने जोडी बे अनामिकाने ऊभी करवी ते परमेष्ठिमुद्रा ॥२॥

३ आत्मनोऽभिमुखदक्षिणहस्तकनिष्ठिकया वामकनिष्ठिकां संगृह्य अधः परावर्तितहस्ताभ्यां गरुडमुद्रा ॥
बे हाथ अवला भेगा करी जमणा हाथनी कनिष्ठा वडे डाबा हाथनी कनिष्ठाने पकडी बाकीनी छ आंगलीओ छूटी राखी हाथ उंधो करवो ते गरुडमुद्रा ॥३॥

४ मुत्तासुत्तिमुद्दा जत्थ समा दोवि गब्भिया हत्था । ते पुण निलाडदेसे, लग्गा अन्ने अलग्गत्ति ॥
सवला बे हाथ भेगा करी मोतीनी छीप जेवो देखाव करी ललाटमां लगाडवा अथवा नही लगाडवा ते मुक्ताशुक्तिमुद्रा ॥४॥ ॥२२१।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५ धेनुमुद्राः–

६ पद्ममुद्राः–

७ अंजलिमुद्राः–

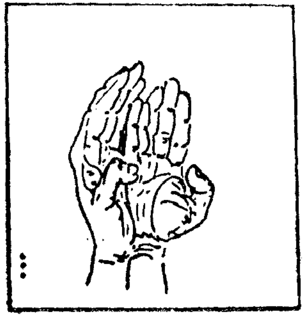

५ अन्योऽन्यग्रथिताङ्गुलीषु कनिष्ठानामिकयोः मध्यमातर्जन्यो श्च संयोजनेन गोस्तनाकारो धेनुमुद्रा (सुरभिमुद्रा) ॥
परस्पर गुंथेली आंगलीमां कनिष्ठा अने अनामिकामां मध्यमा अने तर्जनीने जोडवाथी गायना स्तनना जेवा आकारवाळी धेनुमुद्रा ॥५॥

६ पद्माकारौ करौ कृत्वा मध्येऽङ्गुष्ठौ कर्णिकाकारौ विन्यसेदिति पद्ममुद्रा ॥
पद्मना आकारे सवळा बे हाथनी आंगलीओ राखी वचमां बे अंगुठा भेगा करी कर्णिकाकारे राखवा ते पद्ममुद्रा ॥६॥

७ उत्तानौ किञ्चिदञ्चितकरशाखौ पाणी विधाय धारयेदिति अंजलिमुद्रा ॥
लांबा करेला परंतु हाथनी आंगलीओने कंइक वांकी वाळीने बे हाथ राखवा ते अंजलिमुद्रा ॥७॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८ चक्रमुद्राः-

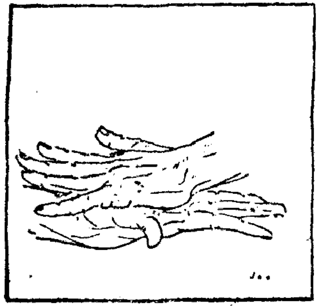

९ आसनमुद्राः-

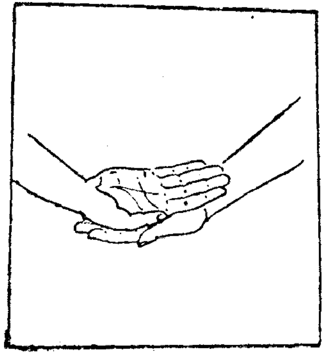

१० सौभाग्यमुद्राः-

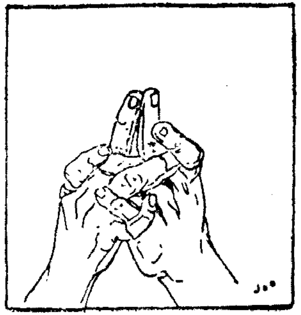

८ वामहस्ततले दक्षिणहस्तमूलं निवेश्य करशाखां विरलीकृत्य प्रसारयेदिति **चक्रमुद्रा** ॥
डाबा हाथना तलिये जमणा हाथना मूलने मूकी आंगलीओने अलग करी फेलाववी ते **चक्रमुद्रा** ॥८॥

९ हस्तेलिकोपरि हस्तेलिका कार्या इति **आसनमुद्रा** । हथेली उपर हथेली राखवी ते **आसनमुद्रा** ॥९॥

१० परस्पराभिमुखौ ग्रथिताङ्गुलिकौ करौ कृत्वा तर्जनीभ्याम् अनामिके गृहीत्वा मध्यमे प्रसार्य तन्मध्याङ्गुष्ठद्वयं निक्षिपेदिति **सौभाग्यमुद्रा** ॥

सवला बे हाथ भेगा करी आंगलीओ गुंथी तर्जनी वडे अनामिकाने ग्रहण करी मध्यमाने पहोली करी तेना मूलमां अंगुठा राखवा ते **सौभाग्यमुद्रा** ॥१०॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

११ मुद्‌गरमुद्राः–

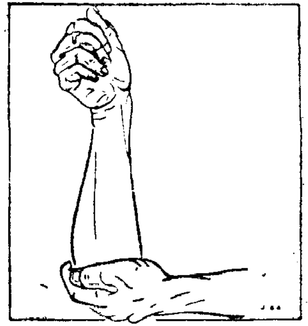

१२ वज्रमुद्राः–

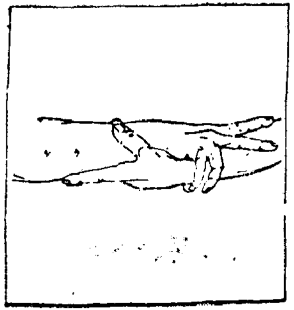

१३ प्रवचनमुद्राः–

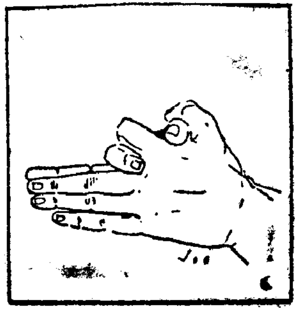

११ तिर्यक्कृतवामहस्तोपरि ऊर्ध्वीकृतदक्षिणकरः मुद्‌गरमुद्रा ॥११॥
तिरछो राखेल डाबाहाथनी हथेली पर जमणो हाथ ऊभो करवो ते मुद्‌गरमुद्रा ।

१२ वामहस्तस्योपरि दक्षिणकरं कृत्वा कनिष्ठिकाङ्गुष्ठाभ्यां मणिबन्धं वेष्टयित्वा शेषाङ्गुलीनां विस्फारितप्रसारणेन वज्रमुद्रा॥
डाबा हाथ ऊपर जमणो हाथ मूकी कनिष्ठा अने अंगुठा वडे मणिबंध वींटी बाकीनी आंगलीओ विस्फारित करवी ते वज्रमुद्रा ॥१२॥

१३ अङ्गुलीत्रिकं सरलीकृत्य तर्जन्यङ्गुष्ठौ मेलयित्वा हृदयाग्रे धारयेदिति प्रवचनमुद्रा ।
बन्ने हाथनी त्रण त्रण आंगलीओ सीधी करी तर्जनी अने अंगुठाने जोडी हृदय आगल धारण करवुं ते प्रवचनमुद्रा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१४ गणधरमुद्राः-

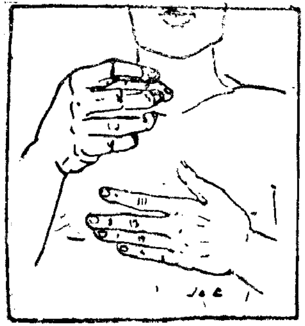

१५ अंकुशमुद्राः-

१६ मीनमुद्राः-

१४ यत्र दक्षिणहस्तो हृदयसन्निहितो मालान्वितः, वामभुजश्च तिरश्चीनः-सा **गणधरमुद्रा** ॥
मालाथी युक्त जमणो हाथ हृदय सन्मुख राखी डाबो हाथ तीर्छो (पलांठीमां) राखवो ते **गणधरमुद्रा** ॥१४॥

१५ दक्षिणहस्तस्य तर्जनीं प्रसार्य मध्यमाया इषद्वक्रकरणे अङ्कुशमुद्रा ॥
जमणा हाथनी तर्जनी आंगलीने लांबी करी मध्यमाने थोडी आंकडानी जेम वालवी ते **अंकुशमुद्रा** ॥१५॥

१६ वामहस्तपृष्ठोपरि दक्षिणहस्ततलं निवेश्याङ्गुष्ठद्वयचालनेन मीनमुद्रा ॥
डावा हाथनी पीठ पर जमणा हाथनुं तलीयुं स्थापन करी बन्ने अंगुठा फरकाववा ते **मीन (मत्स्य) मुद्रा** ॥१६॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१७ कूर्ममुद्राः-

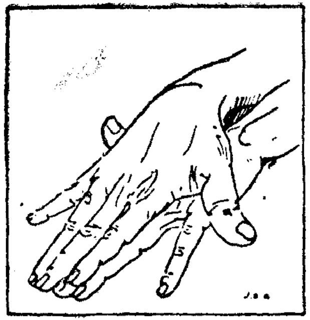

१८ तर्जनीमुद्राः-

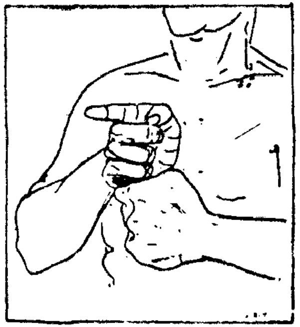

१९ अस्त्रमुद्राः-

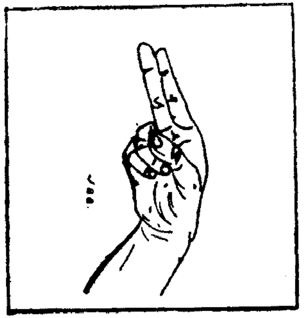

१७ वामहस्तस्य मध्यमत्र्यङ्गुल्युपरि दक्षिणहस्तस्य मध्यमत्र्यङ्गुलीस्थापनेन द्वयोर्हस्तयोश्चाङ्गुष्ठकनिष्ठिकाश्चालनीया इति कूर्ममुद्रा ॥ डावा हाथनी वचली त्रण आंगलीओ पर जमणा हाथनी वचली त्रण आंगलीओ स्थापी बन्ने हाथनी कनिष्ठिका अने अंगुठाने फरकाववो-ते कूर्ममुद्रा ॥१७॥

१८ वामकरः संहताङ्गुलिहृदयाग्रे निवेश्योपरि दक्षिणकरेण मुष्टिं बद्धवा तर्जनीमुर्ध्वीकुर्यादिति-तर्जनीमुद्रा ॥ संकोचेली आंगलीओवाला डावा हाथने हृदयनी आगल धारण करी तेना उपर जमणा हाथनी मूठी वाली तर्जनी आंगली सामे राखी बतावવી ते तर्जनीमुद्रा ॥१८॥

१९ दक्षिणमुष्टिं बद्धवा तर्जनीमध्यमे प्रसारयेदिति अस्त्रमुद्रा ॥
जमणा हाथनी मूठी वाली तर्जनी अने मध्यमाने लांबी करवी ते अस्त्रमुद्रा ॥१९॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२० **पर्वतमुद्राः-**

बन्ने हाथनी अनामिका अने मध्यमा परस्पर विपरीतमुखी करी ऊंची करीने जोडवी अने बाकीनी आंगलीओने नीचेनी बाजुए राखवी ते **पर्वतमुद्रा** ॥२०॥

२१ **आह्वानमुद्राः-**

बे हाथ वडे अंजलि करीने अनामिकाना मूलना पर्व साथे अंगुठाने जोडवो ते **आह्वानमुद्रा** ॥२१॥

२२ **स्थापनमुद्राः-**

आह्वानमुद्राने नीचा मुखवाली करतां **स्थापनमुद्रा** बने छे ॥२२॥

२३ **सन्निधापनमुद्रा :-**

बंने हाथनी मूठी वाली भेगी करी अंगुठाने उंचा करवा ते **सन्निधापनमुद्रा** ॥२३॥

२४ **सन्निरोधनमुद्राः-**

बंने हाथनी मूठी वाली अंगुठाने अंदर राखवो ते **सन्निरोधनमुद्रा** ॥२४॥

२५ **अवगुण्ठनमुद्राः-**

बंने हाथनी मूठी वाली फेलावेली तर्जनी अने मध्यमाना उपर अंगुठा मूकवा ते **अवगुण्ठनमुद्रा** ॥२५॥

॥ इति २५ मुद्राओनुं स्वरूप ॥ परिशिष्ट नं. ४ ॥

॥२२७॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट नं. ५

जळ यात्राना सामाननी यादी

पाटला नंग ५	धूंप अधोळ	लीला ककडा नंग ४	पाटला पूजनना ३
कळश नंग ४	अगरबत्ती	गजीयाणीना	बाजठ ३
दूध तथा दहीं	चोखा शेर एक	पाणीनो देगडो	साकर
केशरनी वाडकी	घी शेर एक	कपूर	नाडानो दडो त्रण तारनो
गळणुं	पेंडा नंग १३	पाट लूछणां नंग २	सिंहासन
खाली वाडकी	बरफी नंग १३	आरती मंगळदीवो	प्रतिमाजी
दोरी लोटो	खाजु १	वासक्षेप	रकाबी ४
बेडीयां नंग ४	लाडु नंग १५	वरख	छुटा पैसा ६४
घंटडी चामर	संतरां नंग ११	पंच रत्ननी पो. नं. ४	परचुरण रु. त्रणनुं
अंग लूछणां २	दाडम नंग ११	सोपारी नंग ६०	रु. २१ रोकडा
दर्पण धूपधाणुं	केळां नंग १५	पान नंग ७०	थाळी वेलण
छुटां फूल तथा हार	श्रीफळ नंग १२	पतासां नंग ५०	अत्तरनी शीशी
हाथ फानस	लूण ने माटी	बाकळा शेर ३	दिवासळीनी पेटी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट नं. ६ कुंभस्थापनादि अंजनशलाकानी विधिओनी सामग्रीनुं लिष्ट :- (पाना नं. १८ नी टिप्पण)

कुंभस्थापनना सामाननी यादी

कुंभ रातो	श्रीफल नंग २	वांसना जवार नंग ४	पंच रत्ननी पोटली ३
सुखड घसेली	डांगर शेर ३	तांबानु कोडियुं नंग १	रोकडा रुपिया १३
केशर घसेलुं	डांगरना छालां शेर ३	फानस नंग २. १ मोटुं १ नानुं	छुटा पैसा ७०
सोपारी नंग ५०	छाणानो भूको मण ०॥	वाटी नंग १	मींढळ मरडासींग ९
पान नंग १५	माटीनो भूको मण ०॥	गायनुं घी शेर ५	डाभ साथे बांधेला
लीली धरो	नाडानो दडो त्रण तारनो	वासक्षेप	तास्तुं लीलुं गज ०॥
फुलनी माळा तथा छूटां फूल	कंकु वाटकी	सरावळा नंग ४	खाली वाडकी नंग ५

नंद्यावर्तपूजनना सामाननी यादी

पट	पतासां	सोपारी	वासक्षेप	घी
कळश १०८-	पैसा ६०	बदाम	श्रीफल	दूध
नाळचानो	पान	नैवेद्य	केसर	वरघडा नंग ४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चोखा शेर ५।	बे लीला ककडा	पुरी नंग ७	बांट
रुपिया २१	बे पीला ककडा	कंसार	खीर
सोपारी	चुरमाना लाडु ७	करंबो	भात

नवग्रह-दशदिक्पाल-अष्टमंगलपूजनना सामाननी यादी

रतांजली	मरचकंकोल	मोगरो मरवो	वस्त्र लीलां ३	गोळ धाणी लाडु नंग ५
सुखड	अंबर	जायसेवंती	वस्त्र सफेद १४	ममराना लाडु नंग ५
केशर	वासक्षेप	राती करण	पंच पटो	मगनी दाळना लाडु नंग ५
बरास	कंकु	पीळी करण	वस्त्र वादळी	चणानी दाळना लाडु नंग ५
कस्तूरी	गायनुं दूध	जुइ, गुलाब	पीळी साडी	कळीना लाडु नंग ९
गोरुचंदन	सोनाना वरख	मचकुंद	सफेद साडी	खाजां ३, घेबर ३
चुवो	चंपाना फूल	वस्त्र पीळा २	धूप शेर ०॥	अडदनी दाळना लाडु नंग ३
अगर	जासूद	वस्त्र रातां ३	हाथ फानस २	काळा तलना लाडु नंग ५
हिंगळोक	डमरो	वस्त्र काळां ३	बाकळा शेर ३	पेंडा ७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पान ५०	अखरोट ३५	शेरडीना ककडा	श्रीफळ ७	एलची १ रुपियाभार
सोपारीना ककडा	आलु ३५	राती सोपारी १५	दाडम ५, रु. २७	पीस्तां चारोळी
खारेकना ककडा	अंजीर ३५	काळी सोपारी ५	कमरक, पैसा ६०	चोखा शेर ३
कोपराना ककडा	कमर काकडी	नारंगी ५	जावंत्री दोढ	पाटला नंग २०
साकर	केळां १०	सीताफळ ५	रुपियाभार	रकाबी २०
सोपारी ६०	जायफळ ३५	बीजोरा ३	तज दोढ रुपियाभार	वाडकी २०
बदाम ४०	पतासां ३५	जामफळ ५	लविंग १ आनी	

स्नात्रना सामानती यादी

दहीं गायनुं शेर	धूप, लीलां फळ	घंटडी	चामर, दर्पण	रु. ३ रोकडा
साकरना ककडा नंग १०	श्रीफळ नंग २	लूण माटी	वरख, अत्तर	छुटा पैसा ४०
चोखा शेर ३	कपूरनी गोटीओ	आरती, मंगळदीवो	कळश नंग ४	नाडुं
केशर, बरास	पेंडा नंग ५	थाळी, वेलण	पंखा नंग २	खाली, वाडकी

॥२३१॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिद्धचक्रपूजनना सामाननी यादी

नाळीएर गोटा नंग १०	छुटां फुल	चोखा शेर २॥	सिद्धचक्रजीना मांडला
पान नंग १०	केशर, बरास	वासक्षेप	माटे चोखा वि० धान्य
फळ नंग १०	धूप, वरख	रुपिया २५	तथा रंगो.
नैवेद्य नंग १०	दूध शेर १।	पैसा ६४	

वीशस्थानकपूजनना सामाननी यादी

नाळीएरना गोटा नंग २१	छुटां फुल	वरख	रुपिया ३५
पान नंग २१	केसर	दूध शेर २॥	पैसा ६४
फळ नंग २१	बरास	चोखा शेर २॥	वीशस्थानकना मांडला
नैवेद्य नंग २१	धूप	वासक्षेप	माटे चोखा तथा रंगो

च्यवनकल्याणकना सामाननी यादी

पाणी भरवानो नळो नंग १, दूध मण ०॥, वासक्षेप, इन्द्र इन्द्राणी माटे मुगट तथा आभरण, गुरुपूजा माटे वस्त्र (कामळ), धर्माचार्य माटे पूजननी जोड (रेशमी), चौद स्वप्न.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जन्मकल्याणकना सामाननी यादी

चामर ८	कळथी	फुलना हार १००	धूप, रु. ५१
दर्पण ८	राई	वेणी १००	बरास, पैसा १०८
पंखा ८	जव	गजरा १००	सुखडनुं तेल
कळश ८	सरसव	केळनां घर ३	अंगलुछणां
झारी ८	कांग	बाजोठ	रक्षा पोटली
पुंजणी ८	अडद	सुखडनां लाकडां	रूपाना चोखा
फानस ८	वृषभ कळश २	अरणीनुं लाकडुं	अरीठानी माळा
शण	दूध मण १	केसर	जवनी माळा

लेखशाळाना सामाननी यादी

स्लेट पेन	कागळ	फाउन्टनपेम	पुस्तको विगेरे
खडीया	हॉलडर	नोटबुक	गोळ धाणा, रु. २१

विवाहना सामाननी यादी

घसेली सुखड मोटो वाडको	मरडासींग बांधेलां मींढळ	मेवो	चोरीमंडप

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नवग्रहनुं नैवेद्य	जवारासहित वरघडां	केसर	धूप
,, नां फळ	पोंखणां, रु. ५१	बरास	चोखंडो दीवडो
श्रीफळ	बाजोठ, पैसा ५१	वासक्षेप	लालकपडुं (कसुंबो)

राज्याभिषेकना सामाननी यादी

छडी	चामर	छत्र	तिलक करनार कुमारिका	भेट रु. ५१

दीक्षाकल्याणकना सामाननी यादी

रेशमी वस्त्र	सुखड	केसर	जलनो कलश	धूप	फुल.

केवल तथा मोक्षकल्याणकना सामाननी यादी

केसर,	रु. ५१	दहींनुं पात्र	सोनानी वाडकी	अञ्जन माटे	घी	,,
धूप,	सोनामहोर	दूध	सोनानी सळी	,,	प्रवाल	,,
सुखड		नवांगी सुवर्ण पूजन	सुरमो	,,	मध	,,
वासक्षेप		बली बाकुला, नैवेद्य	बरास	,,	(साकरनी चासणी)	
फुल		चोखा शेर ११।	कस्तूरी	,,	३६० करियाणानो पडो	
घीनुं पात्र		(गाथा भणी उछाळवा)	मोती	,,	पोंखणां	

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रतिष्ठाने लगता सामाननी यादी

न्हवणयोग्य नाना कळश ८	अर्घ्ययोग्य सोनानी रकाबी १	मींढळ
पाणी राखवाना घडा ९	सोनानां कंकण ५	मरडासींग
कुंडी २	सोनानी वींटी ५	जवनी माळा
नंद्यावर्त्तयोग्य वरघडा ४	रूपानी वाटकी २	अरीठानी माळा
पोंखणाने लगता घडा ४	सोनानुं कचोळुं १	धोळा सरसव
शरावलां ३२	सोनानी सळी १	लोखंड अछेदित
सातधान्यना वलययोग्य कुंडां ८	राता रंगनो सुरमो, साकर, बरास,	रक्षा पोटली
नंद्यावर्त्तयोग्य सेवनना पाटला २	कस्तूरी, मोती, मुंगीयो, चूनी, सोनुं,	दहीं
दशीवाळां वस्त्र कोरा अखंड ४	रूपुं अने घी मेळवी अञ्जन बनाववुं.	अक्षत
[१ नंद्यावर्त्तयोग्य, २ बिंबप्रतिष्ठायोग्य,	प्रियंगु, कपूर, गोरुचंद-हथेलीमां मूकवां	घी
३ गुरुयोग्य, ४ नंद्यावर्त्त लेखकन]	पंचरत्ननी पोटलीओ-बिंबनी आंग-	डाभ
कळश सोनानो १	लीए बांधवा-बिंब होय तेटली.	अर्घ्य राखवानुं
,, रूपाना ८	आरीसो १	वासण
थाळ सोनानो १	माइसाडी-कुसुंबी वस्त्र १	नाडाछडी

५ दरेक वस्तु दरेक जिन-
बिंब माटे जुदी जुदी जोइए
एटले जेटला जिनबिंब
तेटली वस्तुओ लेवी.

पुंखणां:- त्राक
धोंसरुं
मुसल
रवैयो
तीर
इंडापींडी
शरावसंपुट

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पोंखनार स्त्री तथा मोड		समुद्रफीण	चामर ८	धोळो वासक्षेप	सुंवाळी
दशांग धूप शेर ०॥		कुआ नदी सरोवर	आरीसा ८	पीळो ,,	लाडु
गंगानुं पाणी, दरेक जातनां फुल		वाव वि. १०८	वींझणा ८	केसर, कपूर, कस्तूरी	मांडा
समूल डाभ, अखंड चोखाना थाळ २		जलाशयोनां पाणी	कळश ८	लगाडेलां चोरीनां	खीर
गंगानी रेती,	घंट २	३६०करीयाणानो पडो १	दीवी ४	वासण ३२	लापसी
,, माटी,	छत्र ३	लोटा २	वाजित्र	सुखड घसेली जाडी	

पहेलो बलि—–लाडु मगना ५, लाडु तलना ५, लाडु चणाना ५, लाडु थुलीना ५, लाडु गोलधाणीना ५ (एम लाडु २५)
कूर, दहीं, करंबो, पुरी, पुडला, खीर, वडां, लाडवा.

बीजा बलिदान माटे–शणनां बीज, कळथी, मसुर, जव, कांग, अडद, सरसव.

बीजा बलि माटे सातधान–शाली, जव, घउं, मग, वाल, चणा, चोळा.

त्रीजा बलि माटे फळ–नाळीएर, सोपारी, खारेक, द्राक्ष, बदाम, अखरोट, पिस्तां, साकर,
फलोरी, दाडम, जामफल, बीजोरां, केरी, केळां, रायण, नारंगी.

ए रीते त्रण प्रकारना बली बाकुला प्रतिष्ठा वखते राखवा.

टोपरां सर्वजातनी सुखडी घीनो वाटको दहींनो वाटको दूधनो वाटको ॥२३६॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अञ्जन
प्र. कल्प

||२३७||

अंदर श्रीफळ नाखेलो शेर ५नो लाडु | धूप माटे अगर, अगरबत्ती | मोटा ध्वज २
सोनानां फुल १०८, रूपानां फुल १०८ | नानी ध्वजा २४ | पंचवर्णी इन्द्रध्वज १

परिशिष्ट नं. ७ –: अढार अभिषेकमां आवती खासखास ओषधिओनी यादी :–(पाना नं. ९४ नी टिप्पण)

(३) **कषायचूर्णः**–(१) पीपर, २ पीपली; ३ शिरीष; ४ उंबर; ५ वड; ६ चंपक; ७ अशोक; ८ आम्र; ९ जंबु, १० बकुल, ११ अर्जुन, १२ पाटल, १३ बीली, १४ दाडम, १५ केवडां, १६ नारिंग.

(४) **मंगलमृत्तिकाः**–१ हाथीना दांतनी, २ बळदना शिंगडानी, ३ पर्वतनी, ४ उदेहीनी, ५ नदीना कांठानी, ६ नदीओना संगमनी, ७ सरोवरनी, ८ तीर्थनी.

(५) **सदौषधिः**–१ सहदेवी, २ सतावरी, ३ कुंआर, ४ वालो, ५ मोटी नानी रिंगणी, ६ मोरशिखा, ७ अंकोल, ८ शंखावली, ९ लक्ष्मणा, १० आजोकाजो, ११ थोर, १२ तुलसी, १३ मरवो, १४ कुंभी, १५ गली, १६ सरपंखो, १७ राजहंसी, १८ पीठवणी, १९ शालवणी, २० गंधनोली, २१ महानीली.

(६) **अष्टवर्ग १ लोः**–१ उपलोट, २ वज्र, ३ कोट, ४ हीरागीनां मूळ, ५ देवदार, ६ जेठीमध, ७ दुर्वा, ८ ऋद्धिवृद्धि.
(७) **अष्टवर्ग २ जोः**–१ पतंजारी, २ विदारिकंद, ३ कचूरो, ४ कपूरकाचली, ५ नखला, ७ ६ कंकोडी, ७ खीरकंद, ८ मुसली–काळी (धोळी).

||२३७||

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(८) सर्वौषधिः-१ प्रियंगु, २ हलदर, ३ वज्र, ४ सूचा, ५ वालो, ६ मोथ, ७ अतिकली, ८ मुरमांसी, ९ जटमांसी, १० उपलोट, ११ एलची, १२ लवंग, १३ तज, १४ तमालपत्र, १५ नागकेसर, १६ जायफल, १७ जावंत्री, १८ कंकोल, १९ सेलारस, २० चंदन, २१ अगर, २२ पत्रज, २३ छड, २४ निखला, २५ घउंला, २६ कचुरो, २७ विरहाली, २८ छडोली, २९ मरचकंकोल, ३० वरधारो, ३१ आसंधि, ३२ वडीऔषधि, ३३ सहस्रमूली.

(१०) सुगंधौषधिः-१ अम्बर, २ वालो, ३ उपलोट, ४ कुष्ट, ५ देवदारु, ६ मुरमांसी, ७ वास, ८ चन्दन, ९ अगर, १० कस्तूरी, ११ कपूर, १२ एलची, १३ लवङ्ग, १४ जायफल, १५ जावंत्री, १६ गोरोचन, १७ केसर.

परिशिष्ट नं. ८

— ३६० करीयाणानी यादी — (पाना नं. १३७ नी टिप्पण)

मदनादिगणः-	महानिम्ब	कुटज	वेतस	कोशातकी
मदनफल	बिम्बी	इन्द्रयव	निचुल	राजकोशातकी
मधुयष्टी	इन्द्रवारुणी	मूर्वा	चित्रक	करञ्ज
तुम्बी	स्थूलेन्द्रवारुणी	देवदाली	दन्ती	चिरबिल्ल
निम्ब	कर्कटी	विडङ्गफल	उन्दरकर्णी	पिप्पली

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पिप्पलीमूल
सैन्धव
सौवर्चल
कृष्णसौवर्चल
विडलवण
पाक्यलवण
समुद्रलवण
यवक्षार
रोमक
स्वर्जिका
वचा
एला
क्षुद्रैला
बृहदेला

त्रुटि
महात्रुटि
सर्षप
आसुरी
कृष्णसर्षप

कुम्भादिगणः-
त्रिवीज
मालविनी
त्रिफला
स्नुही
शङ्खपुष्पी
नीलिनी
रोध्र
बृहद्रोध्र

कृतमाल
कम्पिल्लक
स्वर्णक्षीरी

कुष्ठादिगणः-
कुष्ठ
बिल्व
काश्मरी
अरणी
अरणिका
पाटला
कुबेराक्षी
सेनाक
कण्टकारिका
क्षुद्रकण्टकारिका

शालीपर्णी
पृश्निपर्णी
गोक्षारु
देवदारु
रास्ना
यव
शतपुष्पी
कुलत्थ
माक्षिक
पौत्तिक
क्षौद्र
सित्थुक
शर्करा

वेल्लादिगणः-
अपामर्ग
त्रिकटु
नागकेशर
त्वक्
पत्र
हरिद्रा
राल
दारुहरिद्रा
श्रीखण्ड
शोभाञ्जन
रक्तशोभाञ्जन
मधुशोभाञ्जन
मधूक
रसाञ्जन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिङ्गुपत्री

भद्रदार्वादिगणः-

तगर
बला
अतिबला

दूर्वादिगणः—

दूर्वा
श्वेतदूर्वा
गण्डदूर्वा
जवासक
दुरालभा
वासा
कपिकच्छू
क्षुद्रा
शतावरी
गुञ्जा
श्वेतगुञ्जा
प्रियङ्गु
पद्म
पुष्कर
नीलोत्पल
सौगन्धिक
कुमुद
शालूक
वितुन्नक

जीवन्त्यादिगणः-

जीवन्ती
काकोली
क्षीरकाकोली
मेद
महामेद
मुद्गपर्णी
माषपर्णी
ऋषभक
जीवक
मधुयष्टी

विदार्यादिगणः—

विदारी
क्षीरविदारी
एरण्ड
रक्तैरण्ड
वृश्चिकाली
पुनर्नवा
श्वेतपुनर्नवा
नागबला
गांगेरुकी
सहदेवी
कृष्णसारिका
हंसपदी

दार्व्यादिगणः—

उशीर
लामज्जक
चन्दन
रक्तचन्दन
कालेयक
परूषक

पद्मकादिगणः—

पद्मक
पुण्डरीक
वृद्धि
तुकाक्षीरी
सिद्धि
कर्कटाशृङ्गी
गुडूची

परूषादिगणः-

द्राक्षा
कटुफल
कतक
राजादन
दाडिम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शाक

अंजनादिगणः-

अञ्जन
सौवीर
मांसी
गन्धमांसी

पटोल्यादिगणः-

कडका
पाठा

गडूच्यादिगणः—

धान्यक

आरग्वधादिगणः-

काकमाची
ग्रन्थिल
किराततिक्त
शैलेय
सहचर
सप्तपर्ण
कारवेल्ली
बदरी

अशनादिगणः--

बीजक
तिनस
भूज
अर्जुन
खदिर
कदर
मेषशृंगी
धव
सिंसिपा
ताल
अगर
पलाश
शाल
क्रमुक
अजकर्ण
अश्वकर्ण

वरुणादिगणः-

वरुण
मोराट
अजशृङ्गी
अरुष्कर

रूषकादिगणः—

रूषक
तुत्थ
हिंगु
कासीस
पुष्पकासीस
शिलाजतु

वेल्लंतरादिगणः--

वेल्लंतर
बूकस्थल
पाषाणभेद
इक्कटा
कास
इक्षु
नल
दर्भ
शितबार
मर्क
पिप्पली
सुवर्चला
इन्दीवर

रोध्रादिगणः--

जिंगिणी
सरल
कदली
अशोक
एलवालुक
सल्लकी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अर्कादिगणः--
अर्क
अलर्क
विशल्या
भारंगी
ज्योतिष्मती
कटभी
श्वेतकटभी
इंगुदी

सुरसादिगणः--
सुरसा
श्वेतसुरसा
फणिञ्जक
कृष्णकुबेर
कुबेर
महवक
अजकर्णी
क्षुवक
कपित्थपत्री
नदीकान्त
काकमाची
आवसु
केशमुष्टि
भूतृण
निर्गुण्डी

मुष्ककादिगणः-
मुष्कक

वत्सकादिगणः--
अतिविषा
जीरक
उपकुंचिका
कृष्णजीरक
अजमो
अजमोद
चव्य

प्रियंग्वादिगणः-
पुष्करपत्री
मञ्जिष्ठा
शाल्मलि
मोचरस
सुनन्दा
धातकी

मुस्तादिगणः--
अंबष्ठा
नंदी
कच्छुरा
अंबष्ठादिगण
भल्लातक

न्यग्रोधादिगणः-
वट
पिप्पल
उदुम्बर
जम्बू
राजजम्बू
काकजम्बू
कपीतन
आम्र
पियाल
तिंदुक

एलादिगणः--
तुरष्क
वालक
नेत्रवालक
अधःपुष्पी
क्षेमक
त्वचा
तमालपत्र
थोयेयक
नख
श्रीवेष्ट

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कून्दुरुक	हपुषा	फल्गु	पालेवत	मिश्रेया
कुंकुम	काकनाशा	श्लेष्मातक	मदनफल	गंडरीक
गुग्गुल	काकजंघा	तिंतिडीक	आरुक	काकसी
श्यामादिगणः–	पर्पटक	अम्लवेतस	वीर	वरुणा
सातला	विषचारी	कपित्थ	कुरंटक	मूलक
वृषगंधा	राजहंस	केशाम्र	अक्षोट	तंदुलीयक
पीलु	पुष्करमूल	नालिकेर	चांगीरी	द्रोणपुष्पी
त्रायमाण	अश्मन्तक	सचलिंद	अम्लिका	तामलकी
खटी	कोविदार	खर्जूर	करीर	ब्राह्मी
सोमराजी	रोहितक	बीजपूर	काकंडी	ब्रह्मजीरी
श्रावणी	वंश	नारिंग	वास्तुक	अरिष्ट
महाश्रावणी	वेणु	जंभीर	कुसुंभ	पुत्रजीव
शमी	अंकोल्ल	नींबुक	लाक्षा	सहदेवी
मंडूकपत्री	कौंडिय	आम्रातक	लांगली	कूष्मांडक

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महातुंबी
चिर्भटी
कटुचिर्भटी
शुनिकर्ण
अहिमार
विष्णुक्रान्ता
क्षीरिणी
सर्पाक्षी
नकुली
गृद्धनखी
अहिंस्री
कर्दमपुष्पी
करवीर
रक्तकरवीर

धत्तूरक
यवानी
शतपुष्पा
लशुन
पलांडु
वाराही
मांसरोहिणी
कुलत्थिका
जतुका
पुष्पांजन
वृद्धदारु
वालमुट
वंध्याकर्कोटकी
त्रिपत्रिका

शंखपुष्पी
अश्वखुर
बंधन
पिंडीतक
स्वर्णक्षीरी
सिंदुवार
अश्वगंधा
मदयंती
भृंगराज
शिरीष
अगस्ति
नली
मन्दारक
हिंताली

मोहिनी
गोधापदी
महाश्यामा
देवगंधा
विटिका
दुर्गंधिलिका
आघाटक
स्वर्णपुष्पी
लक्ष्मणा
वज्रशूल
पलंकषा
दधिपुष्पी
कूर्कुटपाद
गोजिह्वा

तुनहिका
कस्तूरी
कपूर
जातिपत्री
जातिफल
कक्कोलक
लवंग
नटी
दमनक
मुरा
कर्चूर
तुंबरु
मालती
मल्लिका

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

यूथिका	कंद	गैरिक	दांति	रोध्र
सुवर्णयूथिका	अट्टहास	खटिका	कारवेल	शृंगाटक
वासंती	अतसी	पारद	कोशी	कांपिल्ल
चंपक	कोरंटक	सौराष्ट्री	मुंडी	हंसपदी
बकुल	सुबंधा	गोरोचन	महामुंडी	करमंद
तिलक	हरिताल	तुबरी	पुपुनाड	छुनीरा
अतिमुक्तक	हिंगुल	विटमाक्षिक	बोल	घुनीरा
कुमारी	मनःशिला	अभ्रक	सिंधुर	सेसकी
तरणी	गंधक	वाताम	शंखप्रस्तरी	चोअ

परिशिष्ट-नं. ९

पंडित श्रीरंगविजयजी विरचितं श्रीप्रतिष्ठाकल्पस्तवनम् ॥

सं. १८७९मां भरुचमुकामे सवाईचंद खुशालचंदे श्रीशंखेश्वर पार्श्वनाथ भगवंतना प्रतिमाजीनी अंजनशलाका करावी ते प्रसंगे दसे दिवसनी विधि प्रतिदिन जे रीते थई तेनुं विवरण करतुं १९ ढालनुं पंडित श्री रंगविजयजी विरचित श्री शंखेश्वरपार्श्वनाथ पंचककल्याणकगर्भित 'प्रतिष्ठा कल्प'नुं प्राचीन हस्तप्रतमांथी मळेलुं स्तवन आपेल छे. ॥२४५॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रीमद्यादवसैन(नि) कस्य नितरां दुःखानि हर्त्तुं क्षमो,
मह्यां त्वत्सदृसं (शः) प्रभुर्न च मम (मया) दृष्टो न चा (वा) मे श्रुतः ।
ऐं (इं) द्रत्वं फणिनं चकार सहसोद्-धृत्वा कृशानो-र्भयात्,
श्रीशंखेश्वरपार्श्वनाथ भगवन्! रङ्गेण तुभ्यं नमः ॥ १ ॥ (शार्दूल)
प्रणम्य भक्त्या गुरुपादपद्मं, प्रपन्नसच्छिष्यविबोधकत्वम् ।
जनप्रबोधाय हि लोकवाग्भि-र्जैनप्रतिष्ठाविधिमातनोमि ॥ २ ॥ (उपजाति)

(दूहा ॥)

स्वस्ति श्रीदायक विभु जगनायक जिनचंद । मोहतिमिरने चूरवा प्रगट्यो परमदिनेंद ॥ १ ॥
श्रीशंखेसर पासना प्रणमी पद-अरविंद । जैन प्रतिष्ठाविधितणुं तवन करूं सुखकंद ॥ २ ॥
ए सम बीजुं को नहीं जैन मांहे मंडाण । जिम सवि पदगज-चरणमें तिम ए मुख्य प्रमाण ॥ ३ ॥
संप्रति शासनमां हुआ संप्रति-कुमर नरेंद्र । जिन विहार-जिनबिंबनां कीधा कृत्य अमंद ॥ ४ ॥
भरुअचमां उकेस लघु लालासा महवंत । तास तनय प्रेमचंद वलि मुलचंद मतिवंत ॥ ५ ॥
प्रेमचंदना दो तनुज खुसालचंद-देवचंद । मुलचंदनें गुणनिलय अंगज ताराचंद ॥ ६ ॥
खुसालचंदने कुलतिलय पुत्र सवाइचंद । एक दिन गुरुमुखथी सुण्या शंखेश्वर-गुणवृंद ॥ ७ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पिता–पुत्र उद्यम करी, खरची द्रव्य उदार । मूर्त्ति शंखेश्वरपार्श्वनी, प्रगट करी मनोहार ॥ ८ ॥
तास प्रतिष्ठाकारणें, सामग्री सहु जोड । विधिपूर्वक ओच्छव करें, दस दिन मननें कोडि ॥ ९ ॥

ढाल १

चतुर सनेही मोहना ए देशी

जैन प्रतिष्ठामां हवे, शुभलगने शुभ योगे रे, भूमीशोधन पेहेलुं करी, सदगुरुने संयोगे रे
इम वेदी–रचना करो १
गंगोदक जलें शुची करी, शुद्ध छटा देवरावो रे, फुलवृष्टि स्वस्तिक करी, धूप प्रदीप करावो रे २
पूरव–सनमुख वेदिका, रचि पूरो विविध प्रकारे रे, डोढ हाथ उन्नतपणे, समचतुरंस विचारो रे ३
ते मध्ये श्रीफल ठवो, स्वस्तिक–पंचने विरची रे, पंचरत्न–ग्रंथी ठवी, धूप दशांगे चरची रे ४
बार अंगुल, ग्रंथी नही, एहवा वंस अणावो रे, चउ विदिसे चउ वंसथी, शुभ मंडपने बनावो रे ५
तोरण चिहुं दिशे बांधीने, जुवारा ववरावो रे, वंस–पात्रें सात सातनें चउवंसे इम वावो रे ६
देवच्छंदो युगते रच्युं, समवसरणनुं मंडाण रे, उससितभावे जिम रचे, चोसठ सुर–महीराण रे ७
शुभसमये वेदी विचें, बिंब नवा पधरावो रे, सोहव[1] स्त्री टोले मली, पीठ थापन विधि गावो रे ८

---

१ सधवा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ए दिनथी दस दिन लगें, अमारपडह वजडावो रे, हरखें सांझी प्रभातियां, आदर देइ गवरावो रे ९
मोटा मंडप मांडीने, चंद्रोदय बंधावो रे, पंचशब्द वाजींत्र स्युं, दुंदुभिनाद वजावो रे १०
खुसालसाये निज पुत्रने, सवाइचंदने अनुमती दीधी रे, अतिहरषे तेणे रंग स्युं, करी करणी ए सुप्रसिधी रे ११

(ढाल २)

(भरतनृप भावसु ए–ए देशी ॥)

हवे जलयात्रा कारणे ए मेली संघ समाज तो जलजात्रा भणी ए
हय गय रथ पालखी ए हेम रजत रचि साज तो, जल० १
सुंरज पांन (?) वदें घणांए रवितेजे झलकंत तो, ,,
लघुपताक–किंकणी–रवें ए इंद्रध्वज लहकंत तो ,, २
भेरी भुंगल सरणाइयो ए वाजे विविध संगीत तो, ,,
सोहव टोले मली भली ए गाये मंगल गीत तो ,, ३
इम मोटे आडंबरे ए घुरे घुंहिर निसांन तो, ,,
पवित्र जलाशय पुर बहि ए आवी करीये सनान तो ,, ४

१ गंभीर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंचतीर्थि तरुतले ठवी ए, विधियुत करीये सनात्र तो, ,,
पूजीये बलि नैवेद्यथी ए, ग्रह दिग्पाल संघात तो लज० ५
देववंदन विधि साचवी ए, कुंभ ग्रही शुभ च्यार तो, ,,
कंठ (लगे) जइ कूपमां ए, श्रीफल श्रीसुखनार तो ,, ६
अंकुश, कूर्म ने मत्स्यनी ए, मुद्रा त्रण्य करेय तो, ,,
वस्त्रपूत जलने करी ए, पूरण कुंभ भरेय तो ,, ७
कूप-कंठे नैवेद्य ठवो ए, पूरी मोदिक खास तो, ,,
जलदेवी सुप्रसन्न करी ए, मंत्रें विसर्जि तेह तो ,, ८
सिणगारे करी सोभती ए, सधवा मली चउ नार तो, ,,
सजल कलस शिर पर ठवी ए, आवे प्रभु-दरबार तो ,, ९
त्रण प्रदक्षणा देइ ठवे ए, बिंबने जमणे पास तो, ,,
धवल मंगल दिये सुंदरी ए, निज मन अधिक उल्लास तो ,, १०
जलयात्रा करी रंगसुं ए, सवाइचंद हरखंत तो, ,,
खुसालसाहने वीनती ए, कुंभथापननी करंत तो ,, ११

॥२४९॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(ढाल ३ ॥)

(वीण म वासो रे–ए देशी ॥)

इणविध कीजे रे ठवणा पूर्ण कलसनी, जिम क्रिया सीझे रे निरविघने दिन दसनी....
निर्लांछन घट राते वर्णे पृथु सुघाटे लीजे, तेहनी उपर आठे मंगल फरतां चित्र लिखीजें इण० १
तेहनी कंठे डाभ समूलो ऋद्धि वृद्धि संघाथें, गेवासूत्रे बांधे (हेते) विधिकार विधि साथें इण० २
मंत्र सहित स्वस्तिक कुंकुमनो तेहनी मध्ये कीजे, पंचरतन पुंगी वली रूपक समचतुरंस ठवीजे इण० ३
अष्टोत्तर शत–कूपक जलस्युं मोहोत्सवनुं जल मेलो, वर्द्धमान सूरीसर भाखें तीरथ जल बहु मेलो इण० ४
ते जल लेइ सोहव सुतवंती नवपद मंत्र संभारे, थिर–सासे कुंभक करी जलने पूरे अक्षयधारे इण० ५
पीतांशुक बहुमूलुं ढांकी फुलमाल पेहेराई, तेहनी ऊपर श्रीफल थापो मंगलगीत गवाई इण० ६
सुंदर साल (लि)नो साथियो पुरी, थापो घट शुभ दिवसे, च्यार सराव जुवारा केरां, ठवो स्वस्तिक चिहुं विदिसे इण० ७
जिनपडिमाने जमणे पासे दीपकयुत घट धरीये, कुंभचक्र नक्षत्र मले जो, तो सवि अशुभने वारे इण० ८
स्नात्र अष्टोत्तरी, बिंब प्रवेशे, बिंबप्रतिष्ठा होवे, ए करणीमां मंगलरूपी, कुंभथापन धुरे जोवे इण० ९
दीप अखंड ने धूप त्रिकाले, साते समरण गणीये, हिंसक जीव ने स्त्री ऋतुवंती, तस दृष्टी अवगुणीये इण० १०
मल्लि–वीर–नेमीसर–राजुल. तास तवन नवि भणीये, उपसर्गादिक भावना टाली, मंगल गीतने थुणीयें इण० ११

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नरनारीने उलसत भावे तंबोलादिक दीजे, ते दिनथी मांडीने निस दिन, लघुसनात नित कीजे इण० १२
खुसालचंदे हरखे कीधी, पेहेले दिन ए करणी करीये, विधियोगे जिम वरीये, रंगे जिम सिवघरणी इण० १३

(ढाल ४ ॥)

(आदि जिनेसर विनति हमारी–ए देशी ॥)

नंदावर्त्तनी बीजे दिवसे किरिया कीजे उदार रे, सोवनपट्टे[1] यक्षकर्दमना सात लेप करी सार रे नंदावर्त्त नमो नित भावे १
मध्यभाग समसूत्रे करीने आठ वलय तस कीजे रे, कर्पूरादिक अष्टगंधस्युं हेमसिलाके लिखीजे रे २
धुर वृत्ते नंदावर्त लिखिये मध्ये बिंब ठवीजे रे, दक्षिण सोहम, उत्तर भागे इशान इंद्र ठवीजे रे ३
बीजे वलये आठ दिशाये अरिहंत सिद्ध सूरीश रे, पाठक मुनिवर ज्ञान ने दर्शन चरण ए आठ नमीश रे ४
त्रीजे वलये चोवीस कोठे जिनमाताने धारो रे, पणवाक्षरयुत नामने लिखिये हवे चोथे संभारो रे ५
कोठा सोल करीने तेहमां माहाविद्याने राखो रे, पांचमे चोवीस घर आलेखी लोकांतिकने भाखो रे ६
छठ्ठे वलये आठ दिशाये च्यार निकायना इंद रे, तस देवी हवे सातमे वलये लिखिये आठ दिगिंद रे ७
आठ दिसाये आठमे वलये लिखिये ग्रह–अभिधान रे, आठ वलय पाछल त्रिगडानी रचना करीये समान रे ८
बारे पर्षदा पेहेला गढमां तीर्यंच बीजे वखाणो रे, त्रीजा गढमां सुर–नर–वाहन, लिखिये तास प्रमाणो रे ९

१ सेवनपट्टे

॥२५१॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मंत्राक्षर लिखि आठ दिसाये, पुष्करणी चउ बार रे, पूर्णकलस थापी चिहुं विदिसि, वायु भुवन तिम च्यार रे १०
थापी नंदावर्त्त लिख्या जे मूल तास सविधांने रे, पूजो वासक्षेपादिक द्रव्ये गुरुसन्निधि बहुमाने रे ११
दीप अखंडस्युं नैवेद्य ढोइ बलि देइ देव वांदिजे रे, नंदावर्त्त–लेखकने पेहेलां शुभवस्त्रादिक दीजे रे १२
बीजे दिन ए किरिया निरखी रंगे रली सहु थाये रे, खुसालसाने मनोरथमाला दिन दिन वधती जाये रे १३

(ढाल ५ ॥)

(तुमे पीतांबर पेहरो जि–ए देशी ॥)

करो किरिया त्रीजे दिवसे जी, विधिकारक स्वामी,
तुम समकितगुण जिम फरस्ये जी, पुन्य दिशा पामी

करो एकभुगत समताये जी वि., ब्रह्मचारी दस दिन तायें जी पु. १
अडजातिना भैरव कहींइं जी वि., तेहमां क्षेत्रपालने लहीइं जी पु.
तपगच्छतणो रखवालो जी वि., दुख–संततिहरण दुकालो जी पु. २
आह्वान करो तस मंत्रे जी वि., जे भाख्या छे पट यंत्रे जी पु.
ते प्रसन्न करी क्षेत्रपालो जी वि., करीये तस भक्ति विशालो जी पु. ३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मातरनुं नैवेद्य ढोइ जी वि., तस शेष लिये सहु कोइ जी पु.
वलि आसनमंत्रने जपि जी वि., इम क्षेत्रपालने थापी जी पु. ४

हवे सेवनपट्टे फीरीने जी वि., यक्षकर्दम-लेप करीने जी पु.
थापो दिगपाल विधाने जी वि., अभिधान लेइ सनमानें जी पु. ५

वली देइ ध्वज रोपि आगे जी वि., पूजो महादेवी रागे जी पु.
वली थापी सेवन पाटे जी वि., ग्रह-मंडल निज निज घाटे जी पु. ६

दिसि विदिसीये ग्रह थापो जी वि., पूजी निज मंत्रे ने जापो जी पु.
गृह नवने नव ग्रह भावो जी वि., पछे सांति कलसने भणावो जी पु. ७

दिगपाल नवग्रह ठाय जी वि., जिम जमणी-वाय-दिसाय जी पु.
सनमुख ठवो मंगल आठ जी वि., ए आचारदिनकर-पाठ जी पु. ८

खुसालचंदे उच्छव कीधो जी वि., त्रीजे दिन लाहो लीधो जी पु.
ए कीरति रंग वखाणे जी वि., जे वधति समकित ठाणे जी पु. ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(ढाल ६ ॥)

(वात करो वेगला रही मारा वाल्हा रे, पेहला देखे दुरिजन लोक ए स्यां चाला रे–ए देशी ॥)

चोथे दिन सासनसुरी, हुं वारी रे, चक्केसरी प्रमुख चोविस, हुं बलिहारी रे
अभिधाने शुभ द्रव्यथी हुं०, पूजीने पूरो जगीस हुं० १
वली चोसट्ठ सुरराजने हुं०, तस मंत्रे करी आह्वान हुं०
जल चंदन आदे देई हुं०, तिहां अरचे थइ सावधान हुं० २
भूतबलि अभिमंत्रीने हुं०, लेइ निज घर-बाहिर तेह हुं०
दस दिसिये उछालिये हुं०, उपजोग थकी धरी नेह हुं० ३
उत्तमांगथी थापीये हुं०, सिद्धादिक मंत्र विचार हुं०
इम न्यास करी कर्ता हवे हुं०, करे सिद्धचक्र मनोहार हुं० ४
अष्ट-कमल-दल थापीने हुं०, तस मध्ये श्रीअरिहंत हुं०
पूरवदलमां सिद्धजी हुं०, दक्षिण-दले सूरि महंत हुं० ५
पाठीक द्वादस अंगना हुं०, पाठकजी पश्चिम जाण हुं०
उत्तर दलमां जाणीये हुं०, मुनिराजतणुं अहिठाण हुं० ६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इसाने दर्शन भजो हुं०, अग्निकुणे ज्ञान प्रधान हुं०
चारित्रपद नैरत वले हुं०, वायु वले तप मान हुं० ७
एहवा श्रीसिद्धचक्रने हुं०, पूजीजे सुरभी द्रव्य हुं०
स्नात्र करो बहु भक्तिथी हुं०, पछे देववंदनविधि भव्य हुं० ८
ए किरिया चोथे दिने हुं०, करे खुसालसा उजमाल हुं०
जे महापूजा करे रंगथी हुं०, ते पामे मंगलमाल हुं० ९

(ढाल ७ ॥)

(बे बे मुनिवर वहेरण पांगर्याजी—ए देशी ॥)

पांचमे दिन ए किरिया कीजीये जी, श्रीगुरुवयणतणें अनुसार रे,
भैरव आदे सासनदेवता जी, पेहेलां ए नमीयें नाम संभार रे
समकीतदाय महापूजा करो जी.... १
तदनंतर करीयें शांति घोषणाजी, अरिहंत आदे मंगल चार रे,
विधिकारक ते वज्रपंजर भणें जी, कीजे थानकपद सेवा धार रे समं० २

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सेवनपट्टे कुंकुमचंदने जी, सोनानी लेखणथी श्रीकार रे,
वीसथानकनी रचना कीजीये जी, स्वर पद वर्ण उच्चार रे समo ३
प्रथम दले अरिहंतने थापीये जी, बीजे सिद्ध नमो सुविहाण रे,
पवयण त्रीजे चोथे वखाणिये जी, आचारज गुणखाण रे समo ४
पांचमे थीव (वि)र नमो भावे करीजी, छट्ठे प्रणमीजे उवझाय रे,
सातमे मुनिपद ज्ञान ने आठमे जी, नवमे दर्शनपद सुखदाय रे समo ५
विनय नमो दसमे पदेजी, एकादसमे चरण पवित्त रे,
बारमे ब्रह्मचरज प्रणमो सदाजी, जेहथी लहिये सिवपद नित्त रे समo ६
तेरमे किरिया चौदमे वंदिये जी, तपपद विविध प्रकार रे,
गोतम गणधर पन्नरमें नमो जी, सोलमे श्रीजिनपद सुखकार रे समo ७
चारित्रधर सत्तरमे पूजिये जी, नाणधारक अडदसमे वंद रे,
श्रुतधर पद नमिये ओगणीसमे जी, वीसमे तीरथपद सुखकंद रे समo ८
इणीपरे वीसथानिक रचना रचीजी, अरचीजे आठे द्रव्य उदार रे,
स्नात्र भणावी आदि आणंदनो जी, कलस भणावो भवि-हितकार रे समo ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देव वांदीने थानिकपद तणी जी, नवकारवालि गुणीयें वीस रे,
त्रिविध पकवान ने नैवेद ढोकीये जी, धारी अणहारी पद जगदीस रे समः १०
पांचमा दिननी किरिया ए कहीजी, सकलगुरु ने वयण-प्रसंग रे,
हरषे खुसालचंद द्रव्यने जी, खरचे दिन दिन वधते रंग रे समः ११

(ढाल ८ ॥)

(मइ हो रें समरा रे जांवर जीया हुं वारी । दौसीडांरी गलीयें थे मत जाओ,
साहिब छोगो बिराजें पंचरंग पागमां-मारुजी- ए देशी ॥)

छट्ठे दिवसे रे किरिया मांडीये हुं वारी, क्षेत्रपालादिक जे अभिराम,
सुगुण सनेहा सांभलीये सारी वातने हुं०
प्रहरणधारक वारक कष्टना हुं०, ते भणी करीये धुर प्रणाम सुगुण १
गृहपतिने थापो इंद्रपदे इहां हुं०, गुरु मंत्रीत वास करे हितकार सु०
तिलक जनोइ मुकुट धरावीने हुं०, इंद्राणी करीये तस घरनार सु० २
हवे ते इंद्राणी वेदी उपरे हुं०, विरचे बहुमानें स्वस्तिक पंच सु०
पाछलथी गाये गोरी छंदसुं हुं०, मानुं ए मलीयो अपछर-संच सु० ३

॥२५७॥
Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नास (न्यास) करीने गुरुपूजन करो हुं०, पूजी आचारज पूजो पीठ सु०
तदनंतर नूतन बिंबने हुं०, गुरु मंत्रे खेपे वास विसिट्ठ सु० ४

पयमिश्रित वासे नूतन बिंबनुं हुं०, सर्वांगे विलेपन करीये सार सु०
दूधे भरी कलसमां जिनने थापिये हुं०, इहा सूचव्यो च्यवनतणो प्रतिकार (प्रकार) सु० ५

हवे भवि सुणज्यो च्यवनतणी विधी हुं०, त्रीजे भव पासप्रभुनो जीव सु०
आनंद नामे नृप संयम लेइ हुं०, आराधि थानकपदने अतीव सु० ६

तिहांथी तित्थंकरगोत्र उपारजी हुं०, उपजे जइ प्राणत स्वर्ग मझार सु०
वीस सागरनुं जीवीत भोगवी हुं०, देवना भवनो करी परिहार सु० ७

निरुपम नयरी वणारसीनो धणी हुं०, अवनीपति अश्वसेन नृप तात सु०
राणी वामादे कुखे अवतर्या हुं०, चैतर वदि चोथे गर्भावास सु० ८

निद्रावसे पोढयां सेजे मातजी हुं०, लहे सुमिणां चउदस मंगलकार सु०
निज निज भाव कहे सहु रंग थी हुं०, वर्णवीये कांइं तस अधीकार सु० ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(ढाल ९ ॥)

(मारुजी निंद नयणां बिचे घुल रही, घुल रही नयणां बिच ० ।
नणदीरा वीरा, मारुजी, निंद नयणां बिच घुल रही-ए देशी)

माने प्रथम सुपनमां विनवे, ऐरावण गज आय हो वामादे माता,
माजी ! मुझ स्वामी तुझ पुत्तना, आवी नमस्ये पाये हो०,
माजी ! सुपन भाव सवि सदहे, आवीजे जे कंत हो० १

जननी ! वहेस्ये तुझ सुतने, मुझ परे पंच महाव्रत भार हो०,
माने बीजे सुपन धोरी कहे, नयणानंदनकार हो० माजी० २

तेहवें त्रीजे कहे केसरी, तुझ नंदन नरसीह हो०,
माजी ! मेदक मान गजेन्द्रनो, मुझ परे थास्यें अबीह हो० मा० ३

माजी ! मुझ दर्शन दीठे थके, भोगवशे तुझ वत्स हो०,
माजी ! चोथे हुं लखमी कहुं, तीर्थंकरनी लछ हो० मा० ४

पांचमे दाम युगल कहे, मुझ परे तुं मन जाण हो०,
माजी ! त्रिभुवनजन शिर धारस्ये, तुझ नंदननी आण हो० मा० ५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

माजी ! मुझ मंडलसम होयस्यें, तुझ सुत वदन अनूप हो०,
माजी ! जनने छट्ठे जो तुं मुझ प्रते, कहे इम रजनीभूप हो० मा० ६

माजी ! तम-अज्ञानने भेदस्यें, मोहनिशा करी दूर हो०,
माजी ! धरस्ये भामंडल सातमे, तुझ सुत इम कहे सूर हो० मा० ७

माजी ! धर्मध्वज भूषित थस्ये, मुझ दर्शने तुझ नंद हो०,
माजी ! आठमे ध्वज इम वीनवे, धरतो विनय अमंद हो० मा० ८

माजी ! ज्ञानादिक-रयणे भर्यो, तुझ सुत छे मुझ मित्र हो०,
माजी ! नवमे निरखो मुझ तुमे, कहे इम कुंभ पवित्र हो० मा० ९

माजी ! माने पद्मसरोवर आवीने, दसमे कहे सुणो मात हो०,
माजी ! सुर चालितकज[1] उपरे, ठवस्ये पद तुझ जात हो० मा० १०

माजी ! तुझ सुत गुणरयणे करी, मुझ परे महागंभीर हो०,
माजी ! एकादशमे जाणजें, सुभगे सायर-खीर हो० मा० ११

१ कज-कमल

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

माजी ! चउविह सुर तुझ पुत्तने, नमस्यें करी सनमान हो०,
माजी ! देखे सुपन बारमे, वदतुं इम विमान हो० मा० १२
माजी ! मुझ परि तुझ अंगज थस्ये, गुणह अनंत निवास हो०,
माजी ! रयणना गढमां राजस्ये, इम कहे रयणनो रास हो० मा० १३
माजी ! भविक-कनक-शुद्धि तणो, थास्यें सुत करनार हो०,
माजी ! माने निरधूम अगनी चऊदमे, सुपने जो सुविचार हो० मा० १४
माजी ! तुरत जागी नृपने कही, सुपन तणो ग्रही भाव हो०,
माजी ! चोसठ हरि करि च्यवननो, मोहोत्सव गर्भप्रभाव हो० १५
भविका प्राणथापन करी बिंबने, वास ठवे गुरु श्वास हो० ससनेही प्यारा-भविका,
मंत्राक्षर लिखी बिंबने हो, सिर पर थापे वास हो० सस० १६
मंगल चऊद स्वपनतणो निरखावे सुविलास हो० सस० भ०
करीये उपदेश कांनमां, भणीये आसीस तास हो० स० भ० १७
माहापूजा इम कीजीये, लिजीये जिम शिवराज हो स० भ० (आंकणी)
चैत्यवंदन करीने हवे, करीये स्नात पवित्त हो० स० भ०

॥२६१॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कलस भणावी पासनो, देववंदन करो नित्त हो० स० भ० १८
इम रंगे च्यवनने थुण्या, पासप्रभु जिनचंद हो० स० भ०
धन खरचीने खुसालस्या, पासप्रभु जिनचंद हो० स० भ० १९

(ढाल १० ॥)

(आदे आदिजिनेस (रु) नाभीनरिंद मल्हार रे–ए देशी ॥)

सातमे दिन हवे हरखस्युं किरिया कीजे प्रधान रे, न्यास करी शुचि थइयें गुरु विधी करता समान रे,
सि (स) कलीकरण मंत्रे करी बलि दीजे धरी प्रेम रे, स्नात्रकारक नव बिंबने कुसुमांजलि दीये तेम रे १
गुरु हवे तरजनीमुद्राये रौद्रदृष्टि दिये ताल रे, श्रावक वास करे करी जल, लेइ छांटे उल्लास रे,
वज्र, गरुड ने मुद्‌गर मुद्रा, गुरु करी बतावे रे, दृष्टिदोष निवारवा, मंत्रे कवच भणावे रे २
सात धानना त्रण त्रण मुठी बिंबने खेपे रे, दिगबंधन मंत्रे करी कुलदेवीने विलेपे रे,
जनममंत्र जपिने पछे कीजे जन्म पवित्त रे, ते अधिकारने गाइये इहां हवे थिर करी चित्त रे ३
पोसदसमनी राते जन्म्या श्रीपासजिणंद रे, ज्ञान प्रयुंजी आवे रे दिसिकुमरीना ए वृंद रे,
पेहेली अधोलोकवासीनी भूमिने पवन प्रचारे रे, जोजनमां अत्रकर भण ककरने वारे रे ४

१ कचरो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आठ उद्ध्र्वथी आवीने स्वामीना जन्म-आगारे रे, | मनमोहन माहाराजने नीरखवा दरपण धारे रे,
जिनगुण हर्ष सु धरती रे उलट अंग न मावे रे, | इणीपरे सुरकन्या मली (म) ली मंडलमां दर्पण लावी रे ५
दक्षिण रुचकनी नमी आठ कलस ग्रही हाथे रे, | परिकरयुत माताने प्रणमी दोये सनाथ रे,
आठ ए पश्चिम रुचकनी वायुविंजण लेइ आवे रे, | जगदीश्वर जननीने प्रणमी जिनगुण गावीरे (वे) रे ६
चंचल चामर विंजती उत्तर रुचकनी अमरी रे, | आठ नमे जिन-मातने जिनगुण हियडले समरी रे,
चार विदिसथी आवी ए दीपक करे धरी चार रे, | जगदंबे प्रणमी करी धन्य गणे अवतार रे ७
मध्य रुचकनी चउ मली नाल वधरे ते देवी रे, | खातोदरमां थापीने वज्ररयण संपुरेवी रे,
उपर पीठ रयणमय बांधीने अति अभिराम रे, | पश्चिम दिसि वरजी करे, केलतणा त्रण धाम रे ८
ते घरमां जिन ने जिनमाताने लेइ नवरावे रे, | पेहरावी अलंकारने चरची गीत गावे रे,
चंदन होम करीने रक्षा पोटली बांधे रे, | नृत्य करी जिन-जननीने घर ठवी निजपद वाधे रे ९
तिम श्रावक रत्नग्रंथीने रक्षापोटली बेहो रे, | मंत्री बांधे बिंबने जमणले करि धरी नेहो रे,
यव ने अरीठानी माला बिंबने कंठे ठवीजे रे, | जलजात्रा--जलमां फूल-चंदन-वास मेलीजे रे १०
ते जल लेइ बिंबने जलदरसनने करावो रे, | धूप दीप करीने पछे नाटिक-गीतने भणावो रे,
इंद्राणी अग्रमहिषीनो ओछव विधिसुं वंदिजे रे, | केसरथी नव बिंबने भाले तिलक करीजे रे ११

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गीतगान करीने पछे इंद्रनो ओछव कीजे रे, आसन नचवी सुघोसाये देव सयलने मेलीजे रे,
पालकयानमां बेसीने नंदीसर हरि आवे रे, आवी नमे जिन-माताने पंचधा रूप बनावी रे १२
देइ निद्रा प्रतिबिंबने मूकी लीये जगतात रे, आवे ते मेरुचूलाये चोसठ इंद्र संघात रे,
सोहम-इंद आणंदस्युं उछंगे जिन लेइ ठावे रे, अभियोगिक सुर पासे औषधी जलने अणावे रे १३
अच्युत इंद्र-आदेशथी स्नात्र करी सवि इंदा रे, करी अढिसें अभिषेकने पामे परम आणंदा रे,
वृषभरूप करी सोहम इंद्र करे अभिषेक रे, मंगल आठ ठवी करे मंगलदीप विवेक रे १४
जिनमंदिर जिन मूकीने हरि निजथांनके जावे रे, इंद्र महोत्सव इम करी पछे तिहां देव वंदावे रे,
खुसालसा धन खरचीने सातमे दिन घणुं हरखे रे, कीधो जन्म महोछव रंगथी शुभ उत्कर्षे रे १५

(ढाल ११ ॥)

(देव नाहां छोकरां थाये, जन साथे रमवाने जाये-ए देशी)

आठमे दिन सुणिये भाई, दासी दिये पुत्र वधाई,
अश्वसेन भूपति अतिहरखी, दासी फेडी करी सखी सरखी १
चाकरनां कष्ट निवारे, मान-उनमान-माप वधारे,
जल फूले नयरी सिंचावे, कृष्णा गुरु धूप रचावे २

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घर घर तोरण बंधावे, कुंकुम-हाथा देवरावे,
पुरजनने हरष न मावे, नारी धवल मंगलने गावे ३
तालाचर भांड नाटकिया, अतिखेल करे तिहां मलिया,
नृप निरखी हरष अमांने, बहु दान दिये सनमाने ४
घण छंदे वाजित्र वाजे, तिणे नादे अंबर गाजे,
इम मोहोछबनुं मंडाण, दिन बार करे महिराण ५
कुलस्थिति करे पेहेले दिवसे, अढार स्नात्र करी हरसे,
जलपात्रमां ठवियें उल्लास, चंदन पुष्पादिक वास ६
स्नात्र सु (चू) रण खेपीये सार, पछे कलस करीने च्यार,
जिनमुद्राये काव्य उच्चारा, अभिषेक करे सुविचार ७
हेमचूरणे पेहेलुं सनात, बीजुं पंचरत्ननुं विख्यात,
तरुछालनुं त्रीजुं कहीये, चोथुं मंगलमाटीनुं लहीये ८
पांचमुं सद औषधी केरूं, अष्टवर्गनुं छठ्ठुं भलेरुं,
सातमुं वली तेही ज नामे, आठमुं सर्व औषधी कामे ९

॥२६५॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परमेष्टी गुरुड मुत्तासुत्ती, मुद्रा करी मंत्र पवीत्ती,
जिन आह्वान करे गुरु रागे. वली स्नात्र भणावो आगे १०
पंचगव्यनुं नवमुं गणीये, सौगंधिक दसमुं भणीये,
शुभ फूलनुं एकादसमुं, गंधस्नात्र करो द्वादसमुं ११
स्नात्र तेरमुं वासनुं मुणीये, दूध चंदन चौदमे थुणीये,
पन्नरमुं स्नात्र ते होय, केसर साकरनुं सोय १२
दिन त्रीजे अरीसो देखावो, रवि ससिनुं दरसन करावो,
छट्ठे दिन धर्मजागरणं, दिन दसमे दसुठणकरणं १३
तीर्थोदक सोलमे विरचो, सतरमुं बरासे चरचो,
केसर चंदन लेइ फूल, तस स्नात्र भणावो अमूल १४
ए विधिये स्नात्र अढार, करे मोहोछव सु विधिकार,
बिंबे वास तिलक धूप कीजे, विधिये वली देव वांदीजे १५
दिन बारमे नृप परिवार, भोजन भुंजावि उदार,
संतोपि करे सतकार, ठवे नाम श्रीपासकुमार १६

॥२६६॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तिम नाम थापन इहां जाणो, बिंबि बिंबि मन आणो,
आभरणे देह सोहावो, प्रभु नीरखी भावना भावो १७
पछे अन्नबोटण-विधि करीये, जिन आगे नैवेद्य धरीये,
बलि दीजे हरख अमोले, गुरु सकल चंद इम बोले १८
इम अडदस स्नात्र करीजे, जिम अब्रह्म दोष हरीजे,
आठमे दिन खुसालसाहे, कीधो उछरंग उच्छाहे १९

(ढाल १२ ॥)

(कार्त्तिकमासे कंत मेहली चाल्या रे -ए देशी ॥)

नवमे दिन गुरुराज, करीने साखी रे, करो विधिकारक हवे काज, मन थिर राखी रे,
सहेजातिसय च्यार प्रभुने जनमथी रे, अति अद्भुत रूप अपार लवसत्तमथी रे १
भवभासन त्रण ज्ञान धारक स्वामी रे, अंगूठे अमृतपान करे शिवगामी रे,
कल्पतरु परे पास-प्रभुजी वाधे रे, लक्षण गुण महिमा जास पार न लाधे रे २
बालक थइने देव आवी रमाडे रे, थइ हंस मोर ततखेव प्रभुने हसाडे रे,
इम करतां भणवा योग थइ ते जाणी रे, करे मावित्र शुभसंयोग लगन प्रमाणी रे ३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भुंजावि सयण सुरंग पेहेरामणी साथे रे, निज सेना सजी चतुरंग वणारसीनाथे रे,
धाणी चणा पकवान बहु फल मेवा रे, हेम-खडिया लेखण मान छात्रने देवा रे ४
वररूपे पास कुमार चड्या वरघोडे रे, गाये अपछर सरखी नार मनने कोडे रे,
वाजंते वाजीत्र जनमालाये रे, आव्या अयि मोह विचित्र लेखकसालाये रे ५
विप्र मनोगत भर्म इंद्रवयणथी रे, कही प्रभुये पमाड्यो धर्म अवधिनयणथी रे,
अयाचि कर्यो नस पात्र (!) लहि द्विज भावे रे, छात्रोनां पोषी गात्र छुटें अपावी (वे) रे ६
देखी कहे बाल गोपाल मावित्र हरखे रे, अहो बालपणे ए अबाल मनोगत परखे रे,
इम लेखसालाये ज्ञान प्रगट करी आव्या रे, पछे अनुक्रमे भगवान जोवन पाया रे ७
हवे गृहपति सर्वांग बिंबने अरचे रे, वली धूपफूल उछरंग वासें अरचे रे,
सुरभी, पद्म ने अंजलि मुद्रा भावे रे, जिन पडिमाने गुरुनाथ करीने देखावे रे ८
अधिवासन मंत्रे गुरु करे अवतारो रे, मीढल कंकण सहु बिंबने हाथे धारो रे,
मुत्तासुत्ती चक्रमुद्रा करी हरसे रे, विधिकारक पांचे अंग प्रभुना फरसे रे ९
अंगें धूप उखेवी जिन आह्वान रे, जिन मुद्रायें त्रण वार करे सविधान रे,
आसनमुद्रा सार पछें निरखावि रे, गुरु पूजी वास बरास प्रभु दिल लावी रे १०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रावक चंदनफूले पूजी आह्लादे रे, सवि बिंबने वस्त्र अमूले करी आच्छादे रे,
ते उपर नव रंगें श्रीफल ठावो रे, नैवेद्य धरीने खास फुलेके चढावो रे ११

(ढाल १३ ॥)

(जोरे घोडी तेती हाथी डग भरे, जोडी पाछल चमर विंजाय । जादवरायनी घोडली–ए देशी ॥)

जीरे योवनवय जिन निरखीने, घणुं मावित्र हरखी ताम, सुंदरवर पासने
जीरे जोग्य प्रसेनजित रायने, परपुत्री प्रभावती नाम सुं० १

जीरे जोडी सगाइ तेहस्युं, निज–अंगजनी लेइ आण सुं०,
जीरे सोभाग्य थिति जाणी करी, कीधुं ते वचन प्रमाण सुं० २

जीरे प्रोहित[1] शुद्धलगन दिये, वरजीने दोस अढार सुं०,
जीरे इंद्र इंद्राणी मली करी, करे विवाहनो व्यवहार सुं० ३

जीरे पीठी करी मजन करी, धरी अंगे श्रृंगार अमान सुं०,
जीरे पासजी घोडे चडया, करे धरी श्रीफल–पान सुं० ४

---

१ पुरोहित

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जीरे हय गय आगल मालता, बहु वाजें वाजीत्र संगीत सुं०,
जीरे सुरनरना साजन मल्या, जांनरणी गायें गीत सुं० ५
जीरे पुरजन थाट मली जुये, दोडीने चोक बाजार सुं०,
जीरे प्रभु आवी ऊभा रह्या, इम मंडप तोरण–बार सुं० ६
जीरे [1]पोहकण विधिसुं पोहकीने, पछे आण्या चोरी मझार सुं०,
जीरे पधरावी कन्या तिहां, करे नाद वेद उच्चार सुं० ७
जीरे सकल सुरासुर साखसुं, करे करमेलापक त्यांहि सुं०,
जीरे बेहु पखे सुर सुंदरी मली, गाये गीत उच्छाहि सुं० ८
जीरे पेहेलुं मंगल वरतीने, दिये लक्षप्रमित हयदान सुं०,
जीरे बीजुं मंगल वरतीने, दीये हाथी हजारने मान सुं० ९
जीरे त्रीजुं मंगल वरतीने, कोड मूलना द्ये अलंकार सुं०,
जीरे चोथुं मंगल वरतीने, पुत्रा पर तणी होये निरधार (?) सुं० १०

---

१ पुंखाणानी विधि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जीरे सुरनिरमित कंसारने, आरोगी करे प्रीत अभंग सुं०,
जीरे परणी निज घर आवीआ, माय तायने अधिक उछरंग सुं० ११
जीरे विधिकारक करणी करे, सुणज्यो हवे तेह स्वरूप, सुंदर नव बेंबने (आंकणी-)
जीरे च्यार नार पोहोंकण करे, वलि आरति-मंगलदीप सुं० १२
जीरे श्रावक पंचमंगल भणी, करे बिंबनो चर्चित हाथ सुं०,
जीरे नव ग्रहने बलि देइने, धरी नेवेद होय सनाथ सुं० १३
जीरे गेवासूत्रथी बांधीये, तोरणयुत चोरी उदार सुं०,
जीरे सिंहासन मंडल तले, थापी जिनपडिमा सार सुं० १४
जीरे हेमकलस चउ दीवडा, ठवे सोहव सुखडीथाल सुं०,
जीरे लेती प्रभुनां उवारणां-जलधान ठवे ते बाल सुं० १५
जीरे चार गाडुआ उपरे, थापे जुवाराना सराव सुं०,
जीरे चैत्यवंदन गुरु तिहां करी, रक्तांबरे बिंब ढंकाव सुं० १६
जीरे अधिवासन मंत्रे करी, सूरिमंत्रे नाखे वास सुं०,
जीरे बिंब-करे पूगी ठवे, दीये धवलमंगल उल्लास सुं० १७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जीरे होम करी टीको करे, अंबर आभरण धराव सुं०,
जीरे ढोइ मोदक मेवो दीये, रंगे राज्याभिषेक कराव सुं० १८

(ढाल १४ ॥)

(जीरे इसानइंद्र खोले लीये – ए देशी ॥)

पासजिणंद तेवीसमो, त्रीस वरस गृहवास रे, कुमर पदे संसारनां भोगवी भोग विलास रे,
पासजिणंद दीक्षा वरे १
विरमी विषयदिशा थकी, तत्त्वदिशा निज भावे रे, जाणि ते पंचम स्वर्गथी, लोकांतिक सुर आवेरे २
जिन प्रणमीने विनवे, जय जय तुं चिर नंदो रे, धर्मतीर्थ वर्त्तावीये, तुं जग–सुरतरु–कंदो रे ३
इम उपयोग करावीने, दीक्षा समय जगावे रे, वैश्रमणकुंडधारी सुरा, हाजर थइ धन लावे रे ४
एक कोडी आठ लाखनी, याचक दिन प्रते आवे रे, दान देइ संवत्सरी, सहुनां दरिद्र स(श) मावे रे ५
चोसठ इंद्र मली तिहां, तीरथजल शुभ आणी रे, स्नान करावे स्वामीने, विधिपूर्वक हित जाणी रे ६
स्वजन भणी अनुमत लेइ, मातपिता पडिबोहे रे, अंगराग भूषण धरी, सिबिकामां आरोहे रे ७
धूपघटी वाजींत्रसुं, दुंदुभीनाद बजावे रे, सुरनर कोडाकोडस्युं, पुर उपवन सोहावे रे ८
वृक्ष अशोकतरु–सरे, सहु सावद्य वोसरावी रे, पोस बहुल इग्यारसे, ल्ये प्रभु संयम ल्यावी रे ९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सामायक व्रत उच्चरे, तव मनःपर्यव पावे रे, सुरपति वाम खंभे धरे, देवांबर ते प्रस्तावे रे १०
चरण–महोच्छव सुर करी नंदीसर मली आवे रे, अट्ठाइ महोछव करी, सुर निज निज थानिक जावे रे ११
अनुमत सयण मावीत्रनी, मागे तव रोवंतां रे, कहे वत्स ! मुखडुं कदा जोस्यां हरख भरंतां रे १२
पावन करजो आंगणुं, पारणेंने मीसे पुत्तो रे, अमने कदि न विसारज्यो, दर्शन देज्यो सुमीत्तो रे १३
इम जोतां (पाछा) वल्या, प्रभु पण विचरे निरासी रे, घाती कर्म चउ जीवस्यें, वीतसे वासर चोरासी रे १४
गुरु हवे चैत्यवंदन करी, वंदावे वली देव रे, रयणीसमे तिहां गुरु कहे, अधिवासन स्वयमेव रे १५
खुसाल साये नवमे दिने, दीक्षा कल्याणक कीधुं रे, रंगे करीने उच्छाहथी, मनवंछित फल लीधुं रे १६

(ढाल १५ ॥)

(देशी हमारानी ॥)

हवे दशमे दिन कृत्य करे, श्रावक ने गुरुराय सुग्या (ज्ञा)नी केवलज्ञान ने मोक्षना, कल्याणक सुखदाय सु०
महापूजा इम कीजीये १
चरणपर्याये पासजी, वर्त्ते निज गुणठाण सु०, कमठकृत उपसर्गने, जीत्यो उपशम आण सु० म० २
त्यासी दिवस इणि परे, विचरी आरज देस सु०, व्रत वनमां आवे विभु, हवे सुणो विधि उद्देस सु० म० ३
कंकण मीढल बांधीये, स्नात्रकारकने हाथ सु०, ग्रह–दिगपालने पूजीये, बली दीजे विधि साथ सु० म० ४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नूतन बिंबने उपरे, वस्त्र कुसुंबी ढंकाव सु०, देववंदनविधि साचवे, गुरु श्रावक शुभ भाव सु० म० ५
धूप देइ अंबर लीये, श्रीगुरु लेगनाभ्यर्ण[1] सु०, कुंभक करी सवि बिंबने, अंगे थापे शुभवर्ण सु० म० ६
घृत भाजन मूकी पछे, मंत्रे जिन आह्वान सु०, परमेष्ठी मुद्रा थकी, श्रीगुरु करे सविधान सु० म० ७
शासनदेव-देवीतणुं, अवतारण करे ताम सु०, ठवणा थापनमंत्रथी, तिहां करे गुरु अभिराम सु० म० ८
श्रीखंडादिक वस्तुने, जिनपडिमातले त्यांहि सु०, थापीने मेले हवे, अंजनद्रव्य उछांहे सु० म० ९
सौवीर-साकर-मृगमदे, घृतमिश्रित घनसार सु०, थापे अंजन हेमपात्रमां, पंच सोहव मजी नार सु० म० १०
थिरलगने श्रीगुरु हवे, स्वरोदय मंत्र संभार सु०, हेमसिलाक ग्रही करी, करे अंजन-अवतार सु० म० ११
निरखावी दर्पण तिहां, प्रति वास करे शुभ गात्र सु०, चक्रमुद्राये बिंबने, फरसी नवे (ठवे) दधिपात्र सु० म० १२
दृष्टिदोष निवारवा, मुद्रा पंच करंत सु०, वास धूप करी मंत्रने, पद्ममुद्राये कहंत सु० म० १३
त्रीगडु कल्पी बिंबने, थापी त्रण नवकार सु०, कहीने वास करे तिहां, आचारज गणधार सु० म० १४
त्रणस्ये साठ ओषधीपुडो, जिनकरमांहि ठवंत सु०, सोहव चउ पुंहुकण करे, दांन दिये हरखंत सु० म० १५
इम केवल कल्याणके, करणी करिये रंग सु०, केहेसुं हवे केवलतणो, उछव अधिक उमंग सु० म० १६

१ लग्न समय पासे आवतां

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(ढाल १६ ॥)

(ए तो गेहेलो छे गिरधारी—ए देशी ॥)

चोरासीमे दिवस प्रभुजी, जन्म-पुरी छे ज्यांहि रे चोवीहारथी छट्ठतप साथे, आवे व्रतवन मांहि

ए जिन सेवो ने, जे दोष भर्या जग मांहि ते त्यज देवो ने (आं०) १

धातकी वृक्षनी हेठळ स्वामी, क्षपकश्रेणि आरोहे रे,
करण अपूरव-अनिवृत्ति करीने, जीत्यो संजल लोह ए जिन० २

खीणमोह सयोगी फरसी, ध्यानबले अप्पाण रे,
चइतर वदीनी चोथे प्रभुजी, पाम्या केवलनाण ३

अवधि जांणी चोसठ सुरपति, आइ सीस नमाइ रे,
करी त्रीगडानी अभिनव रचना, निज निज कृत्य बनाइ ४

ते त्रीगडामां आप बिराजे, जगतारक जगदीश रे,
चोत्रीस अतिशय-संयुत दाखे, वाणी-गुण पांत्रीश ५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्री शुभ आरजशोष प्रमुख जिन, थापे दस गणधार रे,
संघ चतुर्विध तीरथ थापे, विधिपुरवक व्यवहार ६
केवलज्ञानकल्याणक उछव, करी इम रंगभरेण रे,
विधिकारक विधि आगे कीजे, गुरुसंगे हरखेण ७
फूलवासनी वृष्टि करीने, करीये धूप प्रसस्त रे,
देववंदन करी पूछीये, पडिमाना अंग समस्त ८
अष्टोत्तरशत काव्य उच्चारी, विरची कलस विचित्त रे,
एक सो आठ प्रमाणें विधिये, करीयें स्नात्र पवित्त ९
चैत्यवंदन करीने हवे गुरुजी, मंत्रिन करे बलिदान रे,
ग्रह दिगपालने विधिस्युं दीजे, लेइ तेहनां अभिधान १०
प्रभु सनमुख कुसुमांजली दीजे, मंत्रे करी त्रण वार रे,
चंदन केसर आदे नूतन, पूजा करे सुखकार ११
बलि देइ बीजोरां मेवो, लाडु सुखडी सार रे,
मुखवासादिक थापिये, प्रभु आगल मनोहार १२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आरती मंगलदीप करीने, शिवकल्याणक धार रे
केहेस्युं तेह कल्याणक केरो, रगे करी अधिकार १३

(ढाल १७ ॥)

(कहोने ब्राह्मण किहां थकी आव्या, कागलीया किहांथी रे लाव्या–ए देशी ॥)

श्रीपास प्रभु उपगारी, बहु तार्या नर ने नारी, देसे उणोसीत्तर वरस याय, भोगवी केवलपर्याय १
प्रभु समतसिखरने पामी, मन–वयणना योग विरामी, गुणठाणुं अयोगी सोही, शैलेसीकरणने आरोही २
सत्तागत पेहेले भागे, बहोत्तर प्रकृतिने त्यागे, भागे बीजे प्रकृति तेर, तेहनो करो तुरत निवेर ३
अवगाहन लही पूर्वराते, मुनिराज तेत्रीस संघाते, श्रावण शुदि आठिम दिवसे, प्रभु शिवमंदिरमां निवसे ४
प्रभु अजर अमर अविनाशी, थया पूर्णानंद विलासी, इम मोक्षकल्याणक भावी, करो किरिया आगल ठावी ५
पछे श्रीगुरु संघनी साथे, देव वंदावि होय सनाथे, स्तव थानके अजित शांति, भणीये अथवा वृद्ध शांति ६
अक्षय–तंदूलनो विसाल, गुरु आगल थासे थाल, श्रावक कुसुमांजली भरीने, ऊभो रहे विनय वरीने ७
गुरु अक्षत अंजली लेइ, गाथानो पाठ करेइ, अक्षत सवि बिंबने खेपे, श्रावक कुसुमांजली खेपे ८
गुरु प्रवचनमुद्रा करीने, धर्मदेशना द्ये हित धरीने, करी अंतरपट बिंब आगे, द्ये तंबोल संघने रागे ९
पछे पडदो उघाडवा सारु, संघ थापे फलादिक चारु, चैत्यवंदन आदे करवुं, गृहपतिये नैवेद्य धरवुं १०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नंदावर्त्त विसर्जन कीजे, कल्प भाषित मंत्र भणीजे, अंजलीमुद्रा अनुसरीये, सवि देव विसर्जन करीये ११
वृद्ध शांतिये धारा देवी, फूल चंदन धूप उखेवी, तदनंतर कंकण छोडे, निज कर्मबंधनने विछोडे १२
स्तुती–दान-बली-मंत्रन्यास, आह्वान दिसाबंध भास, नेत्रांजन देशना सार, गुरुना ए षट् अधिकार १३
दसमा दिननी ए करणी, जिम कल्पमाहे विधि वरणी, गुरु अमृतविजय प्रसंगे, तिम भाखी सघली रंगे १४

(ढाल १८ ॥)

(झाझरी मुनिवर धन धन तुम अवतार –ए देशी ॥)

अथ चैत्यमां थापना विधिः –

बिंब प्रवेस जिम कीजीये जी, कहिये तेह विधान,
शुभ दिवसे थिरलगन नवासें जी, जोइ शुभ ग्रह बलवान १

जिन घरमां थापो जिन पडिमा सुविचार,
जे पीठे प्रभु थापियेजी, तिहां विधि करीये प्रसस्त जि० २

व्रीहि सरसव दूर्वा ठवो जी, ते ऊपर धरी प्रेम,
वृषभ श्रृंगनी मृत्तिकाजी, गजदंत–चक्रनी तेम जि० ३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चोखंडो रूपक वली जी, जव ने दर्भ समूल,
थापी ते ऊपर ठवो जी, सेवन पट्ट अनुकूल जि० ४

यक्षकर्दमे स्वस्तिक रचोजी, दक्षिणावर्त्त आकार,
कूर्म मंत्र कुंभक करी जी, लिखीये वर्ण सुधार जि० ५

बलि बाकुल उच्छालिने जी, देव वंदी क्षेत्र देव,
सेवन पट्टे थापीये जी, मूल नायक जिन देव जि० ६

जिन गर्भ शाखा द्वारनी जी, कीजे तस अड भाग,
तिहां उपरें (रि) तन आठमा जी, अंसनो कीजे त्याग जि० ७

तदनंतर सप्तांसनो जी, लीजे सातमो भाग,
तेहमां जिन प्रतिमातणो जी, आणीइं दृष्टिनो भाग जि० ८

पूजा अष्ट प्रकारनी जी, करीये धूप अट्टोप[1],
आरात्रिक मंगल करी जी, कीजे ध्वज–आरोप जि० ९

१ आटोप

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चैत्यवंदन-स्तवने करी जी, स्तवीये जिन अभिधान,
थाल भरीने ढोइये जी, नैवेद्य फल पकवान जि० १०

दिन दस थापन अंतरे जी, पवित्रपणे विधिकार,
साते समरण शुद्धिथी जी, गणिइं तिहां वर्णउच्चार जि० ११

अट्ठाइ महोत्सव पछे जी, करीये अतिहरखेण,
स्नात्र अट्ठोत्तरी करी जी, विधियुत रंग भणंत जि० १२

(ढाल १९ ॥)

(वीर जिनेशर भुवन दिनेसर गौतम गुणना दरिया जी – ए देशी ॥)

इणि परे जैन प्रतिष्ठा कीजे, लीजे नरभव लाहो जी न्यायउपार्जित वित्त धर्ममां, खरचो धरी उछाहो जी
संघ सयण ने कुटुंब संगाथे, वैर-विरोध नीवारी जी, समकित दायक निर्मल करणी करीये भवी-हित कारी जी १
जैन प्रतिष्ठामां जिनवरनां पंच कल्याणक करवा जी श्रीगुरु श्रावक बेहुं मलीने विधिजोगे अनुसरवाजी,
भूमिशयन ब्रह्म चरज एकासण दस दिन पेहला धारो जी
गृहस्वामी विधिकारक इणि परे इहपरलोक सुधारो जी २

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इम धारीने बिंब प्रतिष्ठा करवाने सुविशालो जी, **खुशालचंद सवाईचंद** बहु (बिहुं) पितापुत्र उजमालोजी,
खुशाल सवाइ पालितांणें श्री विमलाचल भेटी जी, **गणधर विजय जिनेंद्र सूरिने** वंदी आपद मेटी जी ३
अति आग्रहथी विनति करीने भरुअच तेडी लाव्या जी, महोत्सवथी वांदीए श्री गुरु संघतणे मन भाव्या जी,
जल जात्रा करी साडंबरथी थापी पूर्ण कुंभ जी, आगल किरिया श्रीगुरु श्रावक साथे थई थिर थंभ जी ४
श्रीशंखेश्वर पास प्रभुनी पडिमा आदें बहुली जी, आचारज अधिवास क्रियाये अवतारित करे सघली जी,
फागुण शुदि पंचमी कविवारे लगन समय जब आवे जी, इंद्र थई गुरु कुंभ करीने, अंजनशिलाका फिरावे जी ५
पांच शब्द वाजित्र तिहां वाजें, गाजें, दुंदुभीनाद जी, केवलज्ञान तणो कल्याणक, गावे गोरी मधुरे सादें जी,
श्रीसंघे प्रासाद निपायो, मानुं अपर कैलास जी, पीठ मंडपने अदभुत देखि, उपजे मोद विलास जी ६
वृषभ लगनमां तेहिज दिवसे, पीठ उपर उल्लास जी, शुद्धि विधांन करीने थाप्या **श्रीशंखेश्वर पास** जी,
आचारज वाचक मुनिवरना उचित सहू साचविया जी, सूत्रधार शिल्पी ने याचक दान थकी उल्लसीया जी ७
नव नव भक्ति करी साहमीनी, विविध थकी पकवाने जी, शालदाल सुरहां घृतसाकें भक्ति करी बहुमाने जी,
देई तंबोल तिलक करी छांटयां केशर राते वरणे जी, यथा जोग्य पेहेरामणी कीधी श्रीफल वस्त्राभरणे जी ८
जिन शासन उन्नत-परशंसा, खट दर्शन में वाधी जी, इम सदव (व्य)य करी लषमी जेणें, सुर-शिव पदवी साधी जी,
तपगच्छ ठाकुर गुण मणी आगर **श्री विजयदेव सुरेंदाजी**, प्रतपो तव लगे नाम ए गुरुनुं जब लगे मेरु गिरिंदा जी ९

अञ्जन
प्र. कल्प
||२८१||

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तास सीस श्री लब्धि विजय वर पंडित मांहे लीहो जी, रत्नविजय बुध विनयी तेहना वादी मतंगज सीहो जी,
तास सीसश्रीमान विजयना विवेक विजय वड भागी जी तेहना बुध गीतारथ सारथ अमृत विजय सोभागी जी १०
तस चरणांबुज मधुकर-सेवी रंगविजय कहे हेते जी, कर्युं प्रतिष्ठा कल्प-स्तवन में लहि कारण संकेते जी,
बीजुं मंदमति तेहनें दश दिननुं विधान जी, कीधूं तोहे सद्गुरु संगे करज्यो थई सावधान जी ११
विधिकारक विधि एह सुणीने मत कोई दूषण देज्यो जी, नाम मात्र ए रचना कीधी, सुकवि सुधारी लेज्यो जी,
नर नारी उपयोगपणाथी, भणसे जे हिये हित आणी जी, मंगलमाला लच्छी विशाला लहेस्यें शिवसुख प्राणी जी १२

(कलश :-)

इम सयल सुखकर दुरित भय हर पास श्रीशंखेश्वरो, निधि अंब्धिर्वसुर्संसिमान वर्षे गाईयो अलवेशरो ।
इह प्रतिष्ठाकल्पतवन सांभली जे सदहे, ते ऋद्धि वृद्धि सुख सिद्धि सघले सदा रंग विजय लहे ॥

इति श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ पंचकल्याणकगर्भित-प्रतिष्ठा कल्पस्तवनं संपूर्णम् ॥

卐

अञ्जन
प्र. कल्प
॥२८२॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

—: जिन माता-पिता नामादि कोष्टक :—

क्रम	जिन नाम	लांछन	मातानुं नाम	पितानुं नाम	नगरीनुं नाम	यक्षनुं नाम	यक्षिणीनुं नाम
१	ऋषभदेव	वृषभ	मरुदेवी	नाभि	विनीता	गोमुख	चक्रेश्वरी
२	अजितनाथ	हाथी	विजया	जितशत्रु	अयोध्या	महायक्ष	अजिता
३	संभवनाथ	घोडो	सेना	जितारि	श्रावस्ती	त्रिमुख	दुरितारी
४	अभिनंदनस्वामी	कपि	सिद्धार्था	संवर	अयोध्या	यक्षेश	काली
५	सुमतिनाथ	क्रोंच	मंगला	मेघ	कोशल	तुंबुरु-के-तुबरु	महाकाली
६	पद्मप्रभस्वामी	पद्म	सुसीमा	धर	कौशांबी	कुसुम	अच्चुता
७	सुपार्श्वनाथ	स्वस्तिक	पृथ्वी	प्रतिष्ठ	वाराणसी	मातंग	शान्ता
८	चंद्रप्रभस्वामी	चंद्र	लक्ष्मणा	महसेन	चंद्रपुरी	विजय	ज्वाला
९	सुविधिनाथ	मगर	रामा	सुग्रीव	काकन्दी	अजित	सुतारका
१०	शीतलनाथ	श्रीवत्स	नन्दा	दृढरथ	भद्दिलपूर	ब्रह्म	अशोका
११	श्रेयांसनाथ	गेंडो	विष्णु	विष्णु	सिंहपूर	मनुजेश्वर	श्रीवत्सा
१२	वासुपूज्यस्वामी	महिष	जया	वसुपूज्य	चंपा	कुमार	चंडा-के प्रवरा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

—: जिन माता-पिता नामादि कोष्टक :—

क्रम	जिन नाम	लांछन	मातानुं नाम	पितानुं नाम	नगरीनुं नाम	यक्षनुं नाम	यक्षिणीनुं नाम
१३	विमलनाथ	वराह	श्यामा	कृतवर्मा	कांपिल्यपूर	षण्मुख	विज्या
१४	अनंतनाथ	सिंचाणो	सुयशा	सिंहसेन	अयोध्या	पाताल	अंकुशा
१५	धर्मनाथ	वज्र	सुव्रता	भानु	रत्नपूर	किंनर	प्रज्ञप्ति
१६	शांतिनाथ	हरण	अचिरा	विश्वसेन	हस्तिनापूर	गरुड	निर्वाणी
१७	कुंथुनाथ	अज	श्री	सूर	गजपूर	गंधर्व	अच्चुता
१८	अरनाथ	नंदावर्त	देवी	सुदर्शन	नागपूर	यक्षेन्द्र	धरणी
१९	मल्लिनाथ	कळश	प्रभावती	कुंभ	मिथिला	कुबेर	वैरोटचा
२०	मुनिसुव्रतस्वामी	काचबो	पद्मावती	सुमित्र	राजगृह	वरुण	दत्ता
२१	नमिनाथ	कमळ	वप्रा	विजय	मिथिला	भ्रुकुटि	गांधारी
२२	नेमिनाथ	शंख	शिवा	समुद्रविजय	सौर्यपूर	गोमेध	अंबा
२३	पार्श्वनाथ	सर्प	वामा	अश्वसेन	वाराणसी	पार्श्व	पद्मावती
२४	महावीरस्वामी	सिंह	त्रिशला	सिद्धार्थ	क्षत्रियकुंड	मातंग	सिद्धायिका

॥ग॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

—: जिन माता-पिता नामादि कोष्टक :—

क्रम	जिन नाम	पूर्वभव-स्वर्ग	पूर्वभवायु	च्यवनमासादि	जन्ममासादि	जन्मनक्षत्र	दीक्षामासादि	केवळज्ञानमास	निर्वाणमास
१	ऋषभदेव	सर्वार्थसिद्ध	३३ सागरोपम	जेठ व. ४.	फागण व.८	उत्तराषाढा	फागण वद ८	महा वद ११	पोष वद १३
२	अजितनाथ	विजय	,, ,,	वै. सु. १३	महा सु. ८	रोहिणी	महा सु. ९	पोष सुद ११	चैत्र सुद ५
३	संभवनाथ	७ ग्रैवेक	२९ ,,	फा. सु. ८	मा. सु. १४	मृगशीर्ष	मा. सु. १५	आ. वद ५	चैत्र सुद ५
४	अभिनंदनस्वामी	जयंत	३३ ,,	वै. सु. ४	महा सु. २	पुनर्वसु	महा सु. १२	पोष सु. १४	वै. सुद ८
५	सुमतिनाथ	,,	३३ ,,	श्रा. सु. २	वै. सु. ८	मघा	वै. सु. ९	चैत्र सु. ११	चैत्र सुद ९
६	पद्मप्रभस्वामी	९ ग्रैवेक	३१ ,,	पो. व. ६	आ. व. १२	चित्रा	आ. व. १३	चैत्र सु. १५	का. व. ११
७	सुपार्श्वनाथ	६ ग्रैवेक	२८ ,,	श्रा. व. ८	जेठ सु. १२	विशाखा	जेठ सु. १३	महा वद ६	महा वद ७
८	चंद्रप्रभस्वामी	वैजयन्त	३३ ,,	फा. व. ५	मा. व. १२	अनुराधा	मा. व. १३	महा वद ७	श्रा. वद ७
९	सुविधिनाथ	आनत	१९ ,,	महा व. ९	का. व. ५	मूल	का. व. ६	का. सुद ३	भा. सुद ९
१०	शीतलनाथ	प्राणत	२० ,,	चत्र वद ६	पोष वद १२	पूर्वाषाढा	पोष वद १२	मा. वद १४	चैत्र वद २
११	श्रेयांसनाथ	अच्चुत	२२ ,,	वै. वद ६	महा वद १२	श्रवण	मह्रा वद १३	पोष वद ०))	अ. वद ३
१२	वासुपूज्यस्वामी	प्राणत	२० ,,	जेठ सुद ९	महा वद १४	शतभिषक्	महा वद ०))	महा सुद २	अ. सुद १४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

—: जिन माता-पिता नामादि कोष्टक :—

क्रम	जिन नाम	पूर्वभव-स्वर्ग	पूर्वभवायु	च्यवनमासादि	जन्ममासादि	जन्मनक्षत्र	दीक्षामासादि	केवळज्ञानमास	निर्वाणमास
१३	विमलनाथ	सहस्रार	१८ ,,	वै. सुद १२	महा सुद ३	उत्तराभाद्रपद	महा सुद ४	पोष सुद ६	जेठ वद ७
१४	अनंतनाथ	प्राणत	२० ,,	अ. वद ७	चैत्र वद १३	रेवती	चैत्र वद १४	चैत्र वद १४	चैत्र सुद ५
१५	धर्मनाथ	विजय	३२ ,,	वै. सुद ७	महा सुद ३	पुष्य	महा सुद १३	पोष सुद १५	जेठ सुद ५
१६	शांतिनाथ	सर्वार्थ सेद्ध	३३ ,	श्रा. वद ७	वै. वद १३	भरणी	वै. वद १४	पोष सुद ९	वैशाख वद १३
१७	कुंथुनाथ	,,	,, ,,	अ. वद ९	चैत्र वद १४	कृत्तिका	चैत्र वद ५	चैत्र सुद ३	चैत्र वद १
१८	अरनाथ	,,	, ,,	फा. सुद २	मा. सुद १०	रेवती	मा. सुद ११	का. सु. १२	मा. सुद १०
१९	मल्लिनाथ	जयंत	,, ,,	फा. सुद ४	मा. सुद ११	अश्विनी	मा. सुद ११	मा. सुद ११	फागण सुद १२
२०	मुनिसुव्रतस्वामी	अपराजित	,, ,,	श्रा. सुद १५	वै. वद ८	श्रवण	फा. सुद १२	महा वद १२	वैशाख वद ९
२१	नमिनाथ	प्राणत	२० ,,	आ. सु. १५	अ. वद. ८	अश्विनी	जेठ वद ९	मा. सुद ११	चैत्र वद १०
२२	नेमिनाथ	अपराजित	३३ ,,	आ. व. १२	श्रा. सुद ५	चित्रा	श्रा. सुद ६	भा. वद ०))	अषाढ सुद ८
२३	पार्श्वनाथ	प्राणत	२० ,,	फा. वद ४	मा. व. १०	विशाखा	मा. वद ११	फा. वद ४	श्रावण सुद ८
२४	महावीरस्वामी	प्राणत	,, ,,	अ. सुद ६	चैत्र सु. १३	उत्तराफाल्गुनी	का. वद १०	वै. सुद १०	आसो वद ०))

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शुद्धिपत्रक

सूचनाः—केटलाक टाईप तूटी गया छे, केटलाक झांखा आव्या छे ते तेमज रू ने स्थाने रु तथा ऋ स्थाने ऋ अने इ ने स्थाने ई क्यांक छपायेल छे ते आ शुद्धिपत्रकमां लीधा नथी.

पा. नं.	अशुद्धि	शुद्धि	पा. नं.	अशुद्धि	शुद्धि	पा. नं.	अशुद्धि	शुद्धि
११	अड्गुष्ठा०	अङ्गुष्ठा०	३०	प्रतिष्टा	प्रतिष्ठा	४०	०वाहना	वाहनाः
१२	अनमिका०	अनामिका०	३०	क्षैं	क्ष्रैं	४१	आह्मान	आह्वान
१३	चन्दप्रभ०	चन्द्रप्रभ०	३०	तीक्ष्णदष्ट्र	०दंष्ट्र०	४४	विम्बाञ्जन	बिम्बा०
१४	मूता	भूता	३०	अनुष्टुभ	अनुष्टुभ	५०	स्वागता	रथोद्धता
१६	गुरू	गुरु	३१	समुचयय	समुच्चय	५२	अहं	अर्हं
२४	जिनाहयान	जिनाह्वान	३२	आह्मान	आह्वान	५३	वासिन ?	वासिन् !
२८	तोरणेभ्य नमः	तोरणेभ्यो०	३३	,,	,,	५३	सपरिच्छदाः	०च्छदा
२८	पार्श्वनाथय	पार्श्वनाथाय	३५	,,	,,	५३	,,	,,
३०	यक्षाधिण्तये	०धियतये	३८	चंद्र	चंद्रः	५५	ॐ ह्रीं	ॐ ह्रीँ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६९	शालिना	शालिनी	१२५	बुद्धि	बुद्धि	१८५	अर्ह	अर्हं
६९	हेरवी	पहेरवी	१२८	०दायिनि	दायिनी	१८८	वोहियाणं	बोहियाणं
७२	हंस;	हंसः	१२९	०देवयाए	०देवयाइ	१८९	थिविग	थिविर०
७७	ह्रा	ह्रीँ	१२९	सुहयाइ	सुहयाए	१९१	॥१॥	॥१५॥
८४	देष्यो	देव्यो	१३४	ह्रू	ह्रूँ	२०१	वभूव	बभूव
८४	वाल०	बाल०	१३५	ह्रो	ह्रौँ	२१०	वृन्द्रैः	वृन्दैः
८६	मत्रित	मंत्रित	१४८	प्रतिष्टा	प्रतिष्ठा	२१०	१ लृ	१ औ
९१	स्त्रगधरा	स्त्रग्धरा	१५३	त्रिम्बे०	बिम्बे	२११	१ अ	१ अः
९४	अभिषेकमां	अभिषेक	१५७	प्रोक्षणक	प्रोक्षणकं	२१२	अवतरण	अवतारण०
९८	पाणना	पाणीना	१५८	धारणापविश्य	धारणोप०	२१६	षात	पान
९८	श्लाक	श्लोक	१५८	जिना	जिनाः	२२२	उत्तानो	उत्तानौ
१०८	पुष्पं ध	पुष्पौघ	१७०	सौभाग्य वी०	०धी०	२४५	प्रतिष्टा	प्रतिष्ठा
१०८	परि. नं. १ ए	०१ औ	१७२	०झञ्	०झञ	२५६	आणंदनो	जिणंदनो
११३	स्निग्धोभि०	स्निग्धैरेभि०	१७५	निर्वाणेभ्य	निर्वाणेभ्यः	२६३	जननीन	जननीने
११८	त्रैलोक्य०	त्रैलोक्य	१८४	बसन्त	वसन्त			

॥२८८॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्री १०८ जैन तीर्थ दर्शन भवन - श्री समवसरण मंदिर–पालीताणा

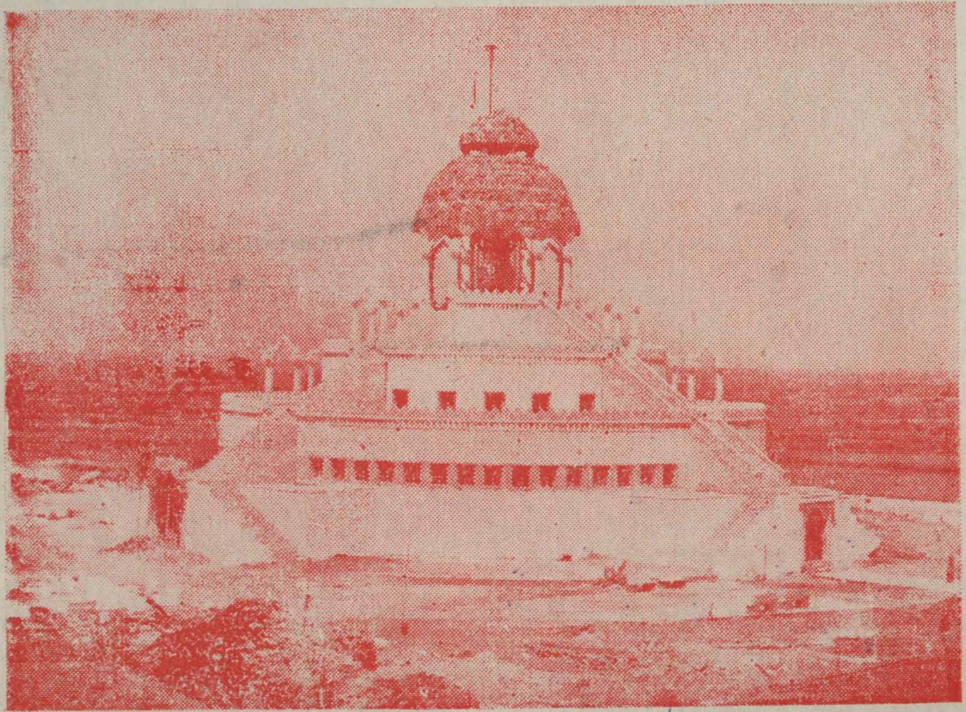

प्रतिष्ठा :
सं. २०४१–
मागशर सुद ६

प्रेरक : पू. आ. श्री विजय कस्तूरसूरिश्वरजी म. सा.
मार्गदर्शक : पू. आ. श्री विजय चंद्रोदयसूरिश्वरजी म सा.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

• प्राप्तिस्थान •

श्री नेमचंद मेलापचंद झवेरी
जैनवाडी उपाश्रय,
गोपीपुरा, सुरत

श्री नेमि-विज्ञान-कस्तूरसूरिज्ञानमंदिर,
गोपीपुरा मेइन रोड,
सुरत.

-: मुद्रक :-

जीतेन्द्र बी. शाह • जीगी प्रिन्टर्स

३०५, महावीर दर्शन, कस्तुरबा क्रोस रोड नं-५,
बोरीवली (इस्ट), मुंबई-४०० ०६६. फोन: ०/० ३१३८१०.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org